बून्दी जिले में भूपर्यटन के सतत विकास के लिए विकास व प्रबन्धन योजना
(भौगोलिक सन्दर्भ में)

Development and Management plan for the sustainable Development of Geotourism in Bundi District
(A Geographical Perspective)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा की
पीएच.डी. (भूगोल) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध
सामाजिक विज्ञान संकाय

शोधार्थी
आशुतोष बिरला

पर्यवेक्षक
डॉ. नन्द किशोर जेतवाल
सह आचार्य

भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बून्दी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

2020

CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled "Development and Management Plan for the Sustainable Development of Geotourism in Bundi District (A Geographical Perspective)" by Ashutosh Birla under my guidance. He has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University.

(a) Course work as per the University rules.

(b) Residential requirement of the University, (200 days)

(c) Regularly submitted Annual Progress Report.

(d) Presented his work in the Departmental committee.

(e) Published /Accepted minimum of two research paper in a referred research journal.

I recommended that submission of thesis.

Date :

Dr. N.K. Jetwal
Supervisor

ANTI - PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that Ph.D. thesis titled "Development and Management Plan for the Sustainable Development of Geotourism in Bundi District (A Geographical Perspective)" by Ashutosh Birla has been examined by us with the following anti plagiarism tools. We undertake the follows:

a. Thesis has significant new work / Knowledge as compared already published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of others have been presented as author's own work.

c. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes or changing or minting data or results such that the research in not accurately represented in the research record.

d. There is no fabrication of data or results which have been completed and analyzed.

e. The thesis has been checked using "URKUND" Software and found within limits as per HEC plagiarism policy and instruction issued from time to time.

(Name & Signature of Research Scholar)	(Name & Signature and seal of Research Supervisor)
Place :	Place :
Date :	Date :

शोध सार (ABSTRACT)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और पर्यटन एक सांसारिक गतिविधि है, जिसके माध्यम से मनुष्य की सामाजिकता का विकास होता है। इसलिए पर्यटन की पृष्ठभूमि मानव सभ्यता जितनी पुरानी ही मानी जाती है। पर्यटन की प्रवृत्ति मानव का स्वाभाविक गुण है। पर्यटन के मूल में कुछ जानने की अभिलाषा है, जो मानव को पर्यटन के लिए प्रेरित व परिचालित करती है। आज मानव पर्यटन के माध्यम से मनोरंजन तथा आनन्द के साथ–साथ ज्ञानार्जन का भी अनुभव करता है। पर्यटन स्वयं से जुड़ने का पुनः अवसर तो देता ही है, साथ ही सांस्कृतिक धरोहर और विरासत तथा प्रकृति से जुड़ने का भी मौका देता है। पर्यटन के दौरान असाधारण के प्रति आकर्षण होता है जिससे नवीन जिज्ञासा तथा ज्ञान तृप्ति होती है।

प्रारम्भ में पर्यटन के मूल में आवश्यकतायें थीं, किन्तु समयानुसार इसके स्वरूप व संरचना में भी परिवर्तन आता गया। जिससे आज पर्यटन वायुमण्डलीय प्रदुषण मुक्त जन उद्योग के रूप में वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण होता जा रहा है। समन्वित विकास की एक प्रमुख कड़ी के रूप में पर्यटन स्थापित होता जा रहा है जो विविध प्रकार व स्वरूपों में आकर्षित करता है। इनमें भूपर्यटन भी आज महत्वपूर्ण होता जा रहा है। यह किसी क्षेत्र या स्थान की भौगोलिक विशिष्टताओं को एक नया दृष्टिकोण देता है, जिसमें भूगर्भिक इतिहास के साथ–साथ निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन भी शामिल है। अर्थात् यह किसी स्थान को “Sense of Place” के अर्थ में मान्यता प्रदान कराता है।

1990 के दशक से प्रारम्भ पर्यटन की यह शाखा पर्यटन में गुणात्मक पक्ष की अभिवृद्धि करती है। यह एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषता को उभार कर उन्हें बनाये रखने तथा वहां के पर्यावरण, संस्कृति, कलात्मक सौन्दर्य, विरासत और स्थानीय निवासियों के कल्याण में अपना योगदान देता है। अर्थात् यह एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी स्थल के भूगर्भिक व भौगोलिक पक्ष के साथ–साथ सांस्कृतिक वातावरण तथा पर्यावरण के मध्य सामंजस्य उत्पन्न करता है।

राजस्थान में बून्दी जिला पर्वतीय, पठारी व मैदानी तीनों प्रकार की विशिष्ट भूआकृतिक संरचना रखता है। इस कारण यहां विशिष्ट भौगोलिक दृश्यरूप तथा चट्टानी स्थलाकृतियां, भूगर्भिक इतिहास की विभिन्न घटनाओं तथा भौगोलिक प्रक्रियाओं के प्रमाण के रूप में मिलती है, जिससे यहां भूपर्यटन विकास की अपार संभावनायें विद्यमान हैं। किन्तु अभी तक इस दिशा में न तो व्यक्तिगत व न ही सरकारी स्तर पर कोई सार्थक प्रयास हुए हैं। इसलिए स्थानीय निवासी होने के कारण जिले की अर्थव्यवस्था में पर्यटन प्रसार की

संभावनाओं में भूपर्यटन की विशिष्ट भूमिका के लिए सतत विकास के रूप में भूपर्यटन की भूमिका को स्पष्ट करना है। इसके लिए शोधकार्य में कई बिन्दुओं पर विचार किया गया है जो कि छः अध्यायों में स्पष्ट है।

प्रथम अध्याय में पर्यटन व भूपर्यटन तथा अध्ययन क्षेत्र का चयन, उद्देश्य व शोध विधि को स्पष्ट किया है।

द्वितीय अध्याय में जिले की ऐतिहासिक, प्रशासनिक व भौगोलिक पृष्ठभूमि स्पष्ट की गई है।

तृतीय अध्याय में भूपर्यटन अवधारणा, भूपर्यटन के तत्व व सिद्धान्त तथा इसका अन्य प्रकार के पर्यटन से सम्बन्ध बताया गया है।

चतुर्थ अध्याय में सतत पर्यटन विकास, आयाम व सिद्धान्त के साथ–साथ जिले में सतत भूपर्यटन विकास के प्रबन्धन की कार्ययोजना को स्पष्ट कर जिले में सतत विकास के रूप में भूपर्यटन की भूमिका पर प्रकाश डाला है।

पंचम अध्याय में भूपर्यटन की दृष्टि से चयनित छः महत्वपूर्ण स्थलों का क्षेत्र अध्ययन के रूप में वहां के भूपर्यटनीय आकर्षणों व क्षमताओं को स्पष्ट किया है।

अंतिम अध्याय में समस्त शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षों को स्पष्ट किया है तथा जिले में वर्तमान में भूपर्यटन विकास में विद्यमान समस्याओं को स्पष्ट किया है तथा भावी विकास के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किये गये है।

CANDIDATE'S DECLARATION

I hereby certify that the work which is being presented in the thesis, entitled "Development and Management Plan for the Sustainable Development of Geotourism in Bundi District (A Geographical perspective)" in partial fulfillment of the requirement for the award of the degree of Doctor of Philosophy, carried out under the supervision of Dr. N.K. Jetwal and submitted to the University of Kota, represents my idea in my own words and where other ideas or words have been included, I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any institution.

I also declare that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea /data / fact / source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the university and can also evoke panel action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date:

Place: Bundi ASHUTOSH BIRLA

(Research Scholar)

This is certifying that above statement made by Ashutosh Birla, Registration No. RS/2406/16 is correct to the best of my knowledge.

Date: Dr. N.K. Jetwal

Place: Bundi (Research Supervisor)

आभार

मैं अपने उन सभी शुभचिंतक व्यक्तित्वों के प्रति आभार प्रकट करने को अपना नैतिक दायित्व व कर्तव्य समझता हूं, जिनके निरन्तर सहयोग, उत्साहवर्धन, सहायता व मार्गदर्शन से यह शोध कार्य पूर्ण हो सका है।

विषय चयन से लेकर इस शोध के प्रस्तुतीकरण तक उत्साहवर्धक दिशा–निर्देशन के लिए मैं अपने शोध निर्देशक व विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी डॉ. एन.के.जेतवाल, सह आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी का विशेष ऋणी हूँ। आपके मार्गदर्शन, सकारात्मक व्यवहार, आवश्यक सहयोग व आशीर्वाद से यह शोध कार्य पूर्ण हो पाया है। भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी के सभी सह एवं सहायक आचार्यगणों डॉ. सन्दीप यादव, डॉ. निधि खिन्दुका जैन, डॉ. ओ.पी. देवासी, श्री राहुल सक्सैना, डॉ. पूजा सक्सैना, डॉ. जुबेर खान, डॉ. भारतेन्दु गौतम तथा सहायक कर्मचारियों का भी विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने हरसम्भव सहयोग व सुझाव देकर इस शोध कार्य को पूर्णता तक पहुँचाया।

प्रातः स्मरणीय मेरे प्रेरक पूज्य पिताजी स्व. श्री छीतर लाल बिरला तथा पूज्य माताजी श्रीमती कमला देवी बिरला को यह सृजनात्मक अनुष्ठान समर्पित करता हूँ। आपकी कृपा, प्रेरणा, मार्गदर्शन व आशीर्वाद मेरे जीवन पथ में आलोक भरे, यही मेरी आकांक्षा है।

मैं अपने अग्रज भ्राता श्री भगवान बिरला व अनुज भ्राता नवनीत बिरला, अमित बिरला का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ। आपके वात्सल्यपूर्ण प्रेम, सहयोग व प्रेरणा से यह शोध कार्य पूर्ण हो पाया।

मैं अपनी जीवन संगिनी श्रीमती चित्रा बिरला तथा मेरी पुत्रियों वनिशा तथा आर्ची को विशेष आभार देना चाहुँगा जिनके प्यार, समर्पण, सकारात्मक विचार व आत्मविश्वास से पूर्ण प्रेरणा ने निरन्तर मुझे इस शोध पूर्ण करने के लिए उत्साहित रखा।

मैं अपने शुभचिन्तकों श्री अभय देव शर्मा, श्री प्रेम जी शर्मा, अमित शर्मा 'पवन', श्री दिनेश जी विजयवर्गीय, डॉ. बी.के. शर्मा तथा अपने इष्ट मित्रों दीपक जिन्दल, मनीष जैन, प्रवीण पोकरा, प्रवीण गुप्ता, संतोष खत्री, धर्मेन्द्र पाहुजा, विकास मित्तल, राकेश सोमाणी, डॉ. दिलीप कुमार राठौड़, डॉ. पदम चन्द भाटी, श्री राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. आशीष श्रृंगी, का आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने क्षेत्र अध्ययन भ्रमण व शोध रूपरेखा में विशेष सहयोग प्रदान किया। मैं अपने अभीष्ट मित्र व मानचित्रकार शिव प्रकाश पांचाल का शोध प्रबन्ध से सम्बन्धित मानचित्रों को मूर्तता प्रदान करने के लिए विशेष ऋणी हूँ। श्री नारायण मंडोवरा

को बून्दी जिले के बेहतरीन छायाचित्र उपलब्ध कराने तथा श्री अशोक सुमन को टंकण कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित करना तथा इस सहयोग के लिए आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

मैं उन सभी राजकीय कर्मचारियों, सहयोगियों तथा परिचितों के प्रति भी हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं, जिनका प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोग मुझे इस शोध कार्य के लिए मिला।

अंत में यही कहना चाहुँगा कि यदि मेरा शोध प्रबन्ध बून्दी जिले के सतत विकास में योगदान देने में सफल हुआ तो यह स्थानीय निवासी व जिज्ञासु विद्यार्थी के रूप में किया गया प्रयास सार्थक होगा। इस शोध प्रबन्ध में जो कुछ विशिष्ट है वह गुरूजनों, स्वजनों व मित्रों का पुण्यफल है और जो कुछ कमी है, उसके प्रति मेरी अज्ञानता है।

'त्वदीय वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पये'

आपका

आशुतोष बिरला

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

- ❖ प्रमाण पत्र i
- ❖ एन्टी–प्लेग्रिज्म प्रमाण पत्र ii
- ❖ शोध सार iii
- ❖ शोधार्थी घोषणा v
- ❖ आभार vi
- ❖ अनुक्रमणिका viii
- ❖ तालिका सूची xii
- ❖ आरेख सूची xiii
- ❖ मानचित्र सूची xv
- ❖ छायाचित्र सूची xvi

अध्याय – प्रथम **1-24**

1.1 प्रस्तावना
1.2 पर्यटन का महत्व
1.3 पर्यटन के प्रकार
1.4 भूपर्यटन
1.5 भारत में भूपर्यटन
1.6 अध्ययन क्षेत्र का चयन
1.7 उद्देश्य
1.8 शोध विधि
1.9 साहित्य समीक्षा
1.10 अध्याय योजना

अध्याय – द्वितीय **25-63**

2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2.1.1 स्थापना एवं विकास काल

2.1.2 ब्रिटिश प्रभुत्वकाल
2.1.3 स्वतन्त्रता पश्चात् काल
2.2. प्रशासनिक पृष्ठभूमि
2.3. भौगोलिक पृष्ठभूमि
2.3.1. अवस्थिति
2.3.2. उच्चावच व भूआकृति
2.3.3. अपवाह तन्त्र
2.3.4. जलवायु
2.3.5. वनस्पति
2.3.6. मिट्टियाँ
2.3.7. खनिज
2.3.8. परिवहन
2.4. मानव संसाधन
2.4.1. जनसंख्या
2.4.2. जनसंख्या घनत्व
2.4.3. साक्षरता
2.4.4. लिंगानुपात
2.4.5. ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या
2.4.6. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति जनसंख्या
2.4.7. जनसंख्या की आर्थिक संरचना

अध्याय – तृतीय **64-85**
3.1. भूपर्यटन अवधारणा
3.2. भूपर्यटन की उत्पत्ति एवं विकास
3.3. भूपर्यटन की परिभाषाएँ
3.4. भूपर्यटन का भौगोलिक दृष्टिकोण
3.5. भूपर्यटन के तत्व
3.5.1. भूस्थल
3.5.2. भूविविधता
3.5.3. भूविरासत

3.5.4. भूसंरक्षण
3.6. भूपर्यटन सिद्धान्त
3.7. भूपर्यटन का अन्य पर्यटन से सम्बन्ध

अध्याय – चतुर्थ **86-117**
4.1. सतत विकास अवधारणा
4.2. सतत पर्यटन विकास
4.3. सतत पर्यटन विकास के आयाम
4.4. सतत पर्यटन विकास के सिद्धान्त
4.5. बून्दी जिले में सतत भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना
4.5.1. कार्ययोजना
4.5.1.1. चिन्हीकरण
4.5.1.2. संसाधन विश्लेषण
4.5.1.3. निरन्तरता
4.5.1.4. आधारभूत सुविधाओं का विकास
4.5.1.5. कार्यान्वयन
4.5.1.6 विपणन एवं प्रचार–प्रसार
4.5.1.7 मूल्यांकन

अध्याय – पंचम **118-201**
5.1. रामेश्वर महादेव घाटी
5.2. भीमलत
5.3. गरड़िया
5.4. तलवास
5.5. केवड़िया
5.6. नाल्दिया
5.7. बून्दी जिले के अन्य महत्वपूर्ण भूपर्यटन क्षेत्र

अध्याय – षष्ठम् – **202-216**
सारांश

6.1. समस्यायें

6.2. सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची **217-222**

शोधपत्रों के प्रकाशन एवं वाचन की सूची

परिशिष्ट

तालिका सूची

तालिका .सं.	विवरण	पृ.संख्या
1.1.	जिला बून्दी : पर्यटक विवरण	9
2.1.	जिला बून्दी : प्रशासनिक संरचना	31
2.2.	जिला बून्दी : लोकसभा संसदीय क्षेत्र	31
2.3.	जिला बून्दी : विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र	33
2.4.	जिला बून्दी : तहसील अनुसार वर्षा	43
2.5.	जिला बून्दी : प्रशासनिक दृष्टि से वन वर्गीकरण	46
2.6.	जिला बून्दी : खनिज पदार्थों का उत्पादन	50
2.7.	जिला बून्दी : परिवहन (सड़क)	52
2.8.	जिला बून्दी : जनसंख्या प्रतिरूप	54
2.9.	जिला बून्दी : जनसंख्या दसवर्षीय वृद्धि दर	55
2.10.	जिला बून्दी : जनसंख्या घनत्व	56
2.11.	जिला बून्दी : साक्षरता दर	57
2.12.	जिला बून्दी : लिंगानुपात	58
2.13.	जिला बून्दी : ग्रामीण नगरीय जनसंख्या	59
2.14.	जिला बून्दी : अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति जनसंख्या	60
2.15.	जिला बून्दी : कार्यकारी जनसंख्या	60
3.1.	जिला बून्दी : भूस्थल वर्गीकरण	73
4.1.	तुलनात्मक विवरण – राजस्थान व बून्दी में पर्यटक आगमन	96
4.2.	जिला बून्दी : भूपर्यटन स्थलों पर संसाधन उपलब्धता	104

आरेख सूची

आरेख सं.	विवरण	पृ.संख्या
1.1	पर्यटन के विभिन्न प्रकार	6
1.2	जिला बून्दी : वर्षवार पर्यटक संख्या	9
2.1	जिला बून्दी : औसत वर्षा	43
2.2	जिला बून्दी : वन संसाधन	46
2.3	जिला बून्दी : खनिज संसाधन	50
2.4	जिला बून्दी : सड़क मार्ग	52
2.5	जिला बून्दी : तहसीलवार जनसंख्या वितरण	54
2.6	जिला बून्दी : जनसंख्या दस वर्षीय प्रतिशत वृद्धि दर	55
2.7.	जिला बून्दी : जनसंख्या घनत्व	56
2.8	जिला बून्दी : साक्षरता दर	57
2.9	जिला बून्दी : लिंगानुपात	58
2.10	जिला बून्दी : ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या	59
2.11	जिला बून्दी : अनुसूचित जाति जनसंख्या	61
2.12	जिला बून्दी : अनुसूचित जनजाति जनसंख्या	61
2.13	जिला बून्दी : कार्यशील जनसंख्या	62
3.1	भूपर्यटन का भौगोलिक पक्ष	70
3.2	भूपर्यटन के तत्व	71
3.3	भूविविधता	76
3.4	भूपर्यटन सिद्धान्त	79
3.5	भूपर्यटन का अन्य पर्यटन से सम्बन्ध	82
4.1.	पर्यटन से सतत पर्यटन का कालानुक्रमिक विकास	89
4.2.	सतत पर्यटन संकल्पना : विविध पक्ष	91
4.3.	सतत पर्यटन विकास के आयाम	92
4.4.	सतत पर्यटन विकास के सिद्धान्त	93
4.5.	तुलनात्मक विवरण :राजस्थान व बून्दी में पर्यटक आगमन	97
4.6.	भूपर्यटकों की विभिन्न श्रेणियाँ	99

4.7.	भूपर्यटन से लाभ	100
4.8.	भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना	101
4.9.	भूपर्यटनीय आकर्षण	102

मानचित्र सूची

मानचित्र सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
2.1	जिला बून्दी : अवस्थिति मानचित्र	30
2.2	जिला बून्दी : प्रशासनिक संरचना	32
2.3	जिला बून्दी : – भूआकृति	34
2.4	जिला बून्दी : उच्चावच व ढाल	35
2.5	जिला बून्दी : भूगर्भिक	36
2.6	जिला बून्दी : अपवाह तन्त्र	38
2.7	जिला बून्दी : जलवायु	42
2.8	जिला बून्दी : वन संसाधन	45
2.9	जिला बून्दी : मिट्टियाँ	47
2.10	जिला बून्दी : चट्टानें एवं खनिज	49
2.11	जिला बून्दी : परिवहन	51
4.1	जिला बून्दी : पांच दिवसीय प्रस्तावित क्षेत्र भ्रमण योजना	113
4.2	जिला बून्दी : चार दिवसीय प्रस्तावित क्षेत्र भ्रमण योजना	114
4.3	जिला बून्दी : दो दिवसीय प्रस्तावित क्षेत्र भ्रमण योजना	115
5.1	जिला बून्दी : भूपर्यटन स्थल मानचित्र	121
5.2	जिला बून्दी : रामेश्वर महादेव घाटी अवस्थिति मानचित्र	123
5.3	रामेश्वर महादेव घाटी	124
5.4	जिला बून्दी : भीमलत अवस्थिति मानचित्र	137
5.5	भीमलत	138
5.6	जिला बून्दी : गरड़िया अवस्थिति मानचित्र	148
5.7	गरड़िया	149
5.8	जिला बून्दी : तलवास अवस्थिति मानचित्र	159
5.9	तलवास	160
5.10	जिला बून्दी : केवड़िया अवस्थिति मानचित्र	169
5.11	केवड़िया	170
5.12	जिला बून्दी : नाल्दिया अवस्थिति मानचित्र	184
5.13	नाल्दिया	185

छायाचित्र सूची

छायाचित्र सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
2.1	जिला बून्दी : ऐतिहासिक विरासत	27
2.2	जिला बून्दी : ऐतिहासिक विरासत	28
2.3	जिला बून्दी : ऐतिहासिक विरासत	28
2.4	जिला बून्दी : चम्बल नदी व मेज नदी संगम	39
5.1	जिला बून्दी : प्राकृतिक वैभव	119
5.2	जिला बून्दी : प्राकृतिक वैभव	119
5.3	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	126
5.4	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	127
5.5	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	128
5.6	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	129
5.7	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	130
5.8	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	131
5.9	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	132
5.10	रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण	133
5.11	भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण	139
5.12	भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण	140
5.13	भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण	141
5.14	भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण	142
5.15	भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण	143
5.16	भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण	144
5.17	भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण	145
5.18	गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	152
5.19	गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	153
5.20	गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	154
5.21	गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	155
5.22	गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	156

5.23	तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण	162
5.24	तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण	163
5.25	तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण	164
5.26	तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण	165
5.27	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	171
5.28	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	172
5.29	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	173
5.30	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	174
5.31	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	175
5.32	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	176
5.33	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	177
5.34	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	178
5.35	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	179
5.36	केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण	180
5.37	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	187
5.38	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	188
5.39	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	189
5.40	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	190
5.41	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	191
5.42	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	192
5.43	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	193
5.44	नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण	194
5.45	जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण	197
5.46	जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण	198
5.47	जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण	199
5.48	जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण	200
5.49	जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण	201

प्रथम अध्याय

परिचय

1.1 प्रस्तावना (Introduction):-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और पर्यटन एक सांसारिक गतिविधि है, जिसके माध्यम से मनुष्य की सामाजिकता का विकास होता है। इसलिए पर्यटन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि उतनी ही प्राचीन है जितनी की मानव सभ्यता। पर्यटन की प्रवृत्ति मानव का स्वाभाविक गुण है क्योंकि मानव जिस पृथ्वी पर जन्मा है उसे, उसके विविध रूपों, दृश्यों को जानने की मनुष्य की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, तीर्थाटन, व्यापार–विनिमय की प्रवृत्ति से पर्यटन की सोच का विस्तार हुआ है। पर्यटन मात्र पर्यटन नहीं है, उसके मूल में कुछ जानने की अभिलाषा है जो मानव को पर्यटन के लिए प्रेरित व परिचालित करती है।

वर्तमान यांत्रिक सभ्यता तथा आधुनिक जीवन शैली के विभिन्न दुष्परिणामों के कारण आज मानव की सोच में परिवर्तन आया है। आज मानव धन–अर्जन कर उसे सुरक्षित रखने के साथ–साथ उसका उपयोग अनुभव एवं ज्ञानार्जन प्राप्त करने के लिए करने लगा है। आज सम्पूर्ण विश्व में प्रकृति की ओर लौटना तथा उससे सुख शान्ति पाने की मनोवृत्ति के कारण पर्यटन एक व्यापक रूप ले चुका है। आज पर्यटन ऐसा माध्यम बन चुका है जिसके द्वारा मानव ज्ञानार्जन के साथ–साथ मनोरंजन तथा आनन्द का भी अनुभव करता है।

वर्तमान युग में बढ़ते हुए तकनीकी विकास, परिवहन एवं संचार साधनों की व्यापकता ने वैश्विक दूरी को कम कर दिया है, जिससे मनुष्य अपनी जिज्ञासा तथा प्रकृति की सौन्दर्यता को पुस्तकों में न ढूंढ़कर स्वयं को पर्यटन में आत्मसात करने में लगा है। पर्यटन के प्रेरक तत्वों में घर से बाहर की दुनियाँ देखने का आकर्षण, उच्च शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा, बाजार, मेले, प्रदर्शनी, सम्मेलन, स्वास्थ्य लाभ व विश्राम, विशेष रूचियाँ, प्रोत्साहन, भ्रमण आदि प्रमुख भूमिका निभाते हैं। पर्यटन महज मनोरंजन ही नहीं है बल्कि यह एक प्रकार से ज्ञान वृद्धि है, जिसके माध्यम से मानव, प्रकृति और संस्कृति के बीच एक रचनात्मक सम्पर्क स्थापित करता है। पर्यटन के दौरान असाधारण के प्रति आकर्षण होता है, जिससे नवीन जिज्ञासा तथा ज्ञान तृप्ति होती है। मनुष्य की इसी प्रवृत्ति का क्रियात्मक स्वरूप पर्यटन है।

पर्यटन की मूल अवधारणा स्थानों का दर्शन है, जिसमें धरातल और मानव की सांस्कृतिक यात्रा सम्बन्धी विशेषताओं को अभिव्यक्त किया जाता है। सामान्य शब्दों में ज्ञान एवं आनन्द के लिए व्यक्ति या व्यक्ति समूहों द्वारा किया गया भ्रमण ही पर्यटन है। संस्कृत साहित्य में पर्यटन तीन शब्दों को स्पष्ट करता है जो अपने मूल शब्द ''अटन'' से सम्बन्धित

है। जिसका सामान्य अर्थ किसी अन्य स्थान के लिए घर से प्रस्थान करना है, जिसके तीन विशेष कारण हैं जो तीन शब्दों से स्पष्ट हैं –

1. पर्यटन – ज्ञान व आनन्द प्राप्ति के लिए घर से बाहर प्रस्थान करना।
2. देशाटन – आर्थिक लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से मूल स्थान से अन्यत्र जाना।
3. तीर्थाटन – धार्मिक महत्व के स्थानों की यात्रा करना।

उपर्युक्त तीनों शब्दों के अर्थ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पर्यटन से आशय भ्रमण के उस नियोजित कार्यक्रम से है, जिसमें व्यक्ति अपने निवास स्थान से अन्य स्थान की यात्रा पर जाता है। जिसके प्रेरक तत्वों में प्राकृतिक सौन्दर्य, धार्मिक उद्देश्य, आर्थिक लाभ, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति व जिज्ञासा समाधान प्रमुख हैं।

पर्यटन की प्रक्रिया के तीन आधारभूत तत्व हैं– **"मनुष्य, स्थान एवं समय।"** तीनों तत्व मिलकर ही पर्यटन की संकल्पना को साकार करते हैं। अर्थात् एक विशेष प्रकार का गमन जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी विशेष उद्देश्य अथवा प्रयोजन को दृष्टिगत रखकर किया जाता है, पर्यटन कहलाता है। दूसरे अर्थों में व्यक्ति विशेष या व्यक्ति समूहों की पूर्व निर्धारित उद्देश्यों से प्रेरित अल्पकालीन व अस्थायी यात्रा पर्यटन कहलाती है।

के.के.कामरा [1] – "सामान्य शब्दों में पर्यटन को लोगों द्वारा अपने प्रायिक या सामान्य आवास से दूर गन्तव्यों के अस्थायी भ्रमण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

हूंजीकर एवं क्राफ [2] – "पर्यटन एक ऐसी घटना व सम्बन्धों का मिश्रण है जो किसी स्थान पर अनिवासियों की यात्रा एवं उनके वहां ठहरने से उत्पन्न होता है तथा जिसके अन्तर्गत व्यक्ति उन स्थानों पर न तो स्थायी रूप से बसता है और न ही धनार्जन के लिए कोई कार्य करता है।"

जिवाद्दीन [3] – "पर्यटन आराम, मनोरंजन तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के दृष्टिकोण से एक सामाजिक संचरण है।"

विश्व पर्यटन संगठन [4] – "जब व्यक्ति 24 घण्टे से अधिक किन्तु 1 वर्ष से कम समय के लिए मनोरंजन, व्यापार या अन्य उद्देश्यों से कार्यस्थल या निवास स्थल से बाहर रहते हैं तो उन्हें पर्यटक कहा जाता है तथा यह यात्रा पर्यटन कहलाती है।"

संयुक्त राष्ट्र संघ [5] ने 1994 में इसे तीन रूपों में वर्गीकृत किया है –

1. **घरेलू पर्यटन** – किसी राज्य के निवासियों की उसी राज्य के अन्दर की जाने वाली यात्रा।
2. **इन बाउंड पर्यटन** – एक राज्य से उसी देश के दूसरे राज्यों में की जाने वाली यात्रा।

3. **आउट बाउंड पर्यटन** – एक देश के निवासियों की दूसरे देशों में की जाने वाली यात्रा।

उपर्युक्त परिभाषाओं से निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि पर्यटन का तात्पर्य सीमित अवधि वाली अस्थायी यात्रा से है, जो किसी न किसी प्रेरक तत्व के आधार पर की जाती है। इस आधार से दो बातें स्पष्ट होती हैं –

1. पर्यटन का सम्बन्ध मनुष्य, स्थान एवं समय से है।
2. मनुष्य की भ्रमणशील प्रवृत्ति के रूप में पर्यटन, जिसमें पर्यटन का उद्देश्य तथा पर्यटन स्थल से सम्बन्धित उद्देश्य के रूप में दो दृष्टिकोणों के रूप में विचार किया जाता है।

विश्व पर्यटन संगठन ने भौगोलिक सीमाओं के आधार पर पर्यटकों की दो श्रेणियाँ निर्धारित की हैं–

1. **घरेलू पर्यटक** – इसे स्वदेशी पर्यटक के रूप में भी जाना जाता है। इसमें वह व्यक्ति शामिल है जो अपने ही देश में अपने निवास के अतिरिक्त देश के अन्य किसी भी भाग में भ्रमण या अन्य गतिविधि के आधार पर किसी स्थान पर कम से कम 24 घण्टे निवास करता है।
2. **विदेशी पर्यटक** – इसमें वह व्यक्ति शामिल है जो अपने देश के अतिरिक्त अन्य किसी देश में वैध प्रकार से धन तथा शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य के अतिरिक्त कम से कम 24 घण्टे किन्तु 6 माह से कम अवधि के लिए निवास करता हो।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर पर्यटन और पर्यटक के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण मत सामने आते हैं :–

1. भौगोलिक सीमाओं के आधार पर पर्यटक दो प्रकार के होते हैं – स्वदेशी या घरेलू पर्यटक तथा विदेशी पर्यटक।
2. पर्यटन तथा पर्यटक का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन, आमोद–प्रमोद, जिज्ञासा, ज्ञान तृप्ति तथा सौन्दर्यबोध होता है।
3. पर्यटक पर्यटन स्थलों पर न तो किसी प्रकार का लाभप्रद कार्य करते हैं और न ही स्थायी रूप से निवास करते हैं।
4. पर्यटक किसी स्थान पर कम से कम 24 घण्टे व अधिकतम 6 माह तक ही निवास करते हैं।

<u>1.2 पर्यटन का महत्व (Significance of Tourism):–</u> वर्तमान में पर्यटन वायुमण्डलीय प्रदुषण मुक्त जन उद्योग बन गया है। इससे न केवल किसी क्षेत्र या देश के आर्थिक विकास में सहायता मिलती है, बल्कि स्वस्थ मनोरंजन, पारस्परिक एकता व सद्भाव

को भी बढ़ावा मिलता है। प्रारम्भिक काल में आवश्यकताओं के सन्दर्भ में ही यात्राऐं की जाती थी, किन्तु समय के साथ पर्यटन के स्वरूप व संरचना में भी परिवर्तन आया है, जो आवश्यकता की मूल अवधारणा को समाहित करते हुए एक जन उद्योग के रूप में अर्थव्यवस्था के विकास के महत्वपूर्ण सूचक के रूप में कार्य कर रहा है। संक्षेप में पर्यटन का महत्व निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है:–

1. **आर्थिक विकास** – जब पर्यटक किसी क्षेत्र में यात्रा के लिए आता है तो स्थानीय निवासियों द्वारा उसे प्रदान की गई सुविधाओं के प्रतिफल में मुद्रा की प्राप्ति होती है तो यही मुद्रा आर्थिक विकास का एक माध्यम बनती है, जिसके आधार पर उस क्षेत्र के आर्थिक विकास का ढांचा विकसित होता है।
2. **रोजगार वृद्धि** – जैसे–जैसे आर्थिक विकास और पर्यटन का विस्तार होता है तो पर्यटकों को सुविधायें प्रदान करने के लिए विभिन्न सेवाओं का भी विस्तार होता है, जिसके लिए मानव श्रम की आवश्यकता पड़ती हैं। यह आवश्यकता रोजगार वृद्धि के अवसर उपलब्ध कराती है।
3. **आधारभूत सुविधाओं का विकास** – किसी पर्यटन स्थल पर पर्यटकों की संख्या में वृद्धि से दबाव के फलस्वरूप तथा पर्यटकों की आवश्यकतानुसार विभिन्न आधारभूत सुविधाओं यथा– परिवहन मार्गों का विकास, परिवहन साधनों का विकास, आवास, बाजार, चिकित्सा सुविधाओं की वृद्धि होने लगती है, जिससे उस क्षेत्र के आर्थिक विकास का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त होने लगता है।
4. **क्षेत्रीय विकास** – जब किसी क्षेत्र में पर्यटन की विशिष्टीकृत उपलब्धता तथा उसके समुचित प्रचार–प्रसार के कारण पर्यटकों की संख्या बढ़ती जाती है तो वहां उन्हे ंप्रदान की जाने वाली सुविधाओ ंके प्रतिफल में उस क्षेत्र में आधारभूत संरचना के विकास के साथ–साथ रोजगार वृद्धि होती है। जिससे उस क्षेत्र के आर्थिक विकास को नयी गति मिलती है, परिणामस्वरूप क्षेत्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।
5. **जीवन स्तर मे ंसुधार** – जब किसी क्षेत्र में पर्यटन का विकास होता है तो आय में वृद्धि से आर्थिक विकास बढ़ता है जिसके कारण जीवन स्तर में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार से जीवन स्तर में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होने लगते हैं जिससे सामाजिक विकास की संकल्पना भी विकसित होती है।
6. **सामाजिक सौहार्द्र** – जब किसी क्षेत्र में पर्यटन का आकर्षण बढ़ता है तो वहां विभिन्न वर्गों, समुदायों, सामाजिक संगठन का आवागमन होता है। उन्हें सुविधायें प्रदान कराने के कारण उनका स्थानीय निवासियों से सम्पर्क होता है जिससे

स्थानीय निवासियों और पर्यटकों में सहकारिता की भावना के साथ–साथ उत्तरदायित्व का भी विकास होता है, जिससे सामाजिक सोहार्द्र बढ़ता है।

7. **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संरक्षण** – जब किसी क्षेत्र में पर्यटन की विशिष्टीकृत उपलब्धता व आकर्षण के कारण पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है तो स्थानीय संस्कृति तथा पुरातात्विक महत्व के स्त्रोतों की उपेक्षा समाप्त हो जाती है और उन्हें संरक्षण मिलता है जिससे ऐतिहासिक धरोहरें, संस्कृति पुनर्जीवित हो जाती हैं।

8. **अन्वेषण, अनुसंधान तथा जिज्ञासा समाधान** – जब कोई क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से विकसित होता है तो उसे निरन्तर आकर्षित बनाए रखने के लिए वहां अध्ययन व अनुसंधान बढ़ने लगता है, साथ ही वहां के ऐतिहासिक, प्राकृतिक व सांस्कृतिक पक्षों के क्षेत्र में अन्वेषण व अनुसंधान होने से पर्यटकों की जिज्ञासा समाधान भी होने लगते हैं। इस कारण पर्यटन के अन्य पक्ष भी विकसित होने लगते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी क्षेत्र में पर्यटन का विकास न केवल उस क्षेत्र के आर्थिक विकास की गति को बढ़ाता है अपितु सामाजिक–सांस्कृतिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है जिससे समन्वित विकास के रूप में पर्यटन की आवश्यकता तथा महत्व की अवधारणा की भी पुष्टि होती है।

1.3 पर्यटन के प्रकार (Types of Tourism):–

जैसे–जैसे मानव सभ्यता विकसित होती हुई चली गई, वैसे–वैसे पर्यटन के स्वरूप व प्रकार में भी परिवर्तन आता गया। प्रारम्भ में पर्यटन में नये क्षेत्रों की खोज, व्यापार तथा धार्मिक उद्देश्य से किया जाने वाला तीर्थाटन प्रमुख पर्यटकीय गतिविधियां थी। जैसे–जैसे सभ्यता व तकनीक का विकास हुआ, मनुष्य की रूचि व कार्यक्षेत्र में भी विविधता आती गई तथा प्रकृति की सुन्दरता व प्रकृति के रहस्यों के प्रति कौतुहल भी बढ़ता गया और ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्रों में भी विविधतायें आती गई जिससे आज पर्यटन विविध प्रकार व स्वरूपों में आकर्षित करता है।

वर्तमान में पर्यटन के विविध स्वरूपों में ऐतिहासिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन, सम्मेलन पर्यटन, क्रीड़ा पर्यटन, भू–पर्यटन प्रमुख होते चले गये। वर्तमान समय में प्रकृति के सौन्दर्य तथा भूवैज्ञानिक आश्चर्यों तथा भौगोलिक कलात्मकता ने भी भूपर्यटन के रूप में विश्व पर्यटन मानचित्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है।

आरेख स. 1.1

‘ पर्यटन के विभिन्न प्रकार

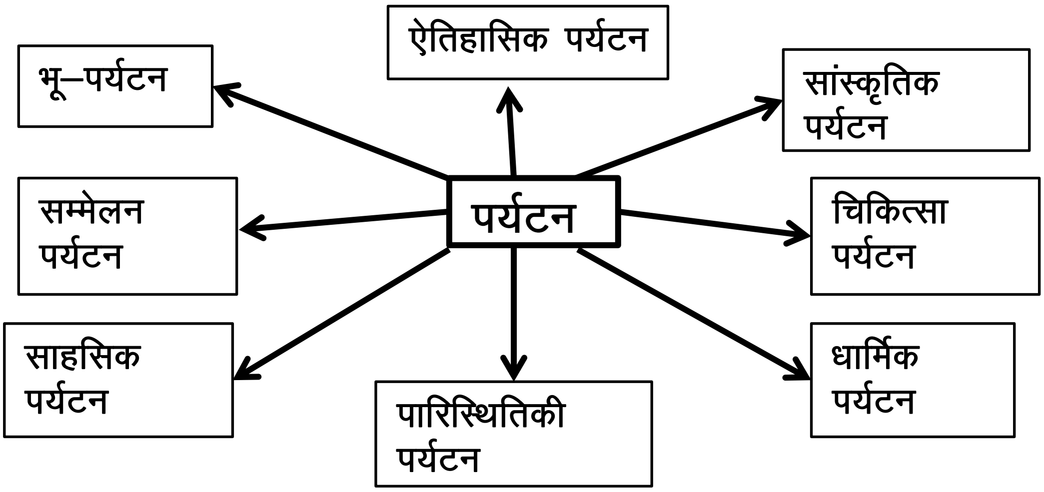

1.4 भूपर्यटन [Geotourism] :–

भूपर्यटन एक नये प्रकार का पर्यटन है जिसके माध्यम से किसी भी स्थान की भौगोलिक विशेषताओं को प्रकट किया जाता है तथा यह उन्हें बनाये रखने और उनकी व्याख्या करने में सहायक होता है। साथ ही भूपर्यटन उस स्थान का पर्यावरण के साथ समायोजन, सांस्कृतिक पक्ष, वहां का प्राकृतिक कलात्मक सौन्दर्य और भौगोलिक विरासत को बढाने के साथ–साथ वहां के स्थानीय निवासियों के कल्याण में भी अपना योगदान देता है।

भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो पृथ्वी की भूवैज्ञानिक व भौगोलिक विशेषताओं को मुख्य रूप से केन्द्रित करता है तथा उस स्थान के सांस्कृतिक वातावरण तथा पर्यावरण के मध्य सामंजस्य उत्पन्न करता है। इस रूप में भूपर्यटन भूगर्भशास्त्र तथा भौगोलिक व भूआकृति विज्ञान के साथ सीधा जुड़ा हुआ है अर्थात् भूपर्यटन के दो पक्ष होते हैं :–

1. **भूगर्भिक** – इस रूप में यह पृथ्वी की परिवर्तनशील शक्तियों तथा धरातलीय संरचना को स्पष्ट करता है।
2. **भौगोलिक** – इस रूप में यह धरातलीय परिवर्तनशील शक्तियों से निर्मित विभिन्न भौगोलिक भूआकृतियों को स्पष्ट करता है जो पर्यटकों को आकर्षित करती है।

इस प्रकार भूपर्यटन पर्यटन का वह स्वरूप है जो भूविज्ञान तथा भूआकृतियों पर केन्द्रित है, जो पृथ्वी के गतिशील इतिहास को स्पष्ट करने तथा विभिन्न धरातलीय स्थलरूपों व विशिष्टीकृत भूआकारों की रचना तथा उनके निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं की व्याख्या करता है। इस रूप में भूपर्यटन का सम्बन्ध पर्यटन के अन्य स्वरूपों यथा– शैक्षिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन से भी हो जाता है।

इस व्याख्या तथा स्वरूप में भूपर्यटन के क्षेत्र में भारत एक महत्वपूर्ण पर्यटकीय आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

1.5 भारत में भूपर्यटन (Geotourism in India):–

भारत विश्व का एक ऐसा देश है जहां अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ–साथ प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक परम्परायें, ऐतिहासिक धरोहरें तथा समृद्ध इतिहास है, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इसलिए भारत प्राचीनकाल से ही वैश्विक इतिहास व समुदाय के आकर्षण का केन्द्र रहा है। पूर्व में भारत को केवल प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर वाला देश ही समझा जाता था, किन्तु अब यहां का अतुलनीय प्राकृतिक सौन्दर्य तथा पृथ्वी के भूगर्भिक इतिहास की विभिन्न घटनाओं तथा उनके प्रमाणों ने एक नये आकर्षण को जन्म दिया है जिससे पर्यटन की एक नयी शाखा के रूप में भूपर्यटन को बढ़ावा मिला है।

भारत प्राचीन गौडवानालैण्ड का भाग रहा है जहां पृथ्वी के भूगर्भिक इतिहास की अनेक घटनायें घटित हुई हैं। यहां विश्व के प्राचीनतम भाग से लेकर नवीनतम भाग पाये जाते हैं। पृथ्वी के इतिहास में हुई भौगोलिक हलचलों की अनेक घटनाओं का भारतीय भूभाग साक्षी रहा है। जिसके विभिन्न प्रमाण यहां की धरातलीय संरचना, वानस्पतिक व जैविक जीवाश्मों में मिलते हैं। पृथ्वी के भौगोलिक इतिहास की विभिन्न हलचलों तथा अपरदन व निक्षेपण की अनवरत् प्रक्रिया से भारत भूमि पर अनेक भौगोलिक दृश्यावलियां बनी हैं जो आकर्षण, उत्सुकता, विस्मय तथा रोमांच का अनुभव देती है।

भारतवर्ष में राजस्थान प्रान्त भी एक ऐसा प्रदेश है जो भूगर्भिक इतिहास की विभिन्न भौगोलिक घटनाओं का केन्द्र रहा है। राजस्थान न केवल अपनी समृद्ध सभ्यता, वैभवपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं व धरोहरों के लिए विश्व प्रसिद्ध है बल्कि प्राचीनतम से लेकर नवीनतम भौगोलिक घटनाओं व लम्बे समय से चलने वाली अपरदनात्मक व निक्षेपात्मक प्रक्रियाओं से निर्मित विशिष्ट प्राकृतिक दृश्यों के लिए भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। **मरू, मेरू, माल** जैसे विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप राजस्थान को अन्य राज्यों की तुलना में पर्यटन की दृष्टि से विशिष्टता प्रदान करते हैं।

राजस्थान के दक्षिण पूर्वी पठारी भाग पर स्थित हाड़ौती प्रदेश का केन्द्र रहा बून्दी जिला भी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। साथ ही प्राकृतिक व भौगोलिक दृश्यावलियों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है। यहां के भौगोलिक आश्चर्यों के प्रति अभिरूचि व जागृतता उत्पन्न करने तथा इनकी प्रक्रिया व विश्लेषण की जानकारी का प्रयास देने के लिए भूपर्यटन के रूप में एक पृथक व समुचित अध्ययन की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध इसी दिशा में किया गया एक नवीन प्रयास है।

1.6 अध्ययन क्षेत्र का चयन (Selection of the Study Area) :–

राजस्थान में बून्दी जिला घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों के लिए एक उभरता हुआ महत्वपूर्ण केन्द्र बनता जा रहा है। राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रगति प्रतिवेदन 2018–19 से प्राप्त आंकडों के अनुसार बून्दी जिले में पर्यटकों की निरन्तर बढ़ती संख्या यह स्पष्ट करती है कि बून्दी जिला पर्यटन मानचित्र पर महत्वपूर्ण होता जा रहा है। (तालिका सं.1.1) (आरेख सं.1.2)। यहां पर आने वाले पर्यटक मुख्य रूप से यहां के ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्व तथा पुरा वैभव व सम्पदा को देखने के लिए आते हैं। इस ऐतिहासिक पर्यटन के अतिरिक्त यह जिला प्राकृतिक सुन्दरता तथा भौगोलिक विविधता से भी समृद्ध है। यहां मिलने वाले विभिन्न प्रकार के भौगोलिक स्वरूप एवं विशिष्ट भौगोलिक आकृतियां प्राकृतिक व साहसिक पर्यटन के साथ–साथ भूपर्यटन के क्षेत्र में भी अपार सम्भावनायें रखता है।

बून्दी जिले में कई क्षेत्र ऐसे हैं जो भूगर्भिक इतिहास की विभिन्न घटनाओं तथा विभिन्न प्रकार की भौगोलिक स्थलाकृतियों व भूदृश्य के रूप में इस क्षेत्र में रूचि रखने वालों को पर्याप्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। बून्दी शहर के निकट से गुजरने वाला ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट जो पूर्व अरावली व उच्च विन्ध्यन के मध्य स्थित है। यह समानान्तर व तिर्यक भ्रंशों का उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त अवशिष्ट पहाड़ियाँ, वलन तथा भ्रंश के विभिन्न प्रकार, जलप्रपात व विशिष्ट चट्टानी स्थलरूप सहित अनेक भौगोलिक घटनाओं के प्रमाण के रूप में विविध भूदृश्य यहाँ बड़ी संख्या में मिलते हैं। जिससे इस क्षेत्र में भूपर्यटन के विकास की अपार सम्भावनायें विद्यमान हैं।

बून्दी जिले के सतत विकास मे ऐतिहासिक पर्यटन के साथ–साथ एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में **'भूपर्यटन'** अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, किन्तु अब तक इस दिशा में न तो व्यक्तिगत तौर पर और न ही सरकारी स्तर पर कोई सार्थक प्रयास किये गये हैं। बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के विभिन्न आयाम विशेषकर भूपर्यटन एक महत्वपूर्ण प्रयास

हो सकता है। इसलिए स्थानीय निवासी होने के कारण शोध के लिए इस विषय तथा क्षेत्र का चयन किया गया है।

तालिका सं. 1.1

जिला बून्दी : पर्यटक विवरण

वर्ष	श्रेणी	2014	2015	2016	2017	2018
पर्यटक संख्या	देशी	49925	54574	59864	65021	70442
	विदेशी	15063	15290	15420	16442	16534
	कुल	**64988**	**69864**	**75284**	**81463**	**86976**

स्त्रोत – पर्यटन विभाग राजस्थान प्रगति प्रतिवेदन 2018–19

आरेख स.1.2

जिला बून्दी : वर्षवार पर्यटक संख्या

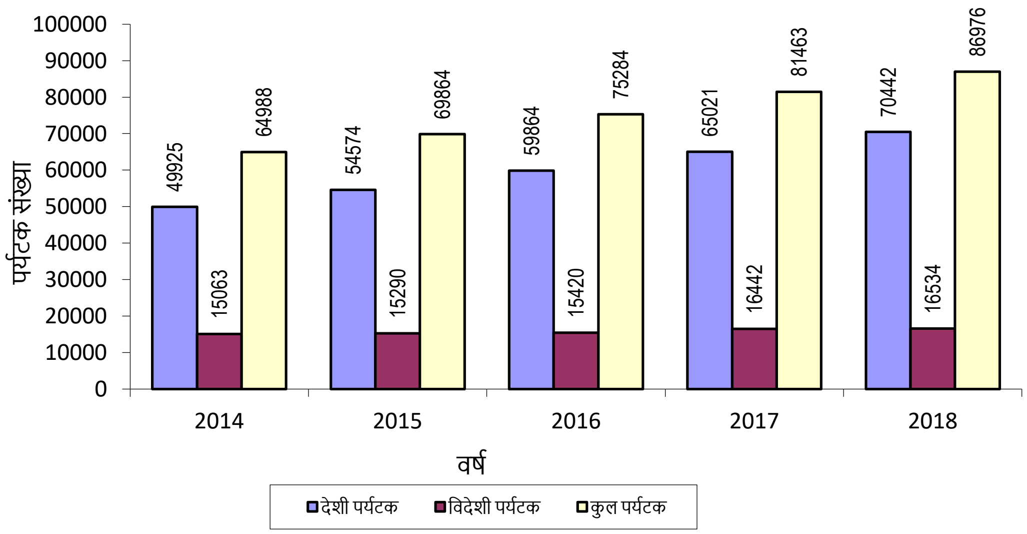

1.7 उद्देश्य (Objectives) :–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य में बून्दी जिले में स्थित भौगोलिक व भूगर्भिक विशेषता को स्पष्ट कर भूपर्यटन के विभिन्न आकर्षण के रूप में विविध स्थलरूपों की जानकारी तथा प्रक्रिया स्पष्ट करना है ताकि बून्दी जिला जो वर्तमान में ऐतिहासिक पर्यटन क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है, वह भूपर्यटन के क्षेत्र में भी विश्व पर्यटन मानचित्र पर प्रमुख स्थलों में शामिल हो जाये अर्थात् बून्दी जिले में भूपर्यटन के विकास की सम्भावनाओं को ज्ञात कर उनके विकास की एक सतत् प्रबन्धकीय योजना तैयार करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। इस मुख्य उद्देश्य के सहायक के रूप में निम्न सहउद्देश्य भी रहे हैं :–

1. बून्दी जिले के सन्दर्भ में भूपर्यटन संकल्पना को पुष्ट करना।
2. बून्दी जिले में भूपर्यटन के लिए महत्वपूर्ण स्थलो ंको इंगित करना।
3. पर्यटन के क्षेत्र में बून्दी जिले में आ रही समस्याओं की पहचान करना।
4. बून्दी जिले में भूपर्यटन विकास की सम्भावनायें ज्ञात करना।
5. बून्दी जिले में उपलब्ध विविध भौगोलिक स्थलरूपों व स्थलों को भौगोलिक आकर्षण के केन्द्र के रूप में पहचान दिलाना।

1.8 शोध विधि (Research Methodology) :–

प्रस्तुत अध्ययन खोजपरक तथा वर्णनात्मक प्रकृति का है। खोजपरक शोध अर्थात् प्राथमिक स्त्रोत के रूप में क्षेत्र का भ्रमण कर विविध प्राकृतिक व भौगोलिक दृश्यावलियों को आधार बनाया है। भौगोलिक व भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलरूपों के जीवन्त प्रदर्शन के लिए विभिन्न छायाचित्र लिए है। साथ ही स्थानीय निवासियों, हितधारकों तथा विषय विशेषज्ञों से प्राप्त जानकारी को आधार बनाया है।

वर्णनात्मक शोध के लिए द्वितीयक स्त्रोत के रूप में भूपर्यटन व भौगोलिक विविधता तथा पर्यटन के क्षेत्र में किये गये विभिन्न कार्यों की प्रकाशित सामग्री, पर्यटन सूचना केन्द्र बून्दी, पर्यटन मंत्रालय, राजस्थान द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रगति रिपोर्ट तथा विभिन्न वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानचित्रों, छायाचित्रों, आरेखों, आलेखों, विभिन्न तालिकाओं का यथास्थान उपयोग किया जायेगा। यद्यपि यह अध्ययन खोजपरक एवं वर्णनात्मक दोनों प्रकार से है, किन्तु मुख्य रूप से खोजपरक प्रकृति का है, जिसमें भूपर्यटन से सम्बन्धित विभिन्न स्थलरूपों व दृश्यावलियों को छायाचित्रों के माध्यम से वर्णित किया गया है।

1.9 साहित्य समीक्षा (Review of Literature) :–

Hose.T [1995][6] ने अपने अध्ययन में भूपर्यटन को सर्वप्रथम परिभाषित किया और कहा कि भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो प्रकृति की भौगोलिक सुन्दरता व कलात्मक स्थलरूपों को जानने व समझने के लिए पर्यटकों में भौगोलिक व भू वैज्ञानिक समझ को बढ़ाता है।

Buckley, R. [2003][7] ने अपने शोध में बताया कि पारिस्थितिकीय पर्यटन के दो पक्ष होते हैं :– 1. पर्यावरणीय आगम (Input) 2. पर्यावरणीय निर्गम (Output) इसमें आगम में किसी क्षेत्र की प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता होती है तथा निर्गम में उसके द्वारा मिलने वाला प्रतिफल होता है। इस रूप में भूपर्यटन किसी क्षेत्र की प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता उभारता है जो उस क्षेत्र के पर्यटन विकास का केन्द्र बन जाती है।

Joyce E.B. [2006][8] ने अपने अध्ययन में बताया कि भूपर्यटन पारिस्थितिकी पर्यटन से जुड़ा है तथा उससे इस रूप में अलग है कि भूपर्यटन किसी क्षेत्र की भूआकृतिक और भौगोलिक विशिष्टता को समाहित करते हुए उसे एक नयी पहचान दिलाता है। ऐसे क्षेत्र भूस्थल के रूप में जाने जाते हैं।

Reynard, E. [2007][9] ने कहा कि विगत 2 दशकों में यूरोपीय देशों में भूपर्यटन सम्बन्धी गतिविधियां बढ़ गई हैं। इस पर्यटन में किसी क्षेत्र की भूगर्भिक व भौगोलिक विशिष्टताओं को उभारा जाता है। भूपर्यटन के विकास तथा पर्यटन प्रोत्साहन के लिए सार्थक प्रयासों की आवश्यकता है। क्योंकि कई विशिष्ट भौगोलिक स्थल जानकारी व ज्ञान की कमी से उपेक्षित रह जाते हैं। अतः भूपर्यटन समृद्ध स्थलों के विकास के लिए कुछ निश्चित प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ेगा जिनमें –

- ऐसे क्षेत्रों की विस्तृत सूची बनायी जाये और उसमें उन स्थलों की विशिष्ट भौगोलिक विशेषताओं की जानकारी हो।
- इन सभी स्थलों को आपस में जोड़ते हुये एक परिपथ तैयार किया जाये।
- स्थानीय निवासियों व पर्यटक गाइड़ों को इन स्थलरूपों की निर्माण प्रक्रिया, विशिष्टतायें तथा संरक्षण के लिए शिक्षित किया जाये।
- इन क्षेत्रों में आधारभूत संरचना का विकास किया जाये।

Robinson, A.M. [2008][10] ने अपने शोध में भूपर्यटन की प्रकृति के बारे में बतलाया और कहा कि भूपर्यटन इको टूरिज्म की तरह ही उद्देश्य रखता है लेकिन यह इकोटूरिज्म से इस रूप में अलग है कि यह धरातल पर विस्तृत भौगोलिक सौन्दर्य, विभिन्न प्राकृतिक दृश्यावलियों, उनके निर्माण की प्रक्रिया व विभिन्न प्रकार के स्थलरूपों को स्पष्ट करता है।

इन्होंने भूपर्यटन में रूचि रखने वाले पर्यटकों को भूपर्यटक का नाम दिया और बताया कि भूपर्यटकों में निम्न विशेषतायें होती हैं :–

- भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों व स्थलाकृतियों से अपनी जानकारी बढ़ाता हो।
- अपनी जिज्ञासा को पूर्ण करना चाहता हो, सामान्य से अतिरिक्त कुछ अलग सोच से धरातलीय स्वरूपों को देखने व सीखने की इच्छा रखता हो।
- साहसिक भ्रमण में रूचि रखता हो।
- अनुभवात्मक पर्यटन में रूचि रखता हो।

इस रूप में भूपर्यटक एक विशेष पर्यटक के रूप में किसी क्षेत्र की प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता को उभार कर भूपर्यटन के विकास में अपना योगदान देता है।

Robinson A.M., David Roots [2008][11] ने कहा कि खुशी या आनन्द प्राप्त करने के लिए की गई यात्रा पर्यटन कहलाती है। जिसके कई रूपों में भूपर्यटन भी एक है। भूपर्यटन ईको टूरिज्म की तरह ही होते हुए भी उससे अलग उद्देश्य रखता है। भूपर्यटन भौगोलिक प्रक्रिया तथा स्थलाकृतियों में देखे जाने वाले प्रतिरूपों तथा उनके निर्माण प्रक्रिया की जानकारी देता है। वर्तमान में भूपर्यटन की भूमिका बढती जा रही है क्योंकि इसमें प्राकृतिक दृश्यावलियों, स्थलरूपों तथा इनके निर्माण प्रक्रिया की जानकारी शामिल है जिनमें मानव प्रारम्भ से ही रूचि रखता है। इन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया भूपर्यटन की दृष्टि से विश्व पर्यटन मानचित्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्यटकों को व्यापार व प्राकृतिक सौन्दर्य दोनों प्रकार से आकर्षित करता है। इन्होंने Lord Howe Island के अध्ययन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये कहा कि यह क्षेत्र ज्वालामुखी घटना, उसकी प्रक्रिया तथा प्लेट टेक्टोनिक के रूप में विनाशात्मक किनारों के प्रमाण में हॉट स्पॉट, लावा प्रवाह और विभिन्न लावा स्थलाकृतियों के रूप में भूगोल की शैक्षणिक जानकारी से परिपूर्ण है, जो इस प्रकार की रूचि रखने वालों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यदि यहां पर्यटन के क्षेत्र में नये तरीकों से प्रबन्धन किया जाये तो पर्यटकों की संख्या का ग्राफ तीव्र गति से बढ़ सकता है। क्योंकि आस्ट्रेलिया में अधिकांश पर्यटक प्राकृतिक पर्यटन के लिए आते हैं। इसके लिए इन्होनें यहां **5Ps – Product, Place, Price, Promotion, People** को ध्यान में रखते हुये बाजार प्रबन्धन की आवश्यकता बतायी।

Schutle, I.C. [2009][12] ने द.अफ्रीका में भूपर्यटन के विकास की सम्भावनाओं पर शोध प्रबन्ध में बताया कि भूपर्यटन पर्यटन के क्षेत्र की एक नई दिशा है। जिसके विकास से किसी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की जा सकती है। इन्होंने भूस्थल, भूसंरक्षण, भू पर्यटक, भू उद्यान, निरन्तरता व सतत विकास जैसे शब्दों के अर्थ को स्पष्ट किया और

द.अफ्रीका में भूपर्यटन विकास की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला। इन्होंने विभिन्न क्षेत्र अध्ययन के आधार पर द.अफ्रीका में भूपर्यटन विकास व इसके लिए परस्पर सम्बन्धित विभिन्न चरणों को स्पष्ट किया। साथ ही महत्वपूर्ण भूस्थलों को सूचीबद्ध कर प्रबन्धन रूपरेखा प्रस्तुत की। इन्होंने बताया कि किसी क्षेत्र में सतत विकास के तीन पक्ष होते हैं – पर्यावरणीय, सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आर्थिक। इनके लिए भूपर्यटन एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है।

Mao, I., Robinson, A.M., Dowling, R.[2009][13] ने अपने शोध में बताया कि इस अध्ययन का उद्देश्य आस्ट्रेलिया में भूपर्यटन की सम्भावनाओं को तलाश कर आस्ट्रेलिया को पर्यटन के इस नये रूप के केन्द्र के रूप में स्थापित करना है। भूपर्यटन स्थानीय और बाह्य पर्यटकों के लिए भौगोलिक आकर्षण के रूप में किसी स्थान को पहचान दिलाता है। इनके अनुसार भूपर्यटन का विकास किसी क्षेत्र में पर्यटकों को पुनः आकर्षित कर सकता है जिसके माध्यम से न केवल रोजगार के नये अवसर सृजित होते हैं अपितु सुस्थिर पर्यटन विकास को भी बढ़ावा मिलता है। इसके लिए ऐसे विशिष्ट भौगोलिक केन्द्रों को भूउद्यान [Geopark] के रूप में विकसित किया जा सकता है। जिसके लिए निम्न बिन्दुओं पर कार्य किया जाना चाहिए –

- ऐसे स्थानों पर 5 ‘A’ – Access, Accommodation, Activities, Attractions, Amenities शामिल होने चाहिए।
- सभी स्थानों की महत्वपूर्ण सूचनायें, जानकारियाँ व विशिष्टतायें ब्रोशर पर, वेबसाइट पर तथा अन्य दृश्य स्थलों पर होनी चाहिए।
- पर्यटकों के लिए सुरक्षित व सुविधायुक्त यातायात साधन होने चाहिए।
- ऐसे स्थलों को विकसित करते समय इस बात का आवश्यक रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए कि संरक्षण तथा विकास में संतुलन बना रहे।

Dowling, R.K. [2010][14] ने भूपर्यटन को परिभाषित करते हुए कहा कि भूपर्यटन एक प्रकार से प्राकृतिक क्षेत्रों का पर्यटन है जो भूगर्भशास्त्र और स्थलरूपों पर विशेष जोर देता है तथा पृथ्वी विज्ञान के प्रति रूचि जागृत करता है। इन्होंने बताया कि भूपर्यटन ईकोटूरिज्म, सांस्कृतिक पर्यटन व साहसिक पर्यटन से जुड़ा है, लेकिन इनका पर्याय नहीं है। यह तो भूगर्भशास्त्र और भूआकृति विज्ञान का अध्ययन है। यह भूगर्भिक तत्व के रूप में ‘‘आकार व प्रक्रिया’’ [Forms and Process] का अध्ययन करता है जिसमें निम्न पांच आधारभूत सिद्धान्त कार्य करते हैं –

Geological based

Educational

Generates tourists satisfaction

Sustainable

Locally beneficial

Predrag, D, Mirela, D. [2010][15] ने बताया कि भूगर्भिक हलचलों तथा बाह्य प्रक्रियाओं के सम्मिलित परिणामस्वरूप धरातल पर विविध भूआकृतियाँ जन्म लेती हैं। ये सभी भूआकृतियाँ भौगोलिक विविधता को जन्म देती है, जिनका अध्ययन व दर्शन भूपर्यटन के माध्यम से किया जाता है। भूपर्यटन न केवल हमारी जिज्ञासा शान्त करता है अपितु इन विविध प्रक्रियाओं को समझने में भी हमारी जिज्ञासा संतुष्टि करता है। ऐसे स्थलों की, उनकी प्रक्रिया के आधार पर उन्हें विभिन्न वर्गों में बांटकर उनकी विस्तृत सूची बनाई जानी चाहिए जिसमें वर्तमान में उनकी उपयोगिता को भी ध्यान में रखा जाये और संरक्षण की प्रक्रिया भी शामिल हो।

Anna, S., Zdristaw, J. [2010][16] ने पोलेण्ड के Strzelin Hill क्षेत्र में भूपर्यटन विकास की सम्भावनाओं के बारे में बताया। इन्होंने स्पष्ट किया कि इस क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना में व्यापक विविधता तथा उच्चावचीय विभिन्नता मिलती है। जिससे यह क्षेत्र भूविरासत स्थल के रूप में अपना विशिष्ट स्थान बना सकता है। इन्होंने यहां की भौगोलिक विशेषताओं को कुछ निश्चित बिन्दुओं – Accessibility, Stage of Preservation, Scientific Worth, Education Significance के आधार पर सर्वेक्षण प्रश्नावली के माध्यम से अंक प्रदान कर उनमें उपलब्ध विशेषताओं को प्रकट कर उन्हें पदानुक्रम में बांटा और इस आधार पर इस क्षेत्र में भूपर्यटन विकास की संभावना को स्पष्ट किया।

Bhatia, A.K. [2010][17] ने अपनी पुस्तक में पर्यटन के विविध रूपों की एक फ्रेमवर्क के रूप में व्याख्या की तथा अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में पर्यटन को एक उद्योग के रूप में मानकर उसके विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों के प्रबन्धन की योजना प्रस्तुत की।

Rodrigues, M.L., Machado, C.R., Freire, E. [2011][18] ने अपने शोध में लिस्बन क्षेत्र में भूपर्यटन के विकास की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला और बताया कि इस क्षेत्र में पाये जाने वाले भौगोलिक विशिष्टतायें वाले स्थलरूपो ंको संरक्षित कर 10 प्राकृतिक उद्यान स्थापित किये हैं। जिनमें विभिन्न भौगोलिक कालक्रमों में हुई भौगोलिक घटनाओं के तथा जैविक विकास प्रक्रिया के विविध प्रमाण पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं जो भौगोलिक विकास

प्रक्रिया की जानकारी प्रदान करते हैं। इन क्षेत्रों को आपस में जोड़ते हुए एक पर्यटक परिपथ तैयार किया जाये तो यह क्षेत्र पूर्तगाल में भूपर्यटन के विकास को एक नई ऊँचाई तक ले जा सकता है। जिससे यहां के आर्थिक विकास व सतत विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलेगा।

Hazare, P. [2012][19] ने रायगढ़ क्षेत्र में प्रमुख पर्यटन स्थलों की संसाधन के रूप में भूमिका को स्पष्ट किया। साथ ही इन्होंने स्थानीय निवासियों पर पर्यटन द्वारा डाले जाने वाले भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव को स्पष्ट किया और पर्यटन विकास में आने वाली समस्याओं तथा उन पर सुझाव भी दिये।

Ollier, C. [2012][20] ने बताया कि भौगोलिक आश्चर्यों ने हमेशा से ही भूगोलवेत्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है, जिसके कारण भौगोलिक स्थल, भौगोलिक विरासत, भूपर्यटन, भूविविधता जैसे शब्द प्रचलन में आये हैं। वर्तमान में भूपर्यटन व भूविविधता शब्द अत्यधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। भूपर्यटन पृथ्वी की भूवैज्ञानिक विशेषताओं से सम्बन्धित है। दूसरे अर्थ में भूपर्यटन एक प्रकार से प्राकृतिक पर्यटन की एक शाखा है, जो भूगर्भ विज्ञान तथा उससे सम्बन्धित दृश्यों पर विशेष जोर देती है। जिसके माध्यम से पर्यटक भौगोलिक इतिहास तथा भूगर्भिक घटनाओं की क्रियाविधि व उससे सम्बन्धित स्थलरूपों से परिचित होकर ज्ञान प्राप्त करते हैं। इन्होंने भूपर्यटन व भौगोलिक विविधता शब्द की व्याख्या कर इसके अर्थ को स्पष्ट किया और कहा कि जैव विविधता जो किसी दिये गये क्षेत्र की जैविक सम्पदा, पारितन्त्र व बायोम से सम्बन्धित है, उसी प्रकार भौगोलिक विविधता शब्द भी किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं व उसमें विभिन्नताओं से सम्बन्धित है। इसके साथ ही कोई एक विशेषता रखने वाला क्षेत्र भी भौगोलिक विविधता में शामिल है क्योंकि वहाँ भौगोलिक स्थलरूपों व आकृतियों में भी विभिन्नता पाई जाती है।

Martin, J.F., Carcia, J.C., Urqui, L.C. [2012][21] ने अपने अध्ययन में स्पेन के पेलेनसिया क्षेत्र में पायी जाने वाली कार्स्ट भूआकृतियों को उनकी निर्माण प्रक्रिया, वर्तमान महत्व के आधार पर विभिन्न वर्गों में बांटते हुये उनकी विशेषताओं और स्थिति को सूचीबद्ध किया, जिसके आधार पर इस क्षेत्र में भूपर्यटन का विकास किया जा सके जो न केवल इस क्षेत्र के सुव्यवस्थित व सतत विकास को अपितु स्थलाकृतियों के संरक्षण को भी प्रोत्साहित करेगा। इसके लिए इन्होंने विभिन्न स्तरों पर आधारित एक योजना प्रारूप प्रस्तुत किया जिसमें प्रथम स्तर पर भौगोलिक दृश्यावलियों को भूगर्भिक व भूआकृतिक वर्गों में बांटा। द्वितीय स्तर पर मूल्यांकन अवस्था में इन दृश्यरूपों की विशेषताओं को उभारा, तृतीय स्तर

पर उनका विश्लेषण किया और अन्तिम स्तर पर उन्हें आकर्षित करने व संरक्षण की योजना प्रस्तुत की।

Singh, R.B., Anand, S. [2013)[22] ने अपने शोध पत्र में बताया कि भारत में भूपर्यटन की अपार सम्भावनाऐं हैं। भारत की भूवैज्ञानिक संरचना दक्खन ट्रेप, गौंडवाना व विन्ध्यन से जुड़ी है जो प्री.केम्ब्रियन, टर्शरी तथा प्लीस्टोसीन युगीन है। विविध युगों में निर्माण प्रक्रिया के कारण भारतीय भूभाग तीन स्पष्ट भौतिक इकाइयों– हिमालय तथा सम्बन्धित पर्वत क्रम, सिन्धु–गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदान, प्रायद्वीपीय पठार (तटीय भाग व द्वीप समूह सहित) में बंटा हुआ है। इस कारण भारत में भौगोलिक विविधता मिलती है और विभिन्न भूगर्भिक विशेषतायें, चट्टानें, जीवाश्म तथा प्राकृतिक दृश्यावलियाँ विकसित हुई हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। इन्होंने बताया कि बून्दी जिले में सतूर से ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट रेखा गुजरती है जो NNW-SSE प्रवृत्ति रखती है। जिससे यहां अनेक तिर्यक व सीढ़ीनुमा भ्रंश के उदाहरण मिलते हैं जो भूविज्ञान में रूचि रखने वालों को आकर्षित करते हैं। इस प्रकार इन्होंने स्पष्ट किया कि भौगोलिक विभिन्नतायें व विविधताओं के कारण भारत में भूपर्यटन एक व्यापक संभावना वाला पर्यटन है।

Swarna, K., Biswas, S.K., Harinarayana, T. [2013][23] ने अपने अध्ययन में गुजरात के कच्छ क्षेत्र में भूपर्यटन के विकास की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला। इन्होंने बताया कि कच्छ क्षेत्र अनेक भूगर्भिक हलचलों का क्षेत्र रहा है। इस क्षेत्र का निर्माण ट्रियासिक युग से जुरासिक युग तक हुये गौडवानालैण्ड के विखण्डन तथा बाद में मेसोजोइक, टर्शरी व क्वार्टनरी युग में हुये जमावों से हुआ है। अर्थात यह क्षेत्र विगत 200 मिलियन वर्षों से अधिक के विभिन्न भूगर्भिक उथल–पुथल और संरचनात्मक जमाव का क्षेत्र रहा है।

जिस कारण यह क्षेत्र विशिष्टीकृत भौगोलिक दशाओं से युक्त है। डायनासोर के दुर्लभ अवशेष, प्राचीन से लेकर नवीन जीवाश्मीय चट्टानें, प्राचीन नदी घाटियां, मग्न तट जमाव, उत्थान, भ्रंश जैसे विविध भौगोलिक प्रमाण इसके उदाहरण हैं। यह क्षेत्र एक प्रकार से विभिन्न भूगर्भिक हलचलों द्वारा निर्मित संरचनाओं के एक प्राकतिक संग्रहालय के रूप में है जो भूगोल में रूचि रखने वालों के लिए एक आकर्षण का केन्द्र है। इन्होंने इस क्षेत्र की भौगोलिक विशेषतायें विशिष्टतायें और समृद्धता के आधार पर दस भू स्टेशनों में बांटकर भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण 50 भूस्थलों का चयन कर उनकी विशेषताओं को प्रकट किया तथा इन सभी स्थलों को जोड़ते हुये एक भू कारिडोर के निर्माण व राष्ट्रीय भू उद्यान

की स्थापना पर बल दिया जिससे यह क्षेत्र भूपर्यटन विकास की दृष्टि से मील का पत्थर साबित हो सकता है।

Priyadarshi, N. [2014][24] ने अपने शोध पत्र में स्पष्ट किया कि भूपर्यटन का मुख्य उद्देश्य किसी क्षेत्र की भूवैज्ञानिक विशेषताओं को प्रकट कर उनकी जानकारी तथा उन स्थलरूपों के प्रति जागरूकता को बढाना है। इन्होंने झारखण्ड राज्य में छोटा नागपुर पठार की भूवैज्ञानिक व भौगोलिक विशेषता को प्रकट कर यहां भूपर्यटन के क्षेत्र में संभावनाओं को चिन्हित किया। इन्होंने बताया कि भूपर्यटन से यह स्पष्ट होता है कि एक स्थान दूसरे स्थान से किस प्रकार भिन्न है। साथ ही यह ज्ञान आधारित पर्यटन है जो किसी स्थान की भूआकृतिक व भूवैज्ञानिक विशेषताओं को स्पष्ट करने के साथ–साथ शोधकर्ताओं तथा भूगोल के विद्यार्थियों को विशेष रूप से आकर्षित करता है।

Ngwira, P.M. [2015][25] ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि भूपर्यटन एक नये प्रकार का पर्यटन है जो भविष्य में पर्यटकों को सर्वाधिक आकर्षित करेगा, इस रूप में यह संभावनाओं से परिपूर्ण पर्यटन है। यह भौगोलिक विविधता को प्रकट करने वाला पर्यटन है जो सामान्य पर्यटन के अतिरिक्त अपनी नई व विशिष्ट विशेषताओं के कारण पर्यटन की एक नयी विधा के रूप में विकसित हो रहा है। यह पृथ्वी के भूवैज्ञानिक इतिहास तथा विभिन्न प्रकार की भौगोलिक घटनाओं के साक्ष्य के रूप में जो कि भौगोलिक इतिहास की जानकारी देने वाले जागृत प्रमाण है, उन दृश्यावलियों की व्याख्या व विश्लेषण करता है। इनके अनुसार भूपर्यटन पांच प्रकार के आधारभूत सिद्धान्त रखता है –

यह भूविज्ञान आधारित है।

यह ज्ञान आधारित है।

यह पर्यटकों को सन्तुष्टि प्रदान करता है।

यह सतत है।

यह स्थानीय हितधारकों के लिए लाभप्रद है।

इन्होंने अपने अध्ययन में अफ्रीका में भूपर्यटन व भूउद्यान के माध्यम से स्पष्ट किया कि ये दोनों एक दूसरे से जुड़े हुये हैं और दोनों का विकास स्थानीय समुदाय के आर्थिक व सुस्थिर विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। जिन क्षेत्रों में भौगोलिक आकर्षण मिलते हैं उन्हें भू उद्यान के रूप में विकसित कर पर्यटन को बढ़ावा दिया जाये तो सतत विकास के लक्ष्य में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास होगा। इस प्रकार भूपर्यटन पर्यटन के समग्र विकास की परिकल्पना है।

Williams, F.M. [2016][26] ने अपनी पुस्तक में इथोपिया के भूवैज्ञानिक व भौगोलिक इतिहास को स्पष्ट किया और कहा कि यह देश विभिन्न कालों में हुई लम्बे समय की भूगर्भिक प्रक्रियाओं, अपरदन व निक्षेपण से बना है। जिसके कारण यहां विशिष्ट भौगोलिक स्थलरूप मिलते हैं। जो भूगोल में रूचि रखने वालों के लिए पर्याप्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। यदि इन विशिष्ट स्थलरूपों का नियोजित प्रचार प्रसार किया जाये तो यहां की भौगोलिक विशेषताओं के यह स्थलरूप आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

Ruban, D.a. [2017][27] ने अपने अध्ययन में बताया कि भौगोलिक विविधता विशिष्ट भूगर्भिक पर्यावरण में निर्मित स्थलाकृतियों को सम्मिलित करती है। जिसका उपयोग विज्ञान, शिक्षा व पर्यटन आदि में किया जाता है। इनका उपयोग किसी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में भी किया जा सकता है। इसके लिए इन विशिष्ट स्थलाकृतियों से युक्त क्षेत्र को भू उद्यान के रूप में विकसित किया जाना चाहिए जो कि प्रत्येक देश अपने अनुसार विशिष्ट लक्षणों के आधार पर कर सकता है। ऐसे क्षेत्र भूपर्यटन के रूप में पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं। इसलिये सतत् विकास संकल्पना की दृष्टि से भी भू उद्यानों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

Imtiaz, A.A. [2018][28] ने बताया कि भूपर्यटन पर्यटन का एक नया उभरता रूप है जिसमें किसी स्थल की भूवैज्ञानिक तथा भौगोलिक सुन्दरता व विशेषता को प्रकट किया जाता है। साथ ही उस क्षेत्र में इनके संरक्षण को भी प्रमुखता दी जाती है। वर्तमान में भूपर्यटन पर्यटकों को सर्वाधिक आकर्षित कर रहा है। जिससे न केवल आर्थिक विकास अपितु सांस्कृतिक समझ व सद्भाव भी बढ़ता है। इसलिये इस दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का चयन कर वहां भू उद्यान स्थापित किये जा सकते हैं। अपने अध्ययन में इन्होंने भूपर्यटन से होने वाले लाभ तथा इसके सम्मुख आने वाली चुनौतियों को भी स्पष्ट किया।

Suzuki D.A., Takgi, H. [2018][29] ने बताया कि भूस्थल भौगोलिक और भूवैज्ञानिक विशिष्टताओं वाले होते हैं। ऐसे स्थल शोध, शिक्षा के साथ–साथ पर्यटन व सतत विकास में भी सहायक होते हैं। ऐसे स्थलों की भूमिका का भूपर्यटन के सन्दर्भ में निरन्तर मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है। इनका अध्ययन भूपर्यटन के विकास में सतत योजना और प्रबन्धन के रूप में भूस्थलों के मूल्यांकन की नई योजना प्रस्तुत करता है।

Olson, K., Dowling, R. [2018][30] ने अपने अध्ययन में बताया कि भूपर्यटन द्वारा किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं व विशिष्टताओं को प्रकट कर पर्यटकों को आकर्षित किया जाता है। इन स्थलों को भूवैज्ञानिक रूप से भू विरासत स्थल के रूप में स्थापित कर

पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। इन्होंने भूपर्यटन से सामाजिक–सांस्कृतिक लाभ तथा भूपर्यटन की आस्ट्रेलिया में सम्भावना पर प्रकाश डाला तथा यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर में शामिल Uluru-Kota-Tjuta National Park के भौगोलिक स्वरूपों को उभार कर उसमें प्रबन्धन योजना लागू कर आस्ट्रेलिया में भूपर्यटन विकास के साथ–साथ सतत् विकास की संकल्पना पर भी प्रकाश डाला।

<u>1.10 अध्याय योजना (Chapter Scheme)</u> :–

शोध कार्य को व्यवस्थित, क्रमबद्ध व योजनाबद्ध करने के उद्देश्य से सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध 6 अध्याय में विभाजित है जिसमें अध्यायवार विषय इस प्रकार हैं :–

अध्याय 1 → परिचय, पर्यटन का महत्व, पर्यटन के प्रकार, भू पर्यटन, भारत में भू पर्यटन, अध्ययन क्षेत्र का चयन, उद्देश्य, शोध विधि, साहित्य समीक्षा।

अध्याय 2 → अध्ययन क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रशासनिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक पृष्ठभूमि –अवस्थिति, उच्चावच व भूआकृति, अपवाह तन्त्र, जलवायु, वनस्पति, मिट्टियाँ, खनिज, परिवहन, मानव संसाधन।

अध्याय 3 → भूपर्यटन अवधारणा, भूपर्यटन की उत्पत्ति एवं विकास, भूपर्यटन की परिभाषाएँ, भूपर्यटन का भौगोलिक दृष्टिकोण, भूपर्यटन के तत्व, भूपर्यटन सिद्धान्त, भूपर्यटन का अन्य पर्यटन से सम्बन्ध

अध्याय 4 → सतत विकास अवधारणा, सतत पर्यटन विकास, सतत पर्यटन विकास के आयाम, सतत पर्यटन विकास के सिद्धान्त, बून्दी जिले में सतत भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना

अध्याय 5 → क्षेत्र अध्ययन के रूप में चयनित प्रमुख भूपर्यटन स्थलों का अध्ययन ।

अध्याय 6 → सारांश, समस्यायें एवं सुझाव।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ (Reference)</u> :–

1	Kamra, K.K.	1998	Domestic Tourism in India Published January 1st 1998 by Indus 8173870780 (ISBN13: 9788173870781)
2	Hunziker, Krapf	1942	Grundriss Der Allgemeinen Fremdenverkehrslehre
3	Zivaddin	1982	Joriace article on tourism and geography in the International Travel Recreation Journal No.3 pp.23
4	विश्व पर्यटन संगठन		
5	संयुक्त राष्ट्र संघ	1994	
6	Hose.T.	1995	"Selling the story of Britain's stone Environmental Interpretation" Vol. 10, No. 2, 1995, pp. 16-17.
7	Buckley, R.	2003	"Environmental inputs and outputs in Ecotourism: Geotourism with a positive triple line."Journal of Ecotourism 2(1) PP 76-82
8	Joycee, E.B.	2006	Geomorphological sites and the new geotourism in Australia. Geological Society of

			Australia,Melbourne
9	Reynard, E.	2007	Scientific Research and Tourist Promotion of Geomorphological Heritage. Geogr Fis Dinam Quat 31:225–230
10	Robinson, A.M.	2008	Geotourism: who is a geotourist? Leisure Solutions, Strawberry Hills.
11	Robinson, A.M., David, Roots	2008	Marketing Geotourism sustainablity. Global Geotourism Conference,Fremantle.WA 17-20 August2008
12	Schutte, I.C.	2009	"A strategic management plan for the sustainable development of geotourism in S. Africa" http://hdl.handle.net/10394/2252
13	Mao, I., Robinson, A.M., Dowling, R. Dowling, R	2009	"Potential Geotourist : An Australian case study" Journal of Tourism X(1):71-80(2009)
14	Dowling, R.K.	2010	"Geotourism's Global Growth" Geoheritage 3(1):1-13
15	Predrag, D.,	2010	"Inventry of Geoheritage site – The

	Mirela, D.		base of Geotourism Development in Montenegro” Geographica Pannonica,Vol.14,issue4,126-132
16	Anna, S., Zdristaw, J.	2010	Geoheritage and Geotourism Potential of the strzelin Hills” [Poland] Geographica Pannonica,Vol.14,issue4,118-125
17	Bhatia, A.K	2011	International Tourism Management Plan. Sterling Publishers Pvt. Ltd, 2006
18	Rodrigues, M.L. Machado, C.R., Freire, E.	2011	Geotourism routes in Urban areas : A preliminary approach to the Lisbon Geoheritage survey. Geojournal of Tourism and Geosites, Year IV,No.2,Vol.8,pp281-294
19	Hazare, P.	2012	“Tourism Development in Raigarh District : A Geographical Analysis.” Ph.D Thesis http://hdl.handle.net/10603/6703
20	Ollier, C.	2012	“Problems of Geotourism and Geodiversity”
21	Martin, J.F., Carcia, J.C., Urqui, L.C.	2012	“Geoheritage Information for Geoconservation and Geotourism through the categorization of Landforms in a Karstic Landscape: A case study

			from Covalagua and Las Tuerces Palencia, spain.” *Geoheritage* **volume 4**, pages93–108(2012)
22	Singh, R.B., Anand, S.	2013	"Geodiversity, Geographical heritage and geoparks in India." International journal of geoheritage, published by International Geographical Union.
23	Swarna, K., Biswas, S.K., Harinarayana, T.	2013	"Development of Geotourism in kutch region, Gujarat, India: An Innovative Approach." Journal of Environmental Protection,2013,4,1360-1372
24	Priyadarshi, N.	2014	"Importance of geotourism with special reference to Jharkhand state of India" Environment and Geology
25	P.M.Ngwira	2015	"Geotourism and Geoparks: Africa's current prospectus for sustainable rural development and poverty alleviation." from Geoheritage to Geopark case studies from Africa and beyond, Springer International Publishing, Switzerland
26	Williams, F.M. F.M.Geographic	2016	Geotourism in Africa and the Ethiopian Rift Valley. The Geotourism Charter, Mission

27	Ruban, D.A.	2017	Geodiversity as a precious national resource : A note on the role of Geoparks. Resource Policy,53,103-108
28	Imthiaz, A.A.	2018	Geotourism and Geoparks – A Prospect for Sustainable Tourism Development.
29	Suzuki D.A., Takgi, H	2018	Evalution of Geosites for sustainable planning and management in Geotourism. Geoheritage,2018,Vol.10,Issue1,pp123-135
30	Olson, K., Dowling R.	2018	Geotourism and Cultural Heritage. Geoconservation Research,Vol.1,Issue1,pp37-41

द्वितीय अध्याय

ऐतिहासिक व भौगोलिक पृष्ठभूमि तथा मानव संसाधन

2.1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background) :–

राजस्थान के द.पू. में स्थित आधुनिक बून्दी जिला अपने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक वैभव से ''छोटी काशी'' अथवा ''द्वितीय काशी'' के नाम से भी जाना जाता है। बून्दी जिला समृद्ध एवं गौरवशाली अतीत का उदाहरण हैं। यहां आदिकाल से ही मानव निवास करता आया है। यहां के पठारी भागों के नालों में तथा पहाड़ी भागों की गुफाओं में पाषाणकालीन मानव निवास के प्रमाण उनके द्वारा प्रयुक्त विभिन्न प्रस्तर उपकरणों तथा शैलभित्ति चित्रों के रूप में मिले हैं। इसके साथ ही गुप्तकालीन मन्दिरों का मिलना यहाँ की प्राचीन सभ्यता को दर्शाता है। तब से लेकर आज तक बून्दी की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक यात्रा अद्‌भुत रही है।

वर्तमान बून्दी की स्थापना प्राचीनकाल में पहाड़ियों की तलहटी में संकरी घाटी जिसे ''नाला'' कहा जाता था, में मीणा सरदार बून्दा ने की थी, जिनके नाम पर इसको बून्दी कहा जाता है।[1] मीणा गणराज्य के अन्तिम मीणा सरदार जैता मीणा को शक्ति व युक्ति से चौहान वंश की एक शाखा हाड़ा वंश के बम्बावदा नरेश हाड़ा देवसिंह ने 24 जून, 1242 ई. को परास्त कर अपने अधिकार में लिया तथा बून्दी राज्य की स्थापना की। उस समय बून्दी मात्र 300 घरों की एक छोटी बस्ती थी तथा जिसके अधीन केवल बारह ग्राम थे।[2] जिसे समय के साथ–साथ विभिन्न हाड़ा शासकों ने वर्तमान कोटा, बाराँ, सवाई माधोपुर, झालावाड़ तक विस्तारित कर एक विशाल राज्य की स्थापना की जिसे ''हाड़ौती'' के नाम से जाना गया और बून्दी इस विशाल राज्य की राजधानी रही।

लगभग 700 वर्षों तक हाड़ा शासकों की कर्मभूमि रहा बून्दी जिला गौरवमयी इतिहास से वीरभूमि के नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। हाड़ी रानी सलेह कंवर के त्याग तथा वीर कुम्भा के बलिदान से यह भूमि इतिहास के पृष्ठों पर सुनहरे अक्षरों से अंकित है। यहां वीरतापूर्ण इतिहास, साहित्यिक उपलब्धियां तथा सांस्कृतिक विरासत की त्रिवेणी पायी जाती है।

बून्दी राज्य के इतिहास को अध्ययन की दृष्टि से तीन प्रमुख कालों में विभक्त किया जा सकता है।

2.1.1	स्थापना एवं विकास काल	–	1242 ई. से 1818 ई. तक
2.1.2	ब्रिटिश प्रभुत्व काल	–	1818 ई. से 1947 ई. तक
2.1.3	स्वतन्त्रता पश्चात् काल	–	1947 ई. से वर्तमान तक

2.1.1 स्थापना एवं विकास काल (1242 ई. से 1818 ई. तक) :–

राव देवसिंह (देवा) द्वारा सन् 1242 ई. में अन्तिम मीणा सरदार जैता को परास्त कर बून्दी राज्य की स्थापना कर हाड़ा वंश की नींव रखी गई। यहां के शासक ''राव'' उपाधि से शासन किया करते थे। राव देवा 1242 ई. से 1244 ई तक बून्दी अधिपति रहे। इनके बाद राव समर सिंह (1244 ई. –1275 ई.), राव नरपाल (1275 ई.–1285 ई.), राव हम्मीर (1285 ई –1336 ई.), राव बर सिंह (1336 ई.–1393 ई.) ने शासन किया। राव बर सिंह के समय ही सम्वत् 1411(सन् 1354 ई.) में बून्दी के प्रसिद्ध दुर्ग तारागढ़ की नींव रखी गई।[3]

इनके पश्चात् राव बेरीसाल (1393 ई.–1433 ई.), राव सुभाण्ड देव (1433 ई. –1456 ई.), राव नारायण दास (1503 ई. –1527 ई.), राव सूरजमल (1527 ई. –1537 ई.), राव सुरताण (1537 ई. –1554 ई.), राव अर्जुन सिंह (1554 ई. –1554 ई.) ने शासन किया।

1554 ई. से 1585 ई. तक राव सुरजन बून्दी महाराव रहे। जिनके समय में रणथम्भौर भी बून्दी राज्य में शामिल था। इन्हीं पर कवि चन्द्रशेखर द्वारा ''सुरजन चरित'' लिखा गया।[4] इनके समय ही 1559 ई. में अकबर के रणथम्भौर घेरे के समय मुगलों से सन्धि हुई। इस सन्धि के बाद बून्दी शासक महाराव कहलाये। इनके बाद महाराव भोज (1585 ई. –1607 ई.), महाराव रतन सिंह (1607 ई. –1631 ई.), महाराव शत्रुशाल (1631 ई. –1658 ई.), महाराव भाव सिंह (1658 ई. –1681 ई.), महाराव अनिरूद्ध सिंह (1681 ई. –1695 ई.), महाराव बुद्धसिंह (1695 ई. –1738 ई.), महाराव उम्मेद सिंह (1741 ई. –1770 ई.) ने शासन किया। महाराव उम्मेद सिंह के समय बून्दी चित्रशैली एक पृथक पहचान रखते हुये प्रसिद्ध हुई। इनके बाद महाराव अजीत सिंह (1770 ई. –1773 ई.), महाराव विष्णु सिंह (1773 ई. –1821 ई), ने बून्दी राज्य पर शासन किया। महाराव विष्णु सिंह के समय 1818 ई. में बून्दी राज्य व अंग्रेजों के बीच सन्धि होने से बून्दी राज्य अंग्रेज सरकार के अधीन हो गया।[5]

2.1.2 ब्रिटिश प्रभुत्व काल (1818 ई – 1947 ई. तक) :–

महाराव विष्णु सिंह द्वारा सन् 1818 ई. में अंग्रेजों से सन्धि कर लेने के बाद बून्दी राज्य अंग्रेजी सत्ता के अधीन हो गया जो स्वतन्त्रता प्राप्ति समय तक रहा। इस समयावधि में महाराव राजा रामसिंह (1821 ई. –1889 ई.), महाराव रघुवीर सिंह (1889 ई. –1927 ई.), महाराव ईश्वरी सिंह (1927 ई. –1945 ई.), महाराव बहादुर सिंह (1945 ई. –1948 ई.) ने बून्दी पर शासन किया।

महाराव राजा रामसिंह का शासनकाल (1821 ई. –1889 ई.) बून्दी राज्य के इतिहास में ''स्वर्णयुग'' के नाम से जाना जाता है।[6] 'इस समय बून्दी राज्य में भूमि सुधार, सामाजिक सुधार, आय वृद्धि के प्रयास तथा साहित्य रचना में अभूतपूर्व प्रगति हुई। महाकवि सूर्यमल मिश्रण (1815 ई. –1868 ई.), प. गंगा सहाय, मुरारीदान मिश्रण जैसे महान कवि व साहित्यकार इन्हीं के शासनकाल में रहे।[7] इस समय ब्रिटिश सत्ता के कारण आधुनिकीकरण का प्रभाव भी बून्दी राज्य में देखने को मिला। यहां भी राज्य प्रशासन प्राचीन व्यवस्था से आधुनिक युगीन व्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहा था। राजकीय सेवाओं के नये नियम बनाये गये, पुलिस विभाग का गठन हुआ। सेना व न्याय सेवाओं में भी आधुनीकरण के प्रयास प्रारम्भ हुए। इन सभी परिवर्तनों का प्रभाव बून्दी राज्याव्यवस्था तथा शासन सहित आम जनजीवन पर पड़ रहा था।

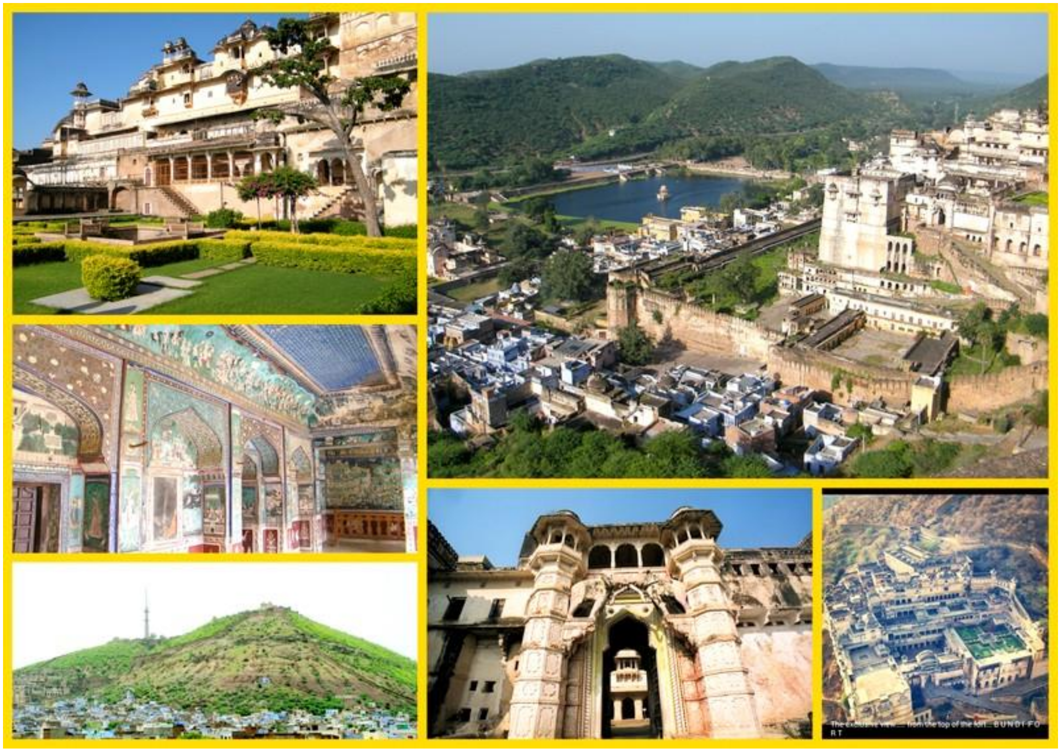

जिला बून्दी : ऐतिहासिक विरासत

छायाचित्र संख्या 2.1

जिला बून्दी : ऐतिहासिक विरासत

छायाचित्र संख्या 2.2

जिला बून्दी : ऐतिहासिक विरासत

छायाचित्र संख्या 2.3

2.1.3 स्वतन्त्रता पश्चात् काल (1947 ई. से वर्तमान तक) :–

ब्रिटिश साम्राज्य के समय राजस्थान को प्रशासनिक दृष्टि से चार एजेन्सियों में बांट रखा था –

1. मेवाड़ व द.राजपूताना एजेन्सी
2. प. राजपूताना स्टेट एजेन्सी
3. जयपुर एजेन्सी
4. राजपूताना स्टेट एजेन्सी

इस समय बून्दी राजपूताना स्टेट एजेन्सी में शामिल था। 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता पश्चात् रियासतों के एकीकरण के लिए तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में रियासती विभाग की स्थापना की गई जिसके अन्तर्गत रियासतों का एकीकरण कर उन्हें भारत संघ में विलय का प्रयास किया गया। इसी क्रम में राजस्थान की विभिन्न रियासतों के एकीकरण का प्रथम प्रयास 17 मार्च, 1948 ई. को मत्स्य संघ स्थापना से हुआ। इसके पश्चात् 25 मार्च, 1948 ई. को पूर्वी राजस्थान संघ का गठन किया गया जिसमें बून्दी रियासत, अन्य 8 रियासतों – कोटा, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, प्रतापगढ़, शाहपुरा, टोंक सहित शामिल थी। यहीं से राजस्थान निर्माण का प्रथम दृढ़ प्रयास माना जाता है, जो आगे विभिन्न एकीकरण के चरणों से होता हुआ 1 नवम्बर, 1956 को वर्तमान स्वरूप में आया।

2.2 प्रशासनिक पृष्ठभूमि (Administrative Background) :–

बून्दी को राजस्थान निर्माण के समय से ही स्वतन्त्र व पूर्ण जिले का दर्जा दिया गया तथा संभागीय व्यवस्था में इसे कोटा संभाग में रखा गया। जिले में सफल प्रशासनिक संचालन तथा विभिन्न विकास योजनाओं के सुचारू व प्रभावी क्रियान्वयन और सफल व नियंत्रित कानून व्यवस्था की दृष्टि से जिले को विभिन्न प्रशासनिक इकाईयों में बांटा गया है जोकि तालिका सं. 2.1 से स्पष्ट है।

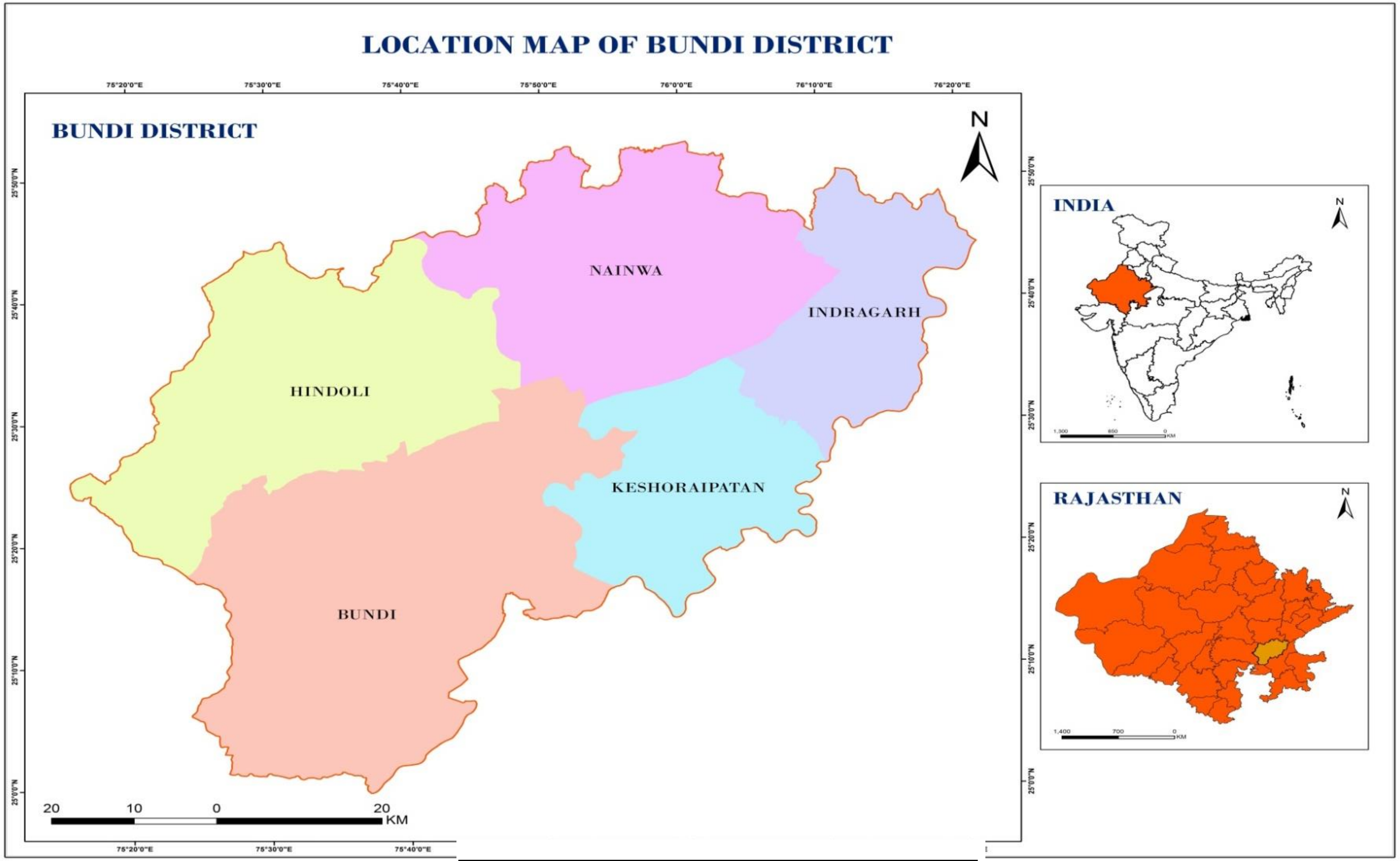

जिला बून्दी : अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र सं. 2.1

तालिका सं. 2.1

जिला बून्दी : प्रशासनिक संरचना

क्र.सं.	नाम	संख्या	विवरण
1.	नगर परिषद्	01	बून्दी
2.	नगर पालिका	05	नैनवां, लाखेरी, के0पाटन, कापरेन, इन्द्रगढ़, सुमेरगंजमण्डी
3.	नगर	06	बून्दी, नैनवां, लाखेरी, के0पाटन, कापरेन, इन्द्रगढ़
4.	उपखण्ड	06	बून्दी, हिण्डोली, नैनवां, के0पाटन, इन्द्रगढ़, तालेड़ा
5	तहसील	06	बून्दी, हिण्डोली, नैनवां, के0पाटन, इन्द्रगढ़, तालेड़ा
6	पंचायत समिति	05	बून्दी, हिण्डोली, नैनवां, के0पाटन, तालेड़ा
7	ग्राम पंचायत	183	
8	कुल आबाद राजस्व ग्राम	885	
9	कुल गैर आबाद राजस्व ग्राम	06	
10	पटवार मण्डल	237	

तालिका सं. 2.2

लोकसभा संसदीय क्षेत्र

क्र.सं.	**लोकसभा क्षेत्र**	**सम्मिलित उपखण्ड**
1.	कोटा–बून्दी	बून्दी, के0पाटन, तालेड़ा, इन्द्रगढ़
2.	भीलवाड़ा	हिण्डोली, नैनवां

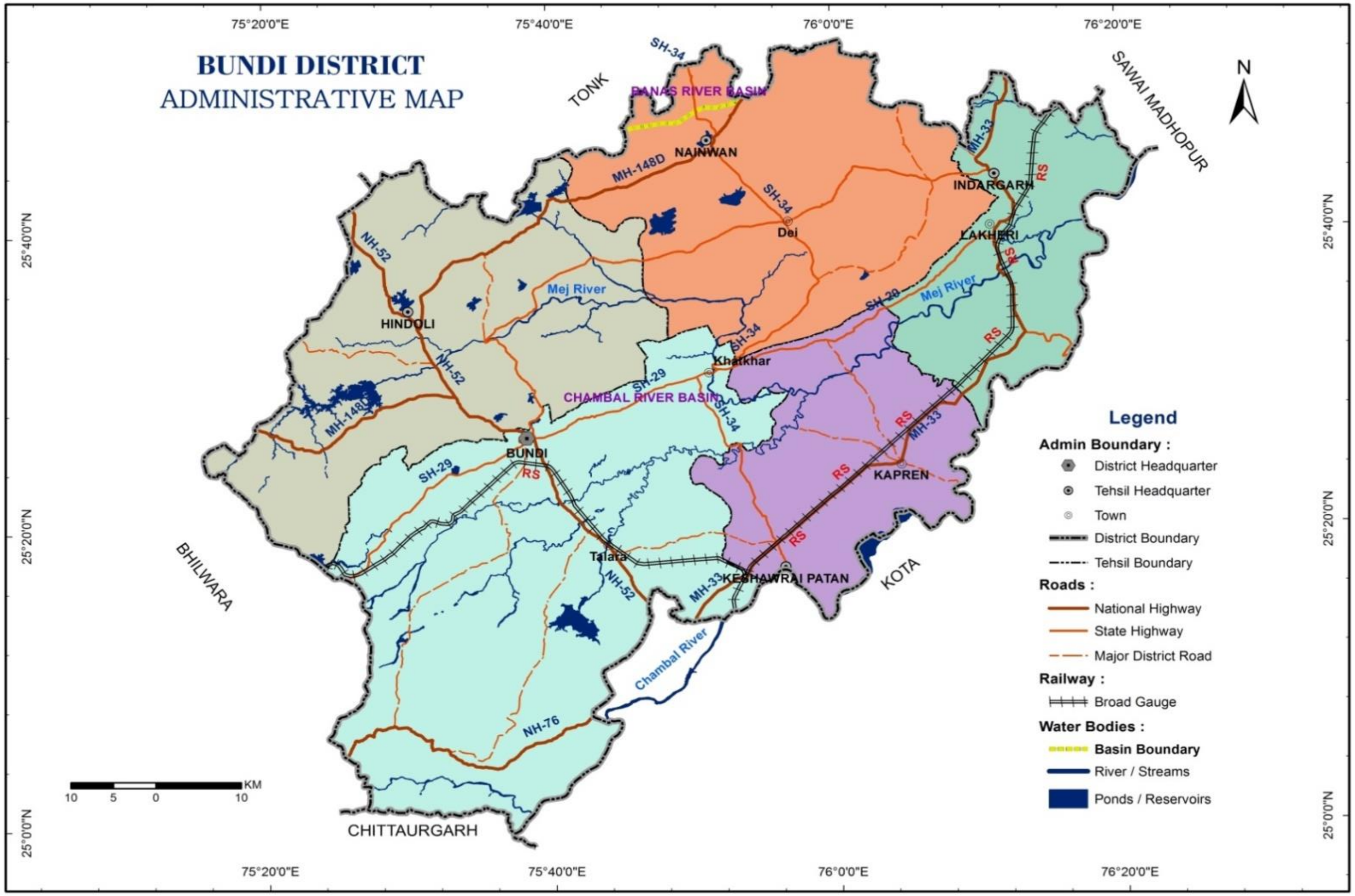

जिला बून्दी : प्रशासनिक संरचना

मानचित्र सं. 2.2

तालिका सं. 2.3
विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र

क्र.सं.	विधानसभा	सम्मिलित उपखण्ड
1.	बून्दी	बून्दी, तालेड़ा
2.	के0पाटन	के0पाटन, इन्द्रगढ़
3.	हिण्डोली	हिण्डोली, नैनवां

स्त्रोत : आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग रिपोर्ट 2016

2.3 भौगोलिक पृष्ठभूमि (Geographical Background) :–

बून्दी जिले की भौगोलिक पृष्ठभूमि को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है :–

2.3.1 अवस्थिति – बून्दी जिला राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में $24^{0}59'11''$ उ.अक्षांश से $25^{0}33'11''$ उ अंक्षाश तथा $75^{0}19'30''$ पू. देशान्तर से $76^{0}19'30''$ पू.देशान्तर के मध्य विषमकोण चतुर्भुजाकार आकृति में स्थित है। यह राजस्थान के द.पू. पठार, जिसे हाड़ौती पठार भी कहा जाता है, में 5850.6 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर विस्तृत है। जिले का पूर्व से पश्चिम की ओर विस्तार 110 कि.मी. है तथा उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तार लगभग 104 कि.मी. है।

बून्दी जिले के उत्तर में टोंक जिला, पश्चिम में भीलवाड़ा जिला, दक्षिण पश्चिम में चित्तौड़गढ़ जिला तथा दक्षिणी सीमा पर कोटा जिला स्थित है। चम्बल नदी इसकी पूर्वी तथा दक्षिणी सीमा बनाते हुए कोटा जिले से इसे अलग करती है। (मानचित्र सं.2.1)

2.3.2 उच्चावच व भूआकृति –

जिले का भूआकृतिक स्वरूप अत्यन्त विविधतापूर्ण है। यहां का धरातल पहाड़ी, पठारी तथा मैदानी भाग को समाहित किये हुये है। जिले का दक्षिणी–पश्चिमी व पश्चिमी भाग पठारी है, जिसे ऊपरमाल का पठार कहा जाता है। दक्षिण–पूर्वी भाग मैदानी है, जहां उपजाऊ काली व दोमट मिट्टी का जमाव मिलता है। जिले का उत्तरी–पश्चिमी भूभाग अधिकांश रूप में पर्वतीय है। यहां का भूआकृतिक स्वरूप मूलतः अरावली व विन्ध्यन क्रम में मिलकर बना है। इस क्षेत्र की प्रमुख उच्चावचीय विशेषता यह है कि यहां उत्तर पूर्व से दक्षिण–पश्चिम दिशा में अरावली व विन्ध्यन क्रम के रूप में दोहरी पर्वत श्रेणियों का पाया जाना है, जो जिले के लगभग मध्य से गुजरती हुई इसे दो बराबर भागों में बांटती है।

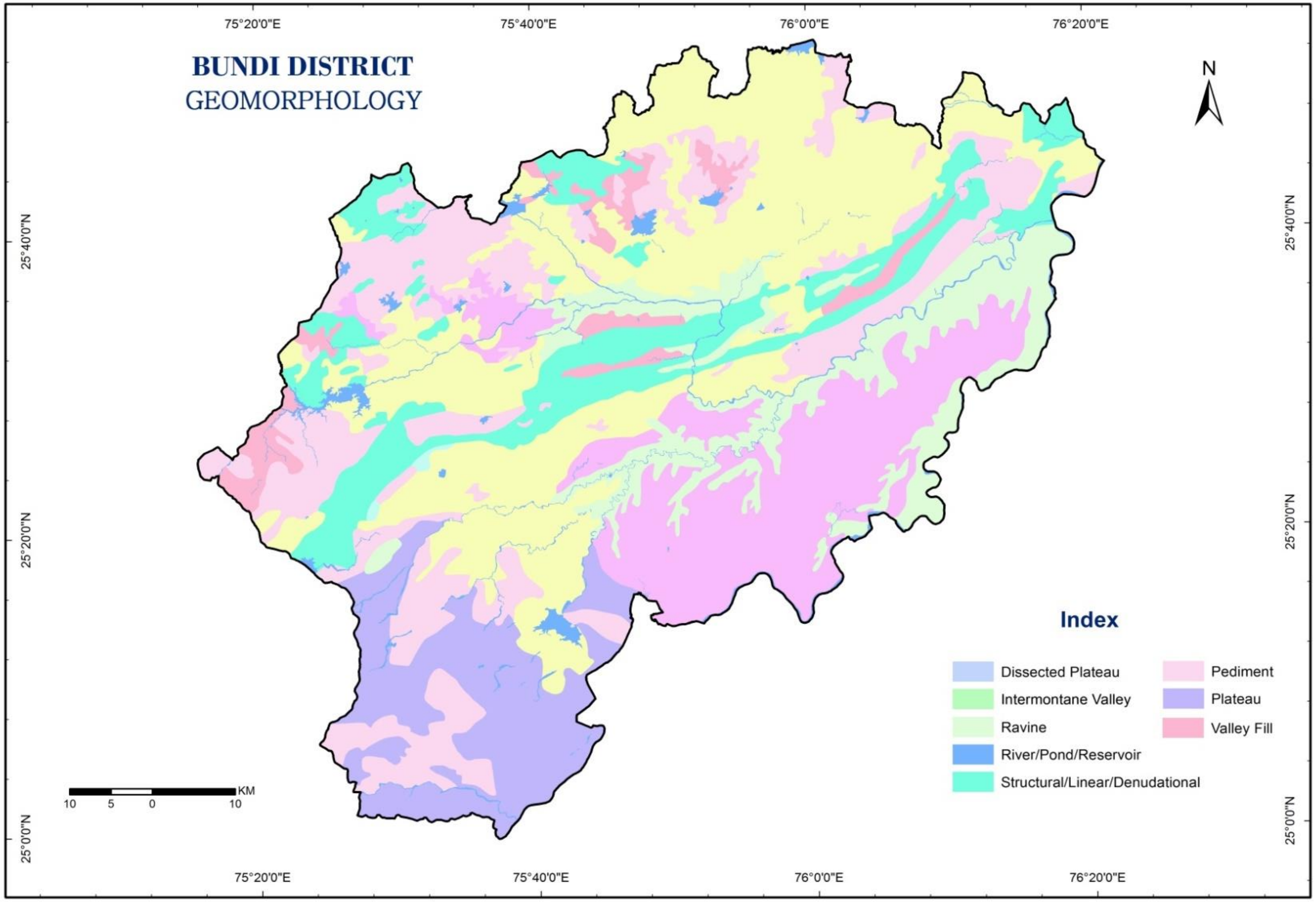

जिला बून्दी : भूआकृति

मानचित्र सं. 2.3

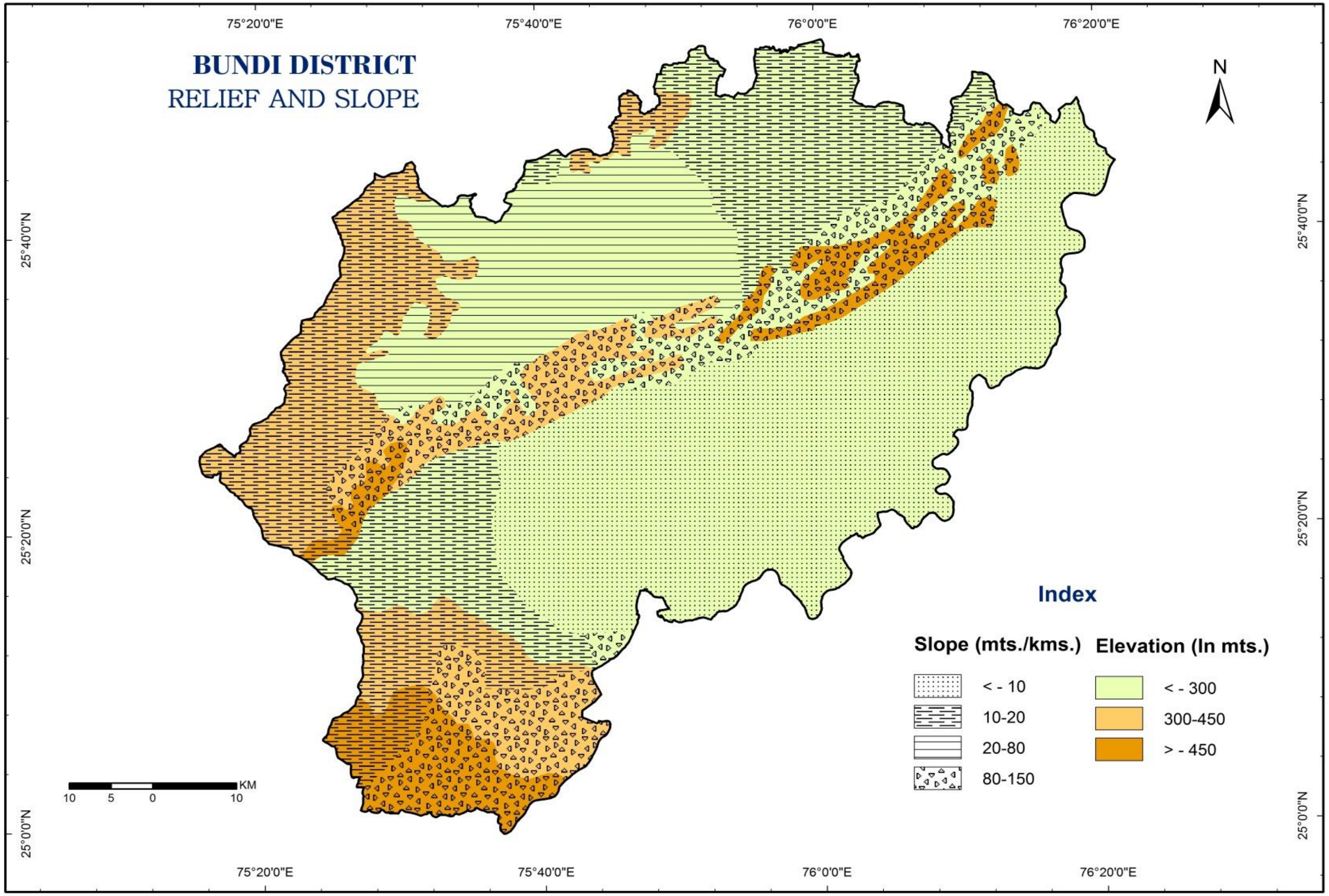

जिला बून्दी : उच्चावच व ढाल

मानचित्र स. 2.4

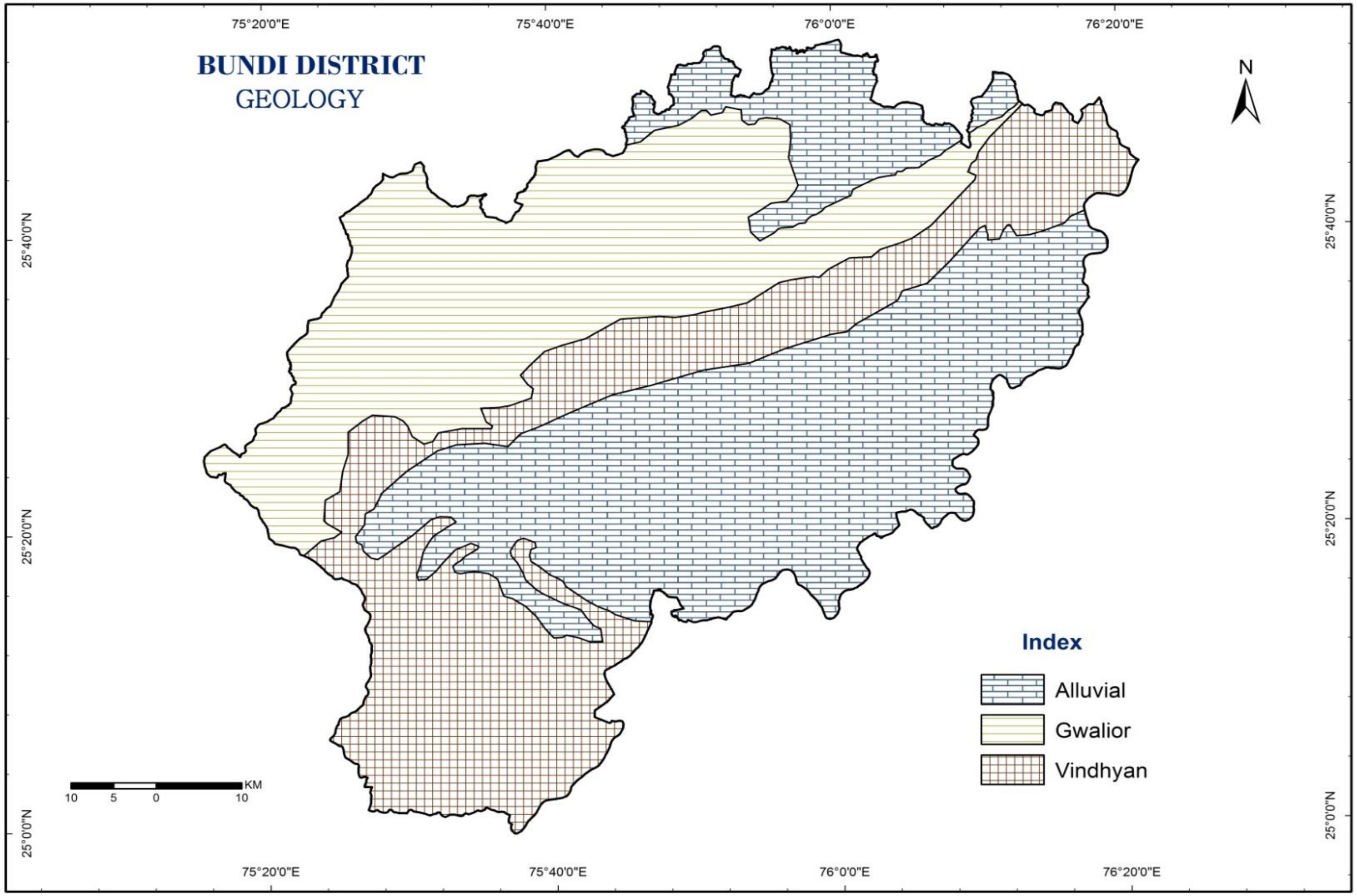

जिला बून्दी : भूगर्भिक

मानचित्र स. 2.5

इस श्रृंखला का प्रारम्भ हिण्डोली तहसील से होकर इन्द्रगढ़ तहसील तक लगभग 101 कि. मी. की लम्बाई में है। बून्दी शहर से 10 कि.मी. दूर सतूर ग्राम से ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट गुजरती है, जो अरावली व विन्ध्यन क्रम को अलग करती है। इन पर्वत श्रेणियों की ऊँचाई समुद्र तल से 300 से 1800 फीट के मध्य है। इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी जिला मुख्यालय से 10किमी. दूर पश्चिम में सतूर है जो 1793 फीट ऊँची है। अन्य ऊँची चोटियों में तलवास 1662 फीट, लाखेरी 1648 फीट, बून्दी 1626 फीट है।

इस श्रृंखला के दक्षिणी सिरे एकदम खड़े ढाल के रूप में है जो चार दर्रों द्वारा प्रवेशित है – 1. बून्दी शहर के निकट 2. बून्दी शहर से 6 किमी. दूर जयनिवास के निकट 3. रामगढ़ व खटकड़ के मध्य 3. उत्तरपूर्व में लाखेरी के निकट।

जिले का सामान्य ढाल उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व है। इस प्रकार स्पष्ट है कि बून्दी जिला धरातलीय विविधता से परिपूर्ण है।[8]

2.3.3 अपवाह तन्त्र –

बून्दी जिले का अपवाह तन्त्र मुख्य रूप से चम्बल, मेज, मांगली, घोड़ा पछाड़, कुराल (तालेड़ा) आदि नदियों से मिलकर बना है। जिले का सामान्य ढाल उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व होने के कारण यहां प्रवाहित नदियाँ उत्तर पश्चिम दिशा से प्रवेश करती है। चम्बल इस जिले के अपवाह तन्त्र की सर्वप्रमुख नदी है। मानचित्र क्रमांक 2.6 में दर्शित जिले के अपवाह तन्त्र के विश्लेषण से स्पष्ट है कि चम्बल नदी ने विभिन्न सहायक व उप सहायक नदियों के साथ मिलकर इस जिले के अपवाह तन्त्र का निर्माण किया है। चम्बल को छोड़कर शेष नदियाँ मौसमी हैं। जिले की प्रमुख नदियाँ इस प्रकार हैं :–

1. **चम्बल नदी –** यद्यपि यह नदी बून्दी जिले में प्रवेश नहीं करती परन्तु यह दक्षिण व पूर्व की ओर कोटा व बून्दी जिले के मध्य सीमा बनाती हुई बहती है। यहाँ इसकी चौड़ाई 183 मी. से 366 मी. तक है। कई स्थानों पर विशेषकर केशोरायपाटन के समीप इसकी गहराई अधिक है। जिले में इसकी प्रमुख सहायक नदी मेज है।
2. **मेज नदीः–** इस नदी का उद्‌गम भीलवाड़ा जिले में श्यामपुरा के निकट समुद्र तल से 517 मी. की ऊँचाई से होता है। यह 21 कि.मी. उत्तर की ओर बहती हुई नेगढ़ गांव के समीप बून्दी जिले में प्रवेश करती है। यह बून्दी जिले की सर्वप्रमुख नदी है। जो यहाँ से जिले के मध्य से लगभग 136 कि.मी. लम्बाई में बहती हुई उत्तर पूर्व में सियानपुर गांव के निकट चम्बल से मिल जाती है। (छायाचित्र सं. 2.4) यह नदी हिण्डोली तहसील में 56 किमी तथा बून्दी व केशोरायपाटन तहसील में 80 किमी. की लम्बाई में

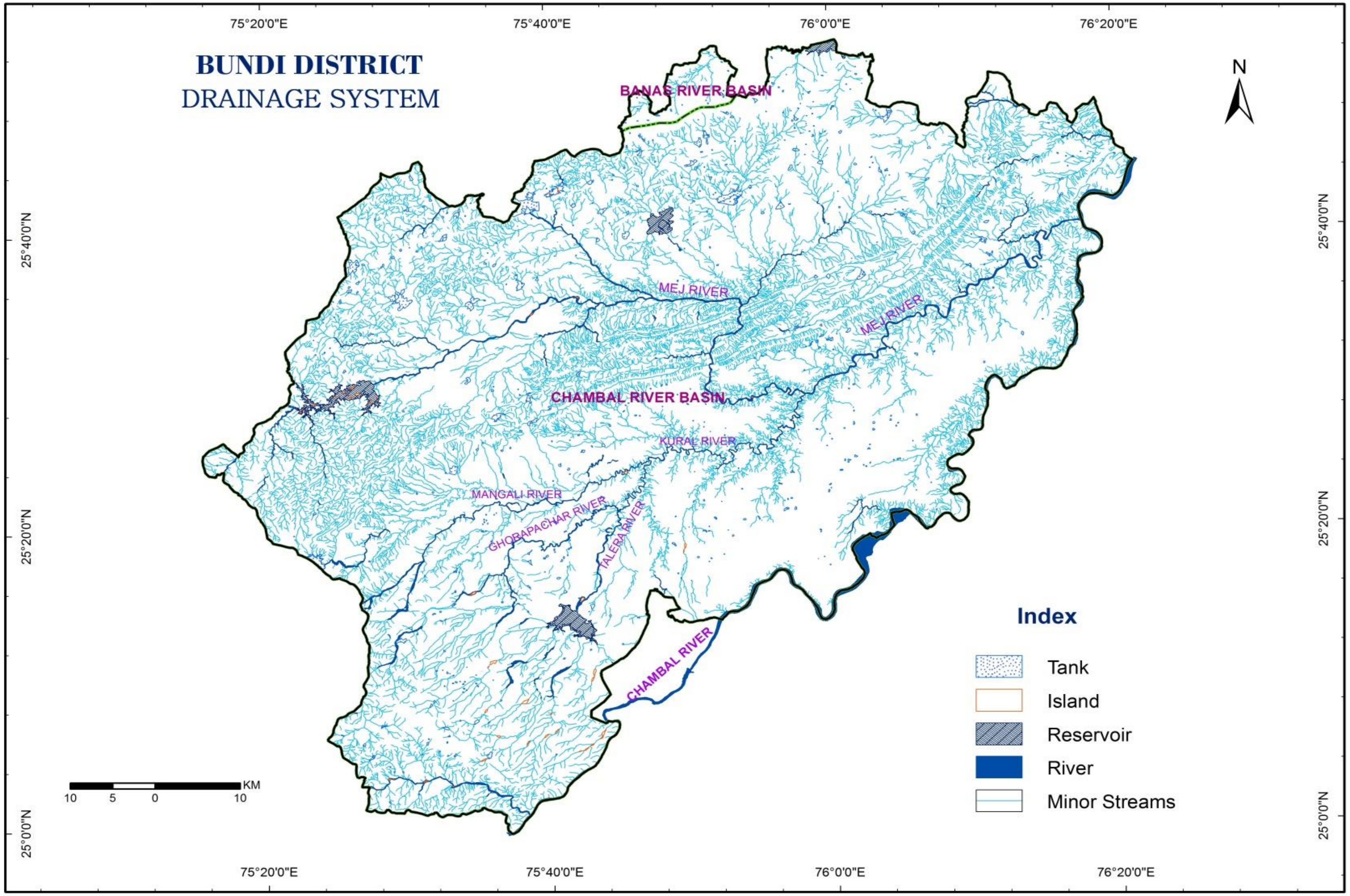

जिला बून्दी : अपवाह तन्त्र

मानचित्र स. 2.6

जिला बून्दी : चम्बल नदी व मेज नदी संगम

छायाचित्र सं. 2.4

बहती है। इस पर जिला मुख्यालय से 35 किमी. दूर गुढ़ा ग्राम के पास सिंचाई के लिए एक मध्यम बांध का निर्माण किया गया है जो कि राजस्थान का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध है। यह नदी खटकड़ कस्बे के निकट S आकार में बहती हुई विन्ध्यन कगार को काटकर गार्ज का निर्माण करती है। इसकी मुख्य सहायक नदियाँ बेजाण, कुराल, मांगली है।

3. **<u>मांगली नदी</u>** – यह मेज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शाखा है जो ऊपरमाल के पठार से निकलती है तथा 50 कि.मी. की लम्बाई में बहती हुई भैंसखेड़ा गांव के निकट यह मेज नदी से मिल जाती है। इस नदी ने ऊपरमाल पठार को कई स्थानों पर काटकर गॉर्ज बनाये है। भीमलत सर्वाधिक प्रसिद्ध गॉर्ज है।
4. **<u>घोड़ा पछाड़ नदी</u>** – मांगली की सहायक नदी घोड़ा पछाड़ बिजौलियाँ झील से निकलकर बून्दी तहसील में उत्तर–पूर्व दिशा में बहती हुई संगवाड़ा ग्राम के समीप मांगली से मिल जाती है। यह नदी अपने तीव्र वेग के लिए प्रसिद्ध है। इस पर बून्दी तहसील में गरड़दा के निकट एक बांध बनाया जा रहा है।
5. **<u>कुराल नदी –</u>** ऊपरमाल के पठार से इसका उद्‌गम होता है। इसमें तालेड़ा के समीप तीन छोटी धारायें पलका, धनेश्वर, डाबी मिलती है। वहां पर ''हाड़ौती का गोवा'' नाम से प्रसिद्ध बरधा बांध बना हुआ है। यह पीपल्दा के निकट घोड़ा पछाड़ से मिल जाती है।
6. **<u>इरू नदीः–</u>** इस धारा का स्त्रोत चित्तौड़गढ़ जिले की भैंसरोड़गढ़ तहसील में है। जहां यह पठारी भागों के जंगलों से बहती हुई डाबी के निकट गरड़िया पर चम्बल से मिल जाती है।

इसके अतिरिक्त लहरदार धरातलीय स्थलाकृति और पहाड़ी, पठारी संरचना होने के कारण यहां जलाशयों (तालाब, झील) के लिए भी अनुकूल परिस्थितियां हैं। जिनमें जैतसागर (बून्दी), नवल सागर (बून्दी), कनक सागर (दुगारी), रामसागर (हिण्डोली), फूलसागर (बून्दी) प्रमुख है।

<u>2.3.4 जलवायु –</u> जिले की जलवायु साधारणतः उप आर्द्र उष्ण कटिबन्धीय है जो दक्षिण–पश्चिम मानसून के समय को छोड़कर साधारणतः शुष्क है।[10] जिले की जलवायु इस क्षेत्र की अवस्थिति, स्थलाकृति से प्रभावित होती है। जिससे यहां मौसमी विभिन्नतायें देखने को मिलती है यहां की जलवायु का अध्ययन वर्ष को तीन ऋतुओं में बांटकर किया गया है

1. ग्रीष्म ऋतु (मार्च माह से मध्य जून माह)
2. वर्षा ऋतु (मध्य जून माह से सितम्बर माह)

3. शीत ऋतु (अक्टूबर माह से फरवरी माह)

1. **<u>ग्रीष्म ऋतु –</u>** इसका समय मार्च से मध्य जून तक माना जाता है। इस समय सूर्य की उत्तरायण स्थिति के कारण बून्दी के कर्क रेखा के निकट होने से तापमान अधिक होने लगते हैं। मई सबसे गर्म महीना है जहां अधिकतम औसत तापमान 42^0 सेन्टीग्रेड तथा न्यूनतम औसत तापमान 27^0 सेन्टीग्रेड रहता है। जून में भी लगभग यही तापमान अंकित किये जाते हैं। कभी–कभी यह तापमान 48^0 सेन्टीग्रेड से भी अधिक हो जाते हैं। इस ऋतु में कुछ मात्रा में मानसून पूर्व की वर्षा भी हो जाती है। इस ऋतु की मुख्य विशेषतायें उच्च तापमान, गर्म व शुष्क पश्चिमी पवनें ''लू'', न्यून वायुदाब, न्यूनतम आर्द्रता आदि है।
2. **<u>वर्षा ऋतु –</u>** जिले में वर्षा ऋतु का समय मध्य जून से सितम्बर तक है। यहां द.प. मानसून से वर्षा होती है। जिसका औसत 76 सेमी है। अधिकांश वर्षा मानसून काल में जुलाई, अगस्त माह में होती है। जिले में वर्षा की मात्रा पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती जाती है। तालिका सं. 2.4 में जिले की विभिन्न तहसीलों की औसत वर्षा को दिखलाया गया है। साथ ही मानचित्र संख्या 2.7 में जिले की जलवायु दशाओं विशेषकर वर्षा की मात्रा दर्शायी गई है।
3. **<u>शीत ऋतु –</u>** जिले में शीत ऋतु के समय को दो भागों में बांटा गया हैः–

(i) मानसून प्रत्यावर्तन काल (अक्टूबर माह से मध्य दिसम्बर माह)

(ii) मुख्य शीत ऋतु (मध्य दिसम्बर माह से फरवरी माह)

जिले में शीतकालीन औसत तापमान अधिकतम 25^0 सेन्टीग्रेड तथा न्यूनतम 9^0 सेन्टीग्रेड तक रहता है।कभी–कभी 2^0 सेन्टीग्रेड से 3^0 सेन्टीग्रेड तक भी न्यूनतम तापमान अंकित किये गये हैं। जनवरी सबसे ठण्डा महीना है। यहां शीतकाल में पश्चिमीं विक्षोंभों से कुछ वर्षा हो जाती है,जिसे ''मावट'' कहतें हैं।

<u>2.3.5 वनस्पति –</u> बून्दी जिले में प्राकृतिक वनस्पति का विस्तार 992.96 वर्ग किमी. क्षेत्र में है जो जिले के कुल क्षेत्रफल का 16.97 प्रतिशत है।[11] यहाँ मुख्य रूप से उष्ण मानसूनी पतझड़ वन पाये जाते है, जिनका विस्तार मुख्यतः पर्वत श्रेणियों में ही पाया जाता है जो जिले के पश्चिमी भाग से लेकर मध्य से गुजरती है। पठारी भागों पर वनों का विस्तार कम है। जिले के पहाड़ी व पठारी भागों पर मुख्य रूप से ढाक, सालर, महुआ, खिरनी, तैंदू, बैर, धोकड़ा आदि वृक्ष मिलते हैं। वहीं मैदानी भागों में नीम, पीपल, बरगद, शीशम, जामुन, आम, तेंदू आदि वृक्ष मुख्यतः मिलते हैं। वर्षा काल में यहां की पहाड़ियाँ हरियाली से आच्छादित होकर मनोहारी दृश्य उपस्थित करती है। जिले की सम्पूर्ण प्राकृतिक वनस्पति को वन

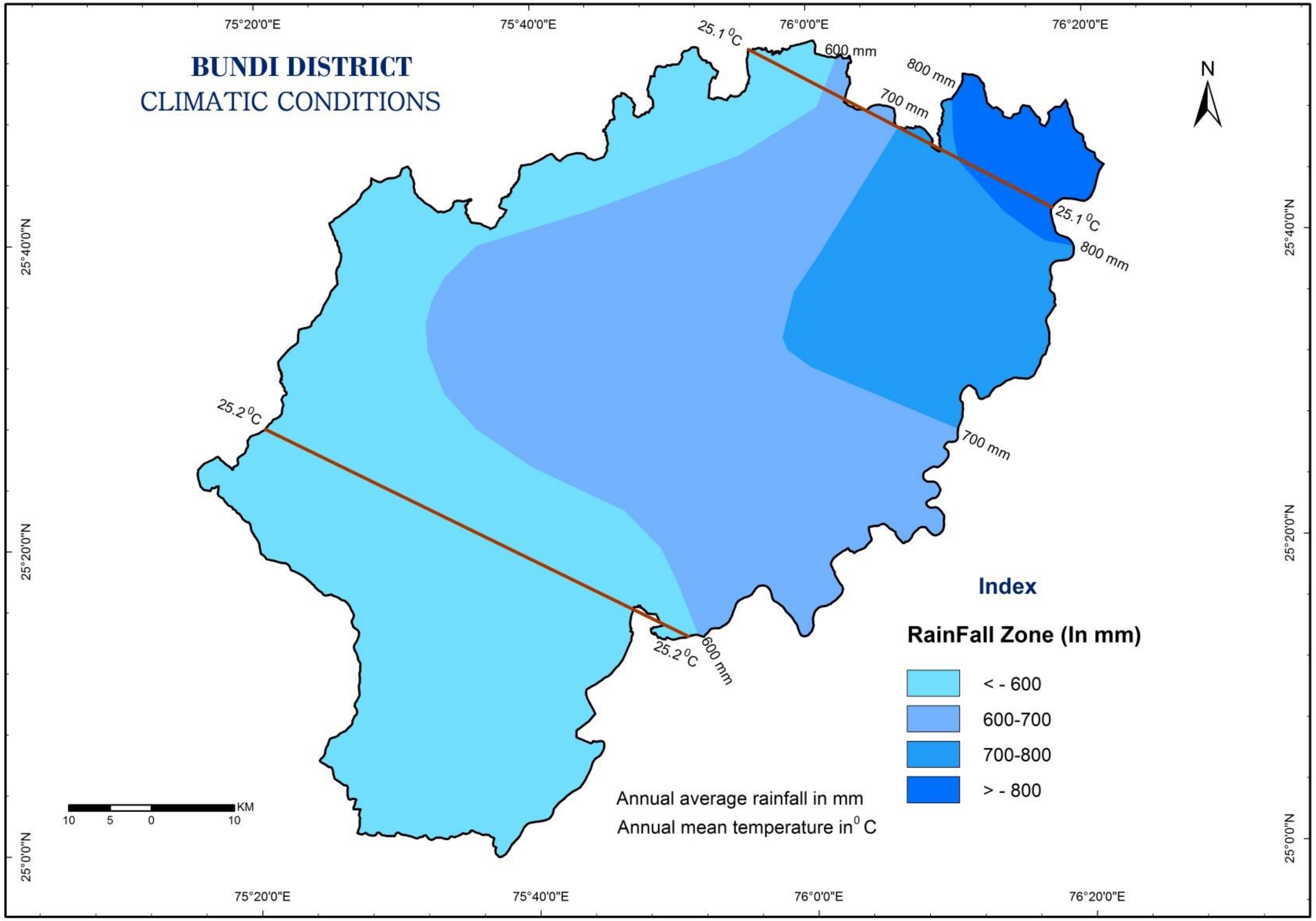

जिला बून्दी : जलवायु

मानचित्र स. 2.7

तालिका सं. 2.4
जिला बून्दी : तहसील अनुसार वर्षा

क्र. सं.	तहसील	वार्षिक वर्षा औसत(mm)	वास्तविक वर्षा (mm)		
			2016	2017	2018
	बून्दी	775	1040	568	679
	हिण्डोली	740	772	545	513
	नैनवां	610	890	360	683
	केशोरायपाटन	810	872	508	607
	इन्द्रगढ़	765	797	322	637
	तालेड़ा	660	950	539	694

स्त्रोत : www.water.rajasthan.gov.in

आरेख स. 2.1
जिला बून्दी : औसत वर्षा (mm)

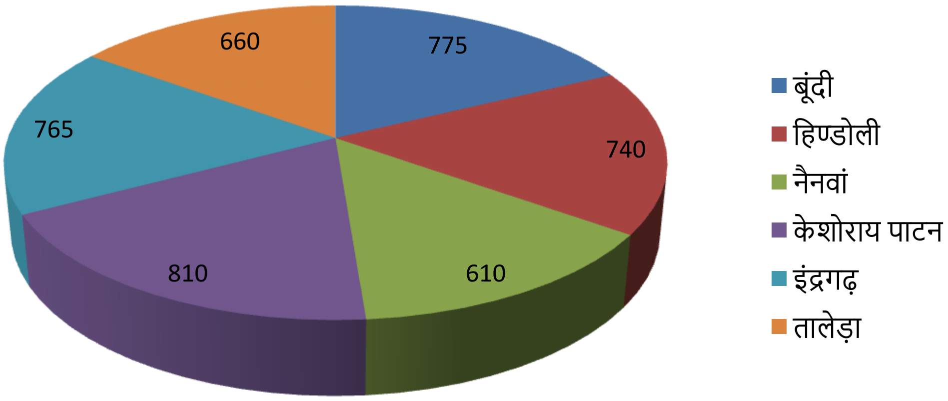

विभाग द्वारा 6 मण्डलों में विभक्त किया है, जो बून्दी, केशोरायपाटन, इन्द्रगढ़, नैनवां, हिण्डोली एवं डाबी है। जिले में रामगढ़ विषधारी वन्य जीव अभ्यारण्य भी स्थापित है। जो 307 वर्ग किमी. क्षेत्र पर विस्तृत है जो वन्य जीव प्रभाग कोटा के अन्तर्गत आता है। जिले के वन क्षेत्रों का अधिकांश भाग सुरक्षित व संरक्षित वनों के अन्तर्गत आता है। जिसे तालिका सं. 2.5 में दर्शाया गया है। इसी प्रकार मानचित्र संख्या 2.8 में बून्दी जिले के वन संसाधनों का वितरण प्रदर्शित किया गया है।

2.3.6 मिट्टियाँ – बून्दी जिला धरातलीय विविधता से परिपूर्ण है। इसलिए यहां पायी जाने वाली मिट्टियों में भी विविधता पायी जाती है। जिले में पायी जाने वाली मिट्टियों को नवीन मृदा वर्गीकरण पद्धति के आधार पर तीन मुख्य प्रकारों तथा परम्परागत वर्गीकरण के आधार पर पांच प्रकारों में बांटा गया है।

1. वर्टीसोल (i) गहरी काली मृदा (ii) मध्यम काली मृदा
2. इन्सेप्टीसोल (i) छिछली काली मृदा
3. अल्फीसोल (i) पुरातन जलोढ (ii) मिश्रित लाल काली मृदा

1. वर्टीसोल – जिले में इस मृदा का विस्तार अधिक है। जिले के दक्षिण तथा दक्षिण पूर्वी भाग में बून्दी व केशोरायपाटन तहसील में इस प्रकार की मृदा का सर्वाधिक विस्तार है। इस मृदा के दो उपवर्ग – (i) गहरी काली मृदा (ii) मध्यम काली मृदा है। ये मृदायें उपयुक्त जल निकास वाली हैं तथा व्यापारिक फसलों की कृषि हेतु उपयुक्त है।

2.इन्सेप्टीसोल – ये नवीन मृदा है जो जिले के मध्यवर्ती भाग में एक संकरी पट्टी के रूप में दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व दिशा में विस्तृत है। बून्दी तहसील के दक्षिणी भाग में भी कुछ क्षेत्रों में इस मृदा का विस्तार है। यह छिछली काली मिट्टी है जो मुख्य रूप से पर्वतीय ढाल के सहारे विस्तृत है।

3.अल्फीसोल – इसे दो उपवर्गों – (i) पुरातन जलोढ (ii) मिश्रित लाल–काली मृदा में बांटा गया है। इनका रंग धूसर भूरा या लाल है। इन मृदाओं का विस्तार जिले के उत्तरी भाग में हिण्डोली व नैनवां तहसील के 90 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र में पाया जाता है।

सामान्यतः बून्दी जिले की मिट्टियाँ कृषि की दृष्टि से उपयुक्त मानी जाती हैं। मानचित्र संख्या 2.9 में जिले के मृदा प्रतिरूप को दर्शाया गया है।

2.3.7 खनिज – बून्दी जिले का धरातल सामान्यतः अरावली क्रम तथा विन्ध्यन क्रम की चट्टानों से मिलकर बना है। इसलिए यहां खनिज संसाधनों में भवन निर्माण सामग्री के रूप में बलूआ पत्थर, संगमरमर, इमारती पत्थर, चूना पत्थर आदि प्रमुखतया मिलते हैं। बून्दी तहसील में डाबी व धनेश्वर के निकट बलूआ पत्थर का बड़े पैमाने पर उत्खनन किया

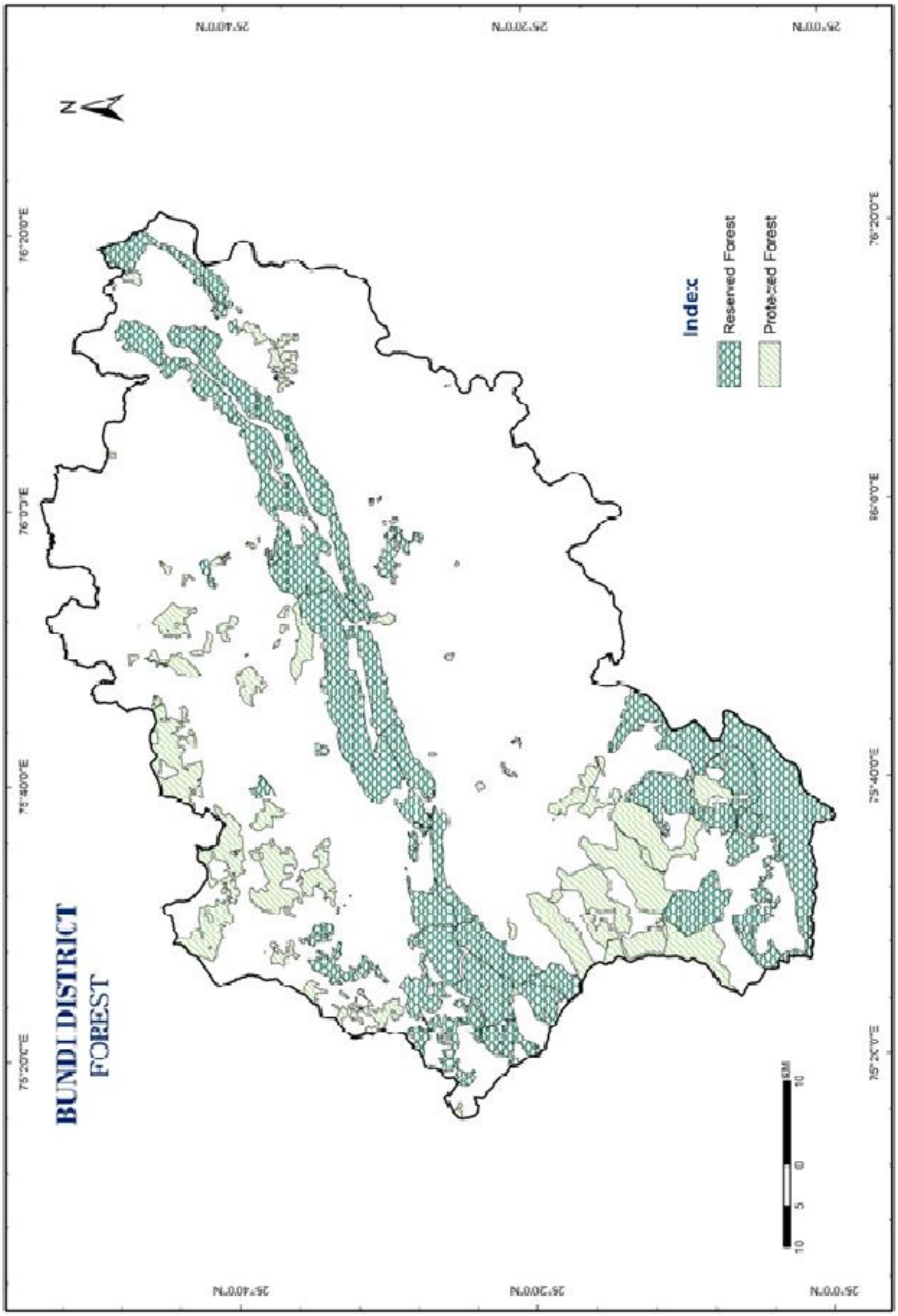

जिला बून्दी : वन संसाधन
मानचित्र स. 2.8

तालिका सं. 2.5

जिला बून्दी : प्रशासनिक दृष्टि से वन वर्गीकरण

(वर्ग कि.मी. में)

क्र.सं.	मण्डल	आरक्षित वन	संरक्षित वन	अवर्गीकृत	योग
	बून्दी	126.27	8.38	1.43	136.08
	हिण्डोली	102.92	200.42	1.55	304.89
	केशोराय पाटन	0	16.34	0.31	16.65
	नैनवां	0	101.24	5.17	106.41
	डाबी	323.02	89.81	0	412.83
	इन्द्रगढ़	0	15.95	0.15	16.10

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2016

आरेख स. 2.2

जिला बून्दी : वन संसाधन (वर्ग कि.मी. में)

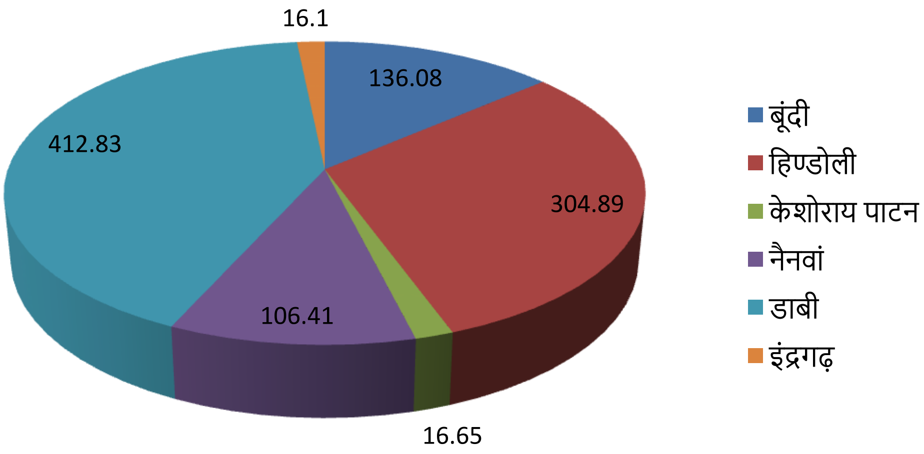

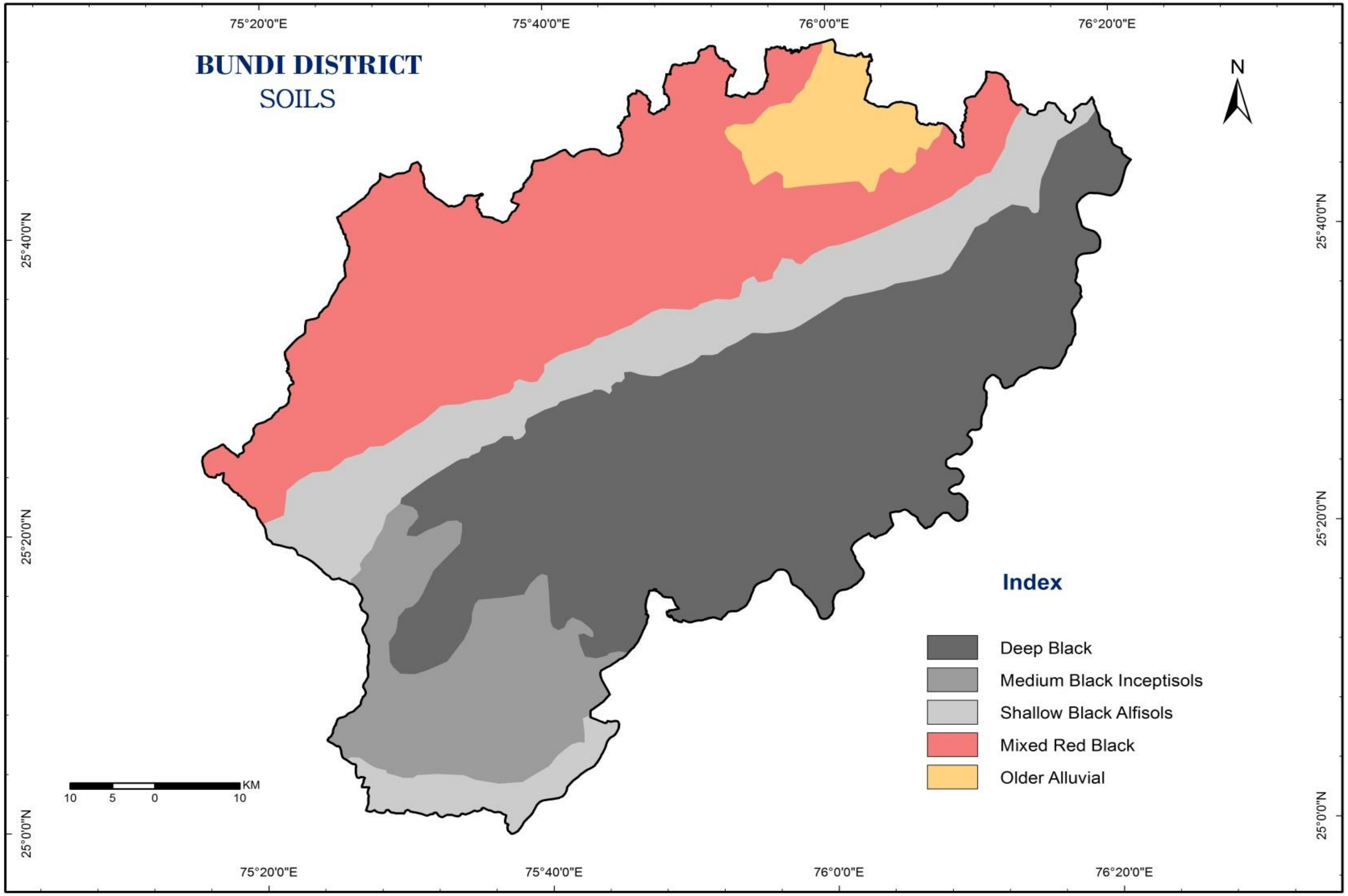

जिला बून्दी : मिट्टियाँ

मानचित्र सं. 2.9

जाता है। हिण्डोली तहसील में सतूर तथा लाखेरी उपखण्ड में चूना पत्थर का खनन प्रमुख रूप से किया जाता है। जिसका प्रयोग लाखेरी में स्थापित ACC सीमेंट उद्योग द्वारा किया जाता है। हिण्डोली तहसील में उमर ग्राम के निकट भूरभूरे संगमरमर का उत्खनन किया जाता है। नैनवां तहसील के तलवास एवं अरनेठा क्षेत्र में भी बलूआ पत्थर के अल्प जमाव मिलते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण खनिज सिलिका हिण्डोली तहसील के बड़ौदिया ग्राम में प्रचुर मात्रा में मिलती है। जिसका प्रयोग कांच निर्माण उद्योग में किया जाता है। इसके अतिरिक्त नैनवां तहसील के लोहारपुरा व आंतरी ग्रामों के निकट लौह अयस्क के छोटे भण्डार भी मिलते हैं। साथ ही हिण्डोली तहसील की पहाड़ियों में यूरेनियम मिलने की भी संभावनायें व्यक्त की गई हैं। जिले में मिलने वाले विभिन्न खनिज को मानचित्र संख्या 2.10 में दर्शाया गया है तथा विभिन्न खनिजों के उत्पादन को तालिका सं. 2.6 में प्रस्तुत किया गया है।

2.3.8 परिवहन – बून्दी जिला प्राचीन काल से ही राजस्थान एवं उत्तर एवं मध्य भारत से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ था। धीरे–धीरे आर्थिक विकास, जनसंख्या वृद्धि व लोगों की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण जिले में परिवहन मार्गों विशेषकर सड़क व रेल परिवहन का विकास हुआ। जिले से तीन राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 52, 76, 148डी गुजरते हैं। इसके अतिरिक्त यह जिला रेल सुविधा से भी जुड़ा है। दिल्ली–कोटा–मुम्बई रेलमार्ग तथा कोटा–चित्तौड़– उदयपुर रेलमार्ग यहां से गुजरते हैं। निकटतम हवाई अड़डा सांगानेर जयपुर है। मानचित्र संख्या 2.11 में बून्दी जिले के प्रमुख परिवहन मार्गों को दिखलाया गया है। तालिका सं. 2.7 में जिले से गुजरने वाले सड़क मार्गों का विवरण दिया गया है।

2.4 मानव संसाधन (Human Resources) :–

राजस्थान के दक्षिण पूर्व भाग में स्थित बून्दी जिला क्षेत्रफल व जनसंख्या दोनों दृष्टि से बहुत छोटा जिला है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जिले का राज्य में 22वाँ तथा जनसंख्या की दृष्टि से 30वाँ स्थान है। राज्य के 1.62 प्रतिशत भाग में विस्तृत बून्दी जिले में राज्य की मात्र 1.61 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

वर्ष 2011 की जनगणना आंकड़ों के अनुसार बून्दी जिले की कुल जनसंख्या 1110906 व्यक्ति है। जिसमें 577160 पुरूष तथा 533746 महिलाऐं है। जिले में ग्रामीण जनसंख्या 79.95 प्रतिशत तथा शहरी जनसंख्या 20.05 प्रतिशत है। जन घनत्व 192 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है तथा लिंगानुपात 925 रहा है। जिले की सारक्षरता दर 61.5 प्रतिशत रही है।[12]

जिले के जनसंख्या प्रतिरूप को निम्न बिन्दु के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है :–

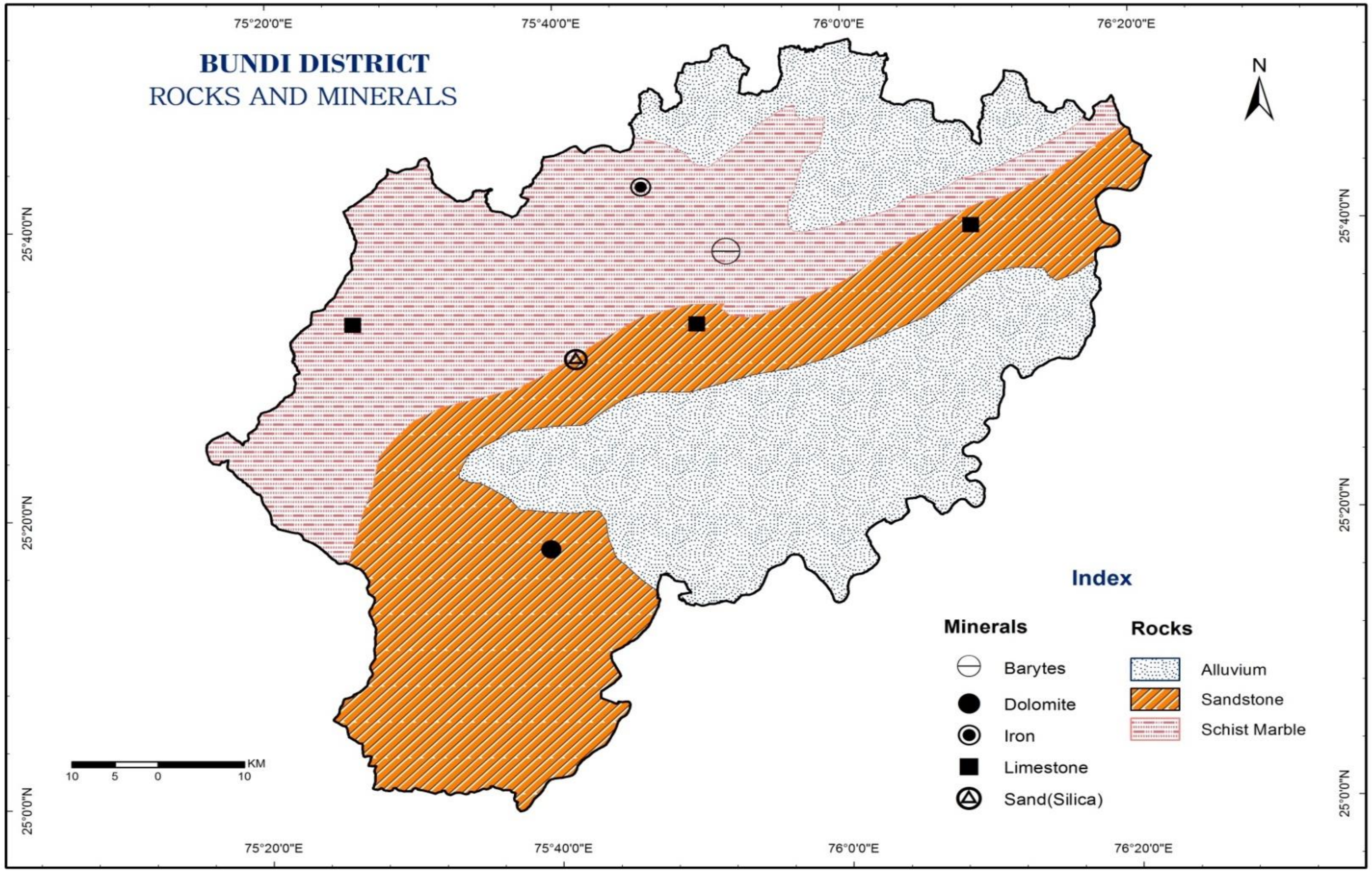

जिला बून्दी : खनिज संसाधन

मानचित्र सं. 2.10

तालिका सं. 2.6

जिला बून्दी : खनिज पदार्थों का उत्पादन

क्र.सं.	खनिज	उत्पादन (मै.टन)
	चूना पत्थर	613871
	सिलिका सैण्ड	93412
	चायना क्ले	24862
	सेण्ड स्टोन	21478846
	संगमरमर	14125
	मेसेनरी स्टोन	1537425
	स्लेट स्टोन	500
	लाइम स्टोन बर्निंग	416612

स्त्रोत – जिला सांख्यिकी 2016

आरेख स. 2.3

जिला बून्दी : खनिज संसाधन (मै.टन)

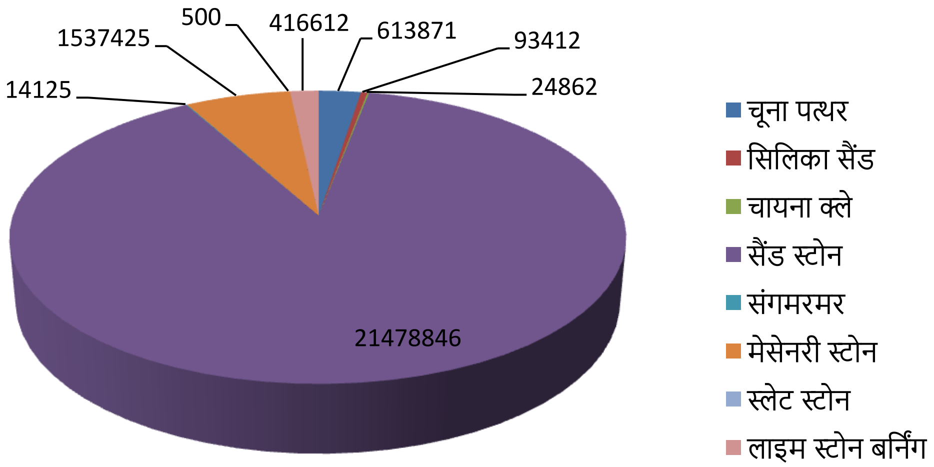

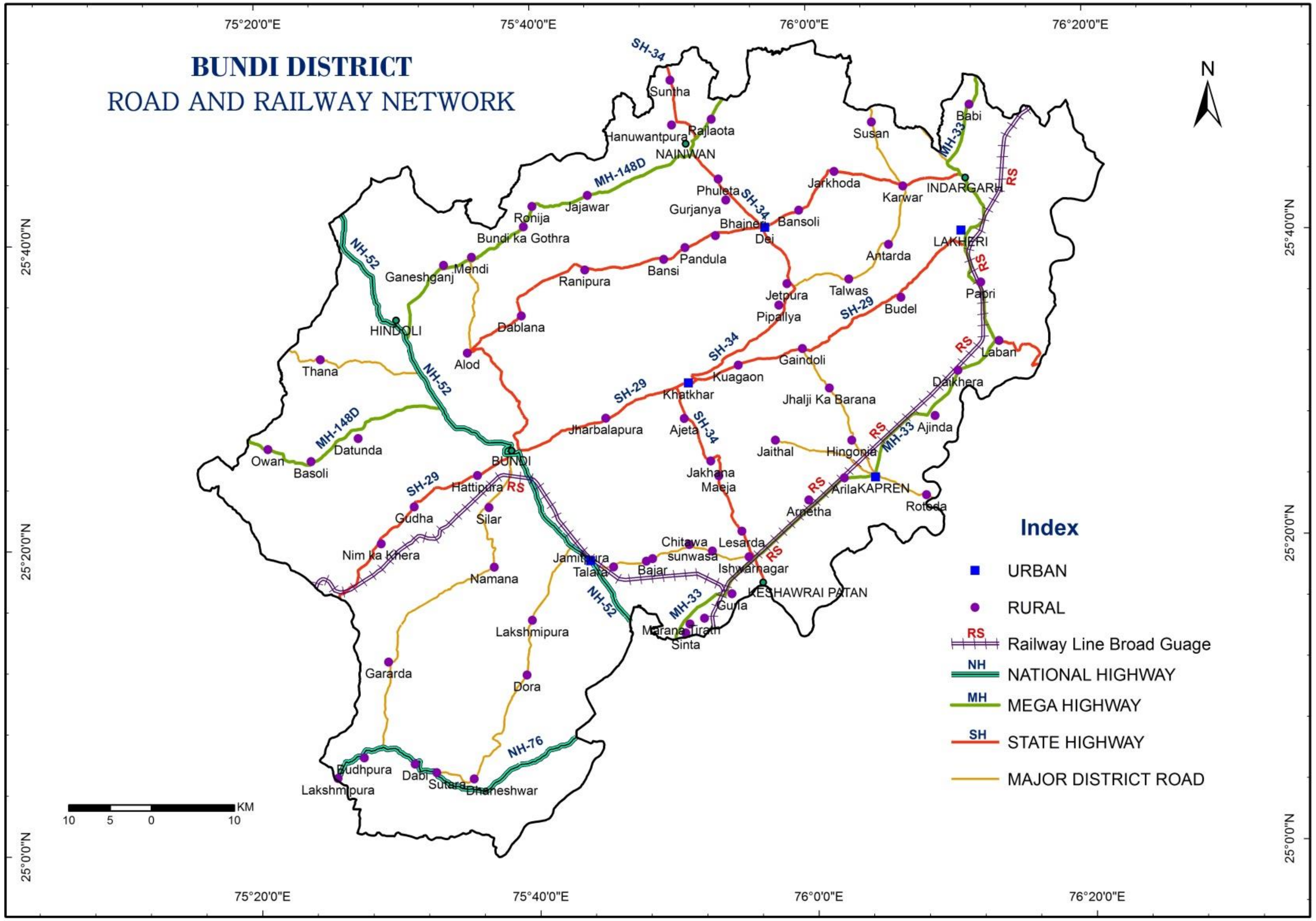

जिला बून्दी : परिवहन

मानचित्र सं. 2.11

तालिका सं. 2.7

जिला बून्दी : परिवहन(सड़क)

क्र.सं.	विवरण	संख्या	लम्बाई कि.मी. में
1.	राष्ट्रीय उच्च मार्ग	52, 76, 148D	193.06
2.	राज्य उच्च मार्ग	1, 29, 33, 34ए, 39	386.81
3.	प्रमुख जिला सड़कें		180.36
4.	प्रमुख ग्रामीण सड़कें		80.75
5.	अन्य		1868.65

स्त्रोत : Basic Road Statistic 2018

सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान

आरेख स. 2.4

जिला बून्दी : सड़क मार्ग (कि.मी.)

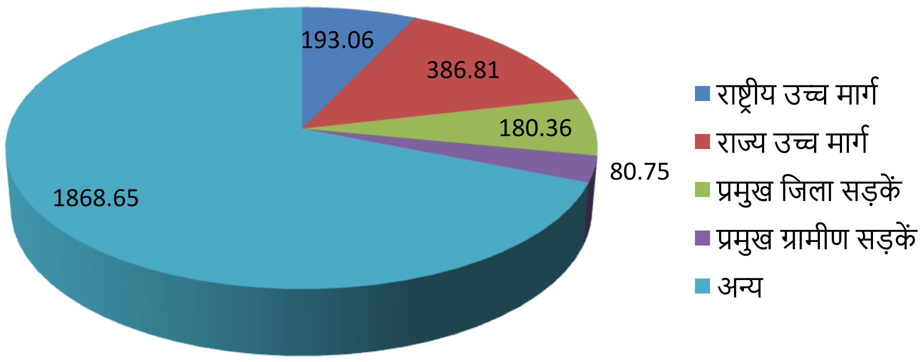

2.4.1 जनसंख्या – वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की कुल जनसंख्या 1110906 व्यक्ति है जो कि राज्य की कुल जनसंख्या का मात्र 1.61 प्रतिशत है। जिले में तहसील अनुसार जनसंख्या वितरण प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आर्थिक विकास की दृष्टि से अग्रणी तहसील में जनसंख्या अधिक पायी जाती है। तालिका सं. 2.8 में बून्दी जिले में जनसंख्या प्रतिरूप को दर्शाया गया है।

2.4.2 जनसंख्या घनत्व – प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या जनसंख्या घनत्व कहलाती है। वर्ष 2011 की जनगणना आंकड़ों के अनुसार बून्दी जिले का घनत्व 192 है। तालिका संख्या 2.10 में बून्दी जिले का जनसंख्या घनत्व प्रतिरूप दिखलाया गया है। जिसके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मैदानी भाग, उपजाऊ काली मृदा, अधिक वर्षा, कृषि व औद्योगिक विकास जैसी उपयुक्त भौगोलिक, आर्थिक दशाओं के कारण केशोरायपाटन व बून्दी तहसील में उच्च जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

2.4.3 साक्षरता – वर्ष 2011 की जनगणना आंकड़ों के अनुसार बून्दी जिले की कुल साक्षरता दर 61.5% है जो कि राज्य के औसत 66.1% से कम है। साक्षरता की दृष्टि से बून्दी का राज्य में 24वाँ स्थान है। यहाँ पुरूष साक्षरता 75.44% तथा महिला साक्षरता 46.55% है। साक्षरता में पुरूष व महिला साक्षरता में लिंग अन्तराल 28.8% है, जो इस बात को स्पष्ट करता है कि जिले में महिला साक्षरता में वृद्धि के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। तालिका सं. 2.11 में बून्दी जिले में तहसीलवार महिला पुरूष साक्षरता दर को प्रदर्शित किया गया है।

2.4.4 लिंगानुपात – प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या लिंगानुपात कहलाती है। जिले में लिंगानुपात वर्ष 2011 की जनगणना में 925 रहा है। यद्यपि इसमें 2001 की तुलना में सुधार आया है तथापि यह राज्य के औसत 928 से कम रहा है। तालिका सं. 2.12 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार लिंगानुपात प्रतिरूप दर्शाया गया है।

2.4.5 ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या – वर्ष 2011 के जनगणना आंकड़ों के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या का केवल 20.05% भाग नगरीय है। शेष 79.95% भाग ग्रामीण है। जिले में हिण्डोली तहसील का लगभग 99% भाग ग्रामीण है। तालिका सं. 2.13 में जिले की ग्रामीण नगरीय जनसंख्या का वितरण प्रारूप दिखलाया गया है।

तालिका सं. 2.8

जिला बून्दी : जनसंख्या प्रतिरूप

क्र. सं.	तहसील	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी.	जनसंख्या		
			पुरूष	स्त्री	कुल
	हिण्डोली	1340.38	115099	106502	221601
	नैनवां	1189.95	102334	93736	196070
	इन्द्रगढ़	660.05	66461	61254	127715
	केशोराय पाटन	706.13	79664	74323	153987
	बून्दी (तालेड़ा सहित)	1922.27	213602	197931	411533

स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

आरेख सं. 2.5

जिला बून्दी : तहसीलवार जनसंख्या वितरण

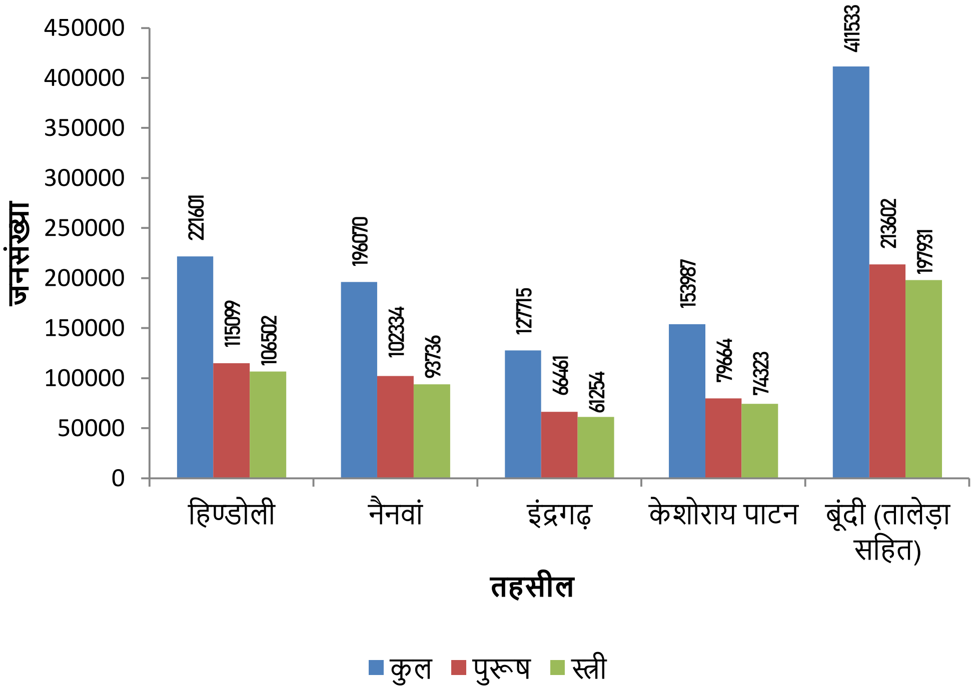

तालिका सं. 2.9

जिला बून्दी : जनसंख्या दस वर्षीय वृद्धि दर

वर्ष	जनसंख्या	दस वर्ष का अन्तर	प्रतिशत वृद्धि(+) या कमी(–)
1951	280518	–	–
1961	338010	+ 57492	+ 20.49
1971	449021	+ 111011	+ 32.84
1981	586982	+ 137961	+ 30.72
1991	770248	+ 183266	+ 31.22
2001	962620	+ 192372	+ 24.98
2011	1110906	+ 148286	+ 15.40

स्त्रोत :– जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

आरेख सं. 2.6

जिला बून्दी : जनसंख्या दस वर्षीय प्रतिशत वृद्धि दर

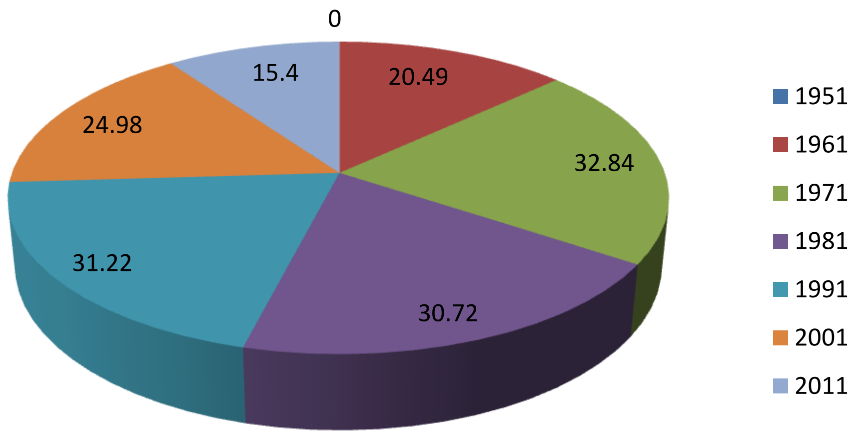

तालिका सं. 2.10

जिला बून्दी : जनसंख्या घनत्व 2011

वर्ष	तहसील	घनत्व		
		ग्रामीण	नगरीय	कुल
1	हिण्डोली	164	1	165
2	नैनवां	150	1392	165
3	इन्द्रगढ़	140	1059	193
4	केशोराय पाटन	176	505	218
5	बून्दी	157	3345	214

स्त्रोत :– जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

आरेख सं. 2.7

जिला बून्दी : जनसंख्या घनत्व 2011

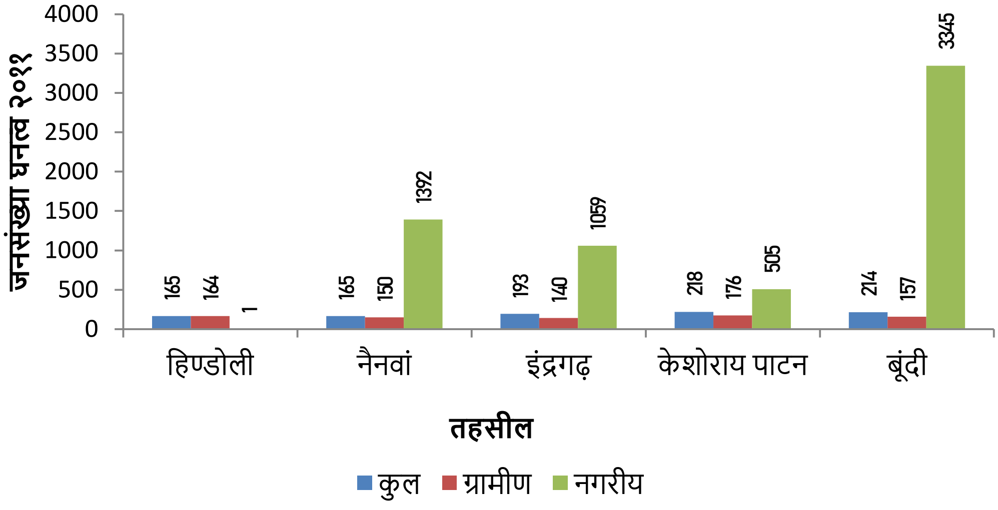

तालिका संख्या 2.11

जिला बून्दी : साक्षरता दर 2011

वर्ष	तहसील	साक्षरता		
		पुरूष	महिला	योग
1	हिण्डोली	68.58	38.13	53.92
2	नैनवां	62.7	34.74	57.83
3	इन्द्रगढ़	63.62	36.37	56.29
4	केशोराय पाटन	70.84	46.53	68.05
5	बून्दी	64.75	43.16	63.6

स्त्रोत :– जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

आरेख सं. 2.8

जिला बून्दी : साक्षरता दर 2011

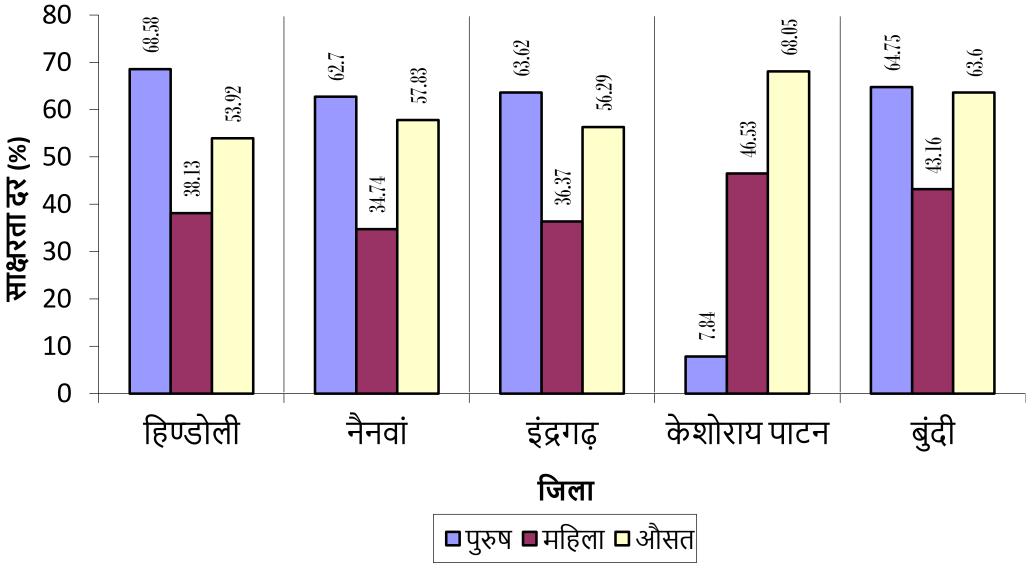

तालिका संख्या 2.12

जिला बून्दी : लिंगानुपात

क्र.सं.	तहसील	लिंगानुपात		
		ग्रामीण	नगरीय	योग
1	हिण्डोली	925	905	925
2	नैनवां	914	930	916
3	इन्द्रगढ़	927	926	927
4	केशोराय पाटन	932	934	933
5	बून्दी	915	935	922

स्त्रोत :– जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

आरेख सं. 2.9

जिला बून्दी : लिंगानुपात

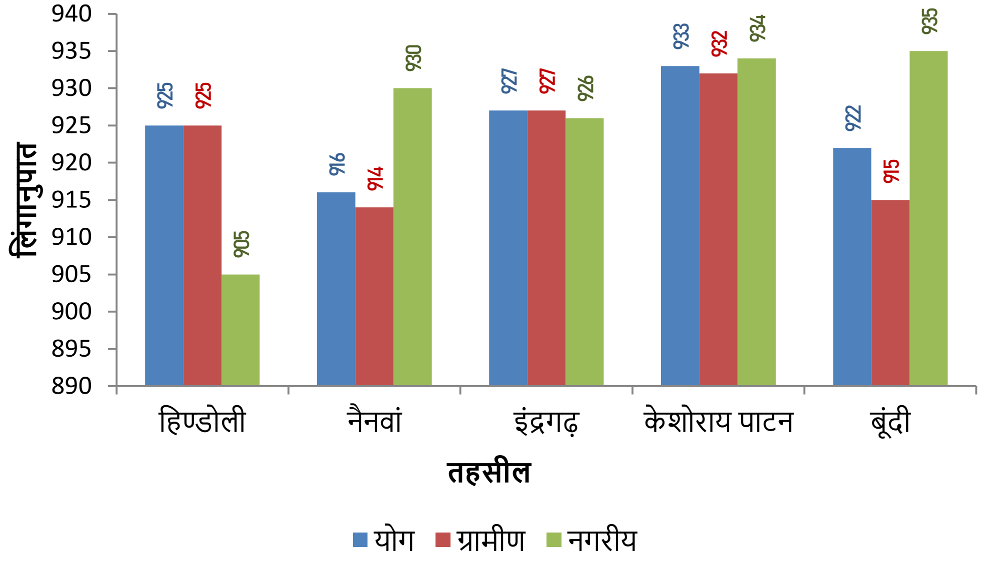

तालिका संख्या 2.13

जिला बून्दी : ग्रामीण नगरीय जनसंख्या

क्र.सं.	तहसील	ग्रामीण नगरीय जनसंख्या		
		ग्रामीण	नगरीय	योग
1	हिण्डोली	219968	1633	221601
2	नैनवां	176585	19485	196070
3	इन्द्रगढ़	87066	40649	127715
4	केशोराय पाटन	108612	45375	153987
5	बून्दी	295974	115559	411533

स्त्रोत :– जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

आरेख सं. 2.10

जिला बून्दी : ग्रामीण नगरीय जनसंख्या

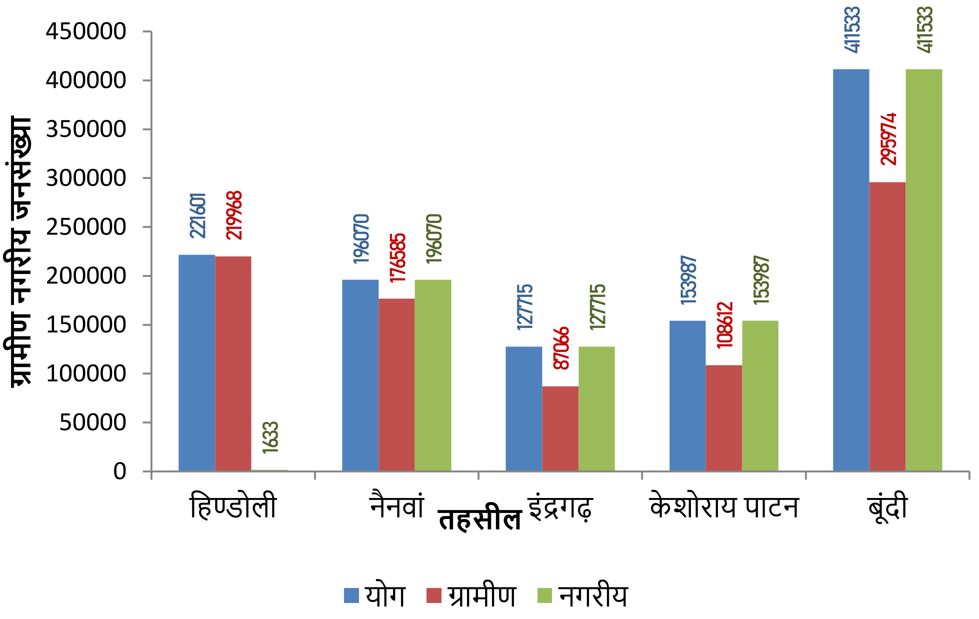

2.4.6 अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति जनसंख्या – वर्ष 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार बून्दी जिले की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या क्रमशः 19.0% तथा 20.6% है। तालिका संख्या

2.14 में जिले में अनुसूचित जाति व जनजाति की जनसंख्या का तहसीलवार विवरण प्रस्तुत है :–

तालिका संख्या 2.14

जिला बून्दी : अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति जनसंख्या

क्र. सं.	तहसील	अनुसूचित जाति			अनुसूचित जनजाति		
		पुरूष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	योग
1	हिण्डोली	21133	19924	41057	21369	19653	41022
2	नैनवां	18172	16689	34861	22038	19605	41643
3	इन्द्रगढ़	40727	37536	78263	42929	39504	82433
4	केशोराय पाटन	16029	14940	30969	16865	15687	32552
5	बून्दी	13272	12366	25638	16253	14646	30899
	सम्पूर्ण बून्दी	**109333**	**101455**	**210788**	**119454**	**109095**	**228549**

स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

2.4.7 जनसंख्या की आर्थिक संरचना :– वर्ष 2011 की जनगणना से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि जिले की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि प्रधान है। जिले की कुल जनसंख्या का 68.8 प्रतिशत भाग कृषि व सम्बन्धित आर्थिक गतिविधियों में संलग्न है। तालिका संख्या 2.15 में बून्दी जिले की कार्यकारी जनसंख्या प्रतिरूप को स्पष्ट किया गया है।

तालिका संख्या 2.15

जिला बून्दी : कार्यकारी जनसंख्या

क्र.सं.	आर्थिक क्रिया	संलग्न कुल कार्यशील जनसंख्या का प्रति.
1	कृषक	47.6
2	कृषक मजदूर	21.2
3	उद्योगों में कार्यरत	2.1
4	अन्य (व्यापार, परिवहन आदि में संलग्न)	29.1

स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

आरेख सं. 2.11

जिला बून्दी : अनुसूचित जाति जनसंख्या

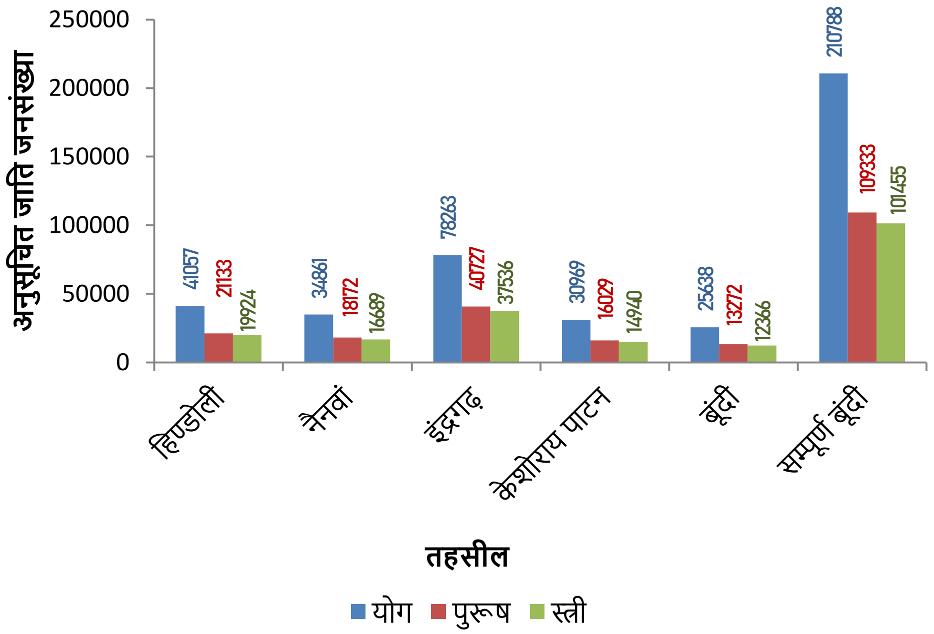

आरेख सं. 2.12

जिला बून्दी : अनुसूचित जनजाति जनसंख्या

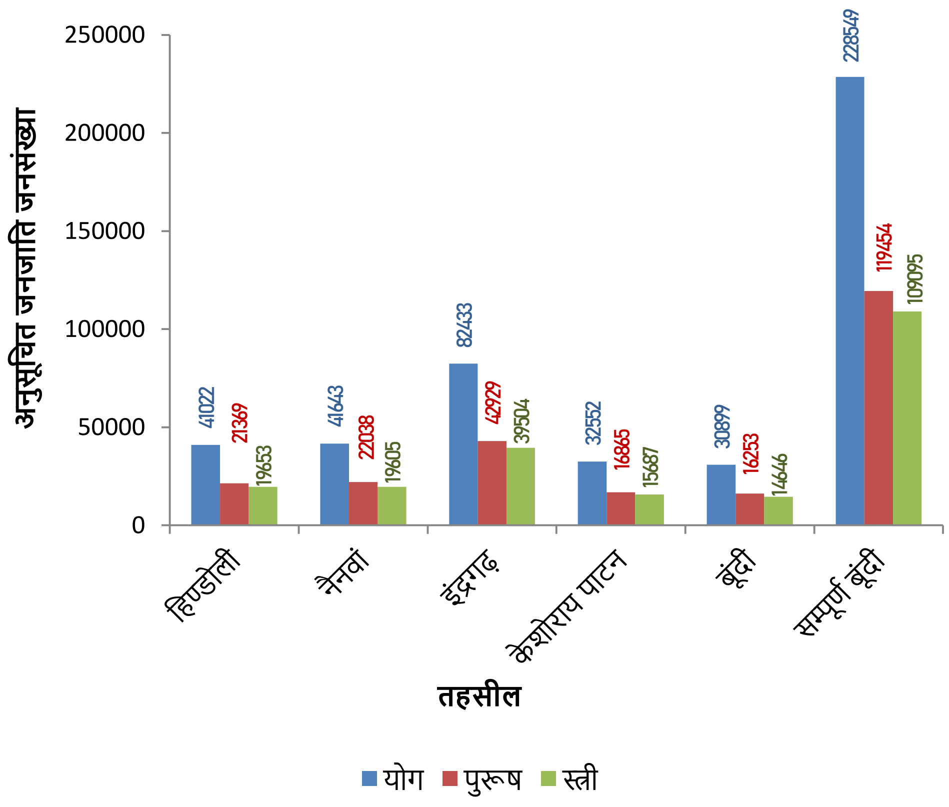

आरेख संख्या 2.13

जिला बून्दी : कार्यशील जनसंख्या (प्रतिशत) 2011

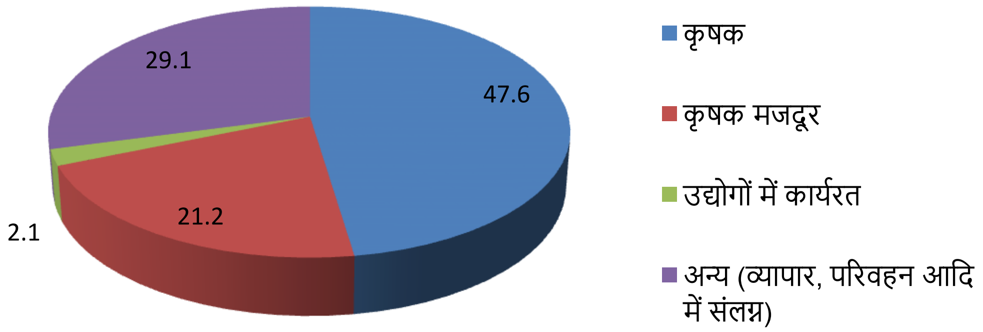

सन्दर्भ ग्रन्थ (Reference Books) :–

1	माथुर दूर्गा प्रसाद	2010	बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास पृ.1
2	माथुर दूर्गा प्रसाद	2010	बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास पृ.1
3	माथुर दूर्गा प्रसाद	2010	बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास पृ.3
4	माथुर दूर्गा प्रसाद	2010	बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास पृ.110
5	माथुर दूर्गा प्रसाद	2010	बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास पृ.149
6	माथुर दूर्गा प्रसाद	2010	बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास पृ.161
7	माथुर दूर्गा प्रसाद	2010	बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास पृ.156
8	राजस्थान जिला गजेटियर,बून्दी	1991	पृ.4
9	राजस्थान जिला गजेटियर,बून्दी	1991	पृ.4,5
10	राजस्थान जिला गजेटियर,बून्दी	1991	पृ.16
11	आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय	2016	जिला सांख्यिकी
12	जनगणना प्रतिवेदन	2011	

तृतीय अध्याय

भूपर्यटन अवधारणा एवं सिद्धान्त

3.1 भूपर्यटन अवधारणा (Concept of Geotourism) :-

आज पर्यटन विश्व की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप में विश्व अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है। जो अपने विविध स्वरूपों में विकसित होता जा रहा है। जिनमें ऐतिहासिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पारिस्थितिकीय पर्यटन, साहसिक पर्यटन, सम्मेलन पर्यटन, क्रीड़ा पर्यटन प्रमुख होते जा रहे हैं। वर्तमान में प्रकृति की सुन्दरता व प्रकृति के रहस्यों के प्रति कौतूहल बढ़ने से पर्यटन का एक नया स्वरूप भूपर्यटन तीव्र गति से पर्यटन के विविध स्वरूपों में महत्वपूर्ण होता जा रहा है। विगत तीन दशकों में भूपर्यटन ने वैश्विक पर्यटन जगत में अपनी महत्वपूर्ण व विशिष्ट पहचान बना ली है।

यद्यपि प्राकृतिक दृश्यावलियों और विशिष्ट स्थलरूपों की यात्रा कोई नया तथ्य नहीं है, लेकिन फिर भी भूपर्यटन इस रूप में नया है क्योंकि यह किसी क्षेत्र या स्थान की भौगोलिक विशिष्टताओं को एक नया दृष्टिकोण देता है। जिसमें उन विशिष्टताओं की निर्माण प्रक्रिया की जानकारी तथा भूगर्भिक इतिहास का अध्ययन शामिल है। जिससे भूपर्यटन वर्तमान में विश्व पर्यटन के विविध स्वरूपों में महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है और निरन्तर प्रगति की ओर है।

भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं को उभार कर उन्हें बनाये रखने में मदद करता है तथा वहां के पर्यावरण, संस्कृति, कलात्मक सौन्दर्य, विरासत और स्थानीय निवासियों के कल्याण में अपना योगदान देता है। भूपर्यटन यात्रा को एक नया अनुभव देता है जो किसी क्षेत्र की विशिष्टताओं को उभार कर उसे पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करता है। साथ ही यह प्राकृतिक सुन्दरता के बहुआयामी पक्ष को उभारता है जिससे उस क्षेत्र में आर्थिक विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है जो क्षेत्र के सतत् विकास का महत्वपूर्ण पक्ष है। यह पर्यटन में मात्रात्मक पक्ष के स्थान पर गुणात्मक पक्ष की अभिवृद्धि करता है। यह भौगोलिक प्रक्रिया पर बल देता है जिससे सीखने की प्रवृति को बढ़ावा मिलता है। जिससे भूपर्यटन यात्रा को कभी न भूलने वाली यात्रा बना देता है।

भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो पृथ्वी की भूवैज्ञानिक व भौगोलिक विशेषताओं को मुख्य रूप से केन्द्रित कर उस स्थान के सांस्कृतिक वातावरण तथा पर्यावरण के मध्य सामंजस्य उत्पन्न करता है। इसके साथ ही पृथ्वी के गतिशील इतिहास को स्पष्ट करने तथा विभिन्न धरातलीय स्वरूपों व विशिष्टीकृत भूआकारों की रचनाओं व

अवस्थाओं की व्याख्या करता है। इस रूप में यह भूआकृति विज्ञान तथा भूगर्भशास्त्र के साथ सीधा जुड़ा है।

3.2 भूपर्यटन की उत्पत्ति एवं विकास (Origin and Development of Geotourism) :-

यद्यपि प्राकृतिक दृश्यावलियों का आकर्षण मानव को सदा से ही पर्यटन के लिए प्रेरित करता रहा है तथापि विशिष्ट रूप में इसका प्रारम्भ तीन दशक पूर्व ही माना जाता है। पर्यटन की इस एक नई शाखा ''भूपर्यटन'' का विकास 1991 के बाद यूरोप व उत्तर अमेरिका में हुआ जिसमें पृथ्वी के भौगोलिक स्वरूपों व विशिष्टताओं की व्याख्या भूवैज्ञानिक सन्दर्भ में की जाने लगी। भूपर्यटन का अंग्रेजी शब्द Geotourism दो शब्दों Geo तथा Tourism से मिलकर बना है।

Geo का सम्बन्ध भूआकृति से है जिसमें धरातलीय पक्षों का भूवैज्ञानिक व भूगर्भशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन किया जाता है। वहीं Tourism आनन्द, उत्सुकता तथा खोज से सम्बन्धित है। इस प्रकार भूपर्यटन में ज्ञानार्जन तथा विश्लेषणात्मक प्रवृति से की गई यात्रा शामिल है। जिसमें न केवल जिज्ञासा पूर्ति होती है साथ ही यह एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है।

भूपर्यटन भूगर्भिक व बाह्य प्रक्रियाओं से निर्मित दृश्यरूपों व दृश्यावलियों पर आधारित पर्यटन है। प्रारम्भ में इस बात पर विचार होता रहा कि भूपर्यटन, भौगोलिक पर्यटन है या भूगर्भिक पर्यटन। वहीं कुछ मत इसे ईको पर्यटन के समकक्ष भी मानते थे, किन्तु बाद में इसे पर्यटन की एक नई शाखा के रूप में मान लिया गया। जिसमें कहा गया कि भूपर्यटन भूगर्भशास्त्र तथा दृश्यावलियों का पर्यटन है, जहां कहीं भी आकर्षक व विशिष्ट भौगोलिक स्थलरूप हैं, वहां भूपर्यटन का विकास किया जा सकता है। मुख्य रूप से भूपर्यटन के दो पक्ष हैं – 3.2.1. **भूगर्भिक** 3.2.2. **भौगोलिक**

3.2.1 भूगर्भिक पक्ष – भूपर्यटन को प्रारम्भिक दौर में भूगर्भिक पर्यटन के रूप में ही माना गया और बताया कि इसके माध्यम से किसी क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना और भूआकृति को स्पष्ट किया जाता है। प्रारम्भ में Hose[1] (1995) ने भूपर्यटन के भूगर्भिक पक्ष को स्पष्ट करते हुये बताया कि भूपर्यटन भूगर्भिक विरासत को समझने तथा उसके माध्यम से भूसंरक्षण को बढ़ाने के लिए की गई यात्रा से सम्बन्धित है। Newsome and Dowling[2] (2011) ने भी भूपर्यटन के भूगर्भिक पक्ष को स्पष्ट करते हुये बताया कि भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की भूगर्भिक विशेषतायें तथा दृश्यावलियों को स्पष्ट करता है

जिसमें इन भूगर्भिक विविधताओं का संरक्षण तथा पृथ्वी विज्ञान को सीखने व समझने की प्रक्रिया भी शामिल है।

3.2.2 भौगोलिक पक्ष –नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी यू.एस.ए. द्वारा माना गया कि भूपर्यटन एक प्रकार से पर्यटन के विभिन्न पक्षों यथा सांस्कृतिक पर्यटन, ईको टूरिज्म को सम्मिलित करता है और बताया कि भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं को रेखांकित करता है तथा पर्यावरण, संस्कृति, कलात्मक सौन्दर्य, विरासत और स्थानीय निवासियों के कल्याण में अपना योगदान देता है। UNESCO के तत्वावधान में वर्ष 2011 में पूर्तगाल में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय भूपर्यटन सम्मेलन में भूपर्यटन को स्पष्ट करते हुये माना कि यह भौगोलिक पक्ष के दृष्टिकोण से की गई यात्रा है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भूपर्यटन विशिष्ट भौगोलिक प्रक्रियाओं व स्थलरूपों से जुड़ा पर्यटन है जिसमें भूगर्भिक व भौगोलिक दोनों पक्ष सम्मिलित होते हैं। भूगर्भिक पक्ष के माध्यम से किसी क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना तथा भूगर्भिक प्रक्रियाओं को स्पष्ट किया जाता है तथा भौगोलिक पक्ष में भूगर्भिक पक्ष को सम्मिलित हुये बाह्य प्रक्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाता है जिनसे उस क्षेत्र में विशिष्ट भौगोलिक विशेषतायें उभरती हैं और आकर्षित करती हैं। इस प्रकार भूपर्यटन भूगर्भिक व भौगोलिक दोनों पक्षों को सम्मिलित करता है।

इस प्रकार प्रकृति के भौगोलिक सौन्दर्य को स्पष्ट व अधिक रूचिकर व जानकारी पूर्ण बनाने के उद्देश्य से प्रारम्भ हुआ यह पर्यटन आज विश्व की प्रमुख पर्यटन गतिविधि बनता जा रहा है जो न केवल शैक्षिक पर्यटन का आधार है अपितु स्थानीय निवासियों के आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की अभिवृद्धि में भी अपना योगदान दे रहा है।

3.3 भूपर्यटन की परिभाषाएं (Definition of Geotourism) :–

विगत तीन दशकों से प्राकृतिक भौगोलिक सौन्दर्य तथा भूवैज्ञानिक प्रक्रियायें तथा विविध आकर्षक स्थलाकृतियों के प्रति आकर्षण के बढ़ते स्वरूप के कारण भूपर्यटन वैश्विक पर्यटन में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर चुका है। पर्यटन के इस नये उभरते स्वरूप को कई विद्धानों ने परिभाषित व इसकी विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। जिनमें समय के साथ–साथ इसके दृष्टिकोणों में भी परिवर्तन होते रहे हैं। इस नये पर्यटन स्वरूप तथा इसमें शामिल विभिन्न परिवर्तनशील विचारों को निम्न परिभाषाओं से स्पष्ट समझा जा सकता है।

भूपर्यटन को साहित्य में सर्वप्रथम **Hose T.A. 1995**[1] ने परिभाषित किया और कहा कि ''भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो प्रकृति की भौगोलिक सुन्दरता व कलात्मक

स्थलरूपों को जानने व समझने के लिए पर्यटकों में भौगोलिक व भूवैज्ञानिक समझ को बढ़ाता है।''

Stueve, Cooke, Drew (2002:1)[3] : भूपर्यटन भौगोलिक पर्यटन की एक शाखा के रूप में किसी क्षेत्र के व्यापक भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सन्दर्भ को समाहित करता है।

Joycee, 2006[4] : भूपर्यटन किसी क्षेत्र की विशिष्टताओं को भूगर्भ विज्ञान तथा भूआकृति विज्ञान के सन्दर्भ में स्पश्ट करता है।

E. Reynard, 2007[5] : भूपर्यटन में किसी क्षेत्र की भूगर्भिक व भौगोलिक विशिष्टताओं को उभारा जाता है।

Robinson, 2008[6] : भूपर्यटन धरातल पर विस्तृत भौगोलिक सौन्दर्य को विभिन्न प्राकृतिक दृश्वावलियों, उनके निर्माण की प्रक्रिया, विभिन्न प्रकार के स्थलरूपों को स्पष्ट करता है।

Dowling, 2008[7] : भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की भूगर्भिक विशेषतायें तथा दृश्यावलियों को स्पष्ट करता है। जिनमें इन भूगर्भिक विविधताओं का संरक्षण तथा पृथ्वी विज्ञान को सीखने व समझने की प्रक्रिया व स्थानीय हित सम्मिलित है।

I. Mao, Robinson, R. Dowling 2009[8] : भूपर्यटन स्थानीय व बाह्य पर्यटकों के लिए वहां के स्थानीय भौगोलिक आकर्षण के रूप में किसी स्थान को पहचान दिलाता है।

P.M. Nagwira, 2015[9] : भूपर्यटन पृथ्वी के भूवैज्ञानिक इतिहास तथा विभिन्न प्रकार की भौगोलिक घटनाओं के साक्ष्य के रूप में विभिन्न दृश्यावलियों की व्याख्या करता है।

इन उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट है कि भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो पृथ्वी की भूवैज्ञानिक व भौगोलिक विशेषताओं को मुख्य रूप से केन्द्रित करता है।

वर्तमान में National Geographic Channel द्वारा 2010 में प्रस्तुत भूपर्यटन की परिभाषा को सर्वमान्य रूप में स्वीकार किया गया है। जिसमें कहा गया है कि –

"Geotourism is defined as tourism that sustains or enhances the geographical character of a place – its environment, culture, aesthetics, heritage and the well being of its residents."

अर्थात् भूपर्यटन एक नये प्रकार का पर्यटन है जो किसी स्थान की भौगोलिक विशेषताओं को प्रकट कर उन्हें बनाये रखने और बढ़ाने में मदद करता है। साथ ही उस स्थान का पर्यावरण के साथ समायोजन, सांस्कृतिक पक्ष, प्राकृतिक कलात्मक सौन्दर्य और भौगोलिक विरासत को बढ़ाने के साथ–साथ वहां के स्थानीय निवासियों के कल्याण में भी अपना योगदान देता है।

भूपर्यटन निरन्तर बढ़ता हुआ पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की प्रकृति व रचनात्मकता को एक नई पहचान देता है। जिसमें वहां की भौगोलिक विशेषता का प्रकटीकरण होता है। इस भौगोलिक विशेषता से यह स्पष्ट होता है कि वह स्थान वास्तव में क्या है ? सामान्य पर्यटन **"Where places are"** पर आधारित होते हैं। लेकिन भूपर्यटन **"What places are"** की संकल्पना पर आधारित है जिसमें पर्यटन का समग्र स्वरूप शामिल होता है। जो पर्यटन को एक नई पहचान देता है। इसके साथ ही इसके बढ़ते विकास से पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने से स्थानीय निवासियों को आय प्राप्त होने से आर्थिक विकास में भी वृद्धि दिखाई देती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भूपर्यटन पर्यटन का वह स्वरूप है जो भूविज्ञान तथा भूआकृतियों, भूस्थल, दृश्यरूप की व्याख्या पर केन्द्रित है तथा जिसके माध्यम से किसी क्षेत्र की विशिष्ट पहचान स्पष्ट होती है। इन सभी के सम्मिलित स्वरूप से स्थानीय हितधारकों के सतत् विकास में भी सहायता मिलती है।

3.4 भूपर्यटन का भौगोलिक दृष्टिकोण (The Geographical viewpoint of Geotourism) :–

भूपर्यटन के विकास के प्रारम्भिक दौर में यह माना गया कि भूपर्यटन भूगर्भशास्त्र तथा दृश्यावलियों का पर्यटन है जिनमें भूगर्भिक प्रक्रियाओं से निर्मित दृश्यरूपों या घटनाओं को ही रेखांकित किया जाता था। किन्तु धीरे–धीरे इसमें भौगोलिक पक्ष भी शामिल होने लगा जिसके अन्तर्गत भूपर्यटन में आकर्षक स्थलरूपों के प्रमाणीकरण में ''भूगर्भिक प्रक्रिया'' के साथ–साथ ''आकार'' तथा ''समय'' का भी अध्ययन शामिल हो गया। इसके साथ ही इसमें पर्यटन के सुस्थिर व सतत् पक्ष को भी शामिल किया गया जिसमें प्रबन्धन, सुरक्षा व संरक्षण के साथ–साथ पर्यटको ंकी संतुष्टि व समुदाय के हित भी शामिल थे। इस रूप में भूपर्यटन का भौगोलिक पक्ष स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है। भूपर्यटन का मुख्य उद्देश्य किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं व दृश्यरूपों के प्रति पर्यटकों में आकर्षण व जिज्ञासा उत्पन्न करना है। इससे भ्रमण व अध्ययन का उद्देश्य मनोरंजन के साथ–साथ शैक्षणिक भी हो जाता है। जिससे न केवल ज्ञान में वृद्धि होती है अपितु उन भौगोलिक विशिष्टताओं के संरक्षण व उन्हें बनाये रखने के प्रयासों को भी बल मिलता है जो उस क्षेत्र के सतत पर्यटनीय विकास को बढ़ाता है जो कि भूगोल के उद्देश्य की पूर्ति करता है।

इसलिए यह माना गया कि भूपर्यटन एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की भौगोलिक सुन्दरता व विरासत को रेखांकित करता है तथा पर्यावरण, संस्कृति,

कलात्मक सौन्दर्य, विरासत और स्थानीय निवासियों के कल्याण में अपना योगदान देता है। यह भूपर्यटन का भौगोलिक दृष्टिकोण स्पष्ट कर देता है।

भूपर्यटन के भौगोलिक दृष्टिकोण को निम्न बिन्दुओं के द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है :—

1. भूपर्यटन भूगर्भिक व बाह्य प्रक्रियाओं से निर्मित किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं के सभी पक्षों को आपस में जोडकर पर्यटकों के अनुभव में वृद्धि करता है।
2. भूपर्यटन, पर्यटकों को विशिष्ट व प्रमाणिक अनुभव दिलाने के लिए स्थानीय समुदायों को सम्मिलित कर उन्हें भौगोलिक शिक्षित करता है।
3. भूपर्यटन, एक प्रकार से भौगोलिक विशिष्टताओं की शैक्षिक व्याख्या करता है जिससे विभिन्न प्रक्रियाओं से निर्मित दृश्यरूपों को समझने तथा अध्ययन में सहायता मिलती है।
4. भूपर्यटन, स्थानीय निवासियों को क्षेत्र की भौगोलिक विशिष्टताओं व उनकी प्रक्रिया की जानकारी प्रदान कराता है, जिससे पर्यटकों का क्षेत्र भ्रमण अनुभव बढ़ता है।
5. भूपर्यटन, उस क्षेत्र के संसाधनों के संरक्षण व जैव विविधता बनाये रखने के लिए विभिन्न पक्षों को समाहित कर संरक्षण व संवर्द्धन में अपना योगदान देता है।
6. भूपर्यटन में स्थानीय संस्कृति व परम्परा का सम्मान शामिल होता है तथा पर्यटकों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाता है कि वे स्थानीय संस्कृति व उनकी परम्पराओं का पालन करते हुए यात्रा करें।
7. भूपर्यटन, स्थानीय निवासियों के आर्थिक विकास में भी अपना योगदान देता है क्योंकि पर्यटकों को विभिन्न सुविधायें प्रदान करने के लिए स्थानीय निवासी विभिन्न सेवायें प्रदान करते हैं। जिनसे उन्हें आय प्राप्त होती है। इसके आधार पर उस क्षेत्र के आर्थिक विकास का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त होने लगता है।
8. भूपर्यटन का उद्देश्य मात्रात्मक न होकर गुणात्मक होता है। यह पर्यटकों की संख्या से नहीं, उनके रूकने की अवधि, उनके द्वारा किया गया व्यय तथा उनके अनुभव को पर्यटन की सफलता मानता है।
9. भूपर्यटन क्षेत्र की भौगोलिक सुन्दरता व विशिष्टता का सम्मान करते हुए उसे बनाये रखने में अपना योगदान देता है।
10. भूपर्यटन विशिष्ट, प्रेरक तथा ज्ञानार्जित अनुभव को शामिल कर यात्रा को एक नया रूप प्रदान करता है अर्थात पर्यटकों की सन्तुष्टि इसमें शामिल है। इससे पर्यटन को एक नया विस्तार मिलता है क्योंकि पर्यटक अपने मूल स्थान पर जाकर अन्यों को भी यात्रा के लिए प्रेरित करता है।

11. भूपर्यटन किसी क्षेत्र की भौगोलिक सुन्दरता व विशिष्टता को एक नई पहचान देता है। अर्थात यह स्थान को **"Sense of Place"** के अर्थ में मान्यता प्रदान कराता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि भूपर्यटन मात्र दृश्यावलियों का ही पर्यटन नहीं है अपितु इसमें समग्र पक्ष शामिल है जो कि भूगोल के अध्ययन की मूल संकल्पना है। भूपर्यटन के इस भौगोलिक दृष्टिकोण को आरेख संख्या 3.1 के द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है।

आरेख संख्या 3.1

भूपर्यटन का भौगोलिक पक्ष

Geotourism

is viewed as both "A form of" and "Approach to tourist"

Form/type of tourism includes → Approach (sustainability includes

Abiotic → Geology and climate
Biotic → Fauna and Flora
Culture → Human components

Form → Landforms and landscape
Process → How the Landforms originated
Time → When these processes occurred and how long they lasted

[Source – R.K. Dowling: Global Geotourism – An Emerging Form of sustainable Tourism P.No.65]

<u>3.5 भूपर्यटन के तत्व (Components of Geotourism)</u> :-

वर्तमान समय में पर्यटन के क्षेत्र में भूपर्यटन अपना विशिष्ट स्थान बनाता जा रहा है, जिसमें किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशिष्टतायें जिनमें विभिन्न दृश्यरूप तथा उनकी निर्माण प्रक्रिया की जानकारी शामिल है, को उभार कर उस क्षेत्र को एक विशिष्ट पहचान दी जाती है। जिससे उस क्षेत्र के आर्थिक विकास के साथ–साथ सतत विकास को भी बढ़ावा मिलता है। इस पर्यटन के माध्यम से विविध भूगर्भिक, बाह्य प्रक्रियाओं की जानकारी तथा उनसे निर्मित

भौगोलिक सुन्दरता का अध्ययन किया जाता है, जिससे पर्यटकों को एक नया अनुभव होता है।

सामान्यतः हर क्षेत्र की अपनी–अपनी भौगोलिक विशेषतायें होती है लेकिन कुछ क्षेत्र विशिष्टतापूर्ण होते हैं जो विविध भौगोलिक प्रक्रियाओं के उदाहरणों को स्पष्ट करते हैं। ऐसे क्षेत्र भूपर्यटन के प्रमुख आकर्षण के केन्द्र होते हैं। इस रूप में भूपर्यटन अपने में इससे जुड़े विविध पक्षों को समाहित करता है। जिनमें भूस्थल (Geosite), भूविविधता (Geodiversity), भूविरासत (Geoheritage), भू संरक्षण (Geo conservation) जैसे पक्ष शामिल हैं जिनके माध्यम से भूपर्यटन स्वयं की एक नई पहचान स्थापित करता है। भूपर्यटन के इन विभिन्न पक्षों को आरेख संख्या 3.2 द्वारा भी स्पष्ट किया गया है।

आरेख संख्या 3.2

भूपर्यटन के तत्व

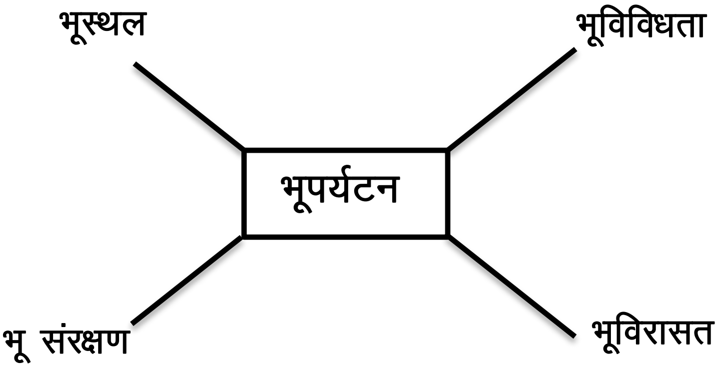

3.5.1 भूस्थल (Geosite)-

इसमें वे क्षेत्र या स्थल शामिल होते हैं जो भूगर्भिक व भूआकृति विज्ञान की दृष्टि से भौगोलिक विशिष्टता लिए हुये होते हैं। जहां के भूआकार व दृश्यरूप पर्यटकों को विस्मयकारी अनुभव के साथ–साथ नयी जानकारी भी प्रदान करते हैं। ऐसे क्षेत्रों को ''भूस्थल'' (Geosite) के रूप में चिन्हित किया जाता है जो भूपर्यटन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। Verpaelst (2004)[10] द्वारा प्रस्तुत भूस्थल चयन के मानकों का उपयोग कर बून्दी जिले में भूस्थल निर्धारित कर शोध में आधार बनाया है। वे मानक तथा उनके चयन के मापदण्ड इस प्रकार हैं :–

भूस्थलों के प्रकार –

1. शिला विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण (Lithological Sites)
2. चट्टानों के प्रकारों से सम्बन्धित (Stratotypes)
3. भूगर्भिक व भूआकृतिक दृश्यरूप (Geological and Geomorphological Landscape)
4. कन्दरा व गुफायें (Caves andGirottos)
5. खनिज स्थल अर्थात खदान (Mines)
6. जीवाश्मीय स्थल (Fossil Sites)
7. ब्रह्माण्डीय दृष्टि से महत्वपूर्ण (Meteorite Impacts)

चयन के मापदण्ड –

1. क्षेत्र का विस्तार (Size)
2. क्षेत्र के अभिगम्यता व सुगमता (Accessibility)
3. भूपर्यटन अपील (Geotourism Appeal)
4. शैक्षिक महत्ता (Educational value)
5. ऐतिहासिक महत्व (Historical Significance)
6. अन्तर्राष्ट्रीय महत्व (International Significance)
7. दुर्लभ व विशिष्ट विशेषतायें (Rare and Unique Character)
8. कलात्मक व भौगोलिक सौन्दर्य (Aesthetic)
9. सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक मूल्य (Cultural, Social and Economic Value)
10. जैव विविधता के साथ जुड़ाव (Link with biodiversity)

इस आधार पर चयनित बून्दी जिले के भूस्थलों (Geosites) को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है (तालिका संख्या 3.1) :–

शोध हेतु चयनित भूस्थलों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :–

1. रामेश्वर महादेव घाटी — यह क्षेत्र विन्ध्यन क्रम की चट्टानों से निर्मित है जहां चूना पत्थर पर जल द्वारा निर्मित विभिन्न स्थलाकृतियाँ तथा पीछे हटते हुये जल प्रपात से निर्मित घाटी विशिष्ट आकर्षण है। साथ ही यह क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से भी समृद्ध है।

2. भीमलत – यह क्षेत्र विन्ध्यन युग में निर्मित पठारी क्षेत्र है जहां ऊँचाई से गिरता जलप्रपात तथा विविध आकर्षक

चट्टानी स्थलाकृतियाँ महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र भी जैव विविधता की दृष्टि से समृद्ध है।

तालिका संख्या 3.1

जिला बून्दी : भूस्थल वर्गीकरण

Types of sites	Definition	Selection criteria	Geosites
शिला विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण	भूगर्भिक घटनाओं के साक्ष्य के रूप में	वैज्ञानिक मूल्य जैव विविधता विशिष्ट विशेषतायें भूपर्यटन अपील जैव विविधता के साथ जुड़ाव भौगोलिक सौन्दर्य	रामेश्वर महादेव घाटी तलवास भीमलत गरड़िया
चट्टानों के प्रकारों से सम्बन्धित	चट्टानों के क्रम तथा अवसादीकरण प्रक्रिया	वैज्ञानिक मूल्य विशिष्ट विशेषतायें भौगोलिक सौन्दर्य भूपर्यटन अपील	केवड़िया नाल्दिया भीमलत रामेश्वर महादेव घाटी
भूगर्भिक व भूआकृतिक दृश्यरूप	दृश्यभूमि के विकास की प्रक्रिया से निर्मित विशिष्ट स्थलरूप	भूपर्यटन अपील विशिष्ट व दुर्लभ दृश्यरूप कलात्मक भौगोलिक सौन्दर्य शैक्षिक व वैज्ञानिक मूल्य जैव विविधता के साथ जुड़ाव	रामेश्वर महादेव घाटी भीमलत गरड़िया तलवास नाल्दिया केवड़िया

3. गरड़िया – यह क्षेत्र पठारी भाग पर चम्बल नदी द्वारा निर्मित

गहरे गार्ज तथा मियाण्डर का उदाहरण प्रस्तुत करने से प्रमुख भूस्थल है। यह भी समृद्ध जैव विविधता रखता है साथ ही भूआकृतिक दृष्टि से ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

4. तलवास – विन्ध्यन क्रम की समानान्तर श्रेणियों के मध्य घाटी में स्थित यह क्षेत्र जैव विविधता तथा आकर्षक भौगोलिक सुन्दरता से परिपूर्ण होने से ''बून्दी का कश्मीर'' कहलाता है।

5. केवड़िया – यह पठारी भाग है जहां बहते हुये जल ने विविध रौचक, चट्टानी दृश्यरूपों को निर्मित किया है। साथ ही यह आदिमानव के निवास स्थल के रूप में भी प्रसिद्ध है।

6. नाल्दिया – यह क्षेत्र जल द्वारा चट्टानों पर की जाने वाली अपरदनात्मक क्रियाओं से निर्मित भौगोलिक चक्र के विभिन्न दृश्यरूपों के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही यह समृद्ध जैव विविधता क्षेत्र भी हैं।

इनके अतिरिक्त ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट जो बून्दी शहर के निकट सतूर से गुजरती है अन्य प्रमुख भूपर्यटन आकर्षण केन्द्र हैं।

3.5.2 भूविविधता (Geodiversity) – भौगोलिक विविधता शब्द किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं तथा विभिन्नताओं से सम्बन्धित है। यहां विभिन्नता से अभिप्राय अलग–अलग प्रक्रियाओं से निर्मित स्थल रूप नहीं हैं, अपितु एक क्षेत्र में निर्मित सभी भौगोलिक स्वरूप भूविविधता में शामिल हैं। यह शब्द अर्थ में जैव विविधता से अलग है क्योंकि जैव विविधता किसी दिये गये क्षेत्र की जैविक सम्पदा, पारितन्त्र व बायोम से सम्बन्धित होती है जबकि भौगोलिक विविधता में कोई एक विशेषता रखने वाला क्षेत्र भी शामिल है। इसमें चट्टानों की विविधता, खनिज, जीवाश्म, मिट्टी, दृश्यरूप तथा भूगर्भिक प्रक्रियाओं में मिलने वाली विविधता शामिल है।जेम्स, जेम्स और क्लार्क[11] 2006 के अनुसार भूविविधता व्यक्तियों, दृश्यरूपों तथा उनकी संस्कृति के बीच की कड़ी है जो भूगर्भिक व बाह्य प्रक्रियाओं से निर्मित परिदृश्यों से बनती है जो जीवन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है।

भूविविधता की मात्रा अध्ययन किये जाने वाले क्षेत्र में सम्पन्न भूगर्भिक व बाह्य प्रक्रियाओं की मात्रा पर निर्भर करती है। जहां विभिन्न युगों में भूगर्भिक घटनायें घटित हुई हैं वहां इसकी मात्रा भी अधिक होती है। इसके साथ ही जहां भूगर्भिक व बाह्य प्रक्रियाओं में भी विभिन्न कालावधि में अन्तर देखने को मिलता है, वहां भी इसकी मात्रा अधिक हो जाती है। भूविविधता में एक ही प्रक्रिया व अवधि में निर्मित विभिन्न दृश्यरूप भी सम्मिलित होते हैं।

यह विचार भूसंरक्षण तथा अजैविक तत्वों के प्रबन्धन के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा प्रदान किये जाने वाले लाभों तथा सामाजिक प्रक्रियाओं को आरेख संख्या 3.3 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

3.5.3 भूविरासत (Geoheritage) – सामान्यतः भूविरासत शब्द का अर्थ उन दृश्यरूपों या स्थलरूपों के लिए किया जाता है जिनके माध्यम से पृथ्वी के गतिशील इतिहास की विभिन्न प्रक्रियायें तथा विभिन्न भूगर्भिक युगों में होने वाली घटनायें तथा प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त होती हो। उन स्थलरूपों को भौगोलिक विरासत मानते हुये उनका संरक्षण किया जाना होता है ताकि इनके माध्यम से भविष्य में भी नये तथ्यों, घटनाओं व प्रक्रियाओं को जानने की प्रक्रिया जारी रह सके।

3.5.4 भूसंरक्षण (Geoconservation)- भूसंरक्षण के बिना भूपर्यटन की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि इसके अन्तर्गत जितने भी भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूस्थल है, उनकी निरन्तर उपयोगिता बनाये रखने के लिए किये जाने वाले कार्यों से है। इसमें इस प्रकार के प्रयास किये जाते हैं कि भूस्थल अर्थात् दृश्यावली को पर्यटन से कोई नुकसान नहीं पहुंचे। जब भूसंरक्षण को पर्यटन विकास की प्रक्रिया में शामिल किया जाता है तो यह भूपर्यटन ही नहीं सतत विकास में भी योगदान देता है। इसके अन्तर्गत किसी स्थान को भौगोलिक विशिष्टता की दृष्टि से पहचान दिलाना, उनको संरक्षित करना तथा उनको उनकी शैक्षिक उपयोगिता के आधार पर व्यवस्थित कर पर्यटन की दृष्टि से उस क्षेत्र को पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करना हैं। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि किसी भी प्रकार के पर्यटन में होने वाली वृद्धि धीरे–धीरे संसाधनों पर दबाव डालती है जिससे आवश्यकता पूर्ति के लिए कई बार अवांछनीय गतिविधियां भी हो जाती हैं जो प्राकृतिक व मानवीय आपदा को जन्म दे सकती है।

जिससे पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल नष्ट हो सकते हैं, विशेषकर भूपर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थल दीर्घ अवधि की विशिष्ट प्रक्रियाओं से बनते हैं। इसलिए उनके

आरेख संख्या 3.3

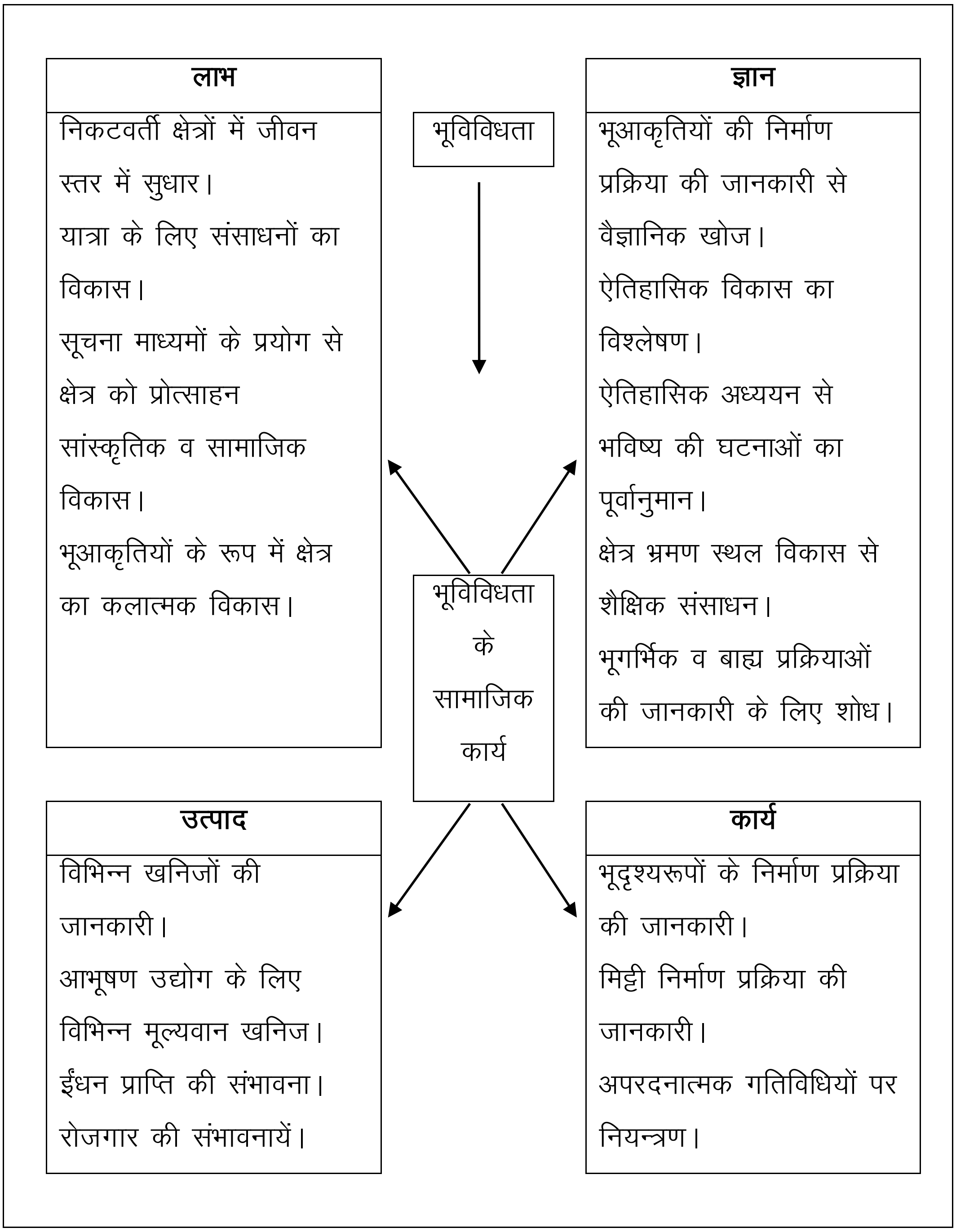

Source: Guthrie: 2004, Adapted from De Groot: 1992, English nature 2002 and gray 2003

संरक्षण के लिए विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता होती है। इसी कारण भूपर्यटन में भूसंरक्षण एक आवश्यक तत्व है।

इसके माध्यम से भूस्थलों की निरन्तरता बनी रहती है जिससे भूपर्यटन दीर्घकाल तक आकर्षण का केन्द्र बना रहकर क्षेत्र के सतत् विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए भूपर्यटन व भूसंरक्षण दोनों घनिष्ठ रूप से एक दूसरे से जुड़े हैं। जैसे किसी प्रकार के जीवाश्मीय प्रमाण, भ्रंश या वलन के उदाहरण, तथा विविध प्रक्रियाओं से निर्मित आकर्षक दृश्यरूपों को एक बार नष्ट होने पर उन्हें पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार विशिष्ट चट्टानी स्थलाकृतियों को एक बार हानि पहुंचने पर उन्हें उसी रूप में पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए भूसंरक्षण में –

- प्रकृति में होने वाले स्वाभाविक परिवर्तन को स्वीकार किया जाता है।
- उसी के अनुरूप भूसंरक्षण के प्रयास किये जाते हैं।
- प्राकृतिक प्रक्रमों तथा उनकी पोषणीय क्षमता के आधार पर ही भूपर्यटन के विकास की समन्वित कार्य योजना बनाई जाती है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि भूसंरक्षण के बिना भूपर्यटन अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता। शोध क्षेत्र में अभी तक इस दिशा में कोई प्रयास नहीं हुये हैं। अतः इस अध्ययन में भूपर्यटन की दृष्टि से चयनित महत्वपूर्ण स्थलों के भूसंरक्षण की कार्ययोजना भी प्रस्तावित है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि चूंकि भूपर्यटन एक प्रकार से शैक्षिक पर्यटन भी है जो न केवल उत्सुकता, रोमांच तथा नवीन अनुभव देता है अपितु शैक्षिक दृष्टि से भी समृद्ध करता है। इसलिए पर्यटन के इस नवीन विकसित होते हुए स्वरूप में भूस्थल, भूविरासत, भूविविधता, भूसंरक्षण जैसी प्रक्रियायें आवश्यक रूप से शामिल की गई हैं। इसमें किसी क्षेत्र में कोई एक विशिष्ट स्थलाकृति या स्थलाकृतियों का समूह, जीवाश्मीय प्रमाण तथा विभिन्न खदानों से प्राप्त चट्टानों के स्तर आदि विविधता व भूविरासत के प्रमाण हैं, तो इनके संरक्षण के लिए किये जाने वाले प्रयत्न भी शामिल हैं। इन बिन्दुओं के अन्तर्गत ही शोध क्षेत्र हेतु चयनित जिला व जिले के विभिन्न स्थलों को रेखांकित किया गया है।

3.6 भूपर्यटन सिद्धान्त (Geotourism Principles) – वर्तमान में विश्व अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भूमिका बढ़ती जा रही है, जिसके विविध रूपों में भूपर्यटन एक महत्वपूर्ण पक्ष है। भूपर्यटन पर्यटन का एक नया रूप है जो निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा है। पर्यटन का यह विशिष्ट रूप कुछ मान्यताओं व सिद्धान्तों की अपेक्षा रखता है, तभी यह अपने आकर्षण को निरन्तर बनाये रख पायेगा। भूपर्यटन के विकास में नेशनल ज्योग्राफिक चैनल एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में कार्य कर रहा है। इसने वर्ष 2002 में Geotourism Charter में भूपर्यटन के सिद्धान्तों के बारे में बतलाया और कहा कि भूपर्यटन के विकास में

इन सिद्धान्तों का पालन महत्वपूर्ण है। ये सिद्धान्त भूपर्यटन की विशिष्टता व उसकी उपयोगिता तथा सतत विकास में इसकी भूमिका को स्पष्ट कर देते हैं। इसलिए भूपर्यटन अवधारणा की स्पष्ट व्याख्या के लिए इन सिद्धान्तों की जानकारी आवश्यक है। इन सभी सिद्धान्तों को आरेख संख्या 3.4 द्वारा भी जाना जा सकता है।

3.6.1 किसी स्थान को विशिष्टता प्रदान करना (Integrity of a place) – इसमें किसी स्थान की भौगोलिक विशेषता उभार कर उसे विकसित किया जाता है जो अपने आप में प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से विशेष होती है। इस आधार पर उस स्थान की एक विशिष्ट पहचान स्थापित होती है। जो भूपर्यटन का महत्वपूर्ण पक्ष है।

3.6.2 अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का पालन (Adhere to International Code) – पर्यटन अपने आप में व्यवहारगत नियमों की अपेक्षा रखता है। भूपर्यटन भी इसी प्रकार पर्यटकों से अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन संगठन द्वारा स्थापित वैश्विक पर्यटन आचार संहिता के पालन की अपेक्षा करता है। यह पर्यटन वैज्ञानिक व शैक्षिक होने से अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक व स्थल परिषद (ICOMOS) द्वारा निर्धारित अतिरिक्त विशिष्ट नियमों व आदर्श व्यवहार की भी अपेक्षा रखता है।

3.6.3 सामुदायिक सहभागिता (Community Involvement) – किसी भी क्षेत्र में पर्यटन विकास के लिए समाज की रचनात्मक भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इससे पर्यटकों का संतुष्टि स्तर बढ़ता है और उनकी यात्रा सुखद अनुभव युक्त हो जाती है। जिससे वे नये पर्यटकों को भी प्रोत्साहित करते हैं। इसके लिए वहां के स्थानीय समुदाय को विशेष प्रशिक्षित कर विकास की प्रक्रिया में शामिल किया जाता है।

3.6.4 समुदाय हित लाभ (Community Benefit) – इसमें समाज के आर्थिक लाभ के साथ–साथ सामाजिक लाभ के लिए सूक्ष्म स्तर से वृहद् स्तर तक अर्थव्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर कार्य करने के लिए बल दिया जाता है। इसमें पर्यटन प्रसार में समाज को विभिन्न कार्यों व सुविधाओं में भागीदार बनाया जाता है। जिनमें परिवहन, होटल, सार्वजनिक सुविधायें जैसे क्षेत्र शामिल हैं। इससे समुदाय को रोजगार की सम्भावनाओं में वृद्धि कर लाभ प्रदान किया जाता है।

3.6.5 पर्यटकों की सन्तुष्टि (Tourist Satisfaction) – यह भूपर्यटन ही नहीं पर्यटन के सभी प्रकारों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। भूपर्यटन आकर्षण की विशिष्टता व विशेषता की पर्याप्त जानकारी तथा स्थानीय समुदाय का सहयोगपूर्ण व्यवहार से पर्यटक अच्छा अनुभव लेकर जाते हैं और वे अपने स्थान से अन्य को भी उस क्षेत्र विशेष में जाने को

प्रेरित करते हैं। जिससे उस क्षेत्र में पर्यटकों की निरन्तरता बनी रहती है जो उस स्थान के सतत् विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

आरेख संख्या 3.4

भूपर्यटन सिद्धान्त

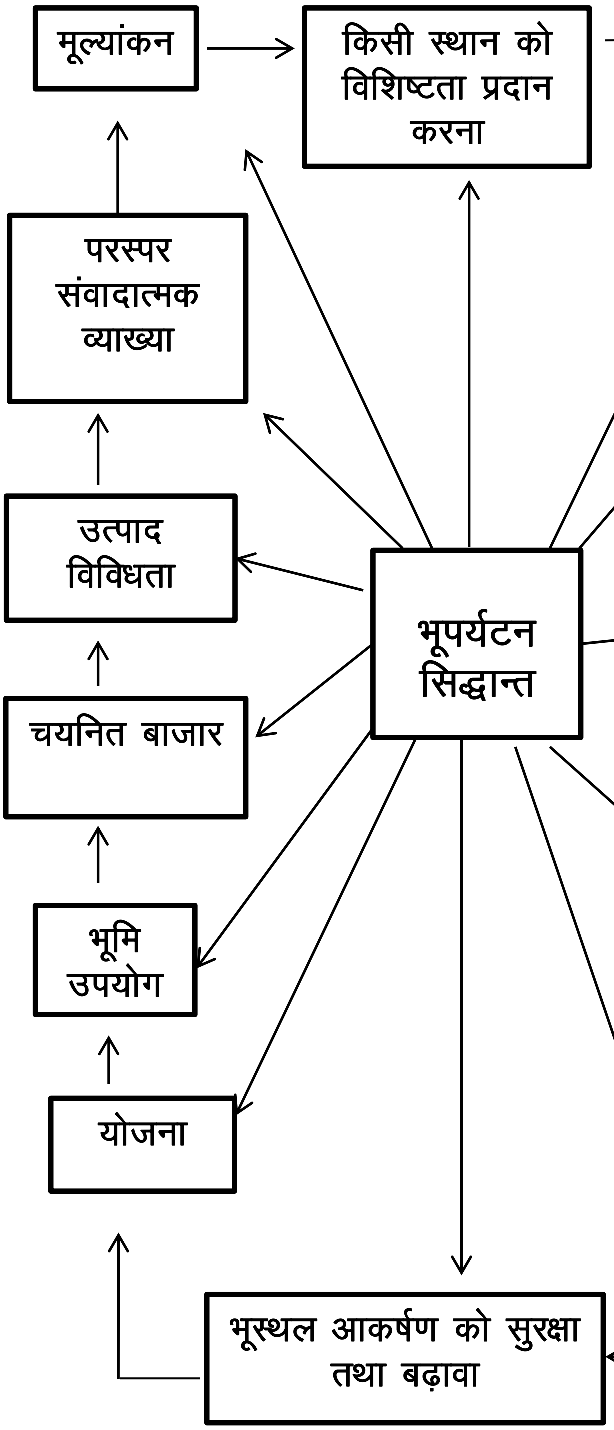

3.6.6 संसाधन संरक्षण (Conserve Resources) – यह भूपर्यटन का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। क्योंकि भूपर्यटन विशिष्ट भौगोलिक प्रक्रियाओं से जुड़ा है जो कि लम्बे समय की प्रक्रियाओं का परिणाम होती है। उनको हानि होने पर उन्हें पुनः उसी रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इसमें पर्यटन विकास के सभी कार्य पर्यावरण व संसाधन संरक्षण के निर्धारित मानकों को पूरा करके ही किये जाते हैं।

3.6.7 भूस्थल आकर्षण को सुरक्षा तथा बढ़ावा (Protection and Enhancement of Destination Appeal) – इसके अन्तर्गत भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों की विशिष्टताओं को उभार कर पर्याप्त प्रचार–प्रसार के माध्यमों से उन्हें आकर्षण का केन्द्र बनाने का कार्य किया जाता है। साथ ही पर्यटकों के सम्भावित आगमन को ध्यान में रखकर उनकी अधिकतम स्वीकार्य सीमा निर्धारित कर भूसंरक्षण के कार्यों को भी गति प्रदान की जाती है। इसके लिए आवश्यकतानुसार आग्रह, प्रोत्साहन तथा कानूनी प्रावधान का भी उपयोग किया जाता है ताकि उस स्थल की प्राकृतिक व भौगोलिक विशिष्टता को अक्षुण्ण रखा जा सके।

3.6.8 योजना (Planning) – इसमें भूपर्यटन के सभी पक्षों को ध्यान में रखकर योजना निर्माण पर बल दिया जाता है जिसमें आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ भूपर्यटनीय विशिष्टता को बनाये रखने का दृष्टिकोण शामिल है।

3.6.9 भूमि उपयोग (Land Use) – इसमें भूपर्यटन विशिष्टता को दर्शाने के लिए थीम पार्क के रूप में भूमि का उपयोग किया जाये, साथ ही प्रत्याशित विकास दबाव व तकनीक को लागू करने के लिए भूमि का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाये। रिजोर्ट, होटल या अन्य पर्यटक सुविधा केन्द्र के निर्माण व संचालन में इस बात का आवश्यक रूप से ध्यान रखा जाता है कि इसका पर्यावरण व भूमि पर दुष्प्रभाव न्यूनतम हो। इसके लिए आवश्यकता होने पर निरोधात्मक उपायों का प्रयोग किया जाताहै।

3.6.10 चयनित बाजार (Market Selectivity) – विश्व पर्यटन बाजार में क्षेत्र की विशिष्टताओं को प्रोत्साहित कर उनका पूर्ण सूचना के साथ प्रचार प्रसार कर स्थानीय हितधारकों के लाभ के लिए क्षेत्र को स्थापित किया जाता है ताकि पर्यटकों के आगमन से उस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को गति मिले।

3.6.11 उत्पाद विविधता (Product Diversity) – भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र में भूपर्यटन विशिष्टता के अतिरिक्त अन्य आकर्षण भी विकसित कर उनमें विविधता लायी जाये जैसे पर्यटन की सहायक गतिविधियों में साहसिक पर्यटन, वाटर स्पोर्ट्स, संग्रहालय

या अन्य कोई स्थानीय संस्कृति के आकर्षण को विकसित किया जाये ताकि पर्यटकों के ठहराव की सीमा बढ़ सके जिससे न केवल अल्पकालीन अपितु दीर्घकालीन लाभ भी उस क्षेत्र को प्राप्त हो सके।

3.6.12 परस्पर संवादात्मक व्याख्या (Interactive Interpretation) – इसमें स्थानीय निवासियों तथा पर्यटकों के मध्य पारस्परिक संवाद कार्यक्रमों पर बल दिया जाता है जिससे पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति, परम्परायें तथा सामाजिक विशिष्टताओं की जानकारी मिलती है। वहीं पर्यटक भी अपने क्षेत्र की विशिष्टताओं को साझा करते हैं जिससे सांस्कृतिक समझ बढ़ती है।

3.6.13 मूल्यांकन (Evalution) – इसमें पर्यटन विकास से सम्बन्धित सभी योजनायें, किये जाने वाले प्रयासों का समय–समय पर मूल्यांकन किया जाता है ताकि आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन कर योजनाओं को समयानुकूल बनाया जा सके ताकि सतत् विकास का लक्ष्य प्राप्त हो सके।

इस प्रकार पर्यटन की नई शाखा भूपर्यटन को अधिक विस्तारित व आकर्षक बनाने के लिए इन सिद्धान्तों के आधार पर भूपर्यटन चार्टर बनाया गया है ताकि इसके माध्यम से भूपर्यटन अपनी परिभाषा के अनुसार निर्धारित उद्देश्य व लक्ष्य प्राप्त कर सके।

3.7 <u>भूपर्यटन का अन्य पर्यटन से सम्बन्ध (Relationship between Geotourism and other Tourism)</u> :– मनुष्य विविध क्षेत्रों में रूचि रखने के साथ–साथ विविध कार्य भी करता है। उसके ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न स्त्रोतों में भी विविधतायें पायी जाती हैं। इसलिए आज पर्यटन विविध स्वरूपों व प्रकारों में प्रचलित है। इनमें ऐतिहासिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन प्रमुख है। वर्तमान में प्रकृति के रहस्यों व धरातलीय प्रक्रियाओं को जानने तथा उनके प्रमाण के रूप में निर्मित स्थलरूप भी आकर्षण का केन्द्र बनते जा रहे हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाने वाला पर्यद्दन भूपर्यटन कहलाता है, जो निरन्तर लोकप्रिय हो रहा है। यह ज्ञान आधारित पर्यटन है, जिस कारण इसका सम्बन्ध स्वतः ही पर्यटन के अन्य स्वरूपों से भी हो जाता है। यह अन्तर्सम्बन्ध आरेख संख्या 3.6. में स्पष्ट किया गया है।

3.7.1 ऐतिहासिक पर्यटन व भूपर्यटन – अतीत को जानने के प्रति आकर्षण मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है। प्राचीन समय में मनुष्य द्वारा तत्कालीन समयानुसार तथा आवश्यकतानुसार कई भव्य व अद्भुत निर्माण किये गये जो समय के साथ ऐतिहासिक

स्थल बन गये। ये ऐतिहासिक स्थल प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, कला–कौशल के प्रतीक होने के साथ–साथ मानव सभ्यता के विकास की प्रक्रिया को भी स्पष्ट करते हैं। इसलिये ये निरन्तर आकर्षण का केन्द्र बने रहते हैं। इसलिए आज भी सर्वाधिक पर्यटक ऐतिहासिक आकर्षण के भ्रमण के लिए आते हैं। इसी प्रकार जब प्रकृति भी विभिन्न समय में विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा आश्चर्यजनक व रहस्य, रोमांच से परिपूर्ण विभिन्न दृश्यरूपों का निर्माण करती है तो वह भूपर्यटन की विषय वस्तु बन जाती है।

इस प्रकार ऐतिहासिक पर्यटन में मानव द्वारा निर्मित कला कौशल के प्रतीकों को शामिल किया जाता है तो वहीं भूपर्यटन में प्रकृति निर्मित प्रतीकों को शामिल किया जाता है। इन ऐतिहासिक स्थलों के निर्माण में उस क्षेत्र की धरातलीय विशेषताओं की झलक मिलती है। इस कारण उसका सम्बन्ध स्वतः ही भूपर्यटन से हो जाता है। इसलिए इतिहास व भूगोल सम्मिलित रूप में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

आरेख संख्या 3.5

भूपर्यटन का अन्य पर्यटन से सम्बन्ध

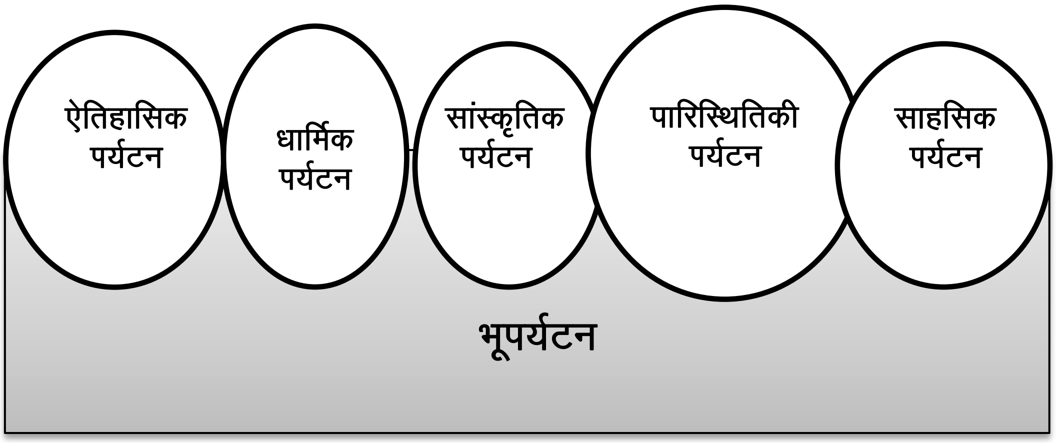

3.7.2 धार्मिक पर्यटन व भूपर्यटन – आधुनिक पर्यटन का जन्म तीर्थाटन से ही माना जाता है। भारतीय जीवन हमेशा से ही अध्यात्म से प्रेरित रहा है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति की शक्तियों को मानवीय स्वरूप प्रदान कर उनके प्रति श्रृद्धा व विश्वास की प्रवृति विद्यमान रही है जो कि स्वाभाविक रूप से भूगोल की विषयवस्तु है। प्रकृति का मानवीकरण प्रारम्भ से ही भारतीय संस्कृति का प्रमुख तत्व रहा है। धार्मिक पर्यटन में पवित्र नदियों, नदी तटों व संगम के साथ–साथ शांति की खोज के लिए प्राकृतिक स्थलों का चयन किया

जाता रहा है। इसलिए पर्यटन के इस स्वरूप का सम्बन्ध भूपर्यटन से हो जाता है। क्योंकि भूपर्यटन में प्राकृतिक प्रक्रियायें व प्राकृतिक स्थल प्रमुख विषयवस्तु है।

3.7.3 सांस्कृतिक पर्यटन व भूपर्यटन – आधुनिक मानव सभ्यता सस्कारों से ही प्रारम्भ होकर विकसित हुई है। इसलिए सास्कृतिक धरोहरें पर्यटन का एक महत्वपूर्ण आधार है। सास्कृतिक पर्यटन का उद्देश्य किसी ऐसे स्थान या निवासियों की सस्कृति का परिचय प्राप्त करना होता है, जो पर्यटक की सस्कृति से भिन्न होती है। चूंकि सस्कृति व परम्पराओं में भिन्नता देश, काल व परिस्थिति के अनुसार होती रही है। भौगोलिक विविधता के कारण ही सास्कृतिक विविधता का जन्म होता है, इसलिए सांस्कृतिक पर्यटन व भूपर्यटन स्वतः ही अन्तर्सम्बन्धित हो जाते हैं।

3.7.4 पारिस्थितिकी पर्यटन व भूपर्यटन – पारिस्थितिकी पर्यटन प्राकृतिक सुन्दरता के प्रति रूचि प्रकट करता है। जिसमें जैविक सम्पदा भी शामिल है। उसी प्रकार भूपर्यटन भी पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर प्राकृतिक दृश्यावलियों, स्थलरूपों तथा उनके निर्माण प्रक्रिया के प्रति रूचि उत्पन्न करता है। यह पृथ्वी के भौगोलिक सौन्दर्य को स्पष्ट करता है। यह एक प्रकार से प्राकृतिक क्षेत्रों का पर्यटन है जो भूगर्भशास्त्र और स्थलरूपों पर विशेष बल देता है। पारिस्थितिकी पर्यटन में प्राकृतिक सुन्दरता का आकर्षण होता है तो भूपर्यटन में सुन्दरता के साथ–साथ प्रक्रियाओं का भी अध्ययन होता है। इसलिए पारिस्थितिकी पर्यटन व भूपर्यटन एक दूसरे से घनिष्ठ अन्तर्सम्बन्धित है।

3.7.5 साहसिक पर्यटन व भूपर्यटन – प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य स्थलों व भौगोलिक विशिष्टता वाले क्षेत्रों तक पहुँचने के लिए भी साहस की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त जो स्थल या प्रक्रियायें मानव दृष्टि से अज्ञात है, उन तक पहुंचने का प्रयास करना भी साहसिक कार्य में शामिल है। इसमें चाहे एक ओर ऊँचे–ऊँचे पर्वत हो या गहरी घाटियां, विस्तृत समुद्री भाग हो या नदियों के मार्ग, घने जंगल हो या लगातार स्वरूप बदलते रेत के टीले, सभी अपना–अपना सौन्दर्य रखते हैं। इन तक जाने का प्रयास करना स्वयं में साहसिक पर्यटन है और भूपर्यटन की विषयवस्तु में प्राकृतिक सुन्दरता के साथ–साथ इसकी प्रक्रिया की जानकारी भी शामिल है जो बिना साहस के संभव नहीं हो सकती। अतः साहसिक पर्यटन व भूपर्यटन स्वतः ही अन्तर्सम्बन्धित हो जाते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भूपर्यटन एक अन्तर्विषयक पर्यटन का प्रकार है जो विश्व में प्रचलित अन्य पर्यटनों से जुड़ा हुआ है। लेकिन यह इनका पर्याय नहीं है। यह तो भूगर्भशास्त्र व भूआकृति विज्ञान का ''आकार व प्रक्रिया'' के रूप में किया जाने वाला अध्ययन है। इसलिए पर्यटन का यह स्वरूप अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ (Reference)</u> :-

1	Hose. T.	1995	"Selling the story of Britain's stone Environmental Interpretation" Vol. 10, No. 2, 1995, pp. 16-17.
2	Newsome and Dowling	2010	"Geotourism's Global Growth" Geoheritage 3(1):1-13
3	Stueve, Cooke, Drew	2002	The Geotourism Study : Phase I Excecutive summary, Travel Industry Association of America.
4	Joycee C.	2006	Geomorphological sites and the new geotourism in Australia. Geological Society of Australia,Melbourne
5	Raynard E	2007	Scientific Research and Tourist Promotion of Geomorphological Heritage. Geogr Fis Dinam Quat 31:225–230
6	Robinson A.M	2009	Geotourism: who is a geotourist? Leisure Solutions, Strawberry Hills.
7	Dowling R.	2008	The Future of Geotourism

8	Mao I., Robinson A.M., Dowling	2009	Potential Geotourist : An Australian case study" Journal of Tourism X(1):71-80(2009)
9	Nagwaria M.	2015	"Geotourism and Geoparks: Africa's current prospectus for sustainable rural development and poverty alleviation." from Geoheritage to Geopark case studies from Africa and beyond, Springer International Publishing, Switzerland
10	Verpaclst P.	2004	Outstanding Geological Sites. Highlights on the Mines.
11	James P. James J. Clark I	2006	The story of Remarkeble Rocks and the 5 G's – Sustainable Development with Geodiversity,Geoconservationand Geotourism-Within a Network of Global Geopark. (Conference abstract at the Second International Conference on Environmental,Cultural,Economic and Social Sustainability-Vietnam,9-12 Jan.2006)

चतुर्थ अध्याय

सतत् पर्यटन विकास एवं

बून्दी जिले में सतत भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना

इस अध्याय में बून्दी जिले में भूपर्यटनीय विकास के लिए एक उपयुक्त प्रबन्धन योजना के बारे में विस्तार से अध्ययन किया गया है, जो न केवल बून्दी जिले में पर्यटन विकास, भूपर्यटन विस्तार तथा जिले के सामाजिक आर्थिक विकास के साथ–साथ सतत विकास में भी योगदान देने की दिशा में एक सार्थक प्रयास होगा। इसलिए सतत विकास का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम सतत विकास अवधारणा से परिचय होने के साथ–साथ सतत पर्यटन विकास की जानकारी भी लेनी चाहिए। इन बिन्दुओं के आधार पर ही सतत् भूपर्यटनीय विकास व उसके लिए बून्दी जिले के सन्दर्भ में प्रबन्धन की योजना पर प्रकाश डाला गया है।

4.1 <u>सतत विकास अवधारणा</u> – निरन्तर विकास मानव की प्रवृत्ति रही है। मानव की इसी प्रवृत्ति से वह विकास के वर्तमान स्तर तक यात्रा कर पाया है। इस निरन्तर विकास यात्रा में वह प्राकृतिक संसाधनों का निरन्तर उपयोग करता रहा है। जिसका पर्यावरण पर प्रभाव भी पड़ता रहा है। जब तक यह प्रभाव सामान्य अथवा सीमित होता है, इसके विपरीत परिणाम नहीं आते हैं, किन्तु जब प्रभावों की आवृत्ति बढ़ती है तो पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव दृष्टिगत होने लगते हैं। निरन्तर विकास की प्रक्रिया व प्रारम्भिक स्तर पर पर्यावरणीय पहलू की उपेक्षा से पर्यावरणीय विकृतियाँ उत्पन्न हो गई। इस कारण विकास की प्रक्रिया भी एक चुनौती बन गई है। इसका अर्थ यह नहीं है कि विकास की प्रक्रिया रोक दी जाये अपितु आवश्यकता इस बात की है कि विकास को सही दिशा दी जाये। उसे मानवोपयोगी के साथ–साथ पर्यावरण के अनुकूल भी बनाया जाये अर्थात् मानव जीवन की गुणवत्ता, बिना पर्यावरण क्षति के बनी रहे, यही सतत् विकास है।

सतत् विकास का अंग्रेजी शब्द Sustainable Development है जिसका हिन्दी अर्थ पोषणीय विकास, संघृत विकास, संधारणीय विकास, टिकाऊ विकास जैसे शब्द हैं जो एक दूसरे के पर्याय हैं। सतत् विकास शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम नार्वे के प्रधानमंत्री ग्रो हरलेम ब्रंटलैण्ड ने 1987 में अपनी अध्यक्षता में स्थापित ''ब्रंटलैण्ड आयोग'' द्वारा जारी ''हमारा साझा भविष्य'' रिपोर्ट में किया था। जिसमें कहा गया कि ''सतत विकास वह विकास है जिसके अन्तर्गत भावी पीढ़ियों के आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमताओं से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है।''

संयुक्त राष्ट्र संघ के UNEP द्वारा भी इसे परिभाषित किया है –

''ऐसी विकास की नीति जो हमारे वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ ही भविष्य के साथ बिना समझौता किये अगली पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमताओं को सुरक्षित रखे, यही सतत विकास है।''

दूसरे अर्थों में भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक संसाधनों का वर्तमान समय में इस प्रकार प्रयोग करना जिससे आर्थिक विकास एवं पर्यावरण सुरक्षा के बीच एक वांछित संतुलन स्थापित हो सके। साधारण अर्थों में विनाश रहित विकास की निरन्तरता ही धारणीय या सतत् विकास है।

सतत् विकास की यह संकल्पना तीन प्रमुख स्तम्भों पर आधारित है –

1. **आर्थिक विकास** – इसमें मनुष्य के जीवन स्तर में वृद्धि करने के लिए आर्थिक अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करना है ताकि मानव की आवश्यक अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित हो सके।
2. **पर्यावरण संरक्षण** – इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि आर्थिक विकास की गतिविधियों में पर्यावरणीय संगठनों द्वारा निर्धारित मानकों को पूरा किया जाये। इसमें इस प्रकार की प्रोद्यौगिकी प्रयोग में ली जाये कि सुरक्षित पर्यावरण के साथ वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।
3. **सामाजिक समानता** – इसमें विकास की प्रक्रिया से प्राप्त लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंचे, इसके लिए आवश्यक प्रयास किये जाते हैं, तभी विकास सही अर्थों में साकार हो सकता है।

आज विश्व के सभी देश सतत् अथवा संधृत विकास को न केवल सैद्धान्तिक अपितु व्यवहारिक रूप में भी अपनाना चाहते हैं। इसके लिए ''पारिस्थितिकी विकास'' अर्थात् ''हरित विकास'' को अपनाना आवश्यक है। इसके लिए कुछ निर्धारित बिन्दुओं पर आधारित कार्य किये जाना अपेक्षित है –

1. प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग
2. जैविक विविधता का संरक्षण
3. सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण
4. पर्यावरण एवं संसाधनों से सतत आय
5. संसाधनों का पुनर्चक्रण व पुनर्उपयोग
6. मानव का गुणात्मक विकास
7. विश्व सन्दर्भ में विकास की प्रक्रिया
8. सीमित संसाधन दृष्टिकोण से आवश्यकता पूर्ति
9. जनसंख्या नियन्त्रण
10. नये संसाधनों की खोज
11. न्यूनतम पर्यावरण हानि तकनीक का प्रयोग

12. पर्यावरणीय मूल्यांकन

13. पर्यावरणीय मानकों का कठोरतापूर्ण पालन

14. भविष्य की आवश्यकताओं का अनुमान

15. विकास की प्रक्रिया में सभी की सक्रिय सामाजिक भागीदारी

16. समाज के सभी वर्गों तक लाभ पहुंचाने की दृष्टि से संसाधन उपयोग

सतत् विकास आज की महत्वपूर्ण ही नहीं अनिवार्य आवश्यकता बन गई है, ताकि विकास की यह प्रक्रिया निरन्तर बनी रहे। सतत् विकास की यह प्रक्रिया अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयामों को सम्मिलित करती है जिसमें पर्यटन भी एक महत्वपूर्ण आयाम है।

4.2 सतत् पर्यटन विकास – पर्यटन आज विश्व का विकसित उद्योग है। इससे वर्तमान में अनेक प्रकार के सामाजिक व आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहे हैं। अतः इसके सुनियोजित विकास के लिए भारत सहित विश्व के लगभग सभी देश लगातार प्रयत्नशील है। पर्यटन एक सतत क्रिया है जो अनादिकाल से चली आ रही है। 1950 के पूर्व तक परिवहन साधनों की कमी तथा दूरसंचार साधनों की अधिक लागत व अल्पता से पर्यटन की भूमिका अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण नहीं थी। इस कारण यह प्रायः अनियोजित प्रकार से ही प्रचलित था जिसमें मुख्य रूप से घरेलू या स्थानीय पर्यटन ही महत्वपूर्ण था जिसके मुख्य प्रेरक धार्मिक व सामाजिक कारक हुआ करते थे।

1950 के बाद से परिवहन व दूरसंचार क्षेत्र में हुई आश्चर्यजनक प्रगति तथा विस्तार ने देशों की सीमाओं का बन्धन हटा दिया, वहीं ज्ञान व मनोरंजन के नये क्षेत्रों का प्रसार हुआ जिससे पर्यटकों की संख्या बढ़ने लगी व अर्थव्यवस्था में इसकी भूमिका भी महत्वपूर्ण होने लगी। जैसे–जैसे पर्यटन का विस्तार होता गया, इस हेतु नये–नये आकर्षण स्थापित किये जाने लगे तथा इसके नये आयाम भी विकसित हुये। पर्यटन से प्राप्त लाभों तथा आर्थिक विकास में इसकी बढ़ती भूमिका से इसकी निरन्तरता बनाये रखने की आवश्यकता होने लगी। जिसके कारण पर्यटन नियोजन तथा सतत पर्यटन इसके विकास के कार्यक्रमों व नीतियों में महत्वपूर्ण पक्ष हो गया। पर्यटन के विकास से सतत पर्यटन की ओर आने की (कालानुक्रमिक विकास) प्रक्रिया को आरेख संख्या 4.1 में स्पष्ट किया गया है। इसमें इस बात पर बल दिया जाने लगा कि पर्यटन विकास यात्रा बाजार की आवश्यकतानुसार तथा स्थान की क्षमता के अनुसार की जाये।

आरेख संख्या 4.1
पर्यटन से सतत पर्यटन का कालानुक्रमिक विकास

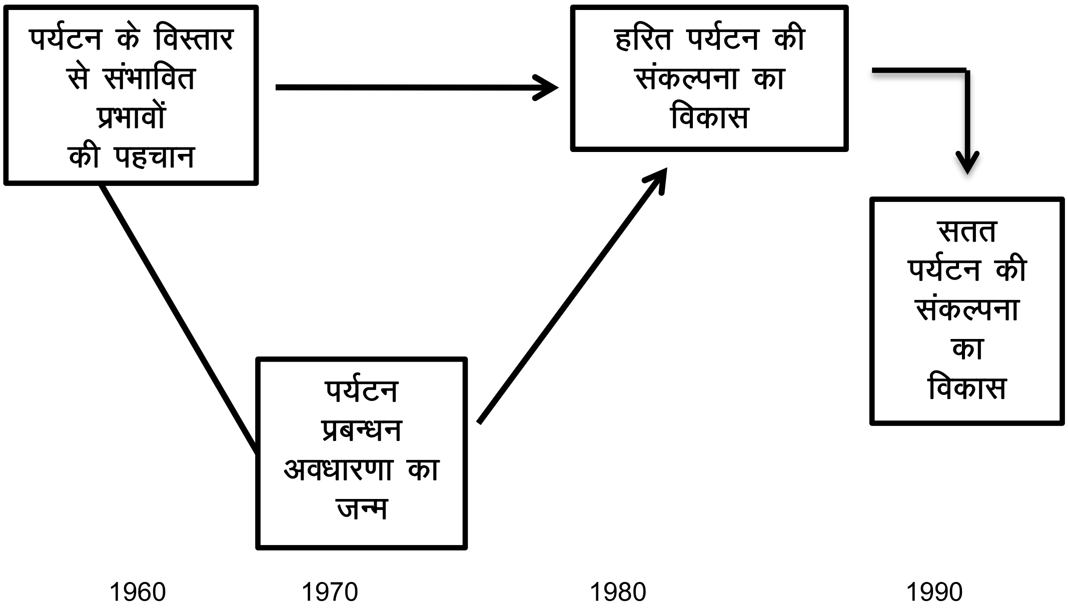

(Source: Sustainable Tourism Management – John Swarbrooke)

1990 के दशक से पर्यटन में सतत पर्यटन प्रबन्धन व विकास एक आवश्यक तत्व बन गया। सतत पर्यटन की सामान्य आवश्यकता इसलिए भी होती है कि पर्यटकों का किसी दूसरे देश या प्रदेश में प्रवास सीमित अवधि का होता है तथा उस देश या प्रदेश में पर्यटन आकर्षण स्थलों की बहुलता होती है। इसलिए पर्यटक अपनी यात्रा के लिए उपलब्ध स्थानों में से श्रेष्ठ चुनने का प्रयास करता है। जहां वह अपने दृष्टिकोण के अनुसार यात्रा के उद्देश्य को सार्थक बना सके। इस कारण पर्यटकों की अधिकाधिक संख्या को आकर्षित करने के प्रयास में तथा अपने क्षेत्र को विशिष्ट स्थापित करने के लिए कई बार पर्यटन से जुड़े व्यक्ति व संस्थायें पर्यावरणीय मानकों की भी उपेक्षा कर जाते हैं, जिससे समस्यायें उत्पन्न होती हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटक अपने सामान्य जीवन में यद्यपि पर्यावरणीय अनुशासन व सामाजिक अनुशासन का पालन करते होंगे किन्तु जब वे आनन्द, मनोरंजन या अन्य किसी उद्देश्य से पर्यटक के रूप में दूसरे स्थानों पर जाते हैं तो वे कई बार पर्यावरण व सामाजिक अनुशासन का उल्लंघन कर अपने लिए विशिष्ट व प्राथमिकता आधार पर सुविधायें चाहते हैं। बहुसंख्यक पर्यटकों की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति से मेजबान देश के संसाधनों पर दबाव पड़ता है जिससे उस क्षेत्र के पर्यटन आकर्षण की निरन्तरता व

विशिष्टता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा हो जाता है। इसलिये पर्यटन की निरन्तरता बनाये रखने तथा उसके आकर्षित करने की क्षमता को निरन्तर श्रेष्ठ करने के लिए सतत पर्यटन विकास व प्रबन्धन की आवश्यकता पड़ती है।

आज पर्यटन विश्व में तीसरा सबसे बड़ा निर्यात उद्योग है। इसके तहत वर्तमान में लगभग 1235 मिलियन पर्यटक अन्तर्राष्ट्रीय सीमायें पार करते हैं। संयुक्त राष्ट्र महासंभा ने वर्ष 2017 को पर्यटन के अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष के रूप में घोषित किया है तथा **"प्रकृति, संस्कृति और मेजबानों का सम्मान"** आदर्श वाक्य घोषित किया है। जिसके अन्तर्गत समावेशी आर्थिक विकास, स्थानीय समुदाय को अच्छे रोजगार, पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन की समस्या के प्रति ध्यान तथा अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान को सम्मान, शामिल किया है।

इस प्रकार पर्यटन विकास व्यक्तियों तथा विश्व के लिए समृद्धि के बेहतर अवसर प्रदान करता है। यह रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। इसके माध्यम से अर्थव्यवस्था के सूक्ष्म या निचले स्तर तक भी रोजगार सृजित किया जा सकता है। पर्यटन वास्तव में अर्थव्यवस्था में उद्योग की भांति मान्यता रखता है। इस उद्योग में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने की अद्‌भुत क्षमता है। यह वास्तव में कई उद्योगों व व्यापारों से मिला–जुला प्रदुषण रहित उद्योग है, इसलिए पर्यटन विकास में सतत विचार तथा प्रबन्धन की आवश्यकता होती है।

सतत् पर्यटन का अर्थ पर्यटन की उस क्रिया से है जो आर्थिक लाभ तो प्रदान करता है, किन्तु उन संसाधनों को विशेष रूप से वहां के भौतिक वातावरण तथा स्थानीय समुदाय के सामाजिक ताने–बाने को नष्ट नहीं करता है, जिन पर पर्यटन का भविष्य निर्भर होता है।

दूसरे साधारण अर्थों में सतत पर्यटन, पर्यटन की वह क्रिया है जो वर्तमान में पर्यटक, पर्यटन उद्योग तथा स्थानीय हितधारकों की आवश्यकता तो पूरी करता है, साथ ही भविष्य की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सतत् पर्यटन संकल्पना अपने आप में पर्यटक, पर्यटन व पर्यावरण के विभिन्न पक्षों को समाहित कर वर्तमान आवश्यकता के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं को भी सुरक्षित रख सतत् विकास लक्ष्य में अपना योगदान देता है।

4.3 <u>सतत पर्यटन विकास के आयाम</u> – निरन्तर बढ़ते पर्यटन व उसके कारण संसाधनों पर बढ़ते दबाव तथा पर्यावरणीय दुष्प्रभावों ने पर्यटन विकास की निरन्तरता पर प्रश्नचिन्ह लगाया है। इसलिये सतत पर्यटन विकास की संकल्पना विकसित हुई जिसके तीन महत्वपूर्ण आयाम हैं –

आरेख संख्या 4.2

सतत पर्यटन संकल्पना : विविध पक्ष

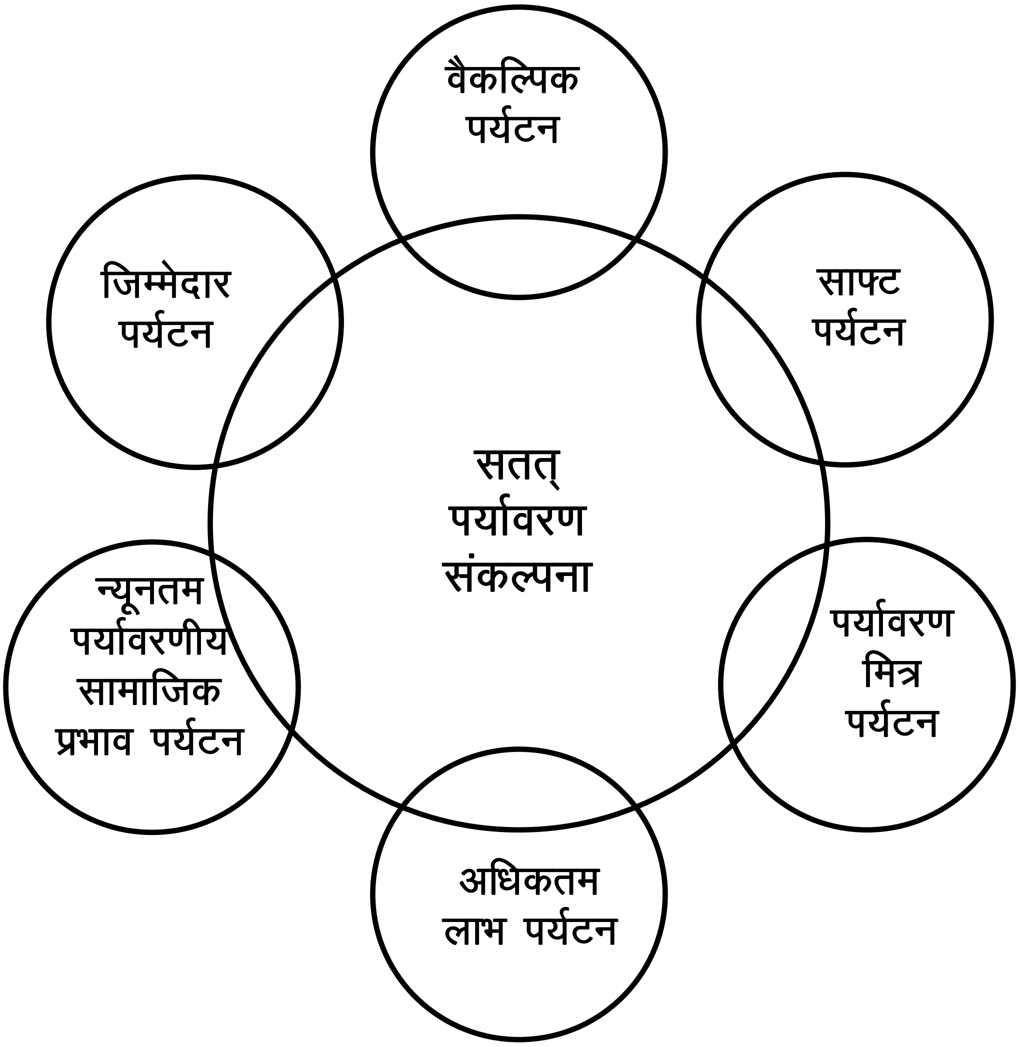

1. **पर्यावरणीय आयाम** – इसमें सतत पर्यटन विकास के लिए उन्नत तकनीक तथा प्राकृतिक संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है ताकि पर्यावरणीय दुष्प्रभाव को न्यूनतम किया जा सके।
2. **आर्थिक आयाम** – इसमें पर्यटन के लिए आवश्यक मूलभूत प्रत्यक्ष उपक्रमों – परिवहन, आवास, होटल, रेस्टोरेन्ट, मनोरंजन, कला तथा अप्रत्यक्ष उपक्रमों – पर्यटन प्रसार की विभिन्न संस्थायें, प्रचार माध्यम आदि के द्वारा रोजगार सृजन पर बल दिया जाता है जो आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

आरेख संख्या 4.3

सतत पर्यटन विकास के आयाम

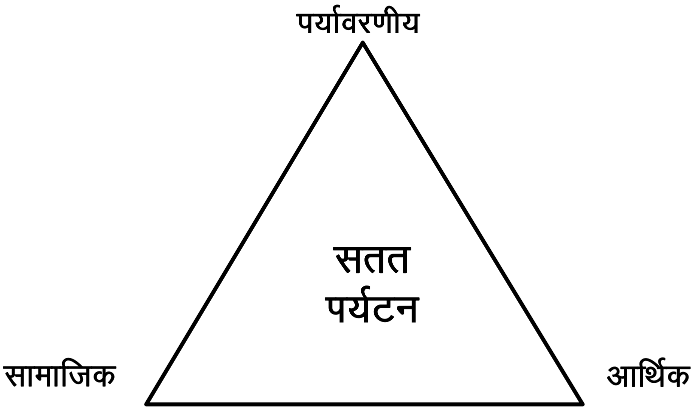

3. **सामाजिक आयाम –** इसमें पर्यटन विकास के साथ–साथ इस बात पर भी बल दिया जाता है कि स्थानीय या मेजबान समुदाय की सामाजिक मान्यताओं व सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति पर्यटक पूर्ण सम्मान रखे तथा साथ ही इसमें अनावश्यक हस्तक्षेप न हो तथा स्थानीय निवासियों व पर्यटकों के मध्य सांस्कृतिक समन्वय व सहयोग स्थापित हो ताकि उस क्षेत्र की विरासत व सामाजिक सांस्कृतिक परम्पराओं की विशिष्टता बनी रह सके।

4.4 <u>सतत पर्यटन विकास के सिद्धान्त</u> – निरन्तर बढ़ते पर्यटन व उसके कारण संसाधनों पर बढ़ते दबाव तथा पर्यावरणीय दुष्प्रभावों ने पर्यटन की निरन्तरता पर प्रश्नचिन्ह लगाया है, इसलिए सतत पर्यटन विकास की संकल्पना का विकास हुआ है जो परस्पर सम्बन्धित सिद्धान्तों पर कार्य करती है –

1. **उपयुक्त योजना व प्रबन्धन** – सतत पर्यटन विकास अवधारणा प्रकृति व मानवीय संसाधनों के दुरूपयोग को रोकने के लिए अनुकूल नीति व योजना निर्माण तथा प्रबन्धन पर बल देती है।
2. **पोषणीय वहन क्षमता** – यह अवधारणा किसी भी स्थान की पर्यटन विस्तार की सम्भाव्य क्षमता तथा उस स्थान की वहन क्षमता के मध्य सन्तुलन पर जोर देता है। अर्थात यह अवधारणा वृद्धि की सीमाओं में रहकर पर्यटन विस्तार से सम्बन्धित है।

3. **दीर्घकालीन लाभ** – यह अवधारणा किसी क्षेत्र या स्थान पर पर्यटन विस्तार से दीर्घकालीन लाभ के अनुकूल कार्य करने पर बल देती है अर्थात यह अल्पकालीन लाभ के स्थान पर दीर्घकालीन लाभ को प्रेरित करती है।
4. **समग्रता** – इस अवधारणा में केवल पर्यावरणीय पक्ष ही शामिल नहीं होता अपितु उस क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक पक्षों के उपयुक्त समाकलित प्रबन्धन से क्षेत्र के समग्र विकास पर बल दिया जाता है।

आरेख संख्या 4.4

सतत पर्यटन विकास के सिद्धान्त

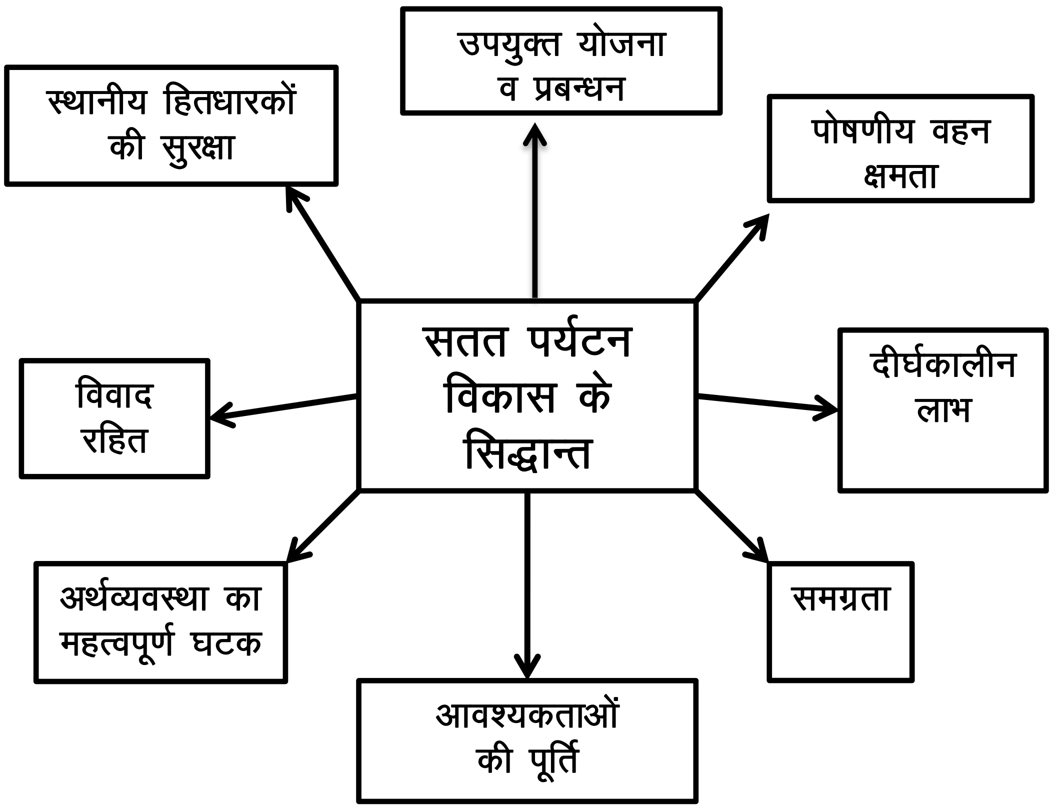

5. **आवश्यकताओं की पूर्ति** – यह अवधारणा स्थानीय निवासियों की आवश्यकताओं की संतोषप्रद तथा समानता व पक्षपात रहित पूर्ति पर स्थानीय पर्यटन संसाधनों की भूमिका पर विचार कर नीति निर्माण पर बल देता है।

6. **अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण घटक** – यह बाजार के अर्थशास्त्र को समझते हुए वास्तविक मान्यताओं पर कार्य करता है। इसमें लागत व प्रतिफल दोनों की तुलना से योजना के वास्तविक लाभ या हानि की जानकारी होती है तभी यह आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण घटक हो सकता है।
7. **विवाद रहित** – यह संसाधनों के उपयोग तथा उनसे होने वाले लाभ के मध्य स्थानीय हितधारकों तथा अन्य संस्थाओं के मध्य विवाद को दूर कर अनुकूलतम विकास के विचार से सम्बन्धित है।
8. **स्थानीय हितधारकों की सुरक्षा** – यह अवधारणा पर्यटन विकास में स्थानीय निवासियों के हितों की सुरक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुये नीति निर्माण व प्रबन्धन में उनके पक्ष को सम्मिलित करता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सतत पर्यटन विकास संकल्पना इन अन्तर्सम्बन्धित सिद्धान्तों पर आधारित कार्ययोजना से आर्थिक, पर्यावरणीय व सामाजिक प्रभावों में नकारात्मक पक्ष को कम कर क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा देता है। सतत पर्यटन विकास की संकल्पना इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि विश्व में विकास की प्रक्रिया को संधारणीय बनाने की दिशा में किये जाने वाले प्रयासों में यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस संकल्पना के अनुसार कार्य करने पर कोई क्षेत्र जो कि पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं जिसे निम्नांकित बिन्दुओं से भी स्पष्ट किया जा सकता है –

- सतत पर्यटन प्राकृतिक, सांस्कृतिक और मानवीय पर्यावरण पर पर्यटन के प्रभावों के प्रति जागरूक करता है।
- यह पर्यटन से प्राप्त होने वाले लाभों का पक्षपात रहित वितरण सुनिश्चित करता है।
- यह पर्यटन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से स्थानीय रोजगार में वृद्धि करने में सहायक है।
- यह विदेशी मुद्रा अर्जन का एक सशक्त माध्यम है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
- यह रोजगार के परम्परागत क्षेत्रों के साथ–साथ रोजगार के नये व वैकल्पिक अवसरों को बढ़ाकर आय वृद्धि में सहायक है।
- यह आधारभूत संरचना के विकास को बढ़ावा देता है, जिससे पर्यटन ही नहीं अपितु अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों को भी लाभ पहुंचता है।

- यह पर्यटन के सभी प्रकारों में उत्तरदायी पर्यटन की भावना को जन्म देकर ऐतिहासिक विरासतों, सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा विशिष्ट भौगोलिक स्थलरूपों के संरक्षण व संवर्द्धन का प्रयास तथा उनके प्रति ज्ञान की प्रवृत्ति विकसित करता है।
- यह पर्यटन से जुड़ी सभी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सेवाओं को लाभप्रद बनाता है।
- यह स्थानीय निवासियों व पर्यटकों के बीच समन्वय स्थापित कर आपसी सहयोग में वृद्धि करता है।
- यह पर्यटन विकास से जुड़ी निर्णय प्रक्रिया में सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करता है तथा निर्णय व कार्ययोजना का मूल्यांकन कर उनमें आवश्यकतानुसार परिमार्जन भी करता है।

अतः यह स्पष्ट है कि विश्व अर्थव्यवस्था में पर्यटन की बढ़ती भूमिका व उपयोगिता के कारण पर्यटन प्रसार में सतत पर्यटन विकास संकल्पना सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो रही है।

4.5 बून्दी जिले में सतत भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना –

एक आर्थिक पावर हाउस के रूप में पर्यटन क्षेत्र का बढ़ता प्रभाव व विकास के लिए एक उपकरण के रूप में इसकी क्षमता महत्वपूर्ण है। पर्यटन न सिर्फ विकास में अग्रणी भूमिका निभाता है अपितु बड़े पैमाने पर विभिन्न प्रकार के रोजगार सृजित करने की क्षमता के साथ–साथ लोगों के जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार लाता है। यह पर्यावरण संरक्षण का समर्थन करता है तथा विविध सांस्कृतिक विरासत को संजोये रखने में भी योगदान देता है। इसी कारण आज वैश्विक स्तर पर पर्यटन एक बहुत बड़ा उद्योग है।

भारत की प्राकृतिक सुन्दरता, सांस्कृतिक परम्परायें तथा ऐतिहासिक धरोहरें, यहां की समृद्ध सभ्यता आदि से भारत पर्यटन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसलिए भारत में पर्यटन विविध स्वरूपों में विकसित हुआ है। भारतीय परिदृश्य में पायी जाने वाली व्यापक भौगोलिक विविधता व सांस्कृतिक विरासत विदेशी पर्यटकों के लिए कई विकल्प प्रदान कर रही है। वर्ष 2018 की World Travel and Tourism Council (WTTC) रिपोर्ट में भारत को पर्यटन में विश्व में तीसरा स्थान मिला है। वर्ष 2017 में भारत ने लगभग 23 अरब डॉलर का राजस्व पर्यटन से अर्जित किया तथा भारत के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन का योगदान 7 प्रतिशत रहा है। इस क्षेत्र में विकास की सम्भावनाओं को देखते हुए भारत सरकार ने पर्यटन सर्किट बनाकर उनके विकास हेतु **''स्वदेश दर्शन योजना''**, विरासत स्थलों के विकास हेतु **''हृदय योजना''** तथा धार्मिक पर्यटन स्थलों के विकास हेतु **''प्रसाद योजना''** बनाई है। वहीं समावेशी कार्यप्रणाली, रोजगार सृजन व सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित करते हुये पर्यटन का विकास करना है, जिसमें कौशल विकास व

आधारभूत संरचना निर्माण महत्वपूर्ण है। केन्द्रीय पर्यटन राज्य मंत्री का यह कथन – ''हमें भारत की विरासत, दर्शन और अविश्वसनीय विविधतापूर्ण विशेषताओं को लोगों तक पहुंचाने की जरूरत है जो अनुभव प्राप्त करने योग्य है।''अपने आप में भारत में पर्यटन विकास की सम्भावनाओं को स्पष्ट कर देता है। भारत में पर्यटन को उद्योग मानकर किये जाने वाले प्रयासों के कारण ही यहां आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या वर्ष 2015 में 8027133 थी जो वर्ष 2016 में 8804411, वर्ष 2017 में 10035803 तथा वर्ष 2018 में 10558571 हो गई।

भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व प्राकृतिक सम्पदा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रही है जिसमें राजस्थान की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में प्रमुखता से जाना जाता है। यहाँ का गौरवपूर्ण इतिहास, ऐतिहासिक धरोहरें, विशिष्ट कला व संस्कृति, अनुपम व अद्वितीय प्राकृतिक व भौगोलिक सौन्दर्य तथा आतिथ्य सत्कार विशिष्ट परम्परा से राजस्थान पर्यटकों को यहां भ्रमण के लिए प्रेरित करता है। इन्हीं विशेषताओं से परिपूर्ण बून्दी जिला भी न केवल अपने गौरवमयी इतिहास व विशिष्ट ऐतिहासिक धरोहरों से अपितु अपने विशिष्ट भौगोलिक व प्राकृतिक सौन्दर्य से भी पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। यही कारण है कि बून्दी भ्रमण पर आने वाले विदेशी व घरेलू पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जो कि तालिका संख्या 4.1 तथा आरेख संख्या 4.5 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या 4.1

तुलनात्मक विवरण – राजस्थान व बून्दी में पर्यटक आगमन

वर्ष	पर्यटक आगमन			
	राजस्थान		बून्दी	
	विदेशी	घरेलू	विदेशी	घरेलू
2015	1475311	35187573	15290	54574
2016	1513729	41495115	15420	59864
2017	1609963	45916573	16442	65021
2018	1754348	50235643	16534	70442

स्त्रोत : पर्यटन रिपोर्ट 2018–19

उपर्युक्त तालिका व आरेख से स्पष्ट है कि ऐतिहासिक, प्राकृतिक व भौगोलिक विशिष्टता होने के बावजूद बून्दी जिले में राजस्थान आने वाले विदेशी पर्यटकों का लगभग 1 प्रतिशत भाग ही बून्दी भ्रमण पर आ पा रहा है। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में पर्यटक

आरेख संख्या 4.5

तुलनात्मक विवरण – राजस्थान व बून्दी में पर्यटक आगमन

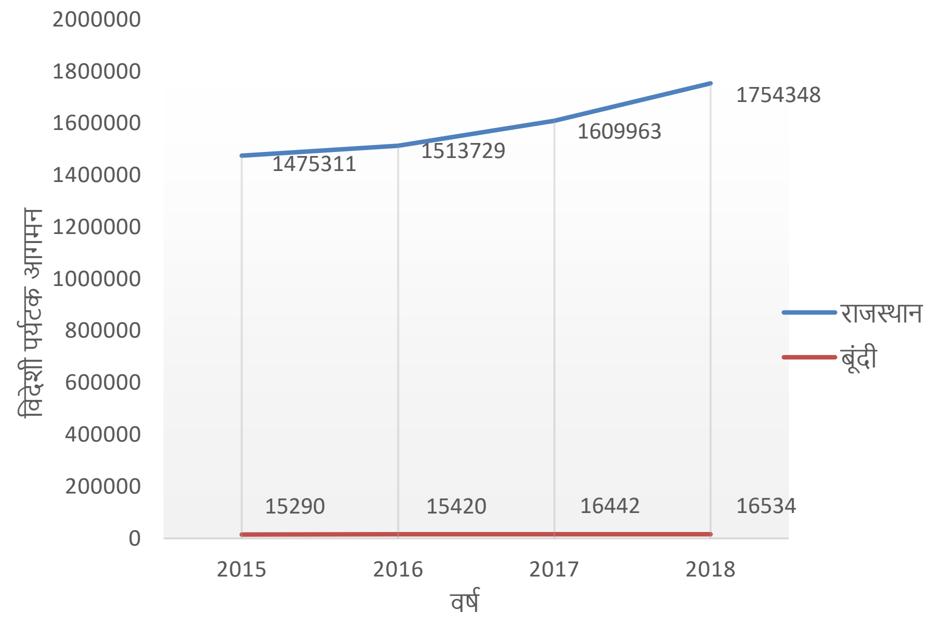

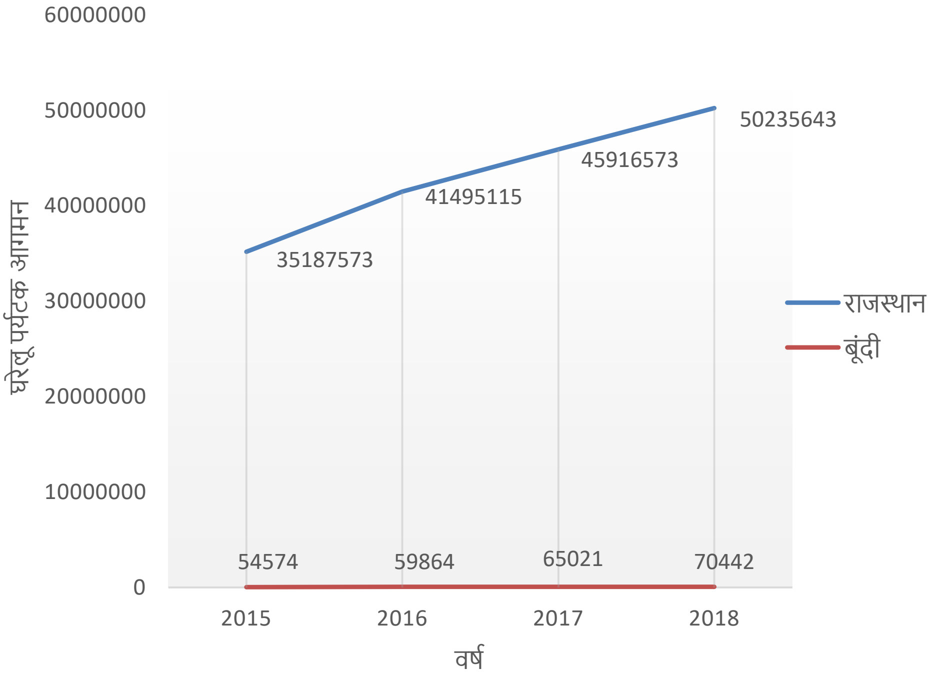

एक दिवसीय लघु भ्रमण के लिए आते हैं जो जिले के कुछ ही स्थानों का भ्रमण कर यहां से निकल जाते हैं, जिसके कारण अपार सम्भावनायें होने के बावजूद यहां पर्यटकों का आगमन कम हो पा रहा है। जिसके पीछे यहां पर्यटन आकर्षण के लिए विकल्प के साथ–साथ उपयुक्त कार्ययोजना व प्रबन्धन तथा प्रचार का अभाव है। ऐतिहासिक विरासतों व धरोहरों का आकर्षण पर्यटकों को आकर्षित नहीं कर पा रहा है। क्योंकि उस दृष्टि से तो सम्पूर्ण राजस्थान ही समृद्ध है। इसलिए पर्यटकों के आगमन को बढ़ाने के लिए ऐतिहासिक विरासत के साथ–साथ यहां विकल्प के तौर पर भूपर्यटन एक महत्वपूर्ण उपकरण सिद्ध हो सकता है। जिसकी यहां प्रचुर सम्भावनायें विद्यमान हैं क्योंकि भूपर्यटन विभिन्न क्षेत्रों में रूचि रखने वाले पर्यटकों को आकर्षित करता है जैसे –

1. सामान्य पर्यटक, जो कि पृथ्वी की भूगर्भिक प्रक्रिया या भौगोलिक सुन्दरता को भी देखना चाहता है।
2. पर्यटक, जो कि भूगर्भ विज्ञान व भूआकृतिक विज्ञान के विशेषज्ञ होते हैं और भूआकृतियों के निर्माण की प्रक्रिया व स्वरूप को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।
3. विद्यार्थी समूह, जो कि भूगोल के अध्ययन में धरातलीय प्रक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त कर अपनी जिज्ञासा पूर्ण करना चाहते हैं।
4. अकादमिक समूह जो कि विशिष्ट भूगर्भिक व भौगोलिक प्रक्रियाओं से नये तथ्यों की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।
5. पर्यटक जो कि प्रकृति प्रेमी, छायाकार, कलाकार या कलात्मक सौन्दर्य विशेषज्ञ होते हैं।

जिससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो सकती है वहीं उनका अल्पकालीन या एक दिवसीय प्रवास में भी वृद्धि हो सकती है जिसका लाभ सीधे रूप में क्षेत्र को प्राप्त होता है।

यदि बून्दी में भूपर्यटन को विकसित कर इसका समुचित प्रचार–प्रसार किया जाये तो यह बून्दी जिले के सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि इसके माध्यम से न केवल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी अपितु उनके रूकने की अवधि में भी वृद्धि होगी, जिसका सीधा लाभ बून्दी को मिलेगा। पर्यटकों की संख्या व रूकने की अवधि में वृद्धि से प्राप्त होने वाली आय को निम्न सूत्र से भी स्पष्ट किया जा सकता है।

$$I_T = E_T [N_T X D_S] – [C+I]$$

यहाँ

I_T = पर्यटकों से प्राप्त आय

E_T = प्रति पर्यटक द्वारा किये जाने वाला प्रतिदिन व्यय

N_T = पर्यटकों की संख्या

D_S = पर्यटकों के रूकने की अवधि

C = सामुदायिक सेवाओं पर व्यय

I = आधारभूत सेवाओं पर व्यय

उपर्युक्त सूत्र से स्पष्ट है कि भूपर्यटन का विकास बून्दी जिले में –

- स्थानीय पर्यटन उद्योग को अधिक लाभ की ओर ले जायेगा।
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि करेगा।
- पर्यटकों के सम्मुख एक नया विकल्प प्रस्तुत करेगा।
- भौगोलिक संरचना के ज्ञान की प्रवृत्ति विकसित कर भूवैज्ञानिक व भौगोलिक जागरूकता बढ़ायेगा।
- भूविरासत स्थलों के साथ–साथ प्राकृतिक सौन्दर्य व ऐतिहासिक महत्व तथा स्थापत्य वैभव स्थलों को संरक्षित कर उनको निरन्तर आकर्षण का केन्द्र बनाये रखता है।
- समग्र पर्यटन विकास से आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करेगा

आरेख संख्या 4.6

भूपर्यटकों की विभिन्न श्रेणियाँ

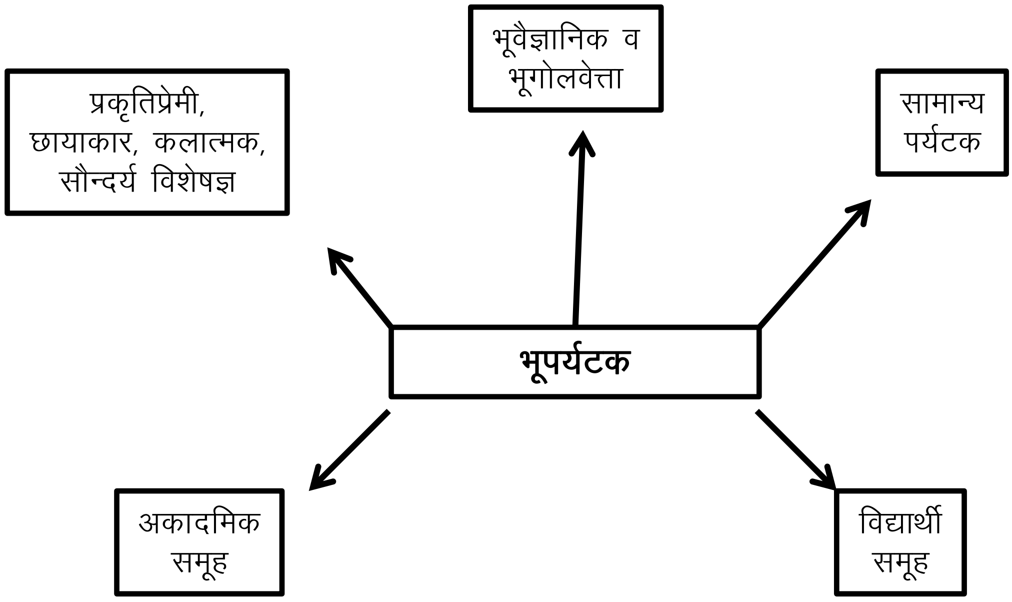

आरेख संख्या 4.7
भूपर्यटन से लाभ

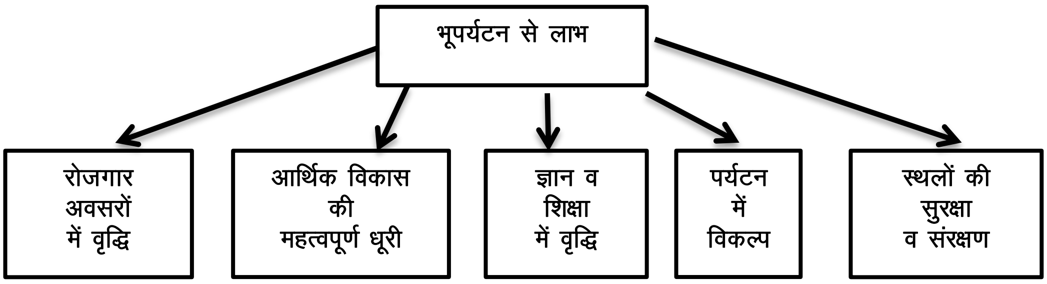

4.5.1 <u>कार्य योजना (Working Plan)</u> – राजस्थान के दक्षिण पूर्व पठारी भाग पर स्थित हाड़ौती प्रदेश का केन्द्र रहा बून्दी जिला ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण ही नहीं अपितु पृथ्वी के भौगोलिक इतिहास की विभिन्न हलचलें तथा अपरदन व निक्षेपण की अनवरत प्रक्रिया से बनी अनेक विशिष्ट भौगोलिक दृश्यावलियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस भूगर्भिक व भूआकृतिक वैशिष्टय से बून्दी न केवल विदेशी अपितु घरेलू पर्यटकों के भी आकर्षण का केन्द्र बन सकता है। आवश्यकता है इस विशिष्टता को वास्तविकता तक लाने की कार्ययोजना की जो मूल रूप से दो संभावनायें रखती है –

1. जहाँ पर्यटक पहले से ही आते हैं वहां पर्यटन के विस्तार के लिए आवश्यक सम्भावनाओं का पता लगाया जाये।
2. उन क्षेत्रों में जहां पर्यटन नहीं है, किन्तु सम्भावना है, वहां सम्भावित स्थलों को विकसित किया जाये।

बून्दी जिले में उपर्युक्त दोनों संभावनाओं को पूर्ण कर पर्यटन विकास को एक नया रूप दिया जा सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम नियोजन के रूप में एक कार्ययोजना बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि नियोजन प्रक्रिया के माध्यम से उपलब्ध विकल्पों व आवश्यक कार्यों में से श्रेष्ठ चुनने का अवसर मिलता है। साथ ही इसके माध्यम से कार्य की प्रभावशीलता व दक्षता में वृद्धि होती है, वहीं निर्णय लेने के लिए बेहतर संगठनात्मक क्षमतायें विकसित होती है और वांछित परिणाम भी प्राप्त होते हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि सर्वप्रथम जिले में भूपर्यटन विकास रणनीति अपनानी होगी जो कि स्थानीय प्रशासन, स्वयंसेवी संगठन, सामाजिक संगठन, निजी क्षेत्र तथा स्थानीय हितधारकों को सम्मिलित कर बनायी जाये। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये बून्दी जिले में पर्यटन को सतत पर्यटन के रूप में विकसित करने में भूपर्यटन की भूमिका को प्रोत्साहित करने के लिए 7 सूत्रीय परस्पर सम्बन्धित कार्यक्रम आवश्यक है :–

बून्दी जिले में सतत भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना

4.5.1.1 चिन्हीकरण (Difining) – किसी भी क्षेत्र में भूपर्यटन विकास की योजना में प्रथम सोपान चिन्हीकरण होता है। क्योंकि इसके अभाव में भूपर्यटन अपना उद्‌देश्य प्राप्त नहीं कर सकता। इसमें भौगोलिक व भूगर्भिक विविधता व विशिष्टता प्रदर्शित करने वाले स्थलों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें चिन्हित कर परिभाषित किया जाता है ताकि ऐसे स्थल पर्यटकों को आकर्षित कर सके। इस प्रथम सोपान की पूर्ति के लिए शोधकर्ता ने क्षेत्र का विस्तृत व गहन सर्वेक्षण कर इस दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का चयन विभिन्न भौगोलिक विशिष्टता के आधार पर कर उनका वर्गीकरण किया ताकि भूपर्यटक अपनी रूचि या स्थलों

आरेख संख्या 4.8

भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना

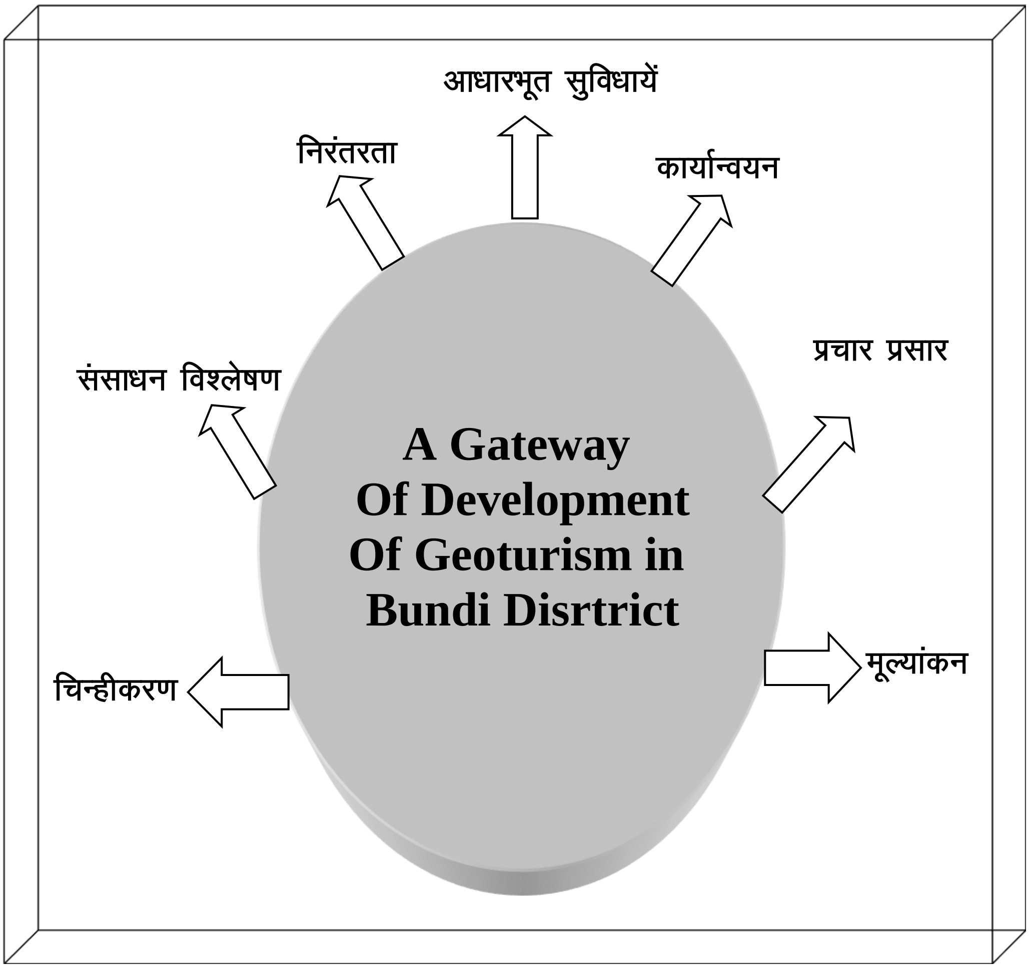

की जानकारी प्राप्त कर उन्हें चिन्हित कर परिभाषित किया जाता है ताकि ऐसे स्थल पर्यटकों को आकर्षित कर सके। इस प्रथम सोपान की पूर्ति के लिए शोधकर्ता ने क्षेत्र का विस्तृत व गहन सर्वेक्षण कर इस दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का चयन विभिन्न भौगोलिक विशिष्टता के आधार पर कर उनका वर्गीकरण किया ताकि भूपर्यटक अपनी रूचि या उद्देश्य के अनुरूप भूस्थलों का चयन कर उन क्षेत्रों की यात्रा कर सके। ऐसे स्थलों को भूस्थल के रूप में स्थापित कर उनकी विशिटता को प्रदर्शित किया गया है। जिले के भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों को निम्न तीन आधारों पर चिन्हित किया है –

- शिला विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण
- चट्टानों के प्रकारों से सम्बन्धित
- भूगर्भिक व भूआकृतिक दृश्यरूपों से सम्बन्धित

आरेख संख्या 4.9

भूपर्यटनीय आकर्षण

Source – Dowling and Newsome 2006

इस आधार पर चयनित भूस्थलों की विशेषताओं को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया गया है–

- **रामेश्वर महादेव घाटी –** यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूस्थल है। यहां चूना प्रधान क्षेत्र में जल की अपरदनात्मक व निक्षेपात्मक क्रियाओं से बनने वाले विभिन्न स्थलरूपों तथा विन्ध्यन क्रम की भूगर्भिक हलचलों के दौरान बनने वाले भ्रंश तथा वलन के विभिन्न प्रकारों के उदाहरण तथा पीछे हटते हुये जलप्रपात से बनी घाटी भूपर्यटन के आकर्षण का केन्द्र है।
- **भीमलत –** यह क्षेत्र पठारी व मैदानी भाग के सम्मिलन स्थान पर है। यह क्षेत्र शिला विज्ञान के साथ–साथ जल अपरदन व निक्षेपण की प्रक्रियाओं से निर्मित आकर्षक

चट्टानी स्थलाकृतियाँ तथा ऊँचाई से गिरते हुये जल प्रपात व जल द्वारा कटाव से बनी विस्तृत घाटी से भूपर्यटन का महत्वपूर्ण केन्द्र है।

- **गरड़िया** – चम्बल नदी द्वारा अपरदन की विस्तृत क्रिया से बने गहरे गॉर्ज तथा अपरदन व निक्षेपण से बना चम्बल का मियाण्डर स्वरूप यहां का प्रमुख भूपर्यटनीय आकर्षण है।
- **तलवास** – विन्ध्यन क्रम की समानान्तर श्रेणियों के मध्य बनी घाटी में स्थित यह क्षेत्र वलन व भ्रंश तथा जल अपरदन के विभिन्न उदाहरणों को स्पष्ट करता है।
- **केवड़िया** – इस क्षेत्र में पठारी भाग पर जल की अपरदन क्रिया से निर्मित विविध आकर्षक चट्टानी स्थलाकृतियाँ Eye Rock, Parrot Rock, मशरूम रॉक आदि तथा प्रवाहित जल का लहराता हुआ वेग पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
- **नाल्दिया** – यह क्षेत्र शिला विज्ञान, चट्टानों के विभिन्न प्रकारों तथा भूगर्भिक व भूआकृतिक दृश्यरूपों व चट्टानी स्थलाकृतियों से भूपर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखता है।

जिले में भूपर्यटन के विकास की योजना के प्रथम चरण में उपर्युक्त स्थल भूपर्यटनीय विशेषताओं के कारण महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं। यहां भीमलत, केवड़िया व नाल्दिया को मिलाते हुये एक 'भू उद्यान' स्थापित कर तथा अन्य स्थलों को 'भूस्थल' के रूप में विकसित कर भूपर्यटन को बढ़ाया जा सकता है।

4.5.1.2 संसाधन विश्लेषण (Resources Analysis) – क्षेत्र में भूपर्यटन विकास योजना का द्वितीय सोपान पर्यटन विकास के लिए उपलब्ध संसाधनों की जानकारी प्राप्त कर उनका विश्लेषण कर उस दिशा में प्रयास किये जाते हैं। इसके लिए सामान्यतः तीन प्रश्नों के उत्तर निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत प्राप्त किये जाते हैं –

I. **भौतिक संसाधन** – सम्बन्धित क्षेत्र में पर्यटन विकास के लिए वर्तमान में क्या आधारभूत संरचनायें विद्यमान हैं ?

II. **वित्तीय संसाधन** – सम्बन्धित क्षेत्र में पर्यटन क्षमता को विकसित करने के लिए क्या आवश्यक वित्तिय संसाधन उपलब्ध हैं ?

III. **मानव संसाधन** – सम्बन्धित क्षेत्र में क्या पर्यटन के प्रभावी प्रबन्धन तथा पर्यटन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुशल मानव संसाधन पर्याप्त उपलब्ध है ?

क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर बून्दी जिले में भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उपर्युक्त आधारों पर संसाधन उपलब्धता के बारे में प्राप्त जानकारी इस प्रकार है –

तालिका संख्या 4.2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रामेश्वर महादेव घाटी क्षेत्र में ही भौतिक, वित्तिय व मानवीय संसाधनों के विभिन्न घटकों में से अधिकांश उपलब्ध है। शेष क्षेत्र प्रायः पर्यटन विकास के लिए आवश्यक संसाधनों की दृष्टि से उपेक्षित है। जिससे यहां पर्यटकों का आगमन भी कम है तथा उनकी ठहराव अवधि भी कम है। इसलिए इन क्षेत्रों में भूपर्यटन के विकास के लिए इन संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाया जाना आवश्यक है। इसके लिए प्रशासन, स्थानीय हितधारकों, सामाजिक संस्थाओं, जनप्रतिनिधियों तथा राज्य सरकार के माध्यम से सम्मिलित रूप में प्रयास किये जाने चाहिए।

तालिका संख्या 4.2

जिला बून्दी : भूपर्यटन स्थलों पर संसाधन उपलब्धता

संसाधन	आवश्यक तत्व	उपलब्धता					
		रामेश्वर महादेव घाटी	**भीमलत**	**गरड़िया**	**तलवास**	**केवड़िया**	**नाल्दिया**
1. भौतिक संसाधन	(i) सड़क	√	√	x	√	√	x
	(ii) परिवहन साधन	√	√	√	√	√	√
	निजी	x	x	x	x	x	x
	सार्वजनिक	x	x	x	x	x	x
	(iii) होटल	√	√	x	x	x	x
	(iv) विश्रामगृह	√	x	x	x	x	x
	(v) सार्वजनिक सुविधायें	x	x	x	x	x	x
	(vi) प्रदर्शक चिन्ह	x	x	x	x	x	x
	(vii) सूचना पट्ट	x	x	x	x	x	x
2. वित्तीय संसाधन	(i) बजट प्रावधान	√	√	x	x	x	x
	(ii) निजी क्षेत्र सहभागिता	√	x	x	x	x	x
	(iii) सामुदायिक सहभागिता	√	x	x	x	x	x
3. मानव संसाधन	(i) प्रशिक्षित गाइड	x	x	x	x	x	x
	(ii) आतिथ्य सत्कार	√	x	x	x	x	x
	(iii) सांस्कृतिक समझ	x	x	x	x	x	x
	(iv) पर्यावरणीय चेतना	x	x	x	x	x	x

4.5.1.3 निरन्तरता (Sustaining) – यह भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना का तृतीय सोपान है जिसमें यह ज्ञात किया जाता है कि विकास की योजना के कार्यान्वयन से पर्यावरणीय, सामाजिक व आर्थिक प्रभाव क्या होंगे ? साथ ही इसमें भूसंरक्षण उपायों को अपनाकर इन स्थलों को विशिष्ट पहचान दिलायी जाती है। इस प्रक्रिया में यह आवश्यक रूप से देखा जाता है कि संरक्षण उपाय पर्यटन गतिविधियां प्रारम्भ होने के साथ ही प्रारम्भ हो जाये न कि नुकसान होने के बाद क्योंकि भूपर्यटनीय दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलरूपों या प्रमाणों को पुनः उसी रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए भूपर्यटन की कार्ययोजना में निरन्तरता के लिए भूसंरक्षण एक आवश्यक तत्व है। इसलिये निरन्तरता बनाये रखने के लिए कार्ययोजना में पर्यावरणीय, सामाजिक तथा आर्थिक प्रभावों के दोनों पक्ष सकारात्मक व नकारात्मक को पूर्व में ही जान लेना आवश्यक हो जाता है –

(i) भूपर्यटन का पर्यावरणीय प्रभाव – भूपर्यटन विकास तथा पर्यावरण दोनों अन्तर्सम्बन्धित है क्योंकि भौतिक वातावरण पर्यटकों के लिए कई आकर्षण प्रस्तुत करते हैं और पर्यटन विकास से वहां की विशिष्टता अन्य क्षेत्रों तक भी पहुंचती है। किन्तु पर्यटन विकास कार्यक्रम का प्रभाव निश्चित तौर पर वहाँ के स्थानीय पर्यावरण पर पड़ता है जो सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पक्ष लिये हुये होता है जो कि इस प्रकार संभावित हो सकते हैं –

सकारात्मक प्रभाव –

- प्राकृतिक व जैविक विविधता व सुन्दरता बनी रह सकती है।
- प्रायः पर्यटक उन स्थानों की यात्रा करना पसंद करते हैं जो आकर्षक, स्वच्छ तथा नियंत्रित है जिससे उनके संरक्षण में मदद मिलती है।
- स्थानीय निवासियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है।
- भौगोलिक स्थलाकृतियों की विशिष्ट निर्माण संरचना की जिज्ञासा से प्रकृति प्रेम की भावना का संचार होता है।

नकारात्मक प्रभाव –

- जल, वायु, ध्वनि प्रदुषण में वृद्धि हो सकती है।
- अपशिष्ट निस्तारण एक समस्या को जन्म दे सकता है।
- पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाओं के प्रसार के लिए विभिन्न बुनियादी निर्माण कार्य आवश्यक हो जाते हैं, जो पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।

- भौगोलिक आकृतियों के स्वरूप को विकृत करने का अंदेशा उत्पन्न होता है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को न्यूनतम किया जाये।

(ii) **भूपर्यटन का सामाजिक – सांस्कृतिक प्रभाव –** पर्यटन में विस्तार का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय निवासियों की सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओ पर पड़ता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यहां का सामाजिक जीवन निश्चित नियमों व मान्यताओं का पालन करता है। बढ़ते पर्यटन से विभिन्न संस्कृतियाँ एक–दूसरे के निकट आती है। इसलिये योजना निर्माण में इस पक्ष के संभावित प्रभावों को भी पूर्व में ही जान लेना आवश्यक हो जाता है –

सकारात्मक प्रभाव –

- सम्बन्धित क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होगा तथा उसे प्रोत्साहन मिलेगा।
- स्थानीय वास्तुकला, हस्तकला, स्थापत्य कला या अन्य प्रकार की विशिष्टता को प्रोत्साहन व संरक्षण मिलेगा।
- पर्यटकों तथा स्थानीय समुदाय के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान होने से एक–दूसरे के प्रति सम्मान में वृद्धि होती है।

नकारात्मक प्रभाव –

- पर्यटन प्रसार से स्थानीय संस्कृति पर बाह्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ने से सांस्कृतिक प्रदुषण की समस्या उत्पन्न हो सकती है।
- स्थानीय क्षेत्र की परम्परागत जीवन शैली में परिवर्तन आने लगता है और सामाजिक मूल्यों व मान्यताओं में ह्रास होने लगता है।
- पर्यटकों की अनियंत्रित गतिविधियों से विभिन्न सामाजिक अपराध यथा नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, सांस्कृतिक खुलापन तथा यौन अपराध में वृद्धि हो सकती है।

(iii) **भूपर्यटन का आर्थिक प्रभाव –** पर्यटन प्रसार से प्राप्त आर्थिक प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है। यह अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण घटक है। इसका सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि पर्यटन परिवहन सुविधाओं, आधारभूत सुविधाओं तथा सेवाओं के विकास को बढ़ाता है, जिससे न केवल पर्यटन प्रसार होता है अपितु यह आर्थिक क्षेत्रों के लिए भी उत्प्रेरक का कार्य करता है इसके माध्यम से –

- सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि
- उत्पन्न स्थानीय रोजगार
- समग्र विकास में महत्वूपर्ण भूमिका
- विदेशी मुद्रा की प्राप्ति
- सरकारी राजस्व में योगदान

जैसे लाभ प्राप्त होते हैं जो क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। किन्तु इस बात का ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि क्षेत्र की वहन क्षमता के अनुसार ही पर्यावरणानुकूल वस्तुओं व सेवाओं का क्रमिक विकास हो तथा उत्पन्न रोजगार में स्थानीय हितधारकों की प्राथमिकता हो।

इस आधार पर बून्दी जिले में भूपर्यटन विकास में निरन्तरता के लिए पर्यावरणीय, सामाजिक व आर्थिक प्रभावों को ध्यान में रखते हुये कार्ययोजना मे निम्न बिन्दु सम्मिलित किये जाने चाहिए –

- क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन सुविधा विकसित की जानी चाहिए।
- सम्बन्धित भूपर्यटन स्थलों पर वाहनो के प्रवेश की अधिकतम सीमा निर्धारित कर उन्हें निश्चित दूरी पर पार्किंग की व्यवस्था प्रदान की जाये।
- पर्यटक सुविधाओं के निर्माण में यथासम्भव स्थानीय पर्यावरण के अनुकूल व स्थानीय सामग्री का ही प्रयोग किया जाये।
- सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबन्ध से प्रदुषण समस्या व कचरा निस्तारण की समस्या को न्यूनतम किया जाये।
- पर्यटन क्रमिक आधार पर विकसित किया जाये।
- पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति, परम्पराओं व मान्यताओं के बारे में पूर्व में ही जानकारी दे दी जाये ताकि उनके द्वारा उनको क्षति न पहुंचे।
- पर्यटन प्रसार के साथ–साथ सामाजिक निगरानी भी बढ़े तथा अपराध, नशा व अन्य संभावित अवांछनीय सामाजिक प्रभावों पर सख्त नियन्त्रण की व्यवस्था की जाये।

उपर्युक्त बिन्दुओं की अनुपालना से बून्दी में भूपर्यटन विकास को निरन्तरता प्रदान कर अधिकतम लाभ को प्राप्त किया जा सकता है, जो क्षेत्र के सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

4.5.1.4 आधारभूत सुविधाओं का विकास (Infrastructure Development) – भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना में चतुर्थ सोपान के रूप में पर्यटकों के आगमन को बढ़ाने तथा उनके ठहराव अवधि में वृद्धि करने के लिए पर्यटकीय सुविधाओं में प्रसार की आवश्यकता होती है जिसमें कुछ महत्वपूर्ण बुनियादी सुविधाओं का विकास महत्वपूर्ण हो जाता है। चयनित भूस्थलों पर आधारभूत सुविधाओं के रूप में –

- जिला मुख्यालय से पक्की सड़क द्वारा जोड़े जायें तथा जर्जर सड़क मार्गों को सुधारा जाये।
- सार्वजनिक परिवहन सुविधा जिला दर्शन के रूप में उपलब्ध होनी चाहिये।
- विश्रामगृह व सार्वजनिक सुविधायें पर्याप्त मात्रा में विकसित की जानी चाहिये।
- प्रवेश द्वार पर ही क्षेत्र की समस्त पर्यटनीय विशेषताओं विशेषकर भूस्थलरूपों को सूचना बोर्ड पर फोटोग्राफ सहित अंकित की जानी चाहिए।
- क्षेत्र में भ्रमण के लिए स्थान–स्थान पर दिशा प्रदर्शक तथा निश्चित ईको मार्ग बनाया जाना चाहिए।
- जिले के अन्य भूपर्यटन स्थलों की भी जानकारी, वहां तक पहुंचने का मार्ग व साधनों की भी जानकारी दी जानी चाहिए।

इन सभी बुनियादी सुविधाओं के अभाव में भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना वास्तविक रूप में नहीं आ सकती। इसलिये इन आधारभूत सुविधाओं का विकास आवश्यक है।

4.5.1.5 कार्यान्वयन (Implementation) – भूपर्यटन विकास कार्ययोजना का पंचम सोपान विभिन्न योजनाओं की क्षेत्र में वास्तविक रूप में क्रियान्विति है। इसके लिए बनायी गई योजना को सहभागिता के आधार पर एक कार्यकारी समूह बनाकर कार्यान्वित किया जाना चाहिए। जिसमें स्थानीय समुदाय, सामाजिक संगठन तथा स्थानीय हितधारक भी सम्मिलित हो। अर्थात योजना निर्माण से लेकर क्रियान्वयन तक पारदर्शिता व सहभागिता के आधार पर उसे वास्तविकता में लाया जाये। योजना के सफल व सुचारू क्रियान्वयन के लिए क्षेत्र में निम्न बिन्दुओं पर कार्य अपेक्षित है –

- सर्वप्रथम भूपर्यटन विकास के लिए एक कार्यकारी समूह अर्थात् टास्क फोर्स का गठन किया जाये जिसमें स्थानीय हितधारक, जनप्रतिनिधि, पर्यटन विशेषज्ञ, पर्यावरणविद् तथा क्षेत्र व विषय की जानकारी रखने वाले विशेषज्ञ सम्मिलित हो।
- योजना को क्रमबद्धता प्रदान करने तथा उसके व्यवस्थित क्रियान्वयन के लिए एक चेकलिस्ट बनायी जानी चाहिये जिसमें किये जाने वाले कार्यों तथा उसको पूर्ण

करने की निर्धारित अवधि का भी स्पष्ट उल्लेख हो अर्थात् भूपर्यटन विकास के लिए योजनाओं की समयबद्ध क्रियान्विति आवश्यक है।

- क्रियान्वयन में गाइड तथा स्थानीय हितधारकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी समावेश होना चाहिए तभी वे भूपर्यटन विषय को पर्यटकों के समक्ष प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- भूपर्यटन विकास की योजनाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक विशिष्टता का प्रदर्शीकरण तथा भूसंरक्षण में आवश्यकतानुसार वित्त की व्यवस्था महत्वपूर्ण तथ्य है। इसके लिए प्रस्ताव बनाकर केन्द्र या राज्य सरकार से, निजी क्षेत्र से व सामुदायिक व्यवस्था के आधार पर इसकी व्यवस्था की जा सकती है।
- पर्यटकों से यथोचित शुल्क भी लेना चाहिए जिसके लिए केन्द्रीकृत व्यवस्था के साथ–साथ क्षेत्र विशेष में भी शुल्क काउंटर स्थापित किया जाये तथा शुल्क राशि का निर्धारण भ्रमण किये जाने वाले स्थलों की संख्या के आधार पर आनुपातिक रूप से कम दर पर किया जाना चाहिए।
- पर्यटन विभाग द्वारा ही भूपर्यटन क्षेत्र भ्रमण के साथ अन्य वैकल्पिक पर्यटन के भ्रमण के लिए सुविधाजनक परिवहन व्यवस्था भी की जानी चाहिए।
- पर्यटकों के भ्रमण के लिए उनकी ठहराव अवधि और प्राथमिकता रूचि के आधार पर एक प्रस्तावित भ्रमण योजना भी बनायी जानी चाहिए। इसके लिए शोधकर्ता ने क्षेत्र भ्रमण तथा विशेषताओं के आधार पर विभिन्न अवधि के अनुसार भ्रमण योजना प्रस्तावित की है।

प्रस्तावित क्षेत्र भ्रमण योजना :–

A– **पांच दिवसीय (मानचित्र संख्या 4.1)**

दिवस I (Day I) - बून्दी शहर ऐतिहासिक विरासत दर्शन

दिवस II (Day II) - बून्दी–रामेश्वर महादेव–ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट– बून्दी

दिवस III (Day III) - बून्दी–भीमलत–केवड़िया–नाल्दिया– बून्दी

दिवस IV (Day IV) - बून्दी–झर महादेव–रामगढ(खटकड़)–तलवास–इन्द्रगढ़– बून्दी

दिवस V (Day V) - बून्दी–गरड़िया–के.पाटन– बून्दी

B –**चार दिवसीय (मानचित्र संख्या 4.2)**

दिवस I (Day I) - बून्दी शहर ऐतिहासिक विरासत दर्शन – रामेश्वर महादेव–ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट– बून्दी

दिवस II (Day II) - बून्दी–भीमलत–केवड़िया–नाल्दिया– बून्दी

दिवस III (Day III) - बून्दी–झर महादेव–रामगढ(खटकड़)–तलवास–इन्द्रगढ़– बून्दी

दिवस IV (Day IV) - बून्दी–गरड़िया–के.पाटन– बून्दी

C –**दो दिवसीय (मानचित्र संख्या 4.3)**

दिवस I (Day I) - बून्दी शहर ऐतिहासिक विरासत दर्शन – रामेश्वर महादेव– तलवास–रामगढ(खटकड़)–झर महादेव– बून्दी

दिवस II (Day II) - बून्दी–भीमलत–केवड़िया–नाल्दिया–गरड़िया–बून्दी

- ➢ योजनाओं की क्रियान्विति के लिए स्थापित टास्क फोर्स की नियमित समीक्षा बैठक होनी चाहिए तथा योजनाओं के प्रभावों की निगरानी के लिए भी एक तन्त्र स्थापित किया जाये।

उपर्युक्त बिन्दुओं की अनुपालना व कुशल क्रियान्वयन से बून्दी जिले में भूपर्यटन विकास एक नई ऊँचाई पर पहुँच सकता है।

4.5.1.6 विपणन एवं प्रचार–प्रसार (Marketing and Advertisement) – भूपर्यटन विकास की कार्ययोजना का यह षष्टम् महत्वपूर्ण सोपान है क्योंकि इस पर ही क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या तथा उनके रूकने की अवधि निर्भर करती है। विपणन व प्रचार–प्रसार का मुख्य उद्देश्य पर्यटकों को इन स्थलों की ओर आकर्षित करना है ताकि बून्दी जिला विश्व पर्यटन मानचित्र पर स्थापित हो सके। इसके लिए बनायी जाने वाली योजना में निम्न बिन्दु महत्वपूर्ण हो सकते हैं –

- ➢ वेबसाइट, सोशल मीडिया, प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे प्रचार माध्यम का उपयोग कर जिले की भूपर्यटनीय विशेषता को विश्वजगत के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये।
- ➢ जिले की भूपर्यटनीय विशेषता के आकर्षण केन्द्रों तथा विविध भौगोलिक प्रक्रियाओं के उदाहरण तथा आकर्षक चट्टानी स्थलाकृतियों को सम्मिलित करते हुये समग्र पर्यटन आधारित (ऐतिहासिक व पुरातात्विक वैभव सहित) एक विस्तृत विवरणिका (Brochure) छायाचित्रों के साथ तैयार की जानी चाहिए जिसमें भूपर्यटनीय विशेषताओं

में विभिन्न भूगर्भिक प्रक्रिया तथा भूआकृतिक विशेषताओं से सम्बन्धित जानकारी भी संक्षिप्त रूप में सम्मिलित होनी चाहिए।

- यह विवरणिका जिले के सभी विश्राम स्थलों, होटलों व सार्वजनिक स्थलों पर उपलब्ध होने के साथ–साथ अन्य जिलों के भी विश्राम स्थलों, होटलों पर वहां की विवरणिका के साथ रखे जाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- स्थानीय पर्यटन सूचना केन्द्र व पर्यटन विकास के लिए बनी टास्क फोर्स सम्मिलित रूप में राज्य के अन्य जिलों में आयोजित पर्यटन महोत्सवों व अन्य राज्यों में आयोजित पर्यटन मेलों में जिले की भौगोलिक, प्राकृतिक सुन्दरता व ऐतिहासिक गौरव को प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाये।
- जिले के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग तथा पर्यटन विभाग द्वारा जिले की अधिकारिक वेबसाइट पर जिले की भूपर्यटनीय विशेषताओं को भी उभारा जाये।
- प्रचार माध्यमों में जिले में पर्यटको ंको उपलब्ध सुविधाओं की भी जानकारी दी जानी चाहिए।
- शैक्षिक व अकादमिक भ्रमण को भी प्रचार माध्यमों में भूपर्यटनीय आकर्षण के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- जिले का एक सड़क मानचित्र पर्यटनीय विशेषताओं के साथ तैयार किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त बिन्दुओं की अनुपालना से विपणन व प्रचार–प्रसार को अधिकाधिक विस्तारित कर भूपर्यटन विकास द्वारा पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो सकती है जो कि जिले की अर्थव्यवस्था के लिए एक शुभ संकेत हो सकता है।

4.5.1.7 मूल्यांकन (Evaluation) – भूपर्यटन विकास कार्ययोजना का अन्तिम सोपान मूल्यांकन प्रक्रिया होता है इसमें क्षेत्र में भूपर्यटन विकास के प्रबन्धन व कार्ययोजना के विभिन्न चरणों का समयानुसार मूल्यांकन कर आवश्यकतानुसार उसमें संशोधन किया जाता है ताकि भूपर्यटन के माध्यम से सतत विकास का उद्देश्य प्राप्त किया जा सके। इसके लिए मूल्यांकन प्रक्रिया में निम्न बिन्दु अपनाये जा सकते हैं –

- प्रत्येक पर्यटक चाहे वह घरेलू हो या विदेशी को फीडबैक फार्म दिया जाये तथा उनसे उस स्थल के भ्रमण के पश्चात् भरवाकर आवश्यक रूप से प्राप्त किया जाये।
- फीडबैक फॉर्म में पर्यटकों द्वारा अन्य अपेक्षित योजना या अपेक्षित सुधार का उल्लेख भी किया जाये ताकि पर्यटकों की राय भी प्राप्त हो सके।

- फीडबैक फॉर्म में पर्यटकों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के प्रति उनका सन्तुष्टि स्तर भी जाना जाये व आवश्यकतानुसार उसमें वांछित परिवर्तन भी किया जाये।
- कार्ययोजना के प्रत्येक चरण में भी मूल्यांकन प्रक्रिया की व्यवस्था होनी चाहिए तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी किया जाना चाहिए।
- पर्यटन विकास कार्ययोजना के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों की भी समय–समय पर समीक्षा होनी चाहिए तथा इस बात पर विशेष ध्यान रखा जाये कि नकारात्मक प्रभावों में वृद्धि न हो पाये।

अतः यह कहा जा सकता है कि पर्यटकों से प्राप्त अनुभवात्मक फीडबैक व उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावों पर आवश्यक रूप से ध्यान देकर उसे भी कार्ययोजना में शामिल किया जाना चाहिए। मूल्याकंन प्रक्रिया ही भूपर्यटन विकास कार्ययोजना को व्यवहारिक रूप प्रदान करेगी तभी भूपर्यटन जिले के सतत विकास में अपनी भूमिका निभा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि समुचित कार्ययोजना व उसके वास्तविक क्रियान्वयन से ही वांछित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इसलिए शोधकर्ता का विश्वास है कि उपर्युक्त 7 बिन्दुओं पर आधारित प्रस्तुत बिन्दुओं की अनुपालना से जिले में भूपर्यटन विकास एक नई पहचान प्राप्त कर सकता है और जिले के सतत विकास में एक नया अध्याय जोड़ सकता है।

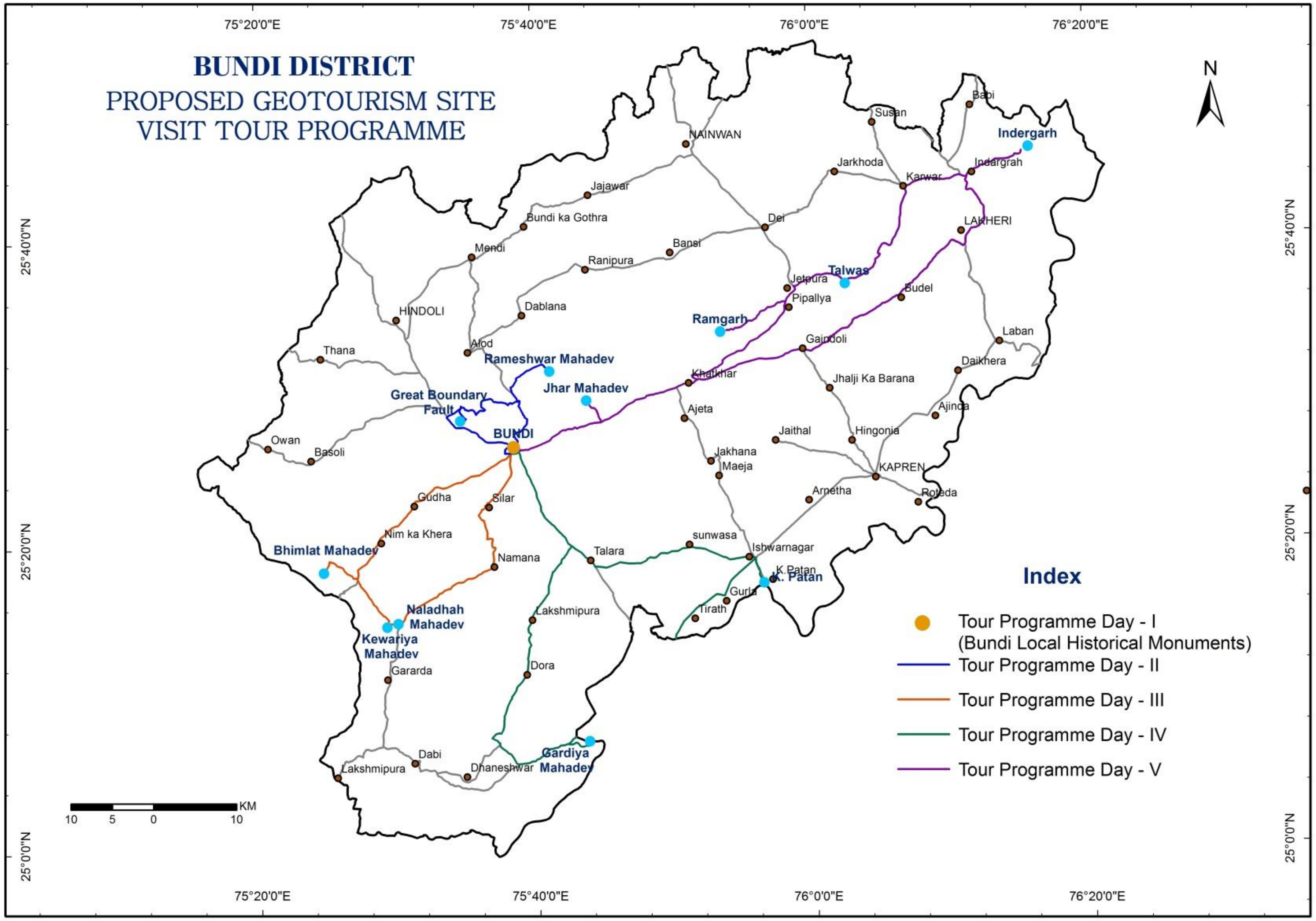

जिला बून्दी : पांच दिवसीय प्रस्तावित क्षेत्र भ्रमण योजना

मानचित्र संख्या 4.1

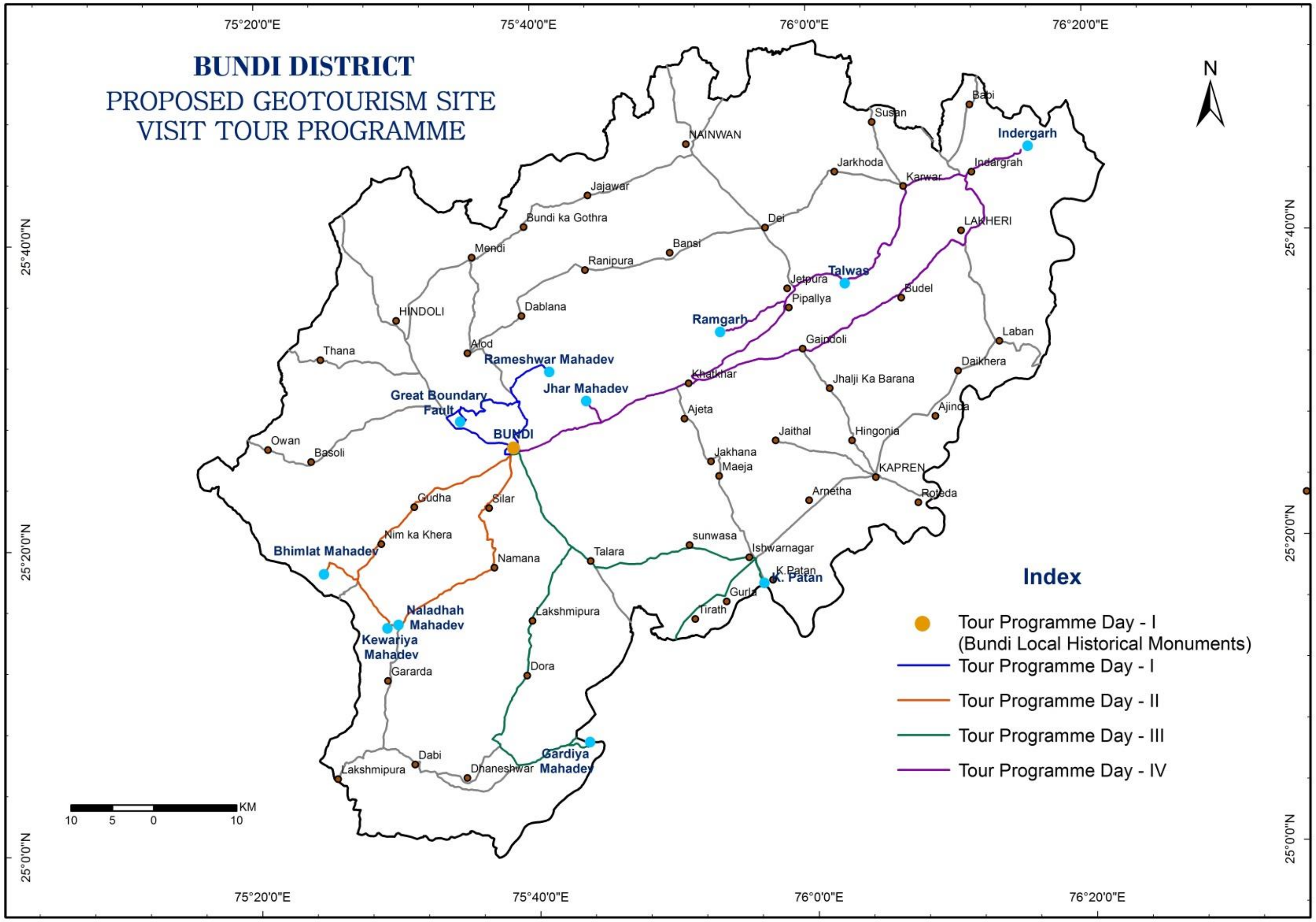

जिला बून्दी : चार दिवसीय प्रस्तावित क्षेत्र भ्रमण योजना

मानचित्र संख्या 4.2

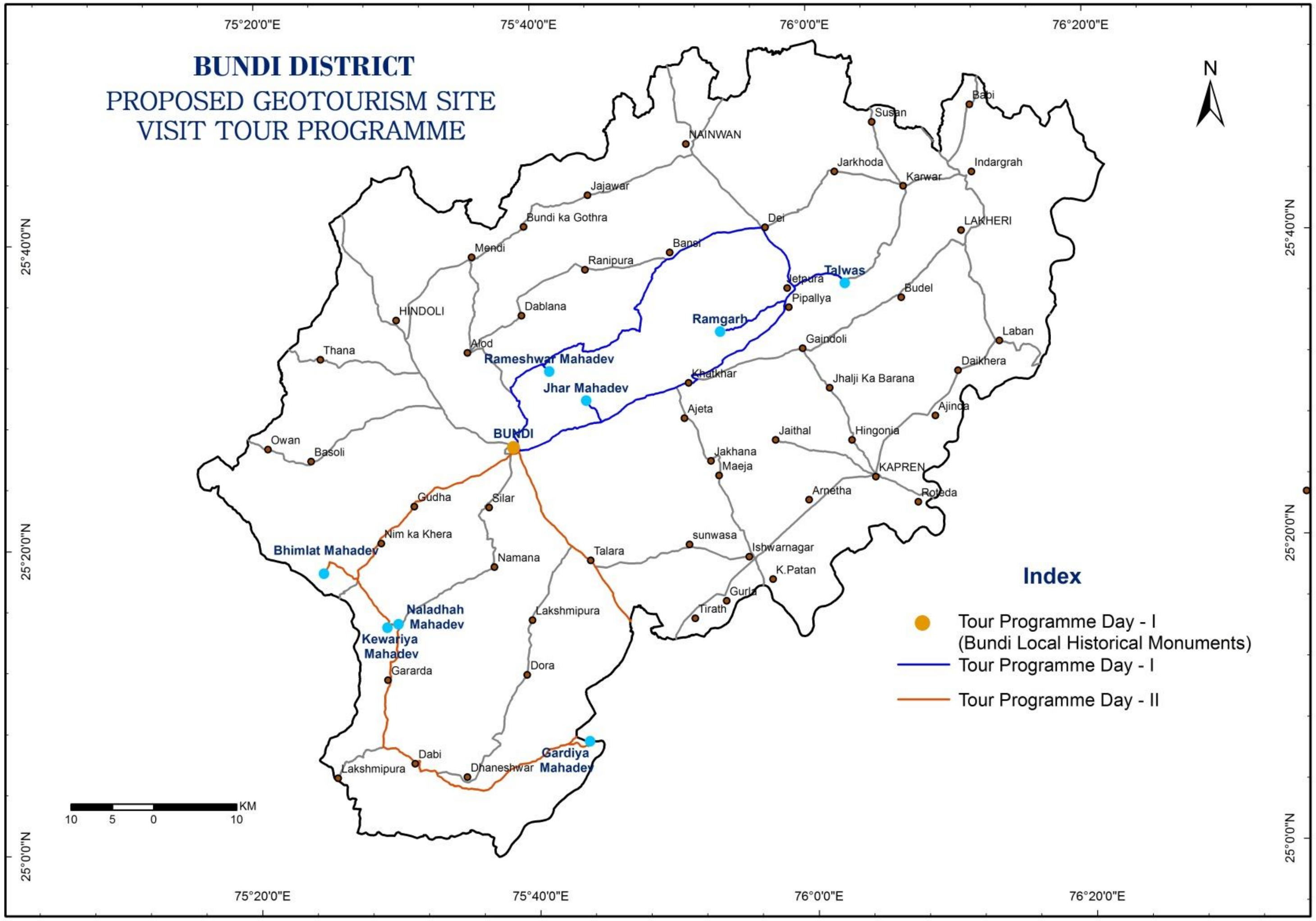

जिला बून्दी : दो दिवसीय प्रस्तावित क्षेत्र भ्रमण योजना

मानचित्र संख्या 4.3

सन्दर्भ ग्रन्थ (Reference) :-

1	John Swarbrooke	1999	Sustainable Tourism Management Wallingford,CABI Publications
2	Mamoon Allan	2010	Geotourism : The potential of Geotourism Development in the United Arab of Emirates Second International Conference on Emerging Research Paradigms in Business and Social Sciences, Dubai Mall, Dubai, UAE.
3	Meena Babulal, Meena Shravan Kumar	2015	राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं आर्थिक विकास में योगदान। AIJRA,Vol.II Issue,IV,www.ijcms2015.co
4	Ranawat P. Singh, George Soni	2019	Potential Geoheritage & Geotourism sites in India International Journal of Scientific and Research Publication,Vol.9,Issue 6
5	Tourism Department of India		Annual Report 2019-20

6	Tourism Department of Rajasthan	Annual Report 2018-19

पंचम अध्याय

क्षेत्र अध्ययन

राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित बून्दी जिले का भूगर्भिक इतिहास अरावली तथा विन्ध्यन श्रेणी के भूआकृतिक इतिहास से सम्बन्धित है। भूगर्भिक रूप से बून्दी जिला एक संक्रमणशील क्षेत्र है। जहां प्राचीन ग्वालियर श्रेणी से लेकर विन्ध्यन क्रम शामिल है। ऊपरी विन्ध्यन श्रेणी तथा अरावली की प्राचीन चट्टानों के सन्धि स्थल पर अधिक लम्बाई में भ्रंश पाये जाते हैं। जो अरावली की अत्यधिक वलित तथा परतदार शिष्ट तथा विन्ध्यन क्रम के बलूआ पत्थरों के लगभग क्षैतिज स्तरों के आपसी सम्पर्क से निर्मित हैं। (मानचित्र सं. 2.4) यह महान सीमावर्ती भ्रंश जिले को लगभग दो बराबर भागों में विभक्त करते हैं। ये भ्रंश जिले में इन्द्रगढ़ के समीप उत्तर पूर्व दिशा से जिले में प्रवेश करते हैं तथा बून्दी पहाड़ियों से गुजरते हुये दक्षिण–पश्चिम दिशा की ओर बेंगू तक तथा वहां से फलौदी तक विस्तृत है।

महान सीमावर्ती भ्रंश इस क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण हैं जो बून्दी शहर के निकट सतूर गांव से गुजरती है जो यहां विन्ध्यन व अरावली क्रम की चट्टानों को अलग करता है। जिसका मानचित्रण हेरान (1922) व कॉलसन (1927–28) द्वारा किया गया है। कालसन ने इस भ्रंश को व्युत्क्रम भ्रंश माना है।

इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां उत्तर पूर्व से दक्षिण–पश्चिम दिशा में दोहरी श्रेणी में पर्वत श्रेणियां विस्तृत हैं, जिनकी लम्बाई लगभग 101 किमी. है। जिले का उत्तरी–पश्चिमी भूभाग अधिकांश रूप में पर्वतीय है तथा दक्षिण पूर्वी भाग मैदानी है जहां जलोढ़ मृदा की पतली परत पायी जाती है। जो चट्टानी परतों के अनवरत विखण्डन व अपक्षय से बनी है। नदी घाटियों में प्राचीन चट्टानें गहन जलोढ से ढकी हैं, जिले का दक्षिण–पश्चिमी व पश्चिमी भाग पठारी है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जिले का भूआकृतिक स्वरूप अत्यन्त विविधतापूर्ण व जटिल है। गहन भूगर्भिक संरचना, जटिल व रूचिकर भूआकृतिक लक्षणों के परिणामस्वरूप बून्दी जिले में कई महत्वपूर्ण भौतिक लक्षण उभरकर आये हैं जो जिले में भूपर्यटन के विकास की सम्भावनाओं को एक नयी दिशा प्रदान करते हैं। जिसके समुचित अध्ययन के लिए क्षेत्र अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

जिला बून्दी : प्राकृतिक वैभव

छायाचित्र सं. 5.1

जिला बून्दी : प्राकृतिक वैभव

छायाचित्र सं. 5.2

इसलिए बून्दी जिले में भूपर्यटन की सम्भावनाओं से परिपूर्ण निम्न छः क्षेत्रों को क्षेत्र अध्ययन के रूप में चुनकर वहां भूपर्यटन के विविध पक्षों का SWOT [Strengths, Weakness, Opportunities, Threats] तकनीक से विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया है।

1. **रामेश्वर महादेव घाटी** – यह क्षेत्र भौगोलिक सुन्दरता व जैव विविधता की दृष्टि से परिपूर्ण है। जहां विभिन्न भौगोलिक घटनाओं के प्रमाण मिलते हैं। साथ ही यह पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र भी है।
2. **भीमलत** – यह क्षेत्र पठारी व मैदानी भाग का मिलन क्षेत्र है जहां ढाल में अचानक परिवर्तन आता है, जिसके कारण यहां विविध आकर्षक भौगोलिक स्थलरूप बने हैं। इसके अतिरिक्त यह जैव विविधता समृद्ध क्षेत्र भी हैं और पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र भी।
3. **गरड़िया** – कोटा व बून्दी जिले की सीमा पर स्थित यह क्षेत्र चम्बल नदी द्वारा निर्मित गॉर्ज व मियाण्डर के लिए आकर्षण का केन्द्र है और जैविक सम्पदा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।
4. **तलवास** – विन्ध्यन क्रम की पहाड़ियों से घिरा हुआ यह क्षेत्र जैव विविधता व भौगोलिक सुन्दरता से परिपूर्ण है जो पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।
5. **केवड़िया** – यह क्षेत्र उपरमाल पठारी भाग का एक भाग है। जहां बहते हुये जल ने पठार पर अपरदनात्मक व निक्षेपात्मक प्रक्रियाओं द्वारा विविध आकर्षक भौगोलिक आकृतियों का निर्माण किया है जो भूपर्यटन में रूचि रखने वालों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।
6. **नाल्दिया (नाला–दह)**– यह क्षेत्र ऊपरमाल पठार पर स्थित है जहां बहते हुये जल द्वारा निर्मित विभिन्न आकर्षक स्थलरूप देखने को मिलते हैं जो भूपर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

चयनित प्रत्येक क्षेत्रों का अध्ययन विस्तृत व गहन भ्रमण तथा स्थानीय निवासियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर किया है। जिसमें अध्ययन में जीवन्तता तथा इन आकर्षक स्थलरूपों व चट्टानी सुन्दरता को उभारने के लिए विभिन्न छायाचित्र लिये गये हैं। इस आधार पर प्रत्येक क्षेत्र की भूपर्यटनीय विशेषतायें SWOT तकनीक के आधार पर उभारने का प्रयास किया है, जिनसे प्राप्त निकर्ष इस प्रकार है :–

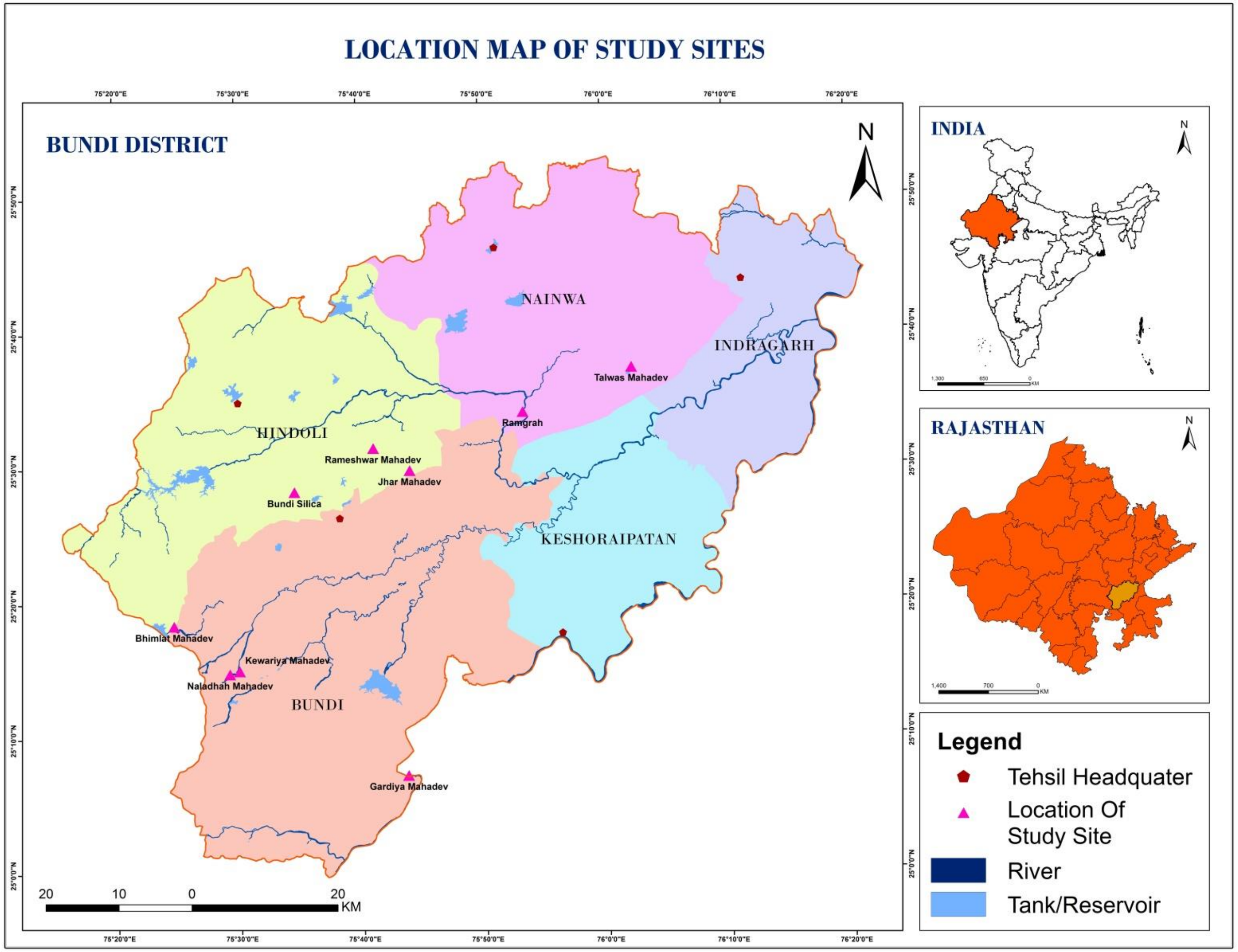

जिला बून्दी : भूपर्यटन स्थल मानचित्र

मानचित्र सं. 5.1

क्षेत्र अध्ययन 5.1 – रामेश्वर महादेव घाटी

रामेश्वर महादेव घाटी बून्दी में $25^0 31'29.63''$ उत्तरी अंक्षाश तथा $75^0 41'04.31''$ पूर्वी देशान्तर पर हिण्डोली तहसील की आकोदा ग्राम पंचायत में स्थित है। यह स्थल जिले के मध्य से गुजरने वाली विन्ध्यन क्रम की पर्वत श्रेणी की कई समानान्तर श्रेणियों पर स्थित है। यह भाग तीन ओर से घाटियों द्वारा शेष श्रृंखला से पृथक हैं, जिस कारण यहां प्रवाहित जल कई प्रपातो ंका निर्माण करता है। साथ ही यहां जल ने विन्ध्यन क्रम की इस चूना प्रधान श्रृंखला में कई चूना निर्मित स्थलाकृतियों का निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त यह क्षेत्र विन्ध्यन क्रम के दौरान होने वाली संपीडनात्मक घटनाओं के भी उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो यहां पाये जाने वाले विभिन्न वलन व भ्रंश के उदाहरणों से स्पष्ट है।

भूपर्यटनीय संसाधन (Geotourism Resources) – यह क्षेत्र बून्दी जिला मुख्यालय से उत्तर की ओर 16 किमी दूर स्थित है। यह क्षेत्र प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता से परिपूर्ण है। यहां विभिन्न भौगोलिक घटनाओं के प्रमाण उदाहरण सहित मिलते हैं। जिनमें अवसादी चट्टानों के रूप में विभिन्न स्तरों में जमीं चट्टानें जो कि लम्बे समय की निक्षेप प्रक्रियाओं का प्रतिफल है। यहां वलन के भाग के रूप में अपनतियां, अभिनतियां तथा खुला वलन, बंद वलन सहित वलन के विभिन्न उदाहरण मिलते हैं। इसके साथ ही यहां भ्रंशात्मक गतिविधियों व हलचलों के प्रमाण के रूप में भ्रंश तल के उदाहरण मिलते हैं।

इस क्षेत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता के रूप में चूना निर्मित विभिन्न स्थलाकृतियों का मिलना है, जिनमें कन्दरायें, स्टेलेग्टाइट, स्टेलेग्माइट, कन्दरा स्तम्भ तथा हैलेक्टाइट जैसे उदाहरण भूपर्यटन के रूप में पर्यटकों के मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जो भूगोल की विषयवस्तु को भी समझने में सहायक है।

यहां लगभग 70 फीट की ऊँचाई से गिरता हुआ प्रपात व उसके नीचे बना अवनमन कुण्ड मुख्य आकर्षण है जो वर्षा ऋतु में नयनाभिराम दृश्य उत्पन्न करता है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में ऐसे 6 जल प्रपात मिलते हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

इस क्षेत्र में SWOT विश्लेषण द्वारा यहां की भूपर्यटनीय विशेषताओं को उभारने का प्रयास किया है, जिससे प्राप्त परिणाम इस प्रकार है :–

Strengths:

- यह क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है।
- यह क्षेत्र भौगोलिक वैभवता व विविधता के विभिन्न पक्षों के उदाहरणों से परिपूर्ण है।
- इस क्षेत्र में भूपर्यटन के आकर्षण के रूप में 70 फीट ऊंचाई से गिरता जल प्रपात तथा उससे निर्मित अवनमन कुण्ड, जल की अपरदन शक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

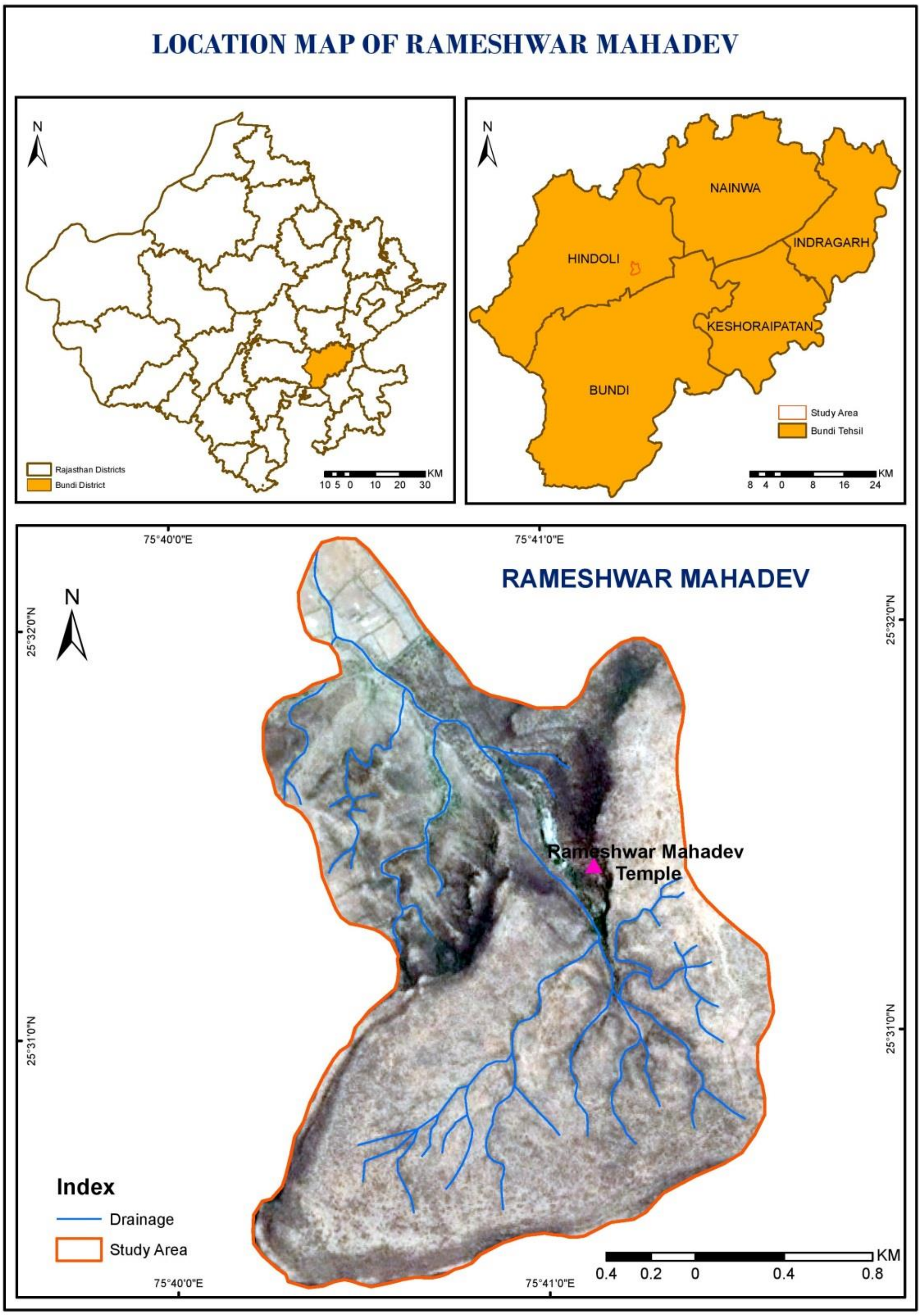

जिला बून्दी : रामेश्वर महादेव अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र सं. 5.2

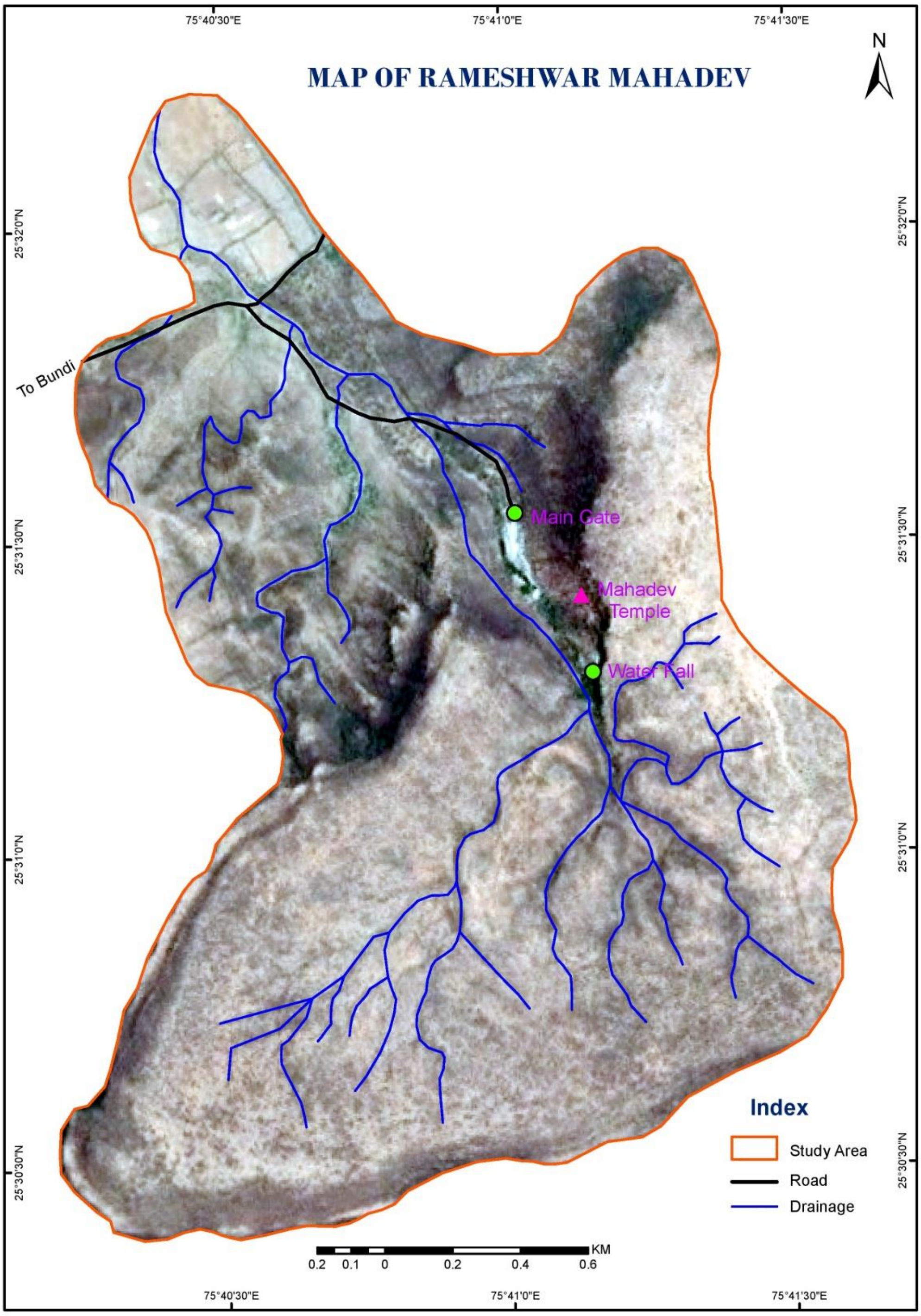

रामेश्वर महादेव घाटी

मानचित्र सं. 5.5

- इस क्षेत्र में चूना निर्मित विभिन्न स्थलाकृतियां आश्चुताश्म, निश्चुताश्म, कन्दरा स्तम्भ, हैलेक्टाइट, कन्दरा के उदाहरण मिलते हैं, जो भूगोल की विषय सामग्री को प्रस्तुत करते हैं।
- इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के भ्रंश व वलन के उदाहरण, धरातल निर्माण की प्रक्रिया जानने में सहायता करते हैं।
- जल द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार की चित्ताकर्षक स्थलाकृतियां भूपर्यटन के आकर्षण के रूप में यहां मिलती हैं।
- वर्तमान में यहां पर्यटकों के लिए उत्तम आधारभूत सुविधायें उपलब्ध हैं।
- धार्मिक मान्यता होने के कारण यह क्षेत्र घरेलू पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र पहले से ही बना हुआ है।

Weakness:

- घरेलू पर्यटन के बढ़ते दबाव ने यहां अतिक्रमणों व अवैध निर्माण को बढ़ावा दिया है जिससे प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता नष्ट हो रही है।
- घरेलू पर्यटन के लगातार विस्तार ने यहां अनियंत्रित व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। जिससे पर्यावरण प्रदुषण में वृद्धि हो रही है।
- इस क्षेत्र में सामूहिक गोठों के आयोजन से सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग बढ़ रहा है, वहीं धार्मिक आयोजनों में ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग जहां एक ओर जैविक सम्पदा पर खतरे का कारण बन रहा है, वहीं पर्यावरणीय समस्याओं में भी वृद्धि कर रहा है।
- यहां पर्यटकों के लिए स्तरीय विश्राम स्थलों व होटलों की कमी है ।
- यहां तक आने के लिए सार्वजनिक परिवहन साधन नही होने से पर्यटक निजी वाहनों पर निर्भर हैं जो कि पर्यटकों के लिए अनावश्यक व्यय में वृद्धि करता है।
- बून्दी जिले के टूरिस्ट गाइड भूपर्यटन की जानकारी के लिए भी प्रशिक्षित नहीं है, जिससे वे न तो पर्यटकों को इस क्षेत्र का भूपर्यटन के रूप में भ्रमण करा पाते हैं और न ही उनकी जिज्ञासाओं का समाधान कर पाने में सक्षम है।
- यहाँ भूपर्यटनीय आकर्षण तथा विविध भौगोलिक प्रक्रिया उदाहरणों पर चिन्हीकरण के अभाव से वे पर्यटकों की पहुंच से दूर है। साथ ही इन तक पहुंचने का मार्ग भी सुगम नहीं होने से ये महत्वपूर्ण आकर्षक स्थलरूप उपेक्षित हैं।

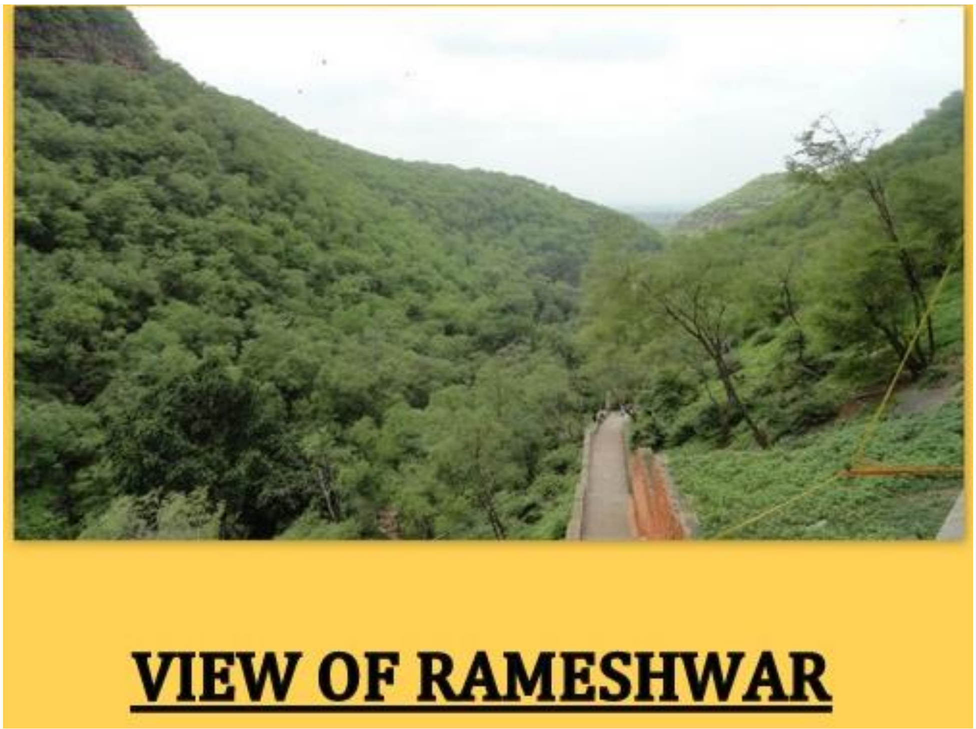

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.3

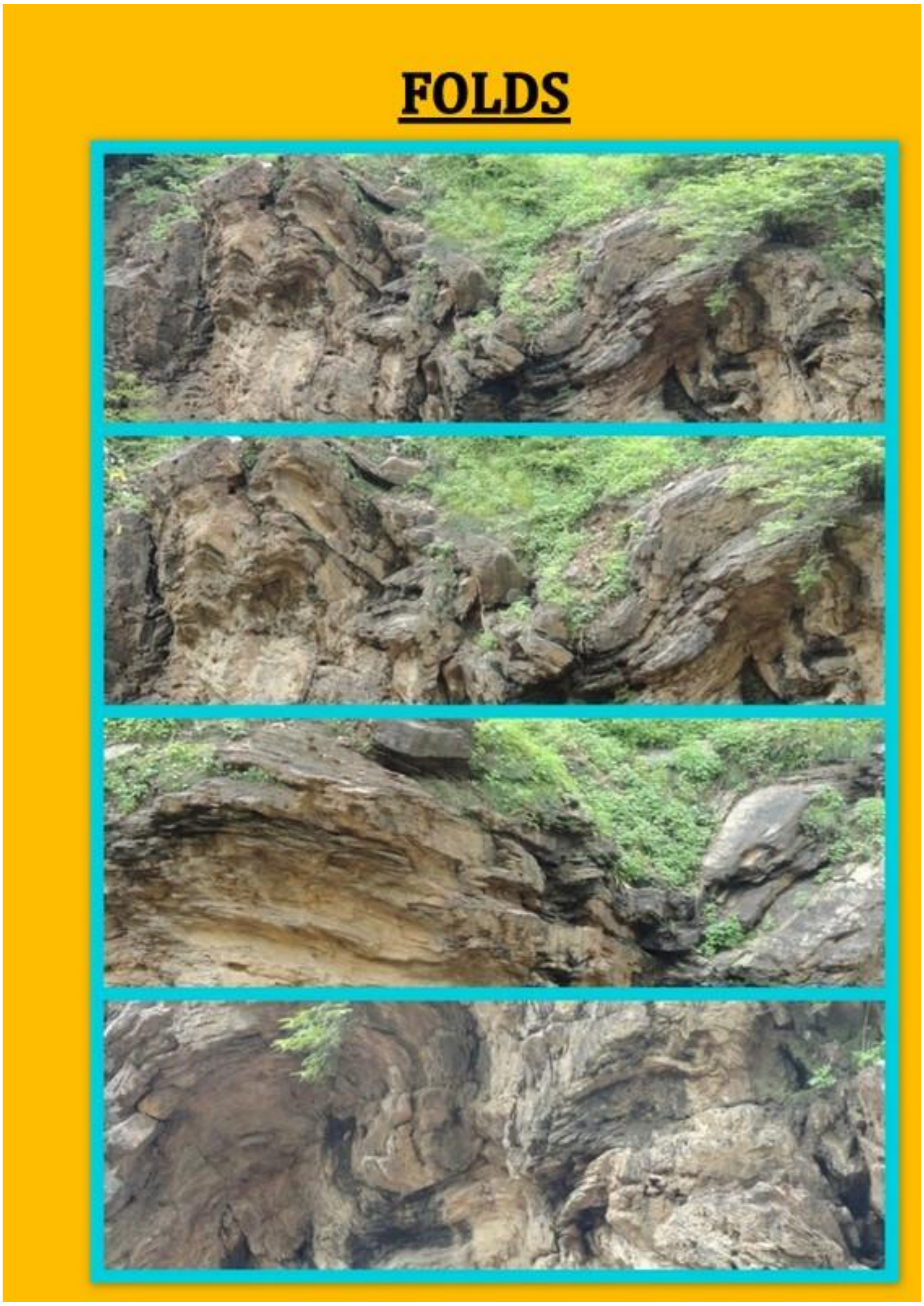

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.4

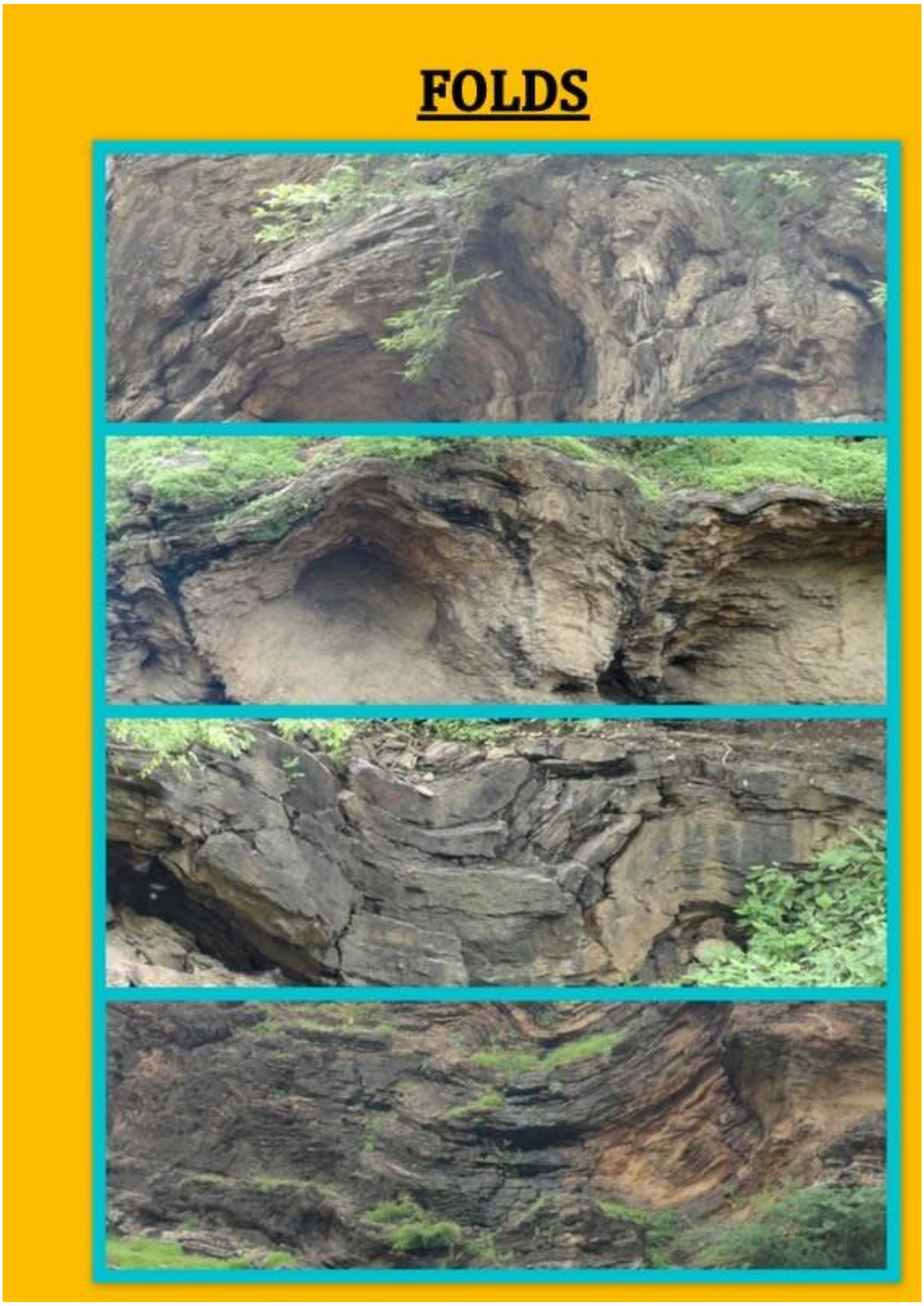

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.5

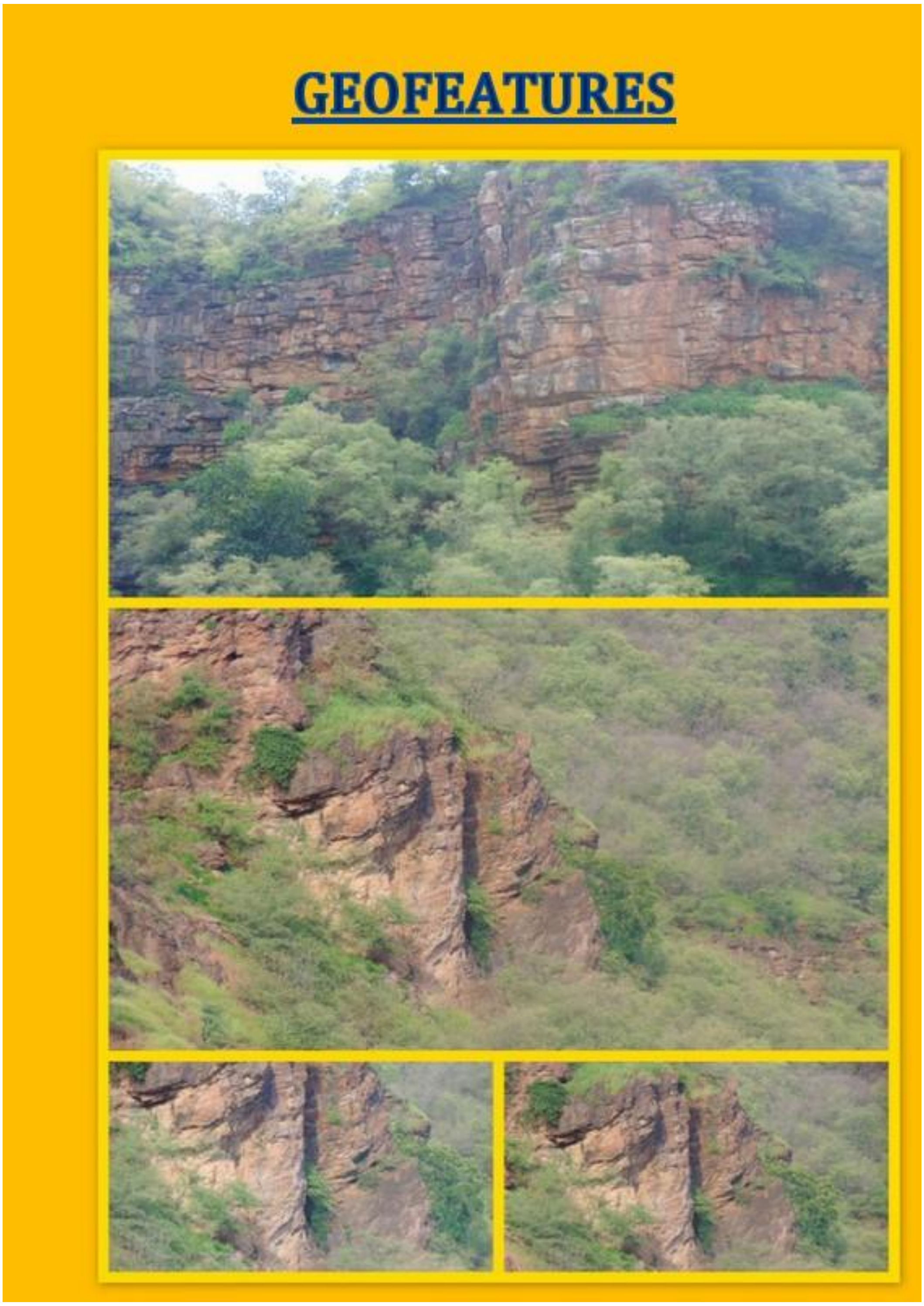

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.6

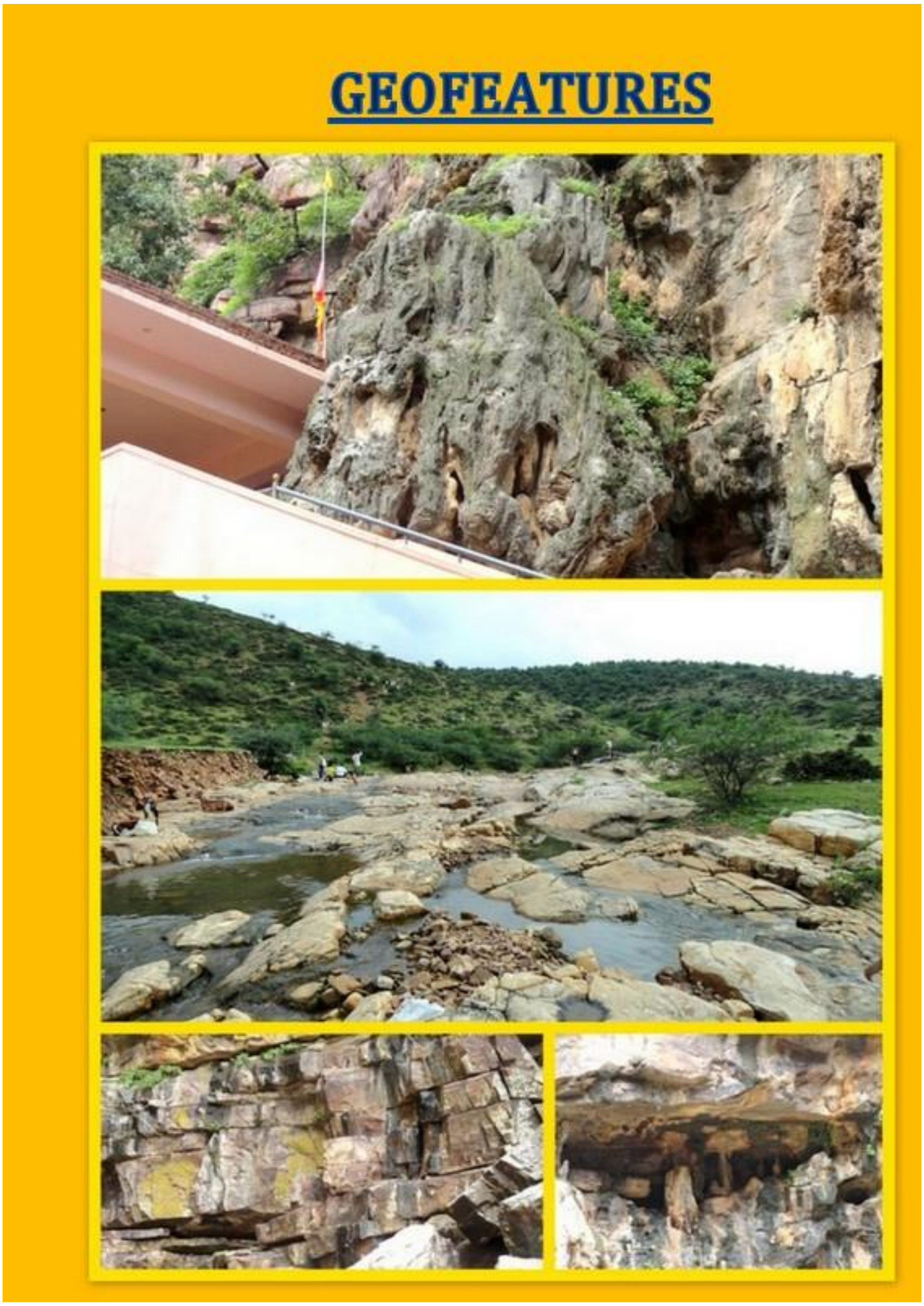

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.7

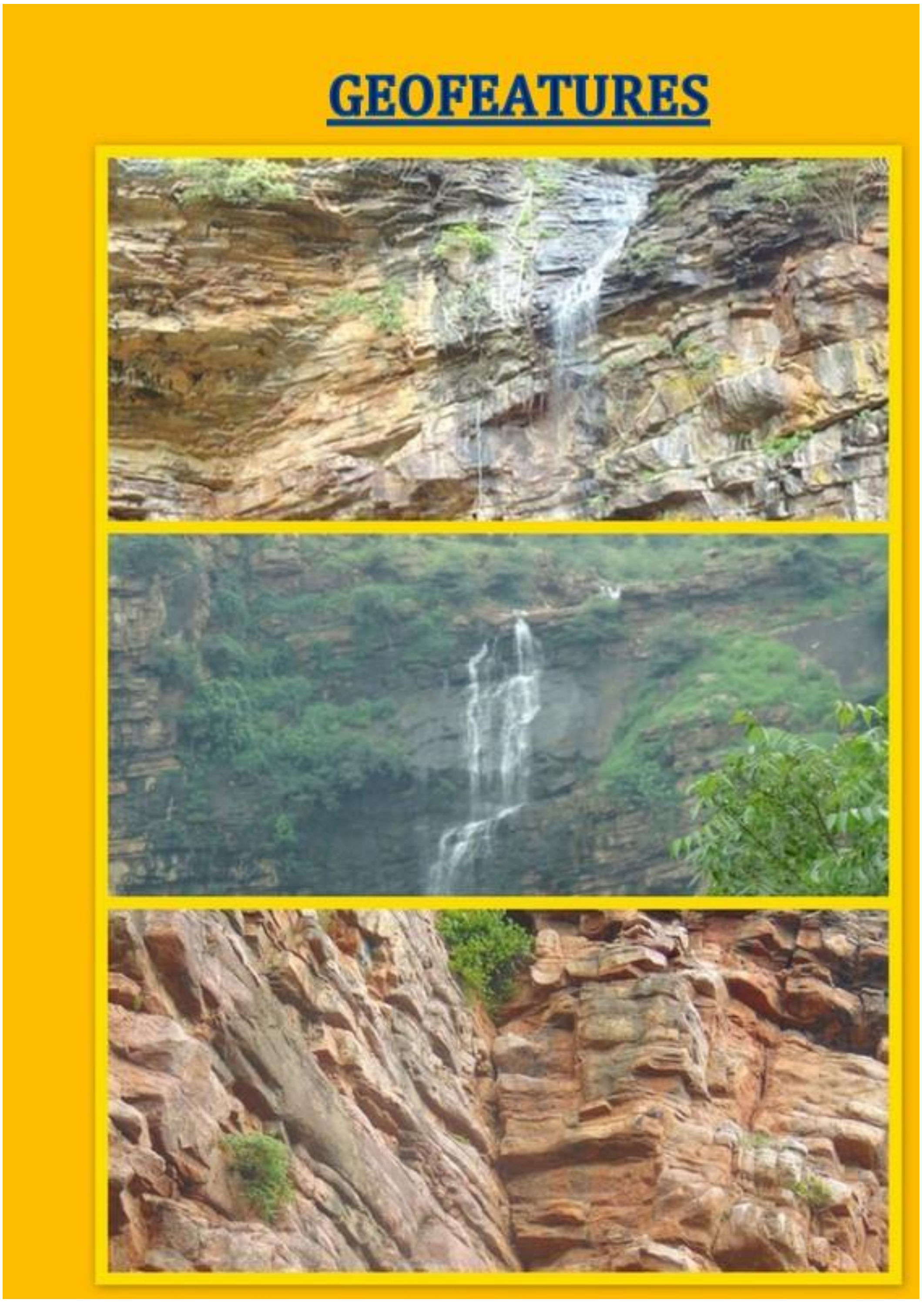

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.8

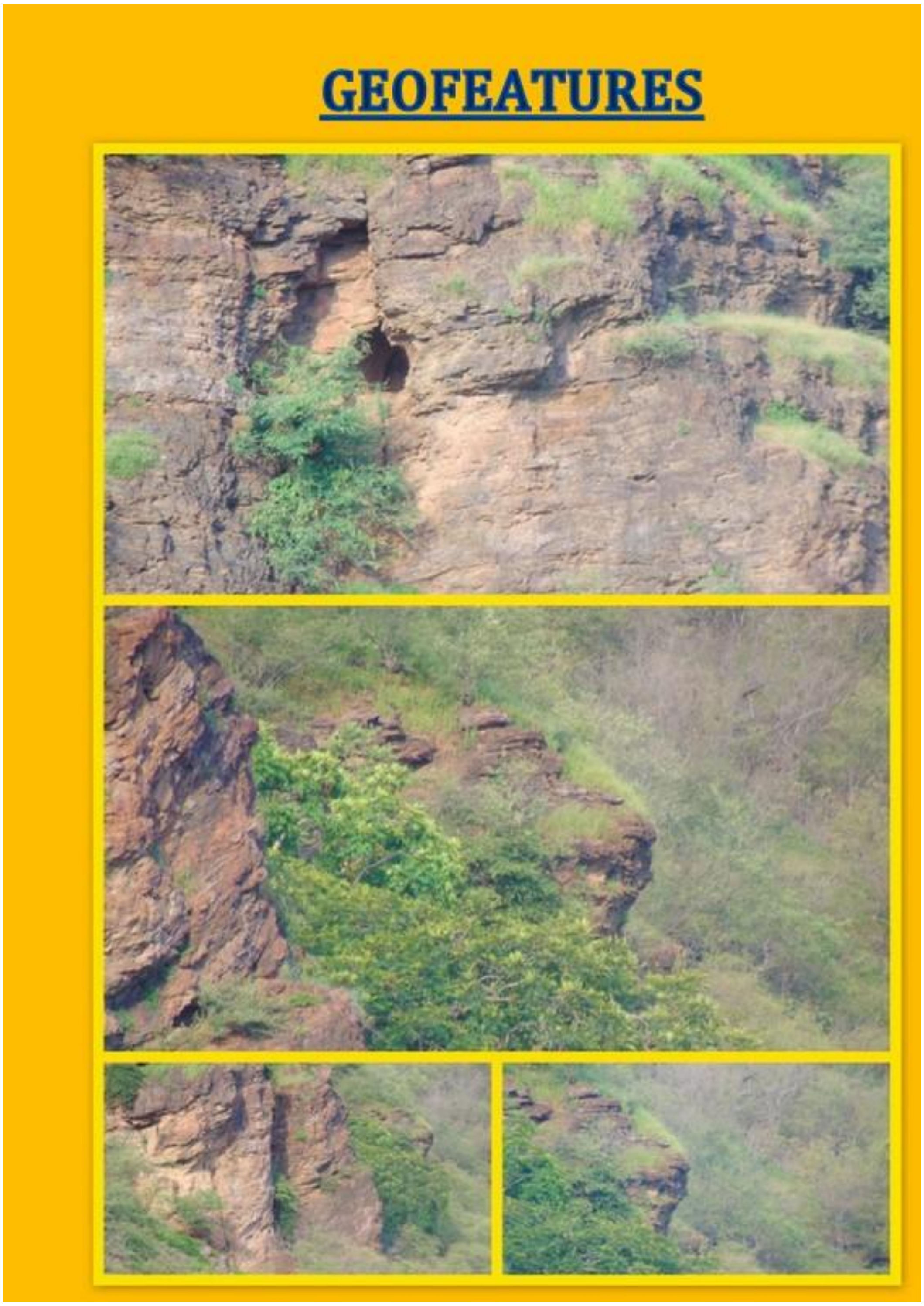

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.9

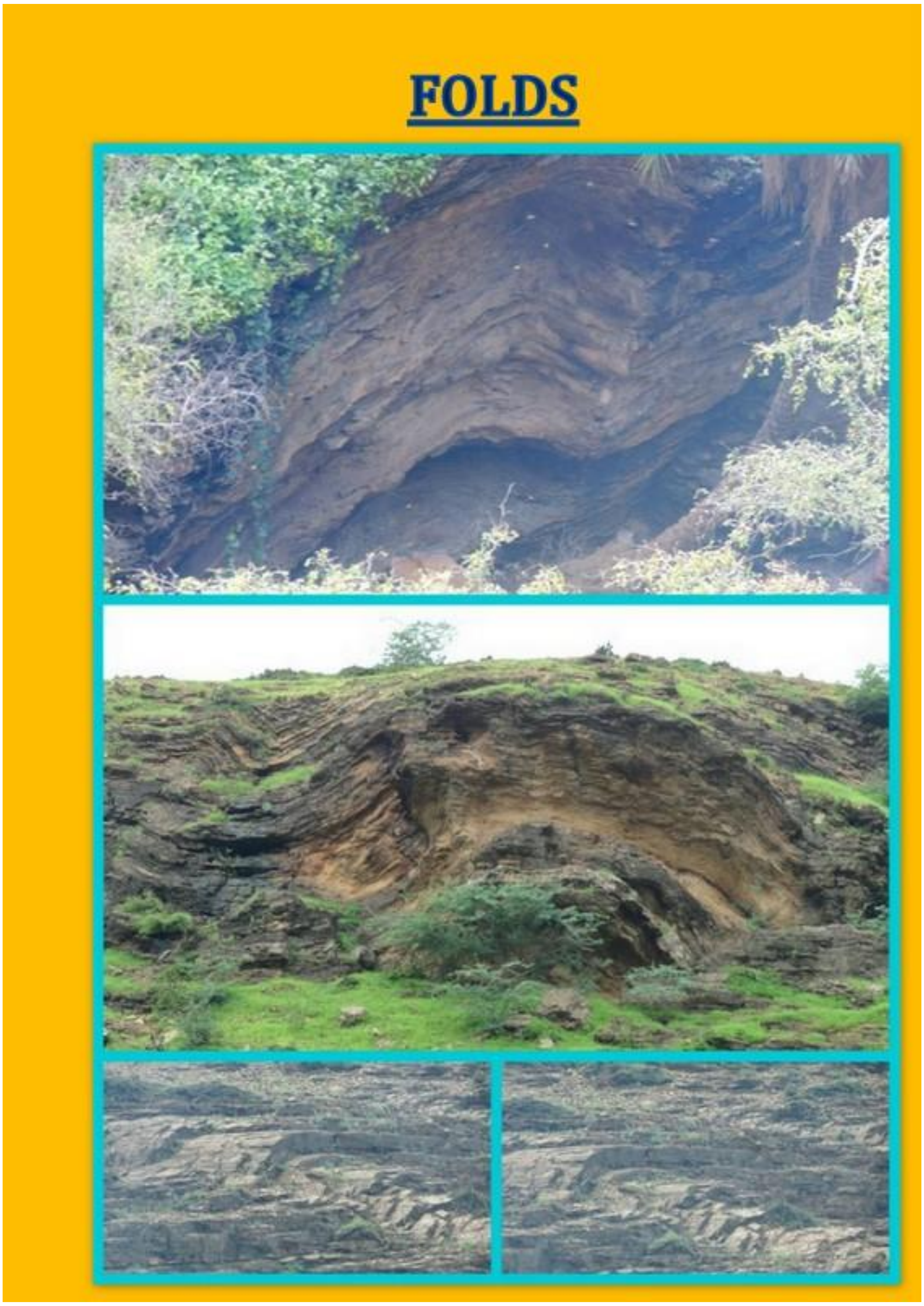

रामेश्वर महादेव घाटी के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.10

Opportunities:

- इस क्षेत्र में पर्यटन विभाग व विषय विशेषज्ञों द्वारा सम्मिलित रूप से प्रयास कर भूगोल की दृष्टि से महत्वपूर्ण उदाहरणों को सूचना पट्टों पर उल्लेखित कर यहां भूपर्यटन बढ़ाया जा सकता है।
- इस क्षेत्र में पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन सर्किट बनाकर नियंत्रित गतिविधियों का विस्तार किया जा सकता है।
- प्राकृतिक, भौगोलिक व जैविक सम्पदा की दृष्टि से समृद्ध इस क्षेत्र में पर्यटन के अन्य विकल्प – पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन, शैक्षिक पर्यटन को भी विकसित किया जा सकता है।
- इस क्षेत्र में स्थानीय निवासियों व हितधारकों के सामाजिक–आर्थिक विकास की पर्याप्त संभावनायें विद्यमान हैं।
- इस क्षेत्र के सुस्थिर विकास के लिए समग्र, एकीकृत तथा प्रबन्धकीय योजना की संभावनायें विद्यमान हैं।

Threats:

- लगातार बढ़ता पर्यटन स्थानीय संसाधनों पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है।
- पर्यटकों में जिम्मेदारी का अभाव तथा उनमें आदर्श पर्यटन व्यवहार की कमी से नयी समस्यायें जन्म ले सकती हैं।
- वाहनों का बढ़ता दबाव पर्यावरणीय संकट बढ़ा सकता है।
- गैर योजनाबद्ध पर्यटन विकास कार्यक्रम क्षेत्र की प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता को नष्ट कर सकता है।
- पर्यटन के लिए आवश्यक आधारभूत सुविधाओं का अनियंत्रित विस्तार पर्यावरण अनुकूल नहीं होगा।
- पर्यटकों के साथ पर्यटन अपराध व धोखाधड़ी की घटनाओं में वृद्धि हो सकती है।
- वन्य जीव जन्तुओं के अवैध शिकार की समस्या आ सकती है।

निष्कर्ष :– उपर्युक्त SWOT विश्लेषण से स्पष्ट है कि रामेश्वर महादेव घाटी क्षेत्र अपने अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य, विविध जैविक सम्पदा तथा विशिष्ट भूआकृतियों से भूपर्यटन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्र बनने की संभावना रखता है। यदि इस क्षेत्र को पर्यटन सर्किट से जोड़कर पर्यटन गतिविधियों के विस्तार को नियंत्रित स्वरूप में किया जाये तथा पर्यावरणीय मानकों को पूरा करते हुये आधारभूत संरचना का विकास किया जाये तो यह

क्षेत्र विश्व पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान बना सकता है, जो बून्दी जिले के सतत विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष हो सकता है।

क्षेत्र अध्ययन 5.2 – भीमलत

भीमलत बून्दी में दक्षिण–पश्चिम दिशा में $25^0 18' 09.52''$ उत्तरी अंक्षाश तथा $75^0 24' 42.20''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य बून्दी तहसील की खीण्या ग्राम पंचायत में स्थित है। यह क्षेत्र बून्दी जिला मुख्यालय से 35 किमी दूर बून्दी–भीलवाड़ा मार्ग पर स्थित है। यहां से विन्ध्यन क्रम की श्रृंखला गुजरती है तथा यह ऊपरमाल पठार के पूर्वी कगार पर स्थित है। पठारी भाग व पर्वतीय श्रृंखला दोनों के कारण यह क्षेत्र भौगोलिक व प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण है। पठारी व पहाड़ी दोनों विशेषतायें मिलने के कारण इन पर बहते हुये जल द्वारा निर्मित विभिन्न आकर्षक स्थलरूप तथा संपीडनात्मक घटनाओं से परतदार चट्टानों पर निर्मित विभिन्न आकृतियां भूआकृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसलिए यह क्षेत्र भूपर्यटन का एक प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है।

भूपर्यटनीय संसाधन (Geotourism Resources) – यह क्षेत्र बून्दी भीलवाड़ा मार्ग पर बून्दी जिला मुख्यालय से दक्षिण–पश्चिम की ओर स्थित हैं। यह क्षेत्र प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता की दृष्टि से पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह क्षेत्र उपरमाल पठार के कगार तथा विन्ध्यन श्रेणी के मिलन स्थल पर स्थित होने के कारण अनेक भौगोलिक आश्चर्यों को जन्म देता है। यहां इस कगार पर 2 किमी की लम्बाई तथा 100–800 मीटर की चौड़ाई व 50–100 मीटर की गहराई वाली घाटी स्थित है जोकि कगारी भाग होने के कारण जल की तीव्र धारा के द्वारा किये जाने वाले कटाव से निर्मित है। इस अपरदनात्मक प्रक्रिया के कारण यहां अनेक भौगोलिक दृश्यरूप व स्थलाकृतियां निर्मित हुई है जो न केवल देखने में आकर्षक है अपितु भौगोलिक ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया में भी अभिवृद्धि करती है।

इस क्षेत्र का सर्वाधिक मुख्य आकर्षण लगभग 80 मीटर की ऊँचाई तथा 100 मीटर की चौड़ाई में अर्द्धवृताकार रूप से गिरता जल प्रपात है जो वर्षाकाल में न्याग्रा जल प्रपात जैसा दृश्य उत्पन्न करता है। प्रपात से गिरते हुये जल ने आधार की चट्टानों को काटकर अवनमन कुंड का निर्माण किया है। उसके बाद बहता हुआ जल चट्टानों पर कहीं अपरदन व कहीं निक्षेपण प्रक्रिया से विविध आकर्षण चट्टानी स्थलरूपों का निर्माण करता है। इनमें पैंग्विन रॉक, बर्ड रॉक, टॉड रॉक, फ्लाइंग बर्ड रॉक, जम्पिंग रॉक, हैगिंग रॉक, शेल्टर रॉक

जैसे आकर्षण मुख्य है। यह भूस्थलरूप आश्चर्यजनक तो है ही साथ ही प्रकृति की अनूठी कला शैली के भी उदाहरण हैं जो कि संभवतः अन्यत्र दुर्लभ हैं।

इस क्षेत्र में आदिमानव के निवास के प्रमाण भी उनके द्वारा गुफाओं में बनायी गई रॉक पेंटिंग्स के माध्यम से मिलते हैं।

इस क्षेत्र की प्रमुख भूपर्यटनीय विशेषता को SWOT विश्लेषण द्वारा जानने का प्रयास किया है। जिससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है :—

Strengths:

- यह क्षेत्र भौगोलिक व प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण है।
- यह क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से भी सम्पन्न है।
- यह क्षेत्र भूपर्यटन आकर्षण के विभिन्न उदाहरणों से परिपूर्ण है।
- इस क्षेत्र में भूपर्यटनीय आकर्षण के रूप में लगभग 2 किमी की लम्बाई तथा 100—800 मीटर की चौड़ाई व 50—100 मीटर गहराई में जल अपरदन द्वारा निर्मित घाटी है। जिसके प्रारम्भ स्थल पर 80 मीटर की ऊँचाई से गिरता जल प्रपात व अवनमन कुण्ड प्रमुख है।
- इस क्षेत्र में घाटी में बहते हुए जल ने चट्टानों को काटकर, तराश कर अनेक आकर्षक रूपों में बदला है। जो पर्यटकों को आकर्षित करने व प्रकृति के कला कौशल के प्रति आश्चर्य व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं।
- इस क्षेत्र में परतदार चट्टानों की उपस्थिति तथा उन पर अपरदनात्मक व निक्षेपात्मक प्रक्रियाओं से निर्मित विविध स्थलरूप भौगोलिक ज्ञान की अभिवृद्धि करने में सहायक है।
- यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही मानव निवास का केन्द्र रहा है। यहां से प्रागेतिहासिक काल में भी मानव निवास के प्रमाण मिले हैं।
- यहां से मिले गुप्तकाल में निर्मित मन्दिर के प्रमाण इसे ऐतिहासिक महत्व भी प्रदान करते हैं। इसलिये यह धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- यह क्षेत्र बून्दी जिला मुख्यालय से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा होने के कारण पर्यटकों के लिए सुगम्य है।
- यह घरेलू पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र पहले से ही बना हुआ है।
- पर्यटन विभाग द्वारा इसे इको पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित किया जा रहा है।
- इस क्षेत्र में ऐतिहासिक, धार्मिक, साहसिक पर्यटन के विकास की भी पर्याप्त संभावनायें विद्यमान हैं अर्थात् यहां पर्यटन को समग्र रूप में विकसित करने की संभावनायें हैं।

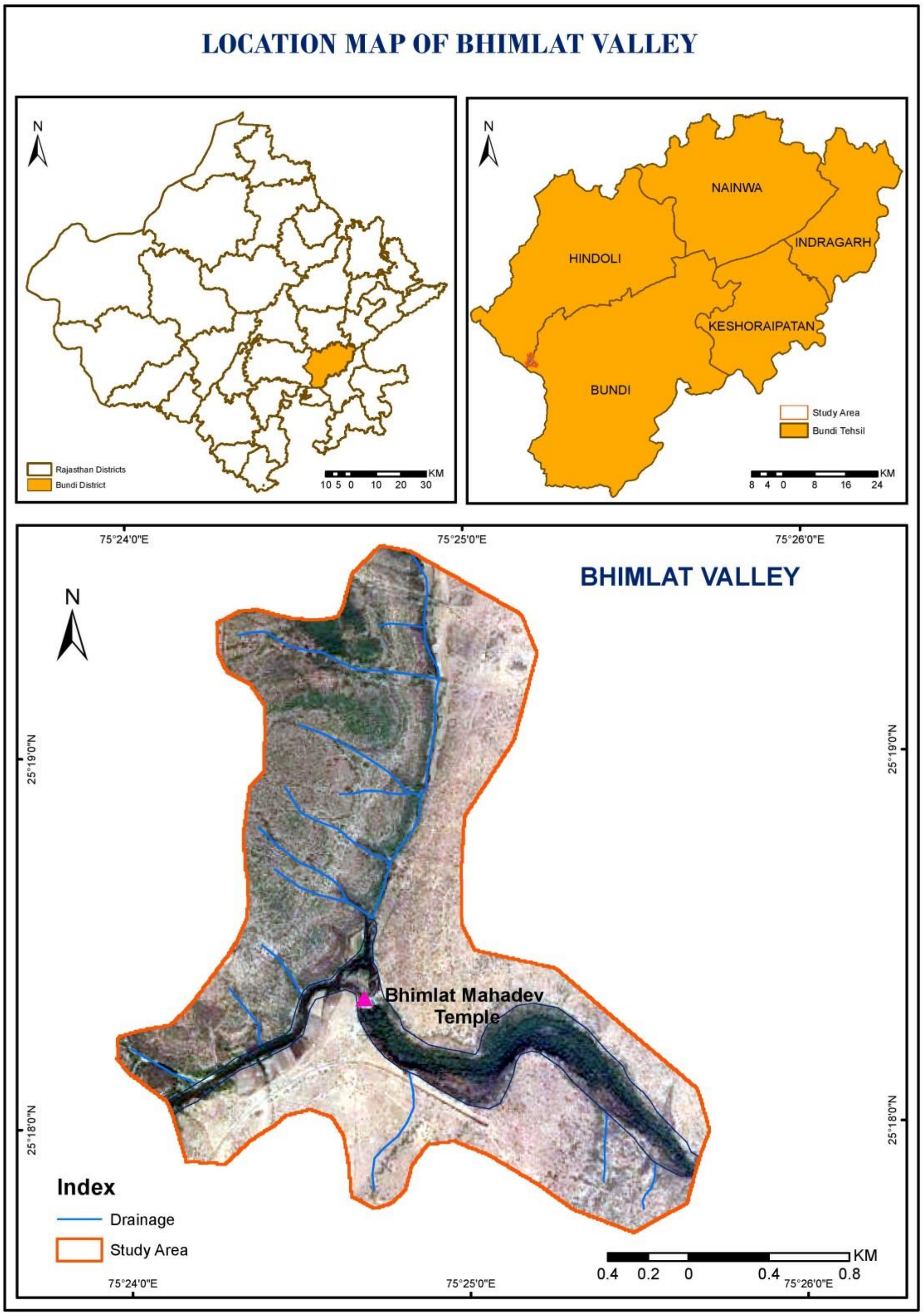

जिला बून्दी : भीमलत अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र सं. 5.4

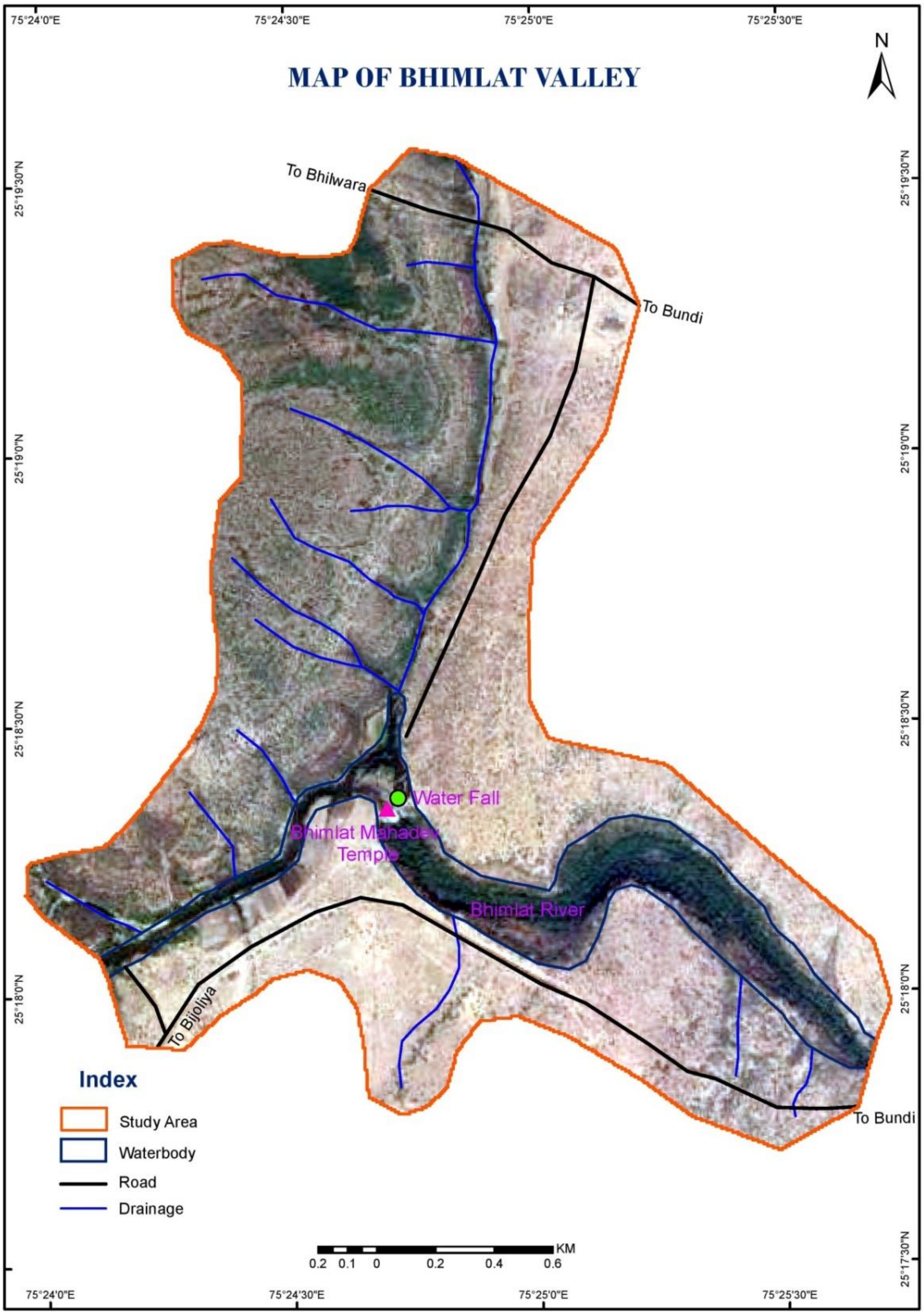

भीमलत

मानचित्र सं. 5.5

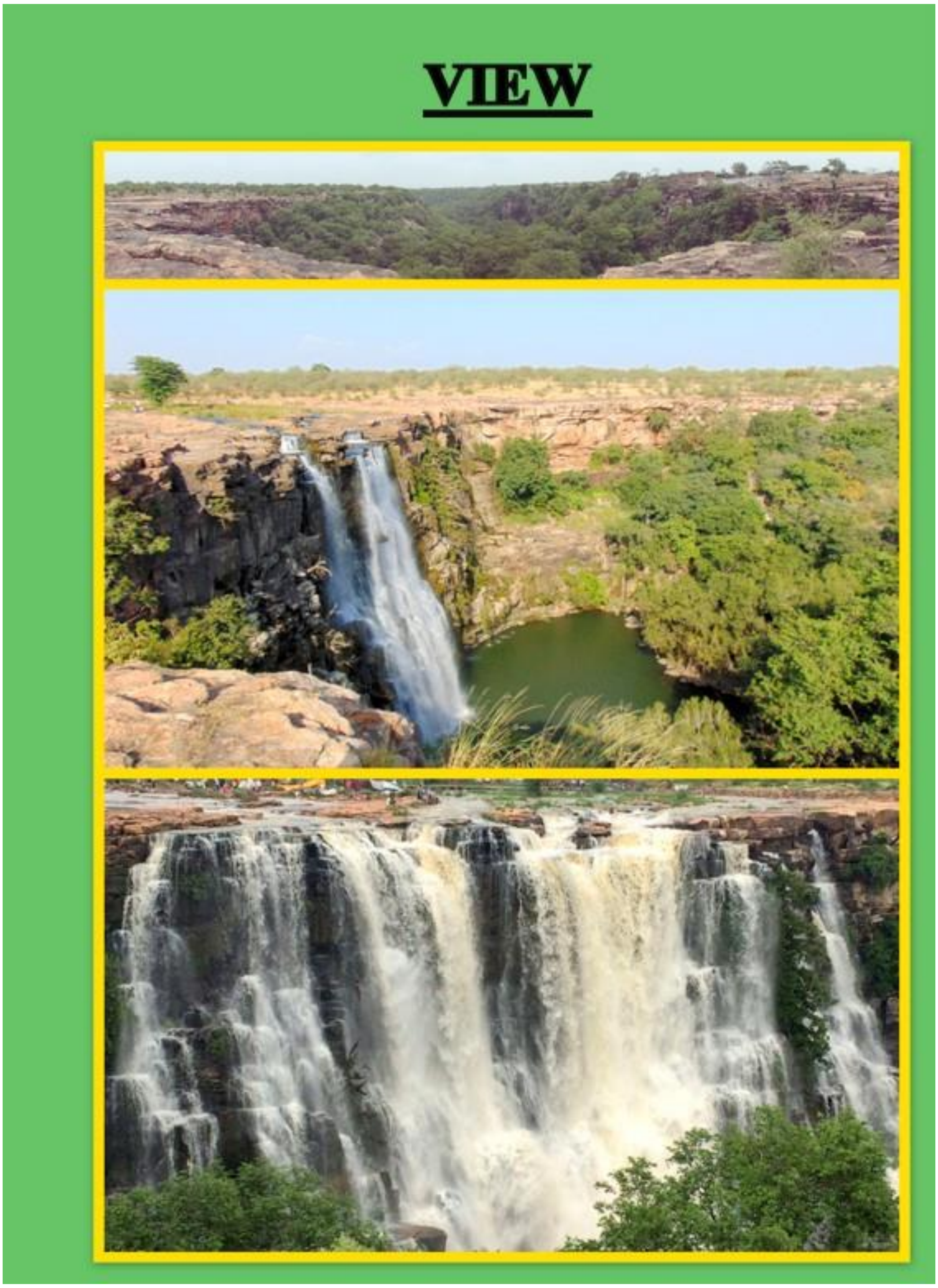

भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.11

भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.12

भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.13

भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.14

भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.15

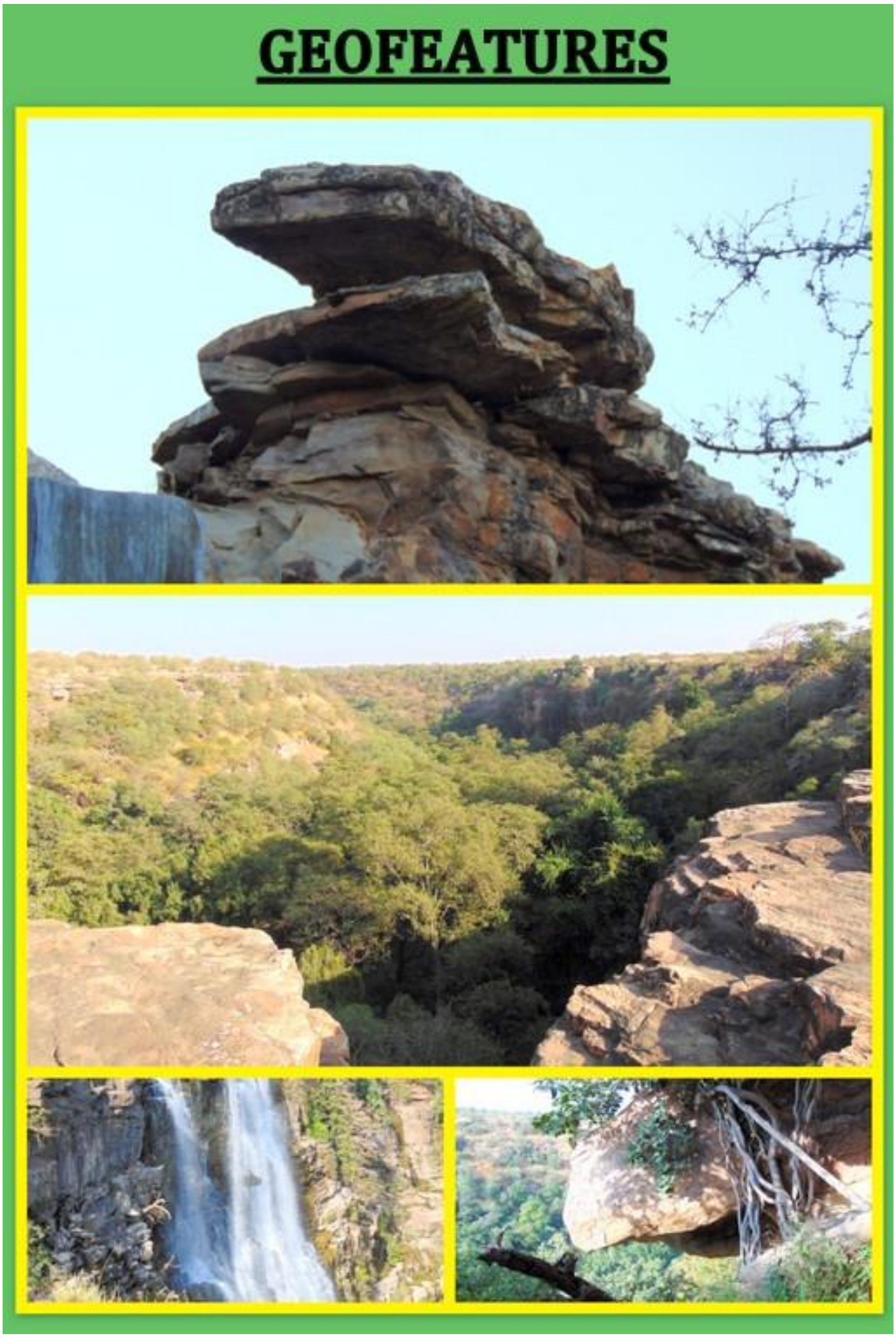

भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.16

भीमलत के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.17

Weakness:

- घरेलू पर्यटन के बढ़ते हुए अनियंत्रित दबाव के कारण यहां की प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता नष्ट हो रही है।
- इस क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन साधन उपलब्ध न होने से पर्यटन सीजन के समय निजी वाहनों का दबाव बढ़ जाता है। जिससे पर्यावरण प्रदुषण बढ़ता है।
- यहां पर वर्तमान में पर्यटकों के लिए विश्राम स्थल, सार्वजनिक सुविधाओ तथा स्तरीय होटलों की कमी है जिससे पर्यटकों को असुविधा का सामना करना पड़ता है।
- इस क्षेत्र में घरेलू पर्यटक मुख्य रूप से मनोरंजन के लिए आते हैं। जिससे उनकी अनियंत्रित संख्या से, सामूहिक गोठों के आयोजन से ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग से पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो रही है; जिसका नकारात्मक प्रभाव जैविक सम्पदा पर पड़ रहा है।
- घरेलू पर्यटकों की विशेषकर, मनोरंजक प्रवृत्ति से उनके द्वारा अज्ञानतावश भौगोलिक आकर्षणों को हानि पहुंच रही है।
- जिले के पर्यटन गाइड भूपर्यटन की जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित नहीं होने से वे पर्यटकों को भौगोलिक प्रक्रियाओं की जानकारी न तो दे पाते हैं और न ही उनकी विशेषताओं को बता पाते हैं।

Opportunities:

- इस क्षेत्र को भूस्थल के रूप में स्थापित कर भूपर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- इस क्षेत्र में उपलब्ध भूपर्यटन की विषय सामग्री को इको मार्ग बनाकर पर्यटन का प्रसार किया जा सकता है।
- इस क्षेत्र को पारिस्थितिकी पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की संभावनायें विद्यमान हैं।
- यहाँ पर्यटन विभाग द्वारा स्वयं अथवा जन सहयोग से पर्यटक सुविधाओं का प्रसार कर पर्यटकों की संख्या बढ़ायी जा सकती है। जो रोजगार वृद्धि के साथ–साथ क्षेत्र के भी सामाजिक–आर्थिक विकास में सहायक हो सकता है।
- इसके निकट की अभयपुरा बांध स्थित है जहां प्रपात से गिरने वाला जल एकत्रित होता है। यह स्थल प्रवासी पक्षियों का प्राकृतिक आवास स्थल भी है। इसलिए इसे बर्ड पर्यटन का केन्द्र भी बनाया जा सकता है।

- यहां अभयपुरा से भीमलत तक घाटी मार्ग को पैदल मार्ग के रूप में विकसित कर भूपर्यटनीय संभावनाओं को मूर्त रूप दिया जा सकता है। यह विशेष पर्यटन के अतिरिक्त सामान्य पर्यटकों के लिए भी रोमांच युक्त अनुभव हो सकता है।

Threats:

- गैर योजनाबद्ध पर्यटन विकास कार्यक्रम क्षेत्र की भौगोलिक व प्राकृतिक सुन्दरता को नष्ट कर सकता है।
- आदर्श पर्यटन व्यवहार में कमी पर्यावरण संकट के साथ–साथ नई समस्याओं को जन्म दे सकता है।
- पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाओं का विस्तार पर्यावरण को हानि पहुंचा सकता है।
- पर्यटकों के साथ पर्यटन अपराध, धोखाधड़ी बढ़ने की सम्भावनायें हो सकती हैं।
- पर्यटकों के अमर्यादित व अनियंत्रित आचरण से सामाजिक अपराध भी जन्म ले सकते हैं।

निष्कर्ष – उपर्युक्त SWOT विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि भीमलत क्षेत्र अपने अद्वितीय प्राकृतिक व भौगोलिक सौन्दर्य तथा विशिष्ट भूआकृतियों व दृश्यरूपों के माध्यम से एक महत्वपूर्ण भूस्थल के रूप में विकसित हो सकता है। यदि इस क्षेत्र में पर्यावरणीय मानकों के आधार पर पर्यटकों के लिए सुविधाओं का प्रसार किया जाये तो यह क्षेत्र समग्र पर्यटन के उदाहरण के रूप में विश्व पर्यटन मानचित्र में अपना विशिष्ट स्थान बना सकता है, जो बून्दी जिले के आर्थिक विकास के साथ–साथ सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

क्षेत्र अध्ययन 5.3 – गरड़िया

गरड़िया बून्दी में दक्षिण में $25^0 7'$ उत्तरी अंक्षाश तथा $75^0 8'$ पूर्वी देशान्तर पर बून्दी जिले की तालेड़ा तहसील में जवाहर सागर ग्राम पंचायत में स्थित है। यह क्षेत्र बून्दी जिला मुख्यालय से 45 किमी दूर कोटा–उदयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग के निकट स्थित है। यह क्षेत्र ऊपरमाल पठार का भाग है जहां चम्बल नदी ने पठारी भाग पर विस्तृत अपरदन क्रिया से रावतभाटा से कोटा तक जो गॉर्ज बनाया है, उस गॉर्ज के किनारे पर यह स्थित है। यहां चम्बल नदी गॉर्ज में मियाण्डर में बहती हुई आगे बढ़ती है। इस कारण यह क्षेत्र भौगोलिक सुन्दरता के साथ–साथ प्राकृतिक सुन्दरता से भी परिपूर्ण होने के कारण भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

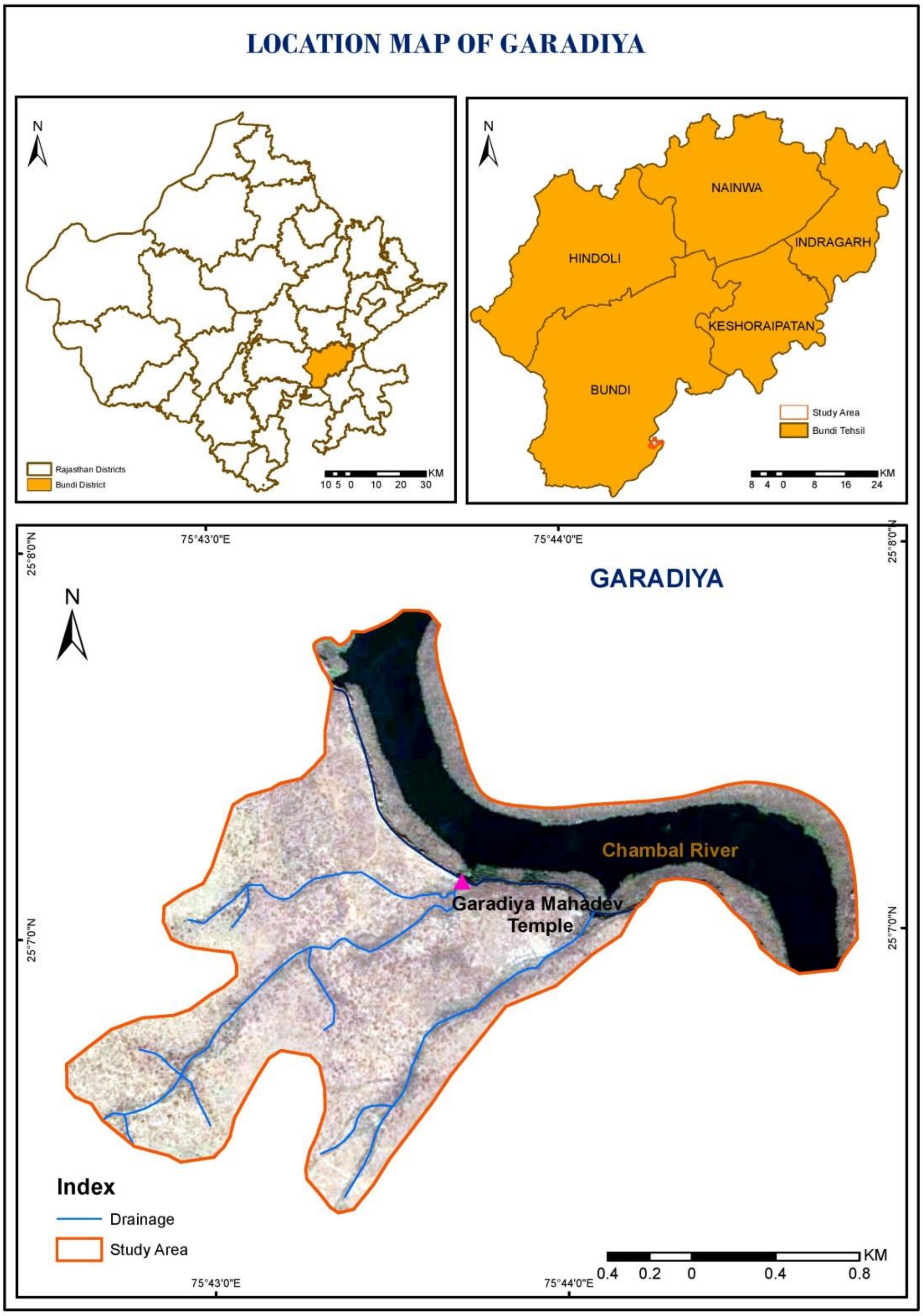

जिला बून्दी : गरड़िया अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र सं. 5.6

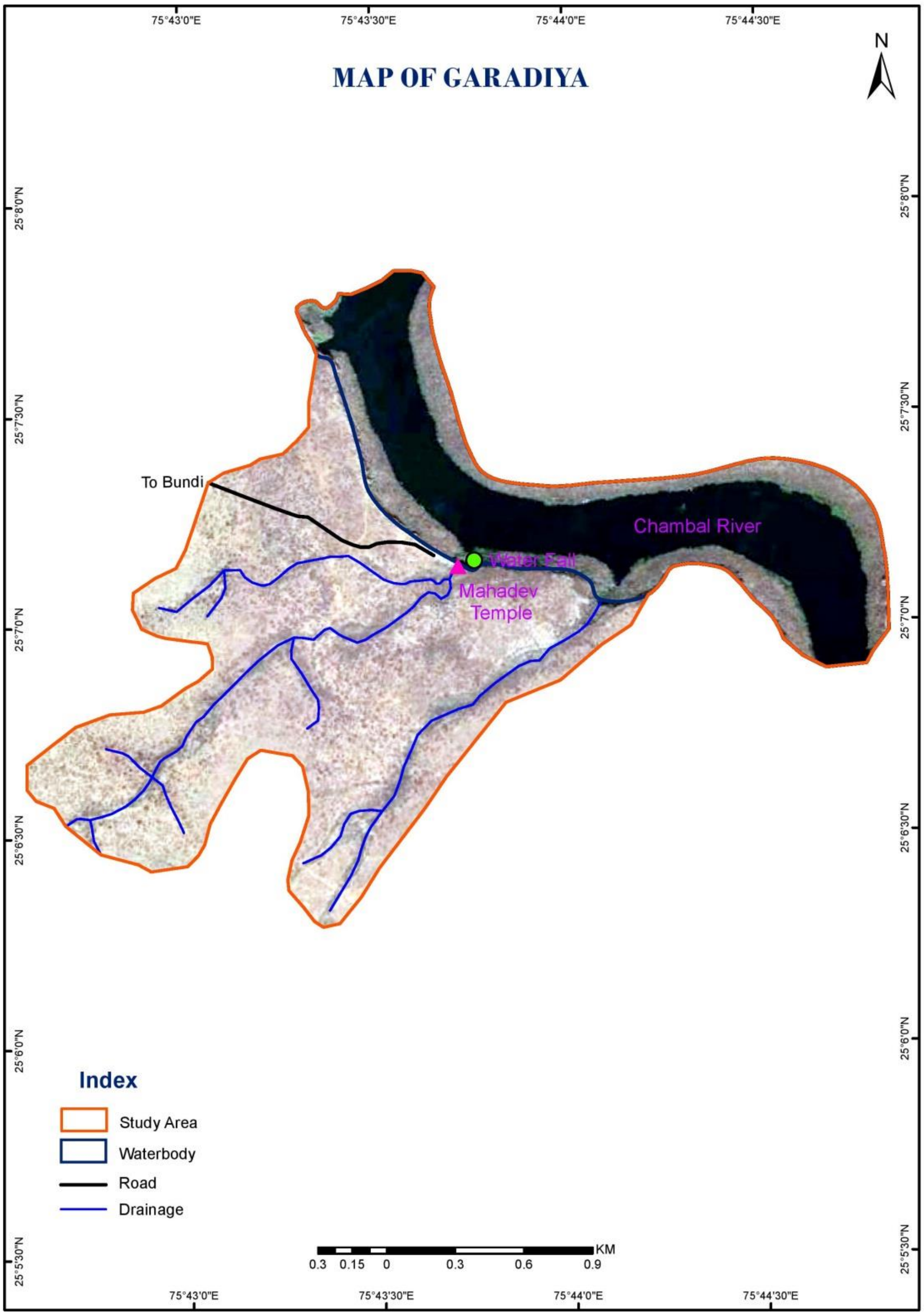

गरड़िया

मानचित्र सं. 5.7

भूपर्यटनीय संसाधन (Geotourism Resources)– यह क्षेत्र कोटा–उदयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 76 तथा देवली–कोटा राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 52 जहां मिलते हैं वहां से 3 किमी दूर मुख्य मार्ग से हटकर जवाहर सागर ग्राम पर जाने वाले मार्ग पर स्थित है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र ऊपरमाल पठार पर स्थित है जहां बहते हुये जल ने यहां की परतदार चट्टानों पर विस्तृत अपरदन क्रिया से कई आकर्षक स्थलाकृतियों का निर्माण किया है, के कारण अद्वितीय भौगोलिक व प्राकृतिक सुन्दरता रखता है। यहां के कई भौगोलिक आश्चर्य पर्यटकों को विस्मय चकित कर देते हैं।

इस क्षेत्र का सर्वाधिक मुख्य आकर्षण चम्बल नदी द्वारा निर्मित विस्तृत तीव्र कगार युक्त गार्ज तथा चम्बल नदी का मियाण्डर आकृति में प्रवाह है। यहां गॉर्ज के दोनों कगारों पर सघन वनस्पति विद्यमान है जिससे यह क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से भी समृद्ध है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र पठारी भाग पर होने के कारण यहां प्रवाहित जल ने अपनी अपरदनात्मक शक्ति से चट्टानों को काटकर कई लघु जलप्रपात व चित्राकर्षक शैक्षणिक ज्ञान से परिपूर्ण स्थलाकृतियों का निर्माण किया है जो भौगोलिक अध्ययन की महत्वपूर्ण विषय सामग्री है। यहां के स्थलरूप प्रकृति की कला शैली के साथ–साथ प्रकृति की परिवर्तनकारी शक्ति का भी उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इस रूप में यह एक महत्वपूर्ण भूस्थल है। इसके अतिरिक्त यह क्षेत्र प्रागेतिहासिक काल से मानव विकास की यात्रा का भी साक्ष्य है जिसकी पुष्टि यहां की कन्दराओं में उसके द्वारा निर्मित रॉक पेंटिंग से होती है।

इस क्षेत्र की प्रमुख भौगोलिक पर्यटनीय विशेषताओं को SWOT विश्लेषण द्वारा जाने का प्रयास किया है जो कि क्षेत्र के विस्तृत व गहन सर्वेक्षण पर आधारित है, जिससे प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं –

Strengths:

- यह क्षेत्र न केवल भौगोलिक व प्राकृतिक सुन्दरता की दृष्टि से अपितु जैव विविधता के रूप में भी समृद्ध है।
- इस क्षेत्र का सर्वप्रमुख भूपर्यटनीय आकर्षण चम्बल नदी की अपरदनकारी शक्ति द्वारा निर्मत मियाण्डर तथा तीव्र कगार युक्त गार्ज है जिसकी गहराई 150 मीटर से अधिक तथा चौड़ाई 200 मीटर तक है। इस प्रकार विशाल गॉर्ज राजस्थान में अन्यत्र नहीं है।
- इस क्षेत्र में पठारी भाग पर बहते हुये जल ने परतदार चट्टानों को काटकर अनेक आकर्षक स्थलरूप बनाये हैं जिनमें लघु जल प्रपात, हैंगिंग रॉक, लम्बवत ढाल के कगार, प्राकृतिक कन्दरायें आदि के उदाहरण भौगोलिक ज्ञान को समृद्ध करते हैं।

- यहां गॉर्ज के दोनों तीव्र कगार कई स्थानों पर लम्बवत क्रमबद्ध सोपानी ढाल का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।
- गॉर्ज के दोनों किनारे सघन वनस्पति से युक्त होने के कारण समृद्ध जैविक सम्पदा रखते हैं। जिससे इस क्षेत्र को परिस्थितिकीय पर्यटन का भी केन्द्र बनाया जा सकता है।
- यह क्षेत्र राष्ट्रीय घड़ियाल अभ्यारण्य का भी भाग है जहां बड़ी संख्या में घड़ियालों का निवास है।
- यहां स्थित प्राकृतिक शिवलिंग पर निरन्तर चट्टानों से रिसकर आती हुई जलधारा द्वारा अभिषेक किया जाता है। जिस कारण यह धार्मिक स्थल होने के कारण घरेलू पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र पहले से ही बना हुआ है।
- यहाँ कुछ देर प्रकृति की गोद में बैठने से आध्यात्मिक व प्रकृति की विचित्र रचना की ओर रूझान उत्पन्न होता है जो आज के इस दौड़भाग वाले युग में मानसिक शान्ति प्रदान करता है।

Weakness:

- इस क्षेत्र तक पहुंचने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग से 3 किमी अन्दर आना पड़ता है, जहां तक का सड़क मार्ग पूरी तरह जर्जर है जिससे यहां आने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
- इस क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन साधनों का अभाव है जिससे पर्यटक निजी वाहनों पर निर्भर है। जिससे पर्यटन सीजन के समय पर्यावरण प्रदुषण में वृद्धि होती है।
- यहां पर वर्तमान में पर्यटकों के लिए विश्रामस्थल व सार्वजनिक सुविधाओं तथा जलपान की व्यवस्थाओं का अभाव है जिससे पर्यटकों को असुविधा होती है, जिस कारण उनका ठहराव अल्प समय के लिए ही हो पाता है।
- वर्षा ऋतु के समय यहां पिकनिक उद्देश्य से आने वाले पर्यटको ंकी संख्या अधिक हो जाती है। उनके द्वारा आयोजित सामूहिक गोठ तथा मनोरंजन के लिए ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग से पर्यावरणीय समस्यायें बढ़ रही हैं जिससे जैविक सम्पदा पर संकट उत्पन्न हो रहा है।
- पर्यटक गाइड भूपर्यटन की दृष्टि से प्रशिक्षित नहीं है जिससे वे पर्यटकों की भौगोलिक जिज्ञासाओं का समाधान नहीं कर पाते हैं और न ही यहां की भौगोलिक विशेषताओं को स्पष्ट कर पाते हैं।

गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.18

गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.19

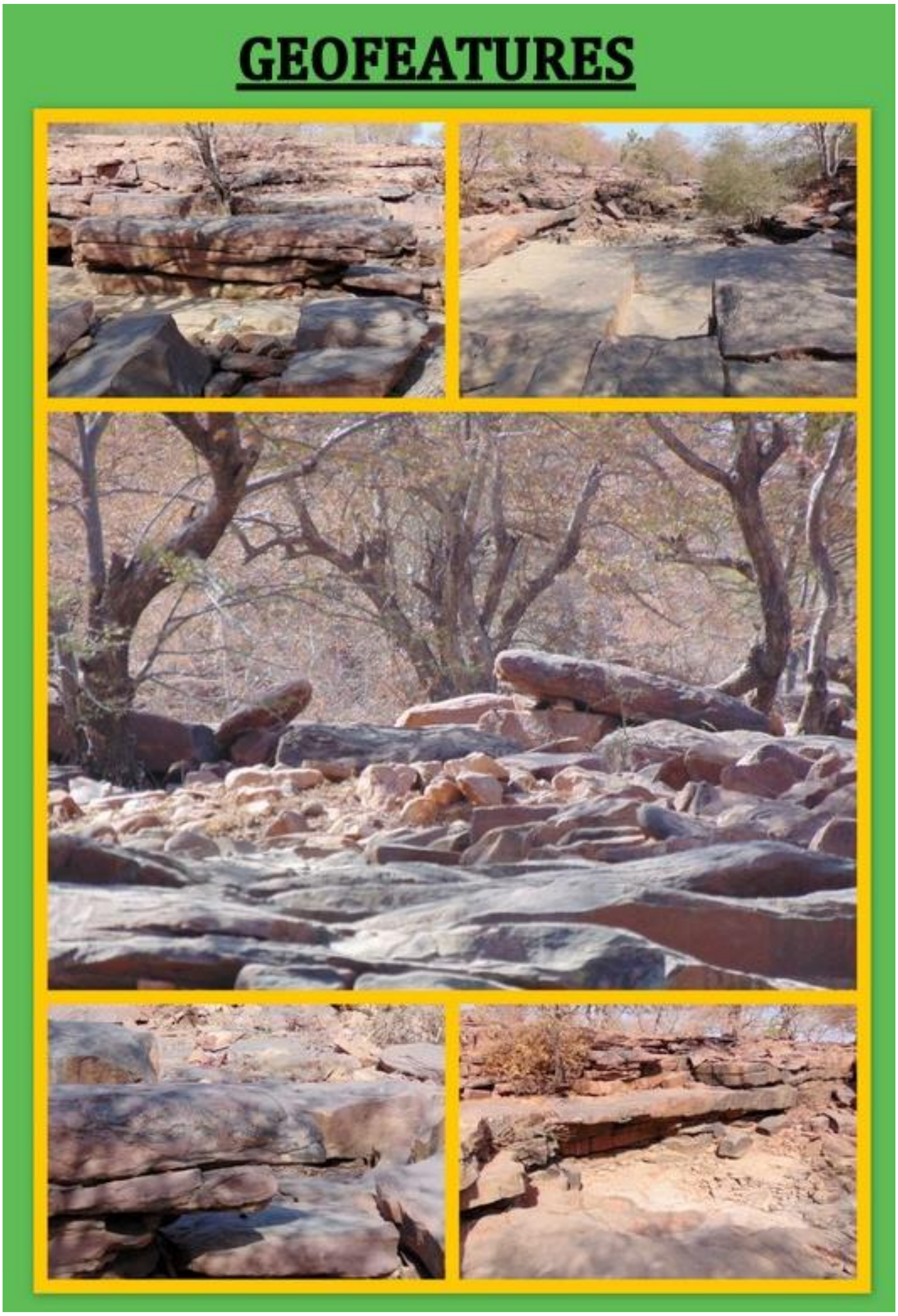

गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.20

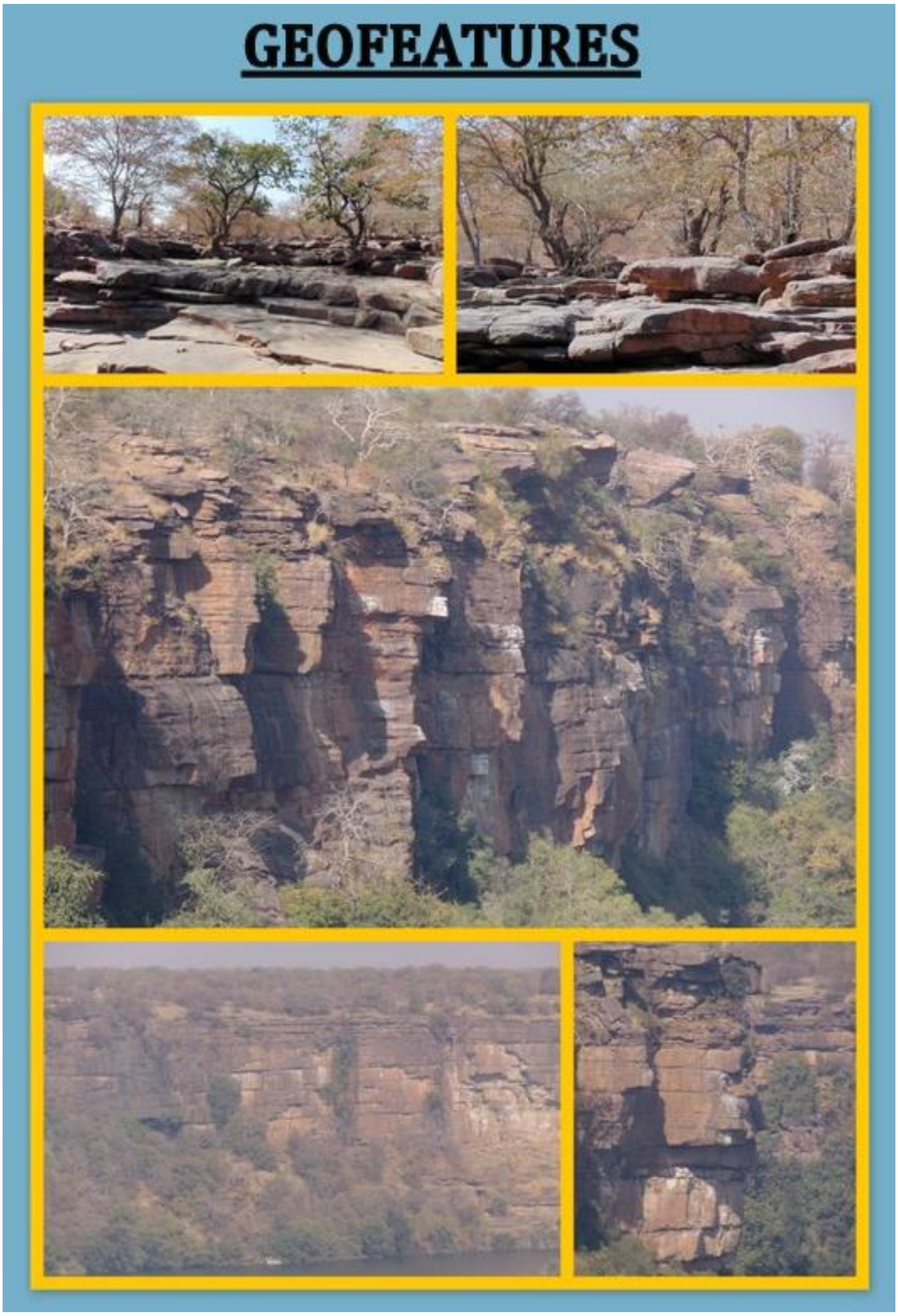

गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.21

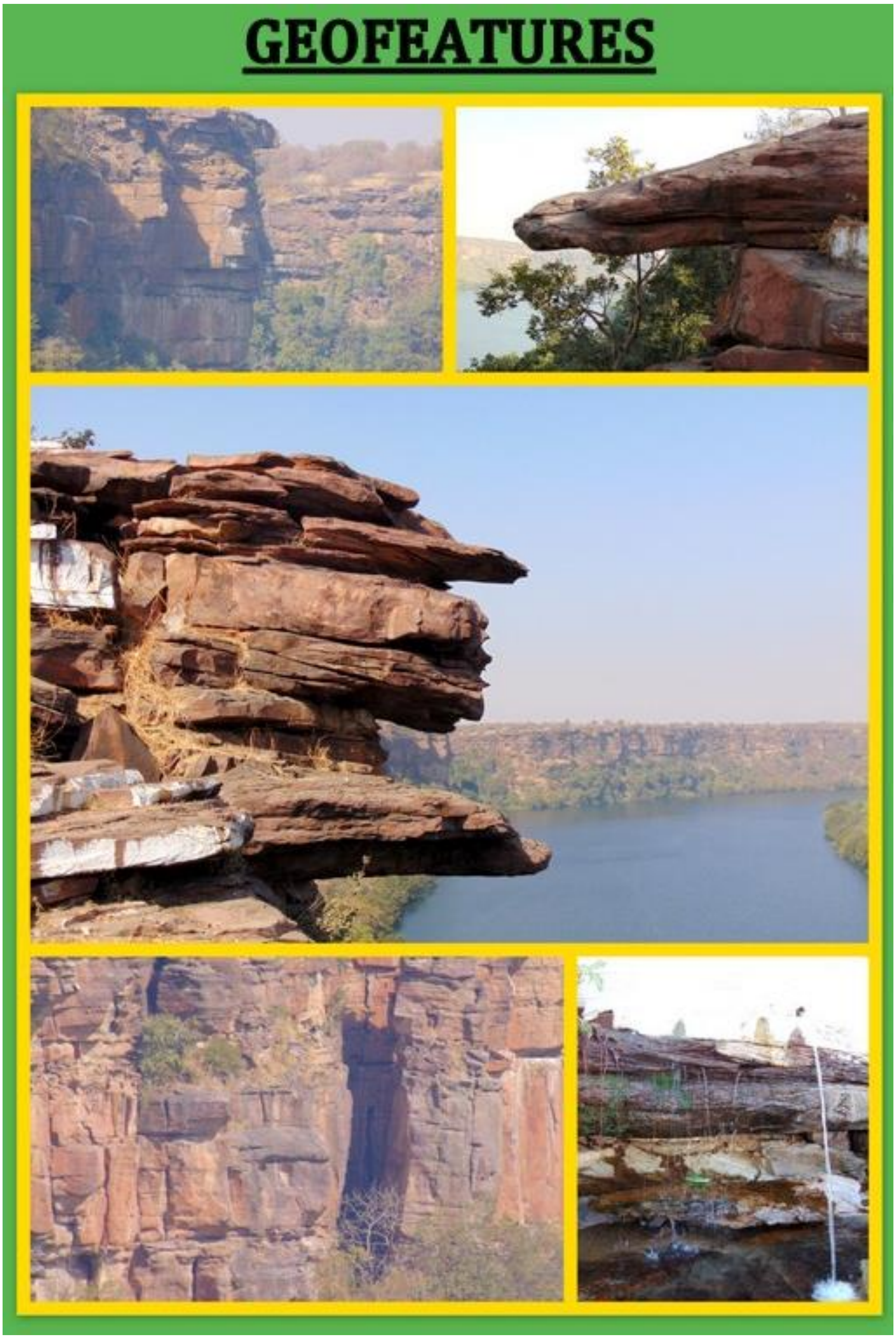

गरड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.22

Opportunities:

- इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताओं व भू रूपों के आधार पर इसे भूस्थल घोषित कर भूपर्यटन को बढ़ाया जा सकता है।
- यहां भूपर्यटन के साथ–साथ ऐतिहासिक, धार्मिक, साहसिक, पारिस्थितिकीय पर्यटन के विकास के रूप में समग्र पर्यटन विकास की प्रचुर सम्भावनायें हैं।
- यहां साहसिक पर्यटन की विभिन्न गतिविधियाँ जैसे रॉक–क्लाइम्बिंग जम्पिंग आदि को सुरक्षित रूप से बढ़ावा देकर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- इस क्षेत्र में पर्यावरणीय मानकों के अनुसार पर्यटकों के लिए सुविधाओं का प्रसार कर पर्यटकों की संख्या बढ़ायी जा सकती है जिससे रोजगार वृद्धि के साथ–साथ सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ाया जा सकता है।
- इस क्षेत्र में उपलब्ध भौगोलिक ज्ञान आधारित सामग्री तथा घडियाल अभ्यारण्य व जैविक सम्पदा के आधार पर ईको मार्ग बनाकर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

Threats:

- गैर योजनाबद्ध व अनियंत्रित पर्यटन विकास कार्यक्रम क्षेत्र की भौगोलिक, प्राकृतिक व जैविक सुन्दरता को नष्ट कर सकता है ।
- इस क्षेत्र में पर्यटकों की थोडी सी असावधानी बडी दुर्घटना को जन्म दे सकती है ।
- पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने पर उनका अमर्यादित आचरण विभिन्न प्रकार के सामाजिक अपराधों को जन्म दे सकता है ।
- पर्यटकों द्वारा आदर्श आचरण संहिता में कमी पर्यावरण संकट के साथ–साथ नई समस्याओं को भी जन्म दे सकता है ।
- क्षेत्र में सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग बढने से पारिस्थितिकीय संकट उत्पन्न हो रहा है ।

निष्कर्ष –उपर्युक्त SWOT विश्लेषण से ज्ञात होता है कि गरड़िया क्षेत्र अपनी विशिष्ट प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता के कारण एक महत्वपूर्ण भूस्थल के रूप में भूपर्यटन के आकर्षण का केन्द्र बन सकता है। इसके लिए सीमित मात्रा में निर्धारित पर्यावरणीय मानकों के अनुसार विकास कार्य किये जाने की आवश्यकता है। ऐसा होने पर यह स्थल समग्र पर्यटन के उदाहरण के रूप में पर्यटकों को आकर्षित कर जिले के सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ–साथ सतत विकास में अपना योगदान दे सकता है।

क्षेत्र अध्ययन 5.4 – तलवास

तलवास बून्दी में पूर्व की ओर $25^06'$ उ0 अंक्षाश तथा $76^03'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य नैनवां तहसील में पंचायत मुख्यालय के रूप में स्थित है। यह क्षेत्र बून्दी जिला मुख्यालय से 53 किमी दूर है। यह बून्दी नैनवां राज्य राजमार्ग संख्या 34 पर जैतपुर तिराहे से 5 किमी दूरी पर इन्द्रगढ़ मार्ग पर स्थित है। यह क्षेत्र **'बून्दी का कश्मीर''** उपनाम से जाना जाता है। यह विन्ध्यन श्रेणी की समानान्तर श्रृंखलाओं के मध्य सुरम्य घाटी में स्थित है। यह क्षेत्र स्वतन्त्रता पूर्व बून्दी राज्य की सुरक्षा चौकी के रूप में प्रसिद्ध था। यहां पहाड़ी पर विशाल परकोटे के साथ अजीतगढ़ किला भी बना हुआ है। जैतपुर तिराहे से तलवास की ओर आने का मार्ग समानान्तर श्रेणियों के बीच हरी–भरी घाटियों, नालों से निकलता है। यहां के नयनाभिराम दृश्य आने वालों को प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का दर्शन कराते हैं। यहां पर्यटकों व आगन्तुकों को प्रकृति की गोद में रहकर समय बिताने का मौका मिलता है। जिनसे उनकी उत्सुकता व जिज्ञासा में वृद्धि होती हैं यह सम्पूर्ण क्षेत्र अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य तथा भौगोलिक ज्ञान से परिपूर्ण है। जिस कारण यह भूपर्यटन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण केन्द्र है।

भूपर्यटनीय संसाधन (Geotourism Resources) – 'बून्दी का कश्मीर'' तलवास क्षेत्र विन्ध्यन क्रम की समानान्तर श्रेणियों के मध्य घाटी में स्थित है। इस भाग में बून्दी की दूसरी सर्वाधिक ऊँची चोटी अजीतगढ़ (1662 फीट) स्थित है। हरी भरी घाटियां, झरने, तालाब, नालों, ऐतिहासिक विरासत युक्त यह क्षेत्र भौगोलिक सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपम है। यहां की परतदार चट्टानों पर जल का प्रवाह व उससे निर्मित विभिन्न स्थलरूप अलग ही रोमांच देते हैं। साथ ही भूगोल के अध्ययन की भी विषय सामग्री उपलब्ध कराते हैं। यह क्षेत्र सघन वनस्पति आच्छादित होने से जैविक विविधता की दृष्टि से भी समृद्ध होने के कारण पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखता है।

यहां का सर्वाधिक मुख्य आकर्षण ''पानी परना'' जलप्रपात है जो लगभग 100 फीट की ऊँचाई से गिरता है। वर्षा ऋतु में इस जल प्रपात का वेग अलग ही रोमांच देता है। इसके नीचे भंवर क्रिया से निर्मित अवनमन कुण्ड व उसके बाद प्रवाहित जल द्वारा स्तरित चट्टानों पर अपरदनात्मक क्रिया से बनाये गये विभिन्न स्थलरूप भूपर्यटन की विषय सामग्री प्रस्तुत करते हैं।इसके निकट ही धूंधलेश्वर महादेव क्षेत्र पर भी स्थित सीढीनुमा जल प्रपात तथा यहां विन्ध्यन क्रम के दौरान संपीडनात्मक घटनाओं से चट्टानों पर पड़े विभिन्न प्रकार के मोड़ वलन के विभिन्न प्रकारों के उदाहरणों को स्पष्ट करते हैं ।

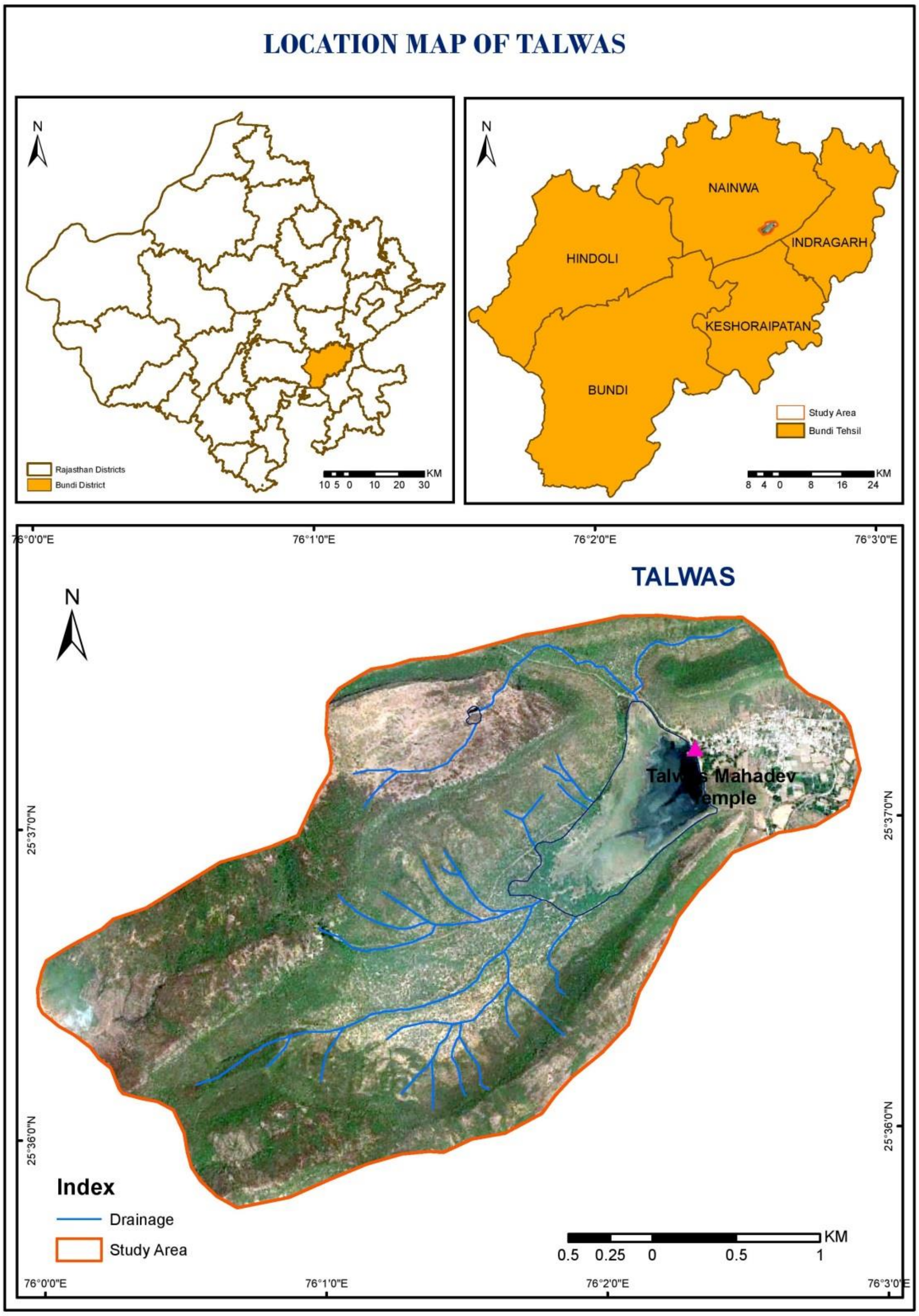

जिला बून्दी : तलवास अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र सं. 5.8

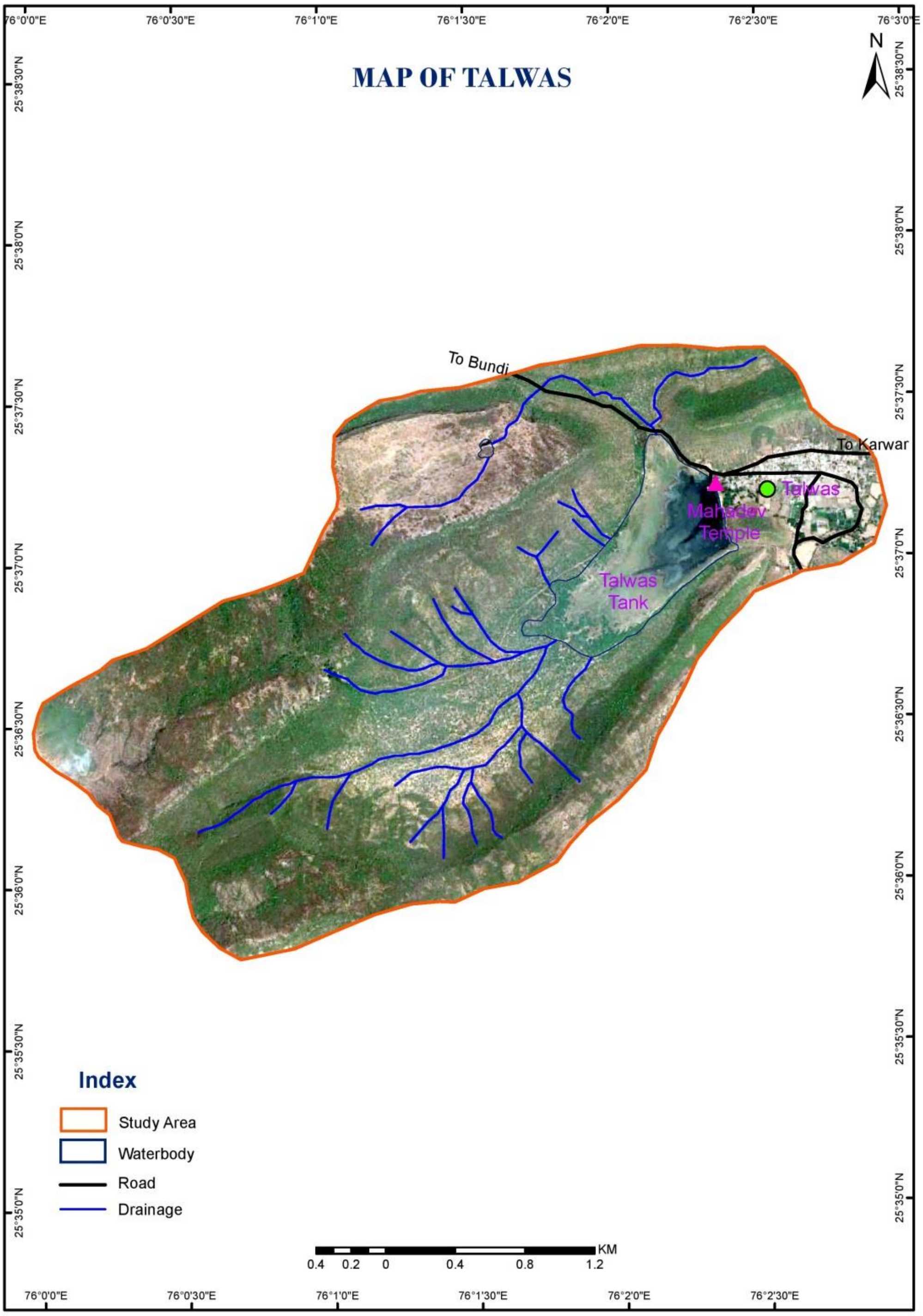

तलवास

मानचित्र सं. 5.9

इसके अतिरिक्त यहाँ परतदार चूना युक्त चट्टानों पर जल की तीव्र धारा से निर्मित विभिन्न स्थलरूप भौगोलिक ज्ञान के रूप में भूगोल की विषय सामग्री को प्रस्तुत करते है । यह सम्पूर्ण क्षेत्र अनुपम भौगोलिक व प्राकृतिक सौन्दर्य रखता है ।

इस क्षेत्र की भौगोलिक व प्राकृतिक विशेषताओं को SWOT विश्लेषण द्वारा उभारने का प्रयास किया है। जिससे प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं :–

Strengths:

- यह सम्पूर्ण क्षेत्र अनुपम भौगोलिक, प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ–साथ समृद्ध जैविक सम्पदा भी रखता है।
- इस क्षेत्र तक पहुंचने का मार्ग ''कश्मीर की वादियों'' जैसा अनुभव देता है।
- यहां 100 फीट ऊँचाई से गिरता जलप्रपात ''पानी परना'' है, जो पर्यटकों को आकर्षित करता है। वेग से गिरता हुआ जल जब चट्टानों को अपरदित करता हुआ आगे बढ़ता है तो निर्मित विभिन्न स्थलाकृतियां, भूगोल की विषय सामग्री के प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करती है।
- यहां की परतदार चट्टानों में पड़े विभिन्न मोड़ विन्ध्यन क्रम के दौरान हुई संपीडनात्मक भूगर्भिक प्रक्रिया के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यहां वलन व उसके विभिन्न प्रकारों को प्रत्यक्ष उदाहरणों द्वारा देखा व समझा जा सकता है।
- यहां धूंधलेश्वर स्थल पर सीढ़ीनुमा जल प्रपात के उदाहरण मिलते हैं। जहां सोपानों पर छोटे–छोटे अवनमन कुण्ड बनाकर जल आगे की ओर बढ़ता है।
- यहाँ एक छोटी पहाड़ी शंक्वाकार पहाड़ी का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती है।
- यहाँ बून्दी की दूसरी सर्वाधिक ऊँची चोटी अजीतगढ़ (1662 फीट) स्थित है जहाँ से सूर्यास्त का दृश्य मनोरम नजर आता है।
- यहाँ पहाड़ी पर ऐतिहासिक अजीतगढ़ किला बना हुआ है जो रियासतकाल में बून्दी राज्य की सुरक्षा चौकी तथा वॉच टॉवर के रूप में प्रसिद्ध था। यहां वर्ष भर जल से पूर्ण रहने वाले टांके, जिन्हें स्थानीय भाषा में ''कडूल्या'' कहा जाता है, स्थापत्य कला के अनुपम उदाहरण है। ये विशाल टांके 160 फीट लम्बाई x 170 फीट चौड़ाई x 70 फीट गहराई के हैं।
- यह क्षेत्र स्थानीय पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र पहले से ही बना हुआ है।
- प्रकृति की गोद में बसा हुआ यह क्षेत्र राजस्थान की भौगोलिक विविधता को स्पष्ट करता है।

तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.23

तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.23

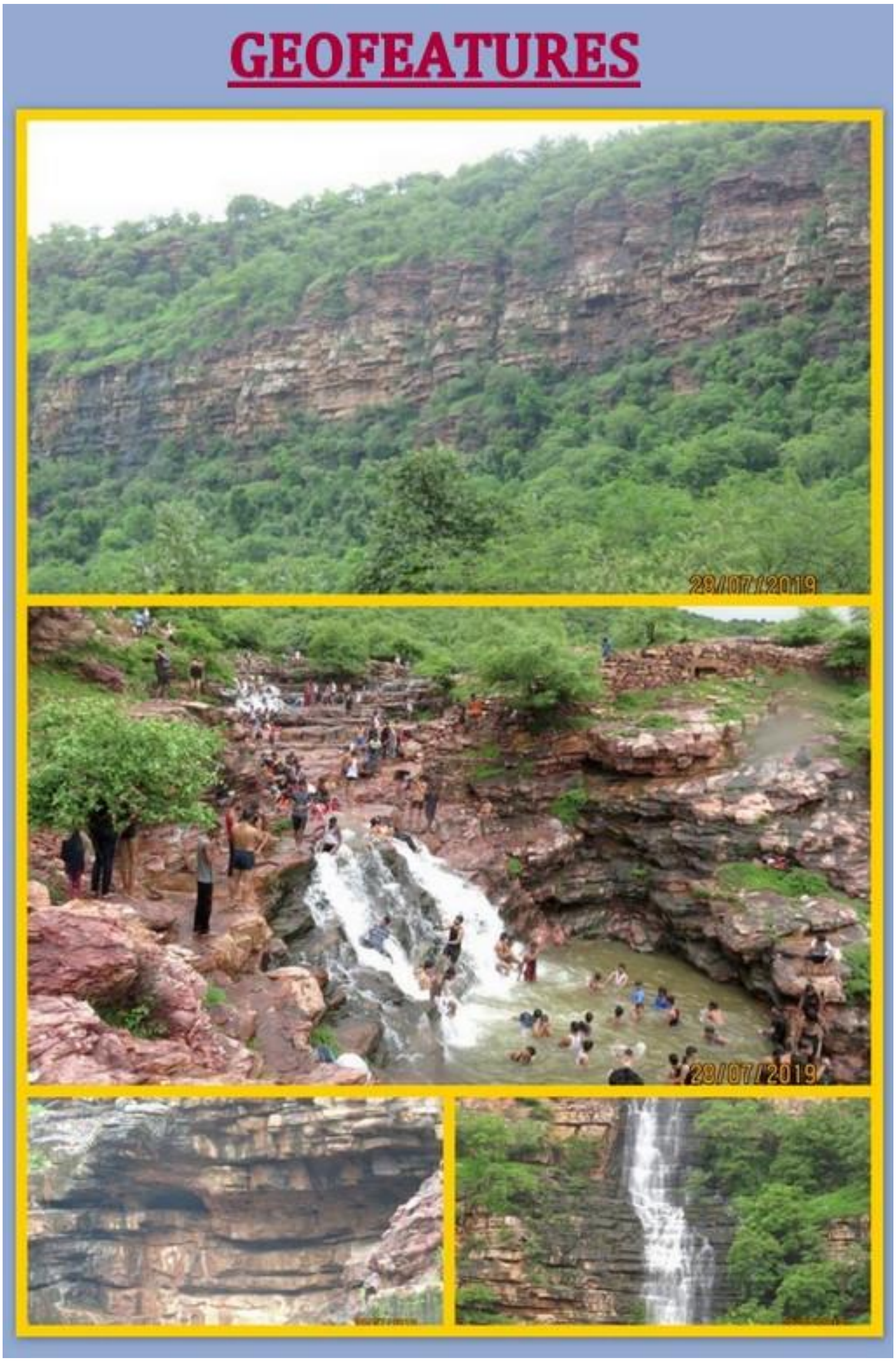

तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.24

तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.25

तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.26

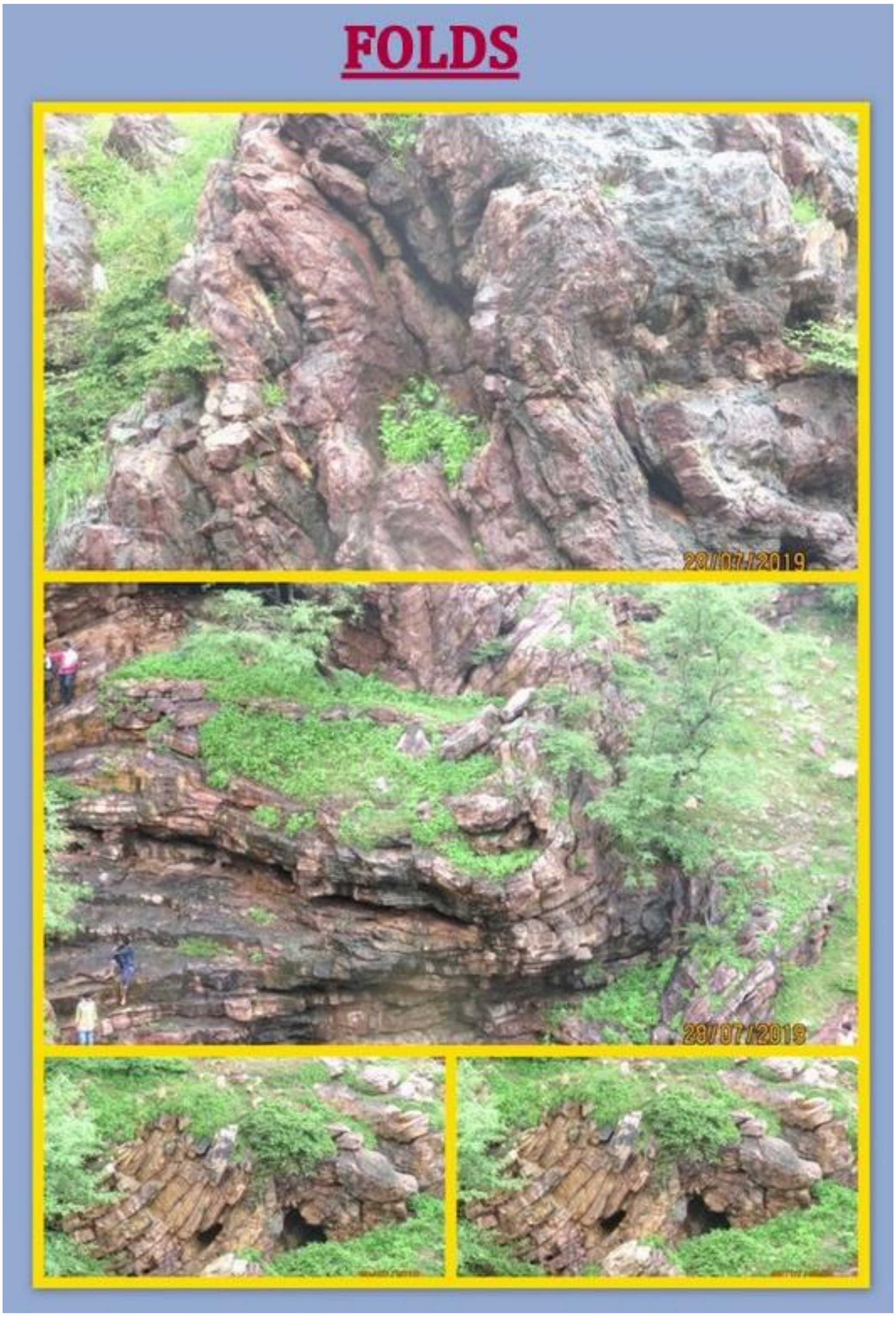

तलवास के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.26

Weakness:

- इस क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं की कमी है जिससे पर्यटक निजी वाहनों पर ही आश्रित रहते हैं। जिनसे अनावश्यक व्यय तथा प्रदुषण में वृद्धि होती है।
- यहां वर्तमान में पर्यटकों के लिए स्तरीय विश्रामगृह तथा सार्वजनिक सुविधाओं का अभाव है जिससे पर्यटकों को असुविधा होती है।
- वर्षा ऋतु के समय यहां घरेलू पर्यटकों की संख्या बढ़ जाती है। जिससे उनके सामूहिक भोजन आयोजन व मनोरंजनात्मक गतिविधियों से कचरा निस्तारण व ध्वनि प्रदुषण की समस्या उत्पन्न हो रही है। साथ ही उनके द्वारा प्रयोग किये गये सिंगल यूज प्लास्टिक पर्यावरण को दूषित कर रहा है।
- घरेलू पर्यटकों के अनियंत्रित व्यवहार से यहां के भौगोलिक सौन्दर्य को हानि पहुंच रही है, साथ ही जैविक सम्पदा पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।
- अप्रशिक्षित पर्यटन गाइड पर्यटकों की भौगोलिक जिज्ञासाओं व प्रक्रियाओं का समाधान नहीं कर पाते जिससे भूपर्यटन विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है।

Opportunities:

- इस क्षेत्र को महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता व अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के आधार पर भूस्थल के रूप में विकसित कर यहाँ भूपर्यटन को नयी दिशा दी जा सकती है।
- यहां भूपर्यटन के साथ ही साहसिक, ऐतिहासिक व धार्मिक पर्यटन की भी संभावनायें विद्यमान हैं।
- यहां स्थित रतन सागर झील को संरक्षित कर प्रवासी पक्षियों के सुरक्षित आश्रय स्थल के रूप में बर्ड जोन बनाया जा सकता है।
- यह क्षेत्र बाघों का प्राकृतिक आवास क्षेत्र होने के कारण तथा समृद्ध जैविक सम्पदा के कारण ईको टूरिज्म की भी संभावनायें रखता है।
- इस क्षेत्र में पर्यावरणीय मानकों की पालना करते हुये सुविधायें विकसित की जाये तो यहां पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो सकती है।
- यहां की पर्यटनीय संभावनाओं का उपयोग करने के लिए वन विभाग, पर्यटन विभाग व पारिस्थितिक व भूगोल विशेषज्ञों की सहायता से एक इको मार्ग बनाया जाये तो यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अग्रणी हो सकता है।

- स्थानीय निवासियों को यदि भूपर्यटन गाइड के रूप में प्रशिक्षित किया जाये तो यह इस क्षेत्र में न केवल भूपर्यटन विकसित होगा साथ ही यहां के सामाजिक–आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण प्रयास हो सकता है।

Threats:

- गैर योजनाबद्ध तथा अनियंत्रित पर्यटन विकास कार्यक्रम क्षेत्र की भौगोलिक, प्राकृतिक व जैविक सुन्दरता को नष्ट कर सकता है।
- पर्यटकों द्वारा आदर्श आचरण संहिता में कमी पर्यावरण संकट के साथ–साथ सामाजिक अपराधों को भी जन्म दे सकता है।
- सामूहिक गोठों के आयोजन की निरन्तर बढ़ती संख्या से यहां कचरा निस्तारण एक समस्या बन रहा है जिससे पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं।
- पर्यटकों की बढ़ती संख्या इस क्षेत्र में जैविक सम्पदा के अवैध शिकार को बढ़ा सकते हैं। जिससे पारिस्थितिकी संकट उत्पन्न हो सकता है।
- पर्यटन विस्तार से लाभ उठाने की अपेक्षा में स्थानीय निवासियों द्वारा अज्ञानतावश भौगोलिक प्रक्रियाओं के प्रमाण नष्ट किये जा सकते हैं।

निष्कर्ष – उपयुक्त SWOT विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ''बून्दी का कश्मीर'' तलवास अनुपम भौगोलिक, प्राकृतिक सौन्दर्य रखता है। साथ ही जैविक सम्पदा में भी समृद्ध है। इसलिए यहां भूपर्यटन विकास की प्रचुर सम्भावनायें विद्यमान हैं। यदि यहां पर्यावरणीय मानकों के अनुसार विकास कार्य तथा पर्यटकों द्वारा आदर्श व्यवहार को मूर्त रूप दिया जाये तो यह क्षेत्र विश्व पर्यटन मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है। यह न केवल स्थानीय हितधारकों अपितु जिले के सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

क्षेत्र अध्ययन 5.5 – केवड़िया

केवड़िया बून्दी में दक्षिण पश्चिम की ओर $25^0$15′00.18″ उत्तरी अंक्षाश तथा $75^0$29′ 52.90″ पूर्वी देशान्तर पर बून्दी तहसील में लोइचा ग्राम पंचायत में स्थित है। यह बून्दी जिला मुख्यालय से 30 किमी दूर है। यह क्षेत्र ऊपरमाल पठार का भाग है, जहां की परतदार चट्टानों में हिलोरे लेकर बहते हुये जल ने अनेक आकर्षक स्थलाकृतियों का निर्माण किया

है, जो जल की अपरदन शक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इस रूप में यह भूपर्यटन का एक प्रमुख क्षेत्र है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में पठारी भाग पर बहता हुआ जल रोमांच उत्पन्न करता है तथा प्रकृति के कला कौशल को उजागर करता हुआ भूगोल की विषय सामग्री भी उपलब्ध कराता है। जिससे पर्यटकों को न केवल सुखद अनुभव होता है अपितु उनको ज्ञानार्जन का भी अवसर मिलता है। इसलिये यह एक महत्वपूर्ण भूपर्यटन केन्द्र है।

भूपर्यटनीय संसाधन (Geotourism Resources) – यह क्षेत्र ऊपरमाल पठारी भाग में शामिल है, जहां बालूका पत्थर का विस्तृत जमाव परतदार चट्टानों के रूप में पाया जाता है। इस क्षेत्र में ऊपरमाल पठार का अन्तिम छोर प्रारम्भ हो जाता है। जिससे पठारी धरातल में ढाल की मात्रा बढ़ जाती है जिससे यहां तीव्र वेग से बहता जल पर्यटको ंको रोमांचित करता है।

यहां का सर्वाधिक मुख्य आकर्षण तीव्र वेग से बहने वाले जल मे ंउठने वाली लहरें तथा उनके द्वारा किये जाने वाला अपरदन तथा इससे निर्मित विभिन्न रोचक चट्टानी स्थलाकृतियाँ पर्यटकों व भूगोल में रूचि रखने वालों को अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराती है। यहां चट्टानों पर निर्मित स्थलाकृतियों में Eye Rock, कन्दरायें, पैरेट रॉक, ब्रेकिंग रॉक, मशरूम रॉक, क्षिप्रिकायें, लघु जल प्रपात जैसी विशेषतायें पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। ये स्थलरूप संभवतः अन्यत्र दुर्लभ है।

इसके साथ ही यहां वर्षाकाल में बहते हुये जल का विहंगम दृश्य प्रकृति की शक्ति का अहसास कराता है जिसे पर्यटक अपलक निहारते रहते हैं। यह विहंगम दृश्य पर्यटकों में रोमांच उत्पन्न करता है। इस कारण यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूपर्यटन केन्द्र है।

इनके अतिरिक्त इस क्षेत्र में जल द्वारा निर्मित कन्दराओं में प्रागेतिहासिक कालीन मानव निवास के भी प्रमाण मिले हैं। उस युग के पाषाण उपकरण तथा रॉक पेंटिंग्स मानव सभ्यता के विकास क्रम की प्रक्रिया की भी जानकारी देता है।

इस क्षेत्र की प्रमुख भौगोलिक पर्यटनीय विशेषताओं को क्षेत्र के विस्तृत व गहन सर्वेक्षण के आधार पर SWOT विश्लेषण द्वारा उभारने का प्रयास किया है जिससे प्राप्त परिणाम इस प्रकार है –

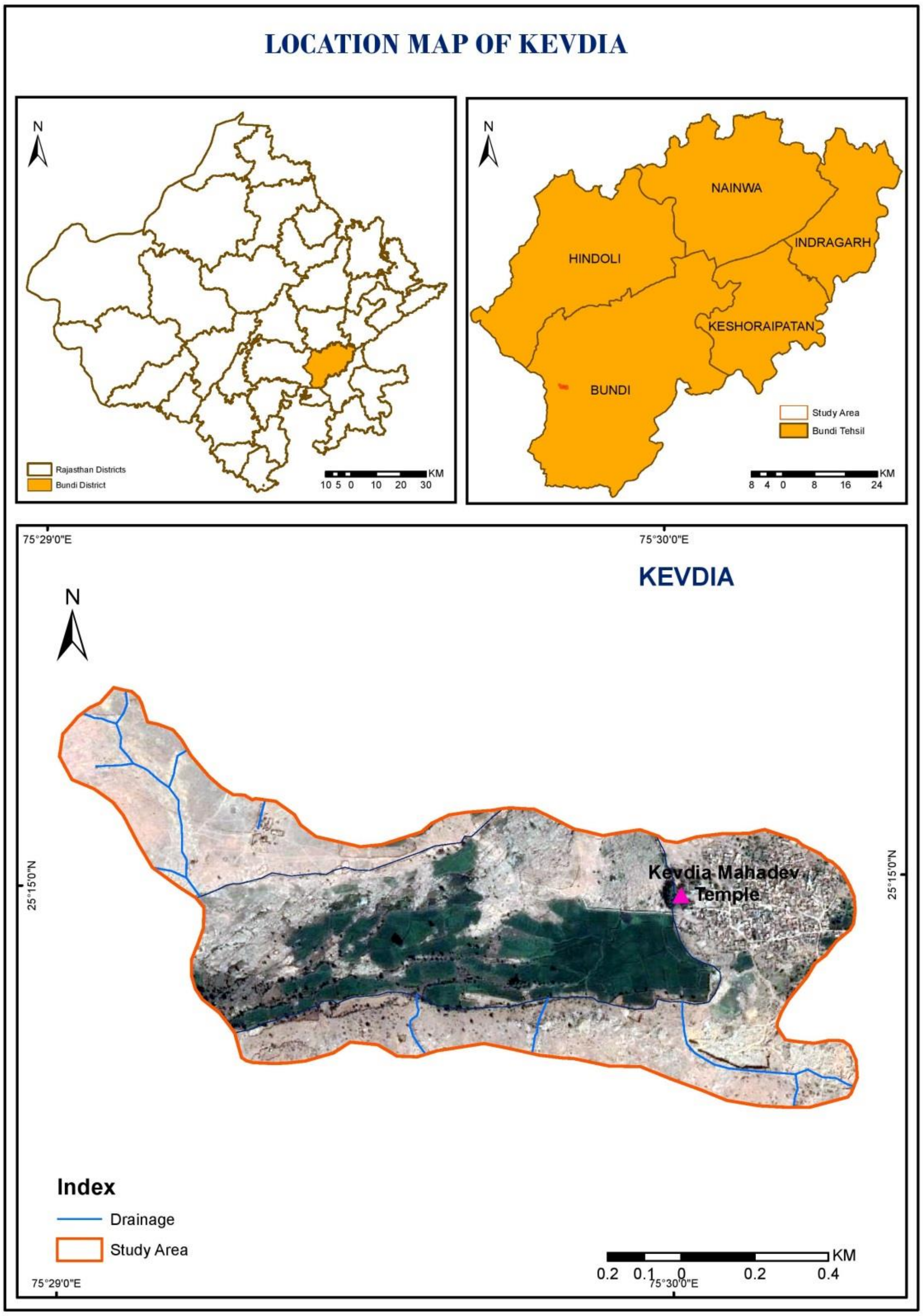

जिला बून्दी : केवड़िया अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र सं. 5.10

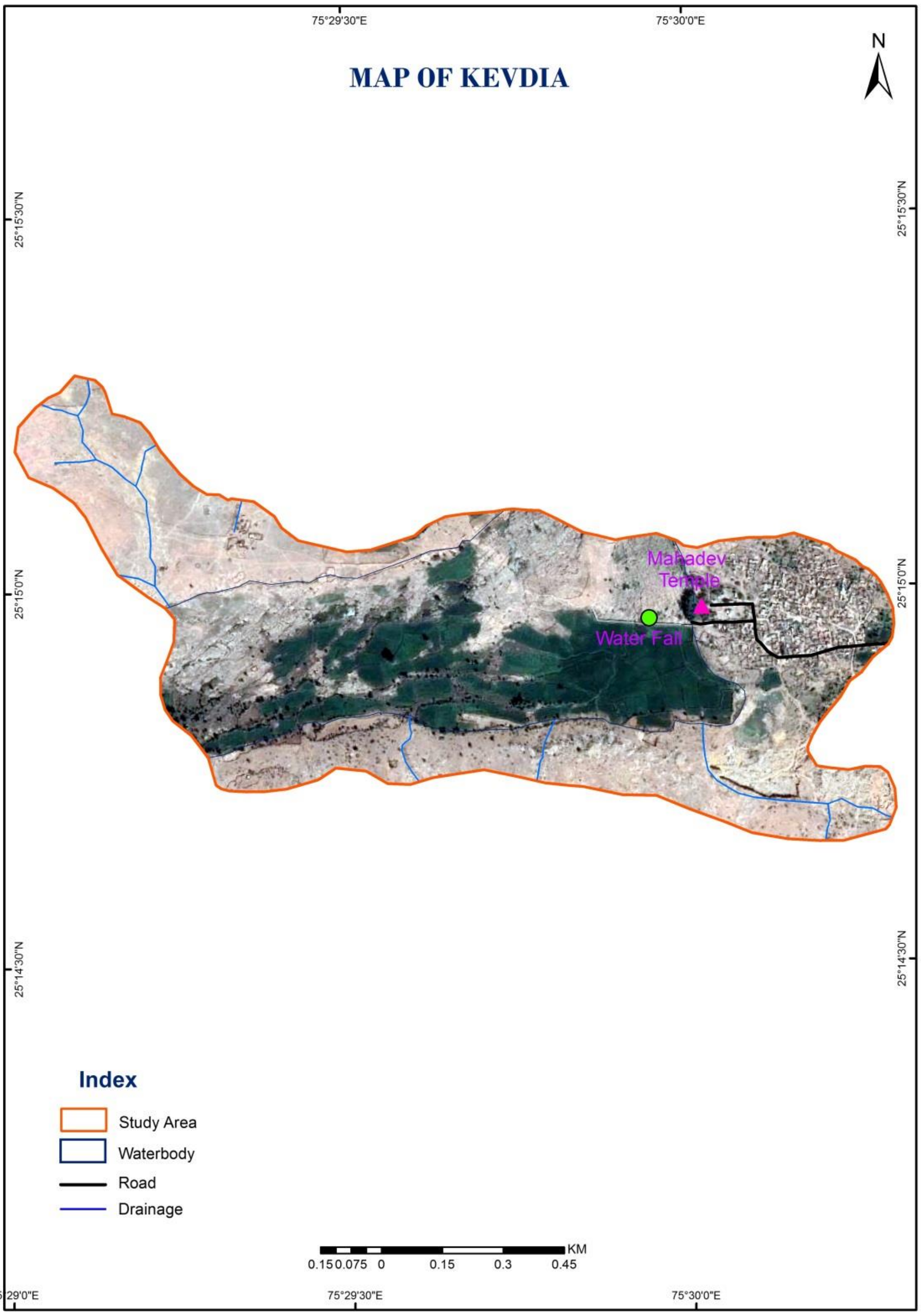

केवड़िया

मानचित्र सं. 5.11

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.27

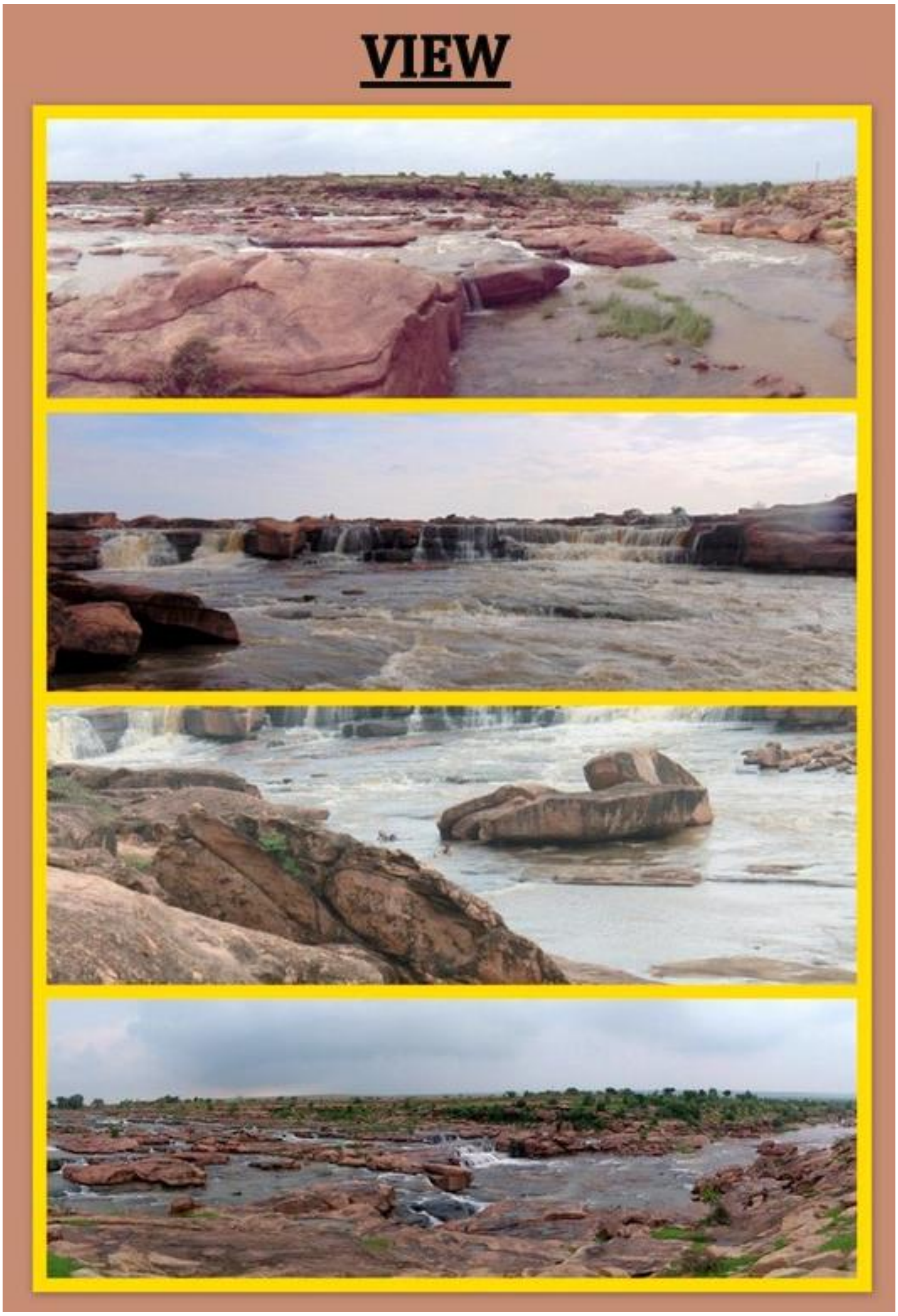

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.27

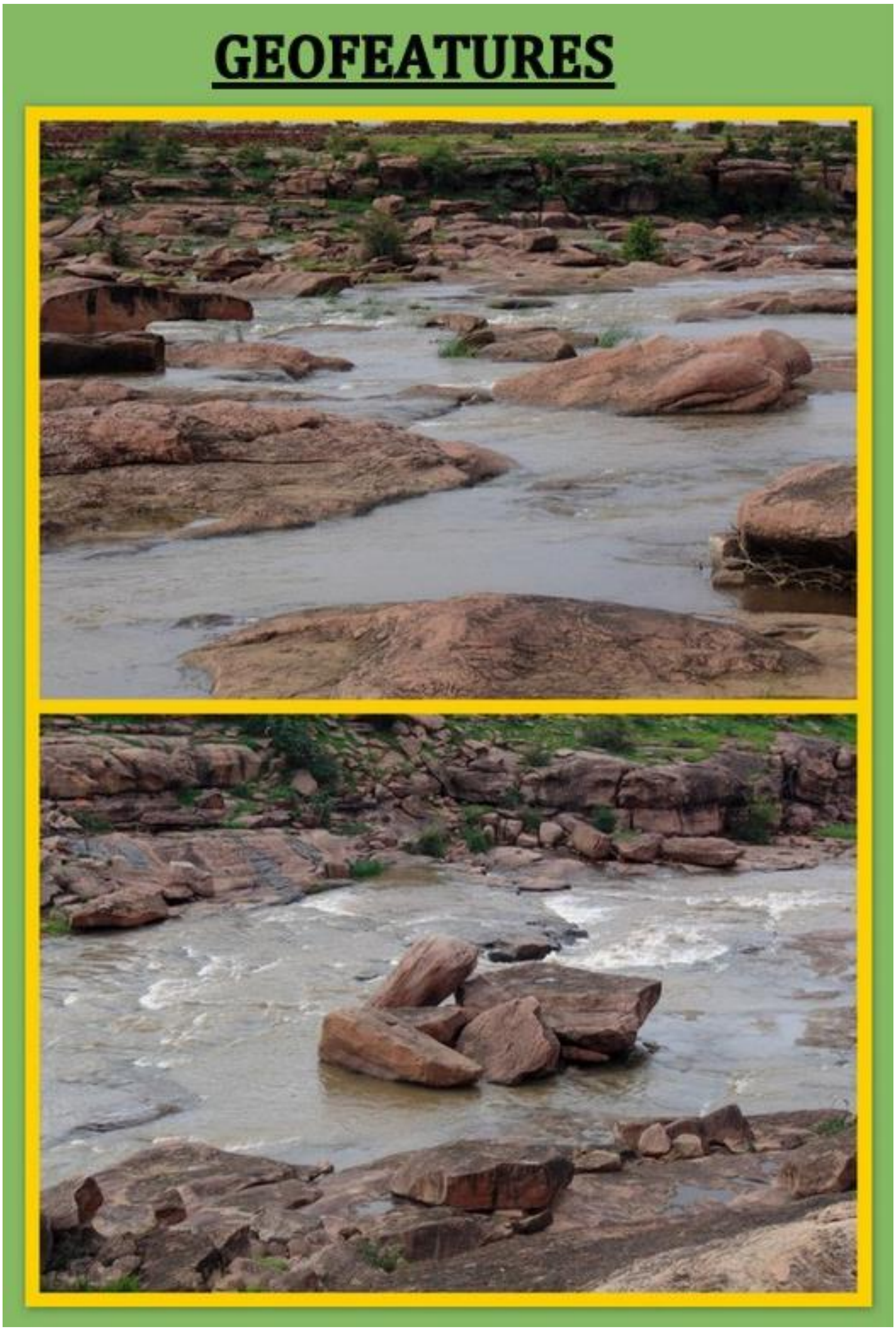

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.28

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.29

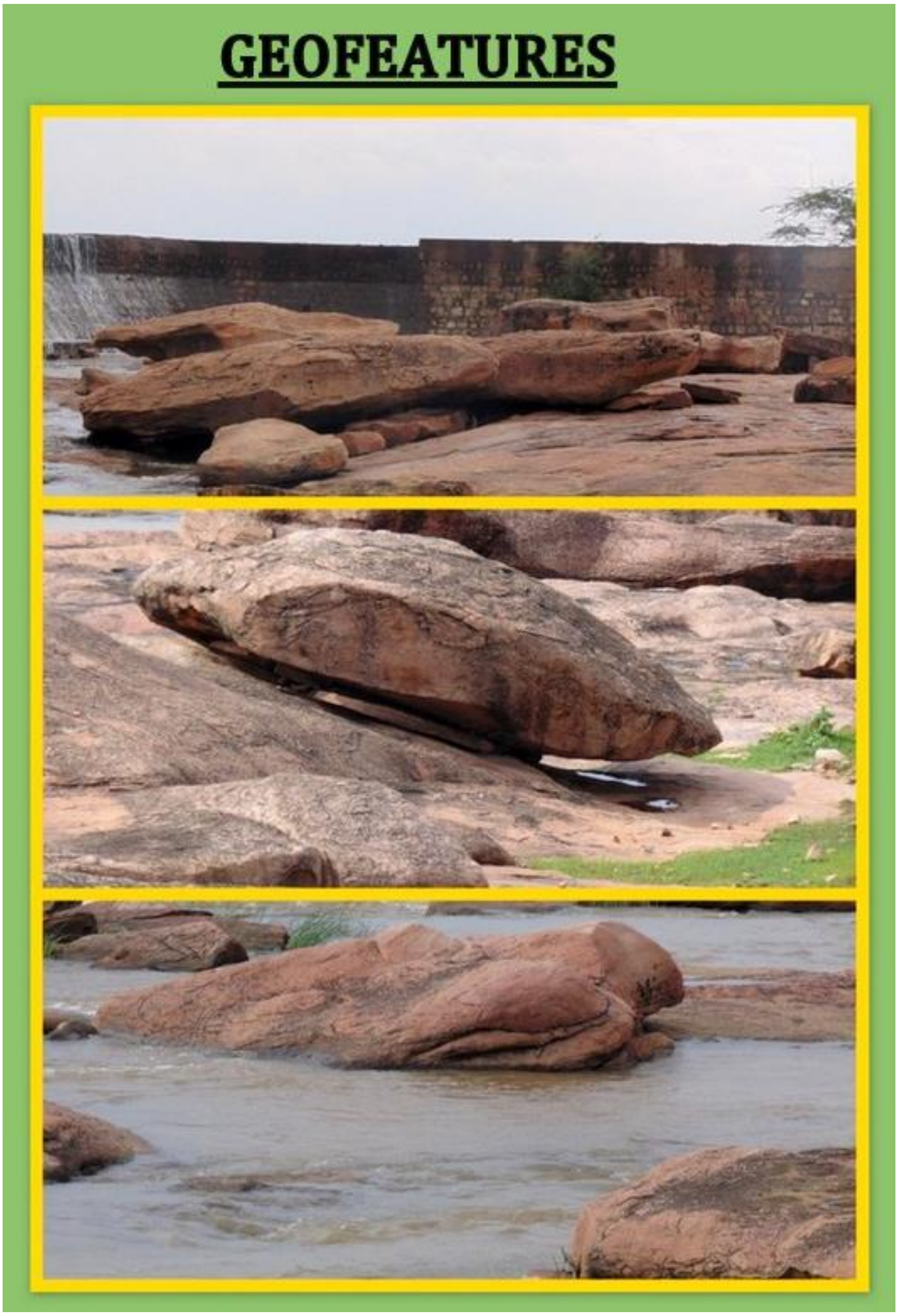

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.30

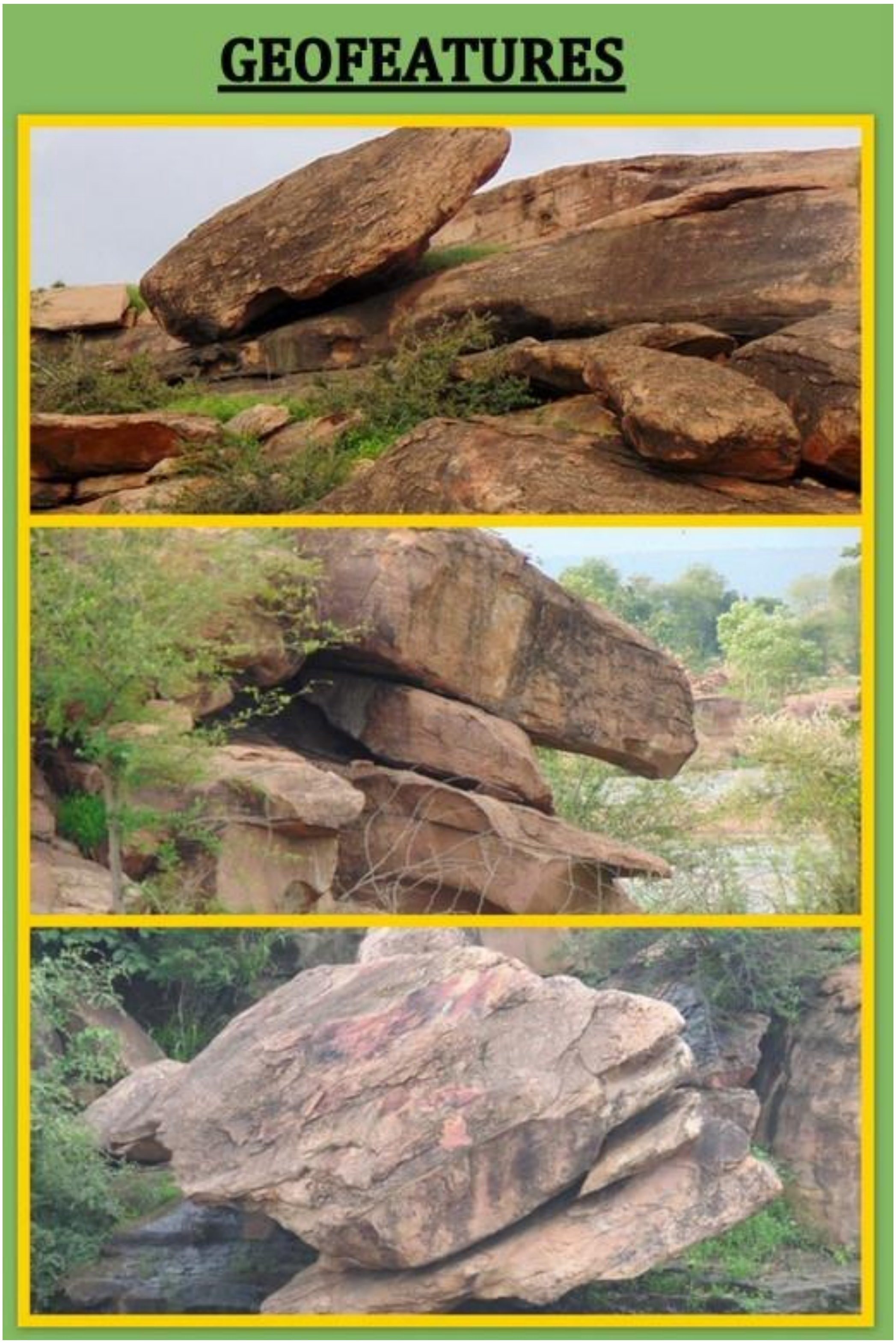

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.31

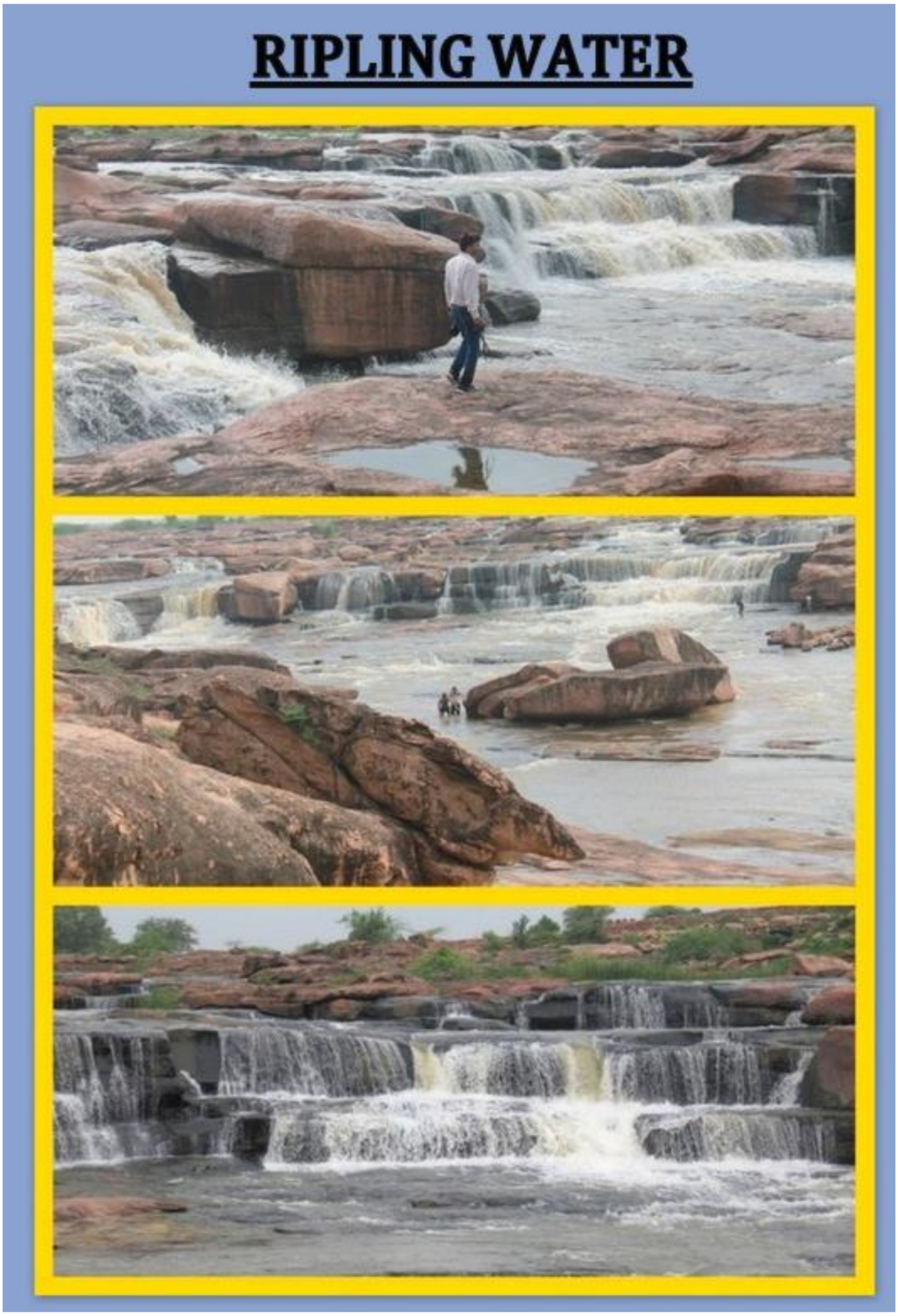

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.32

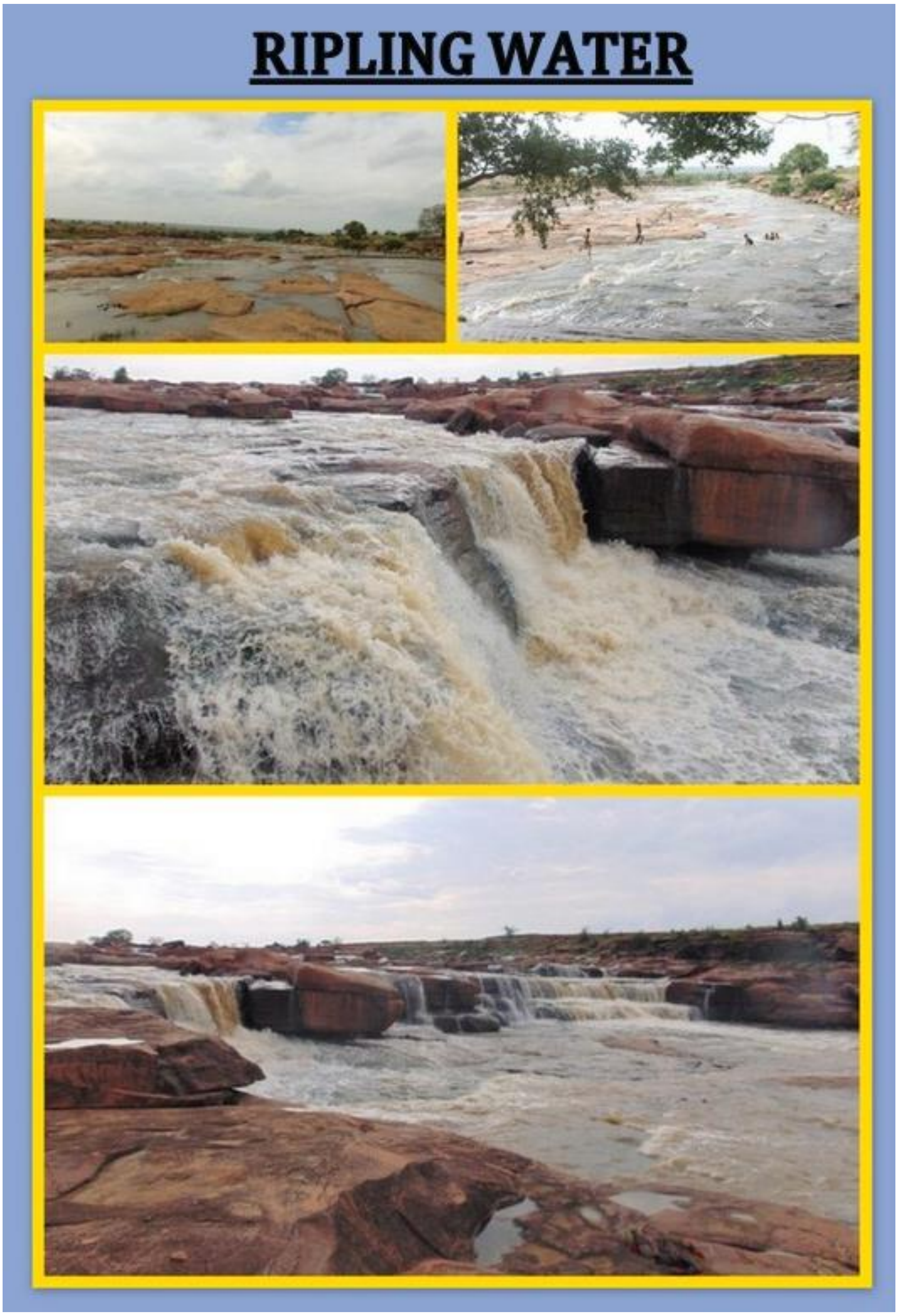

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.33

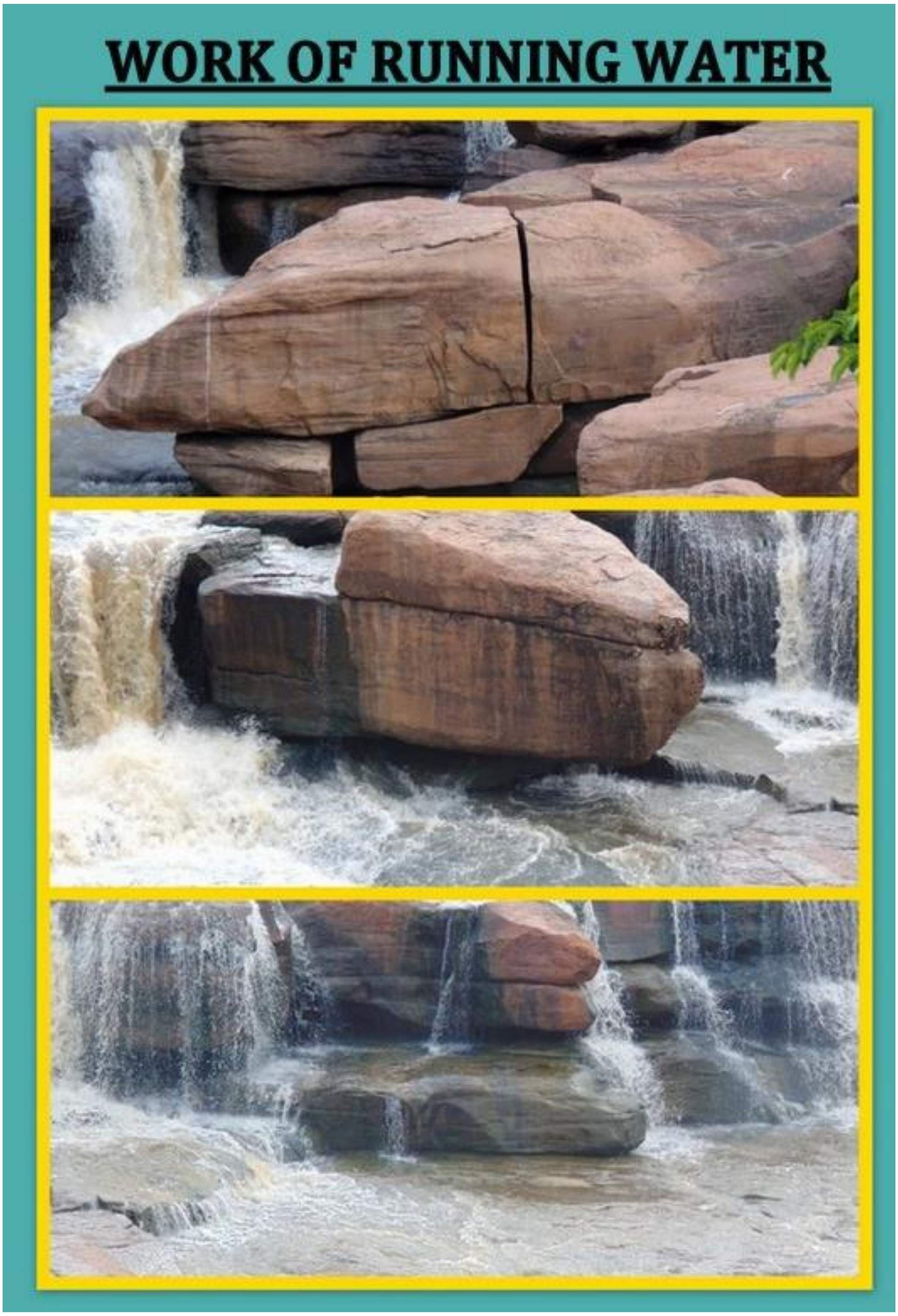

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.34

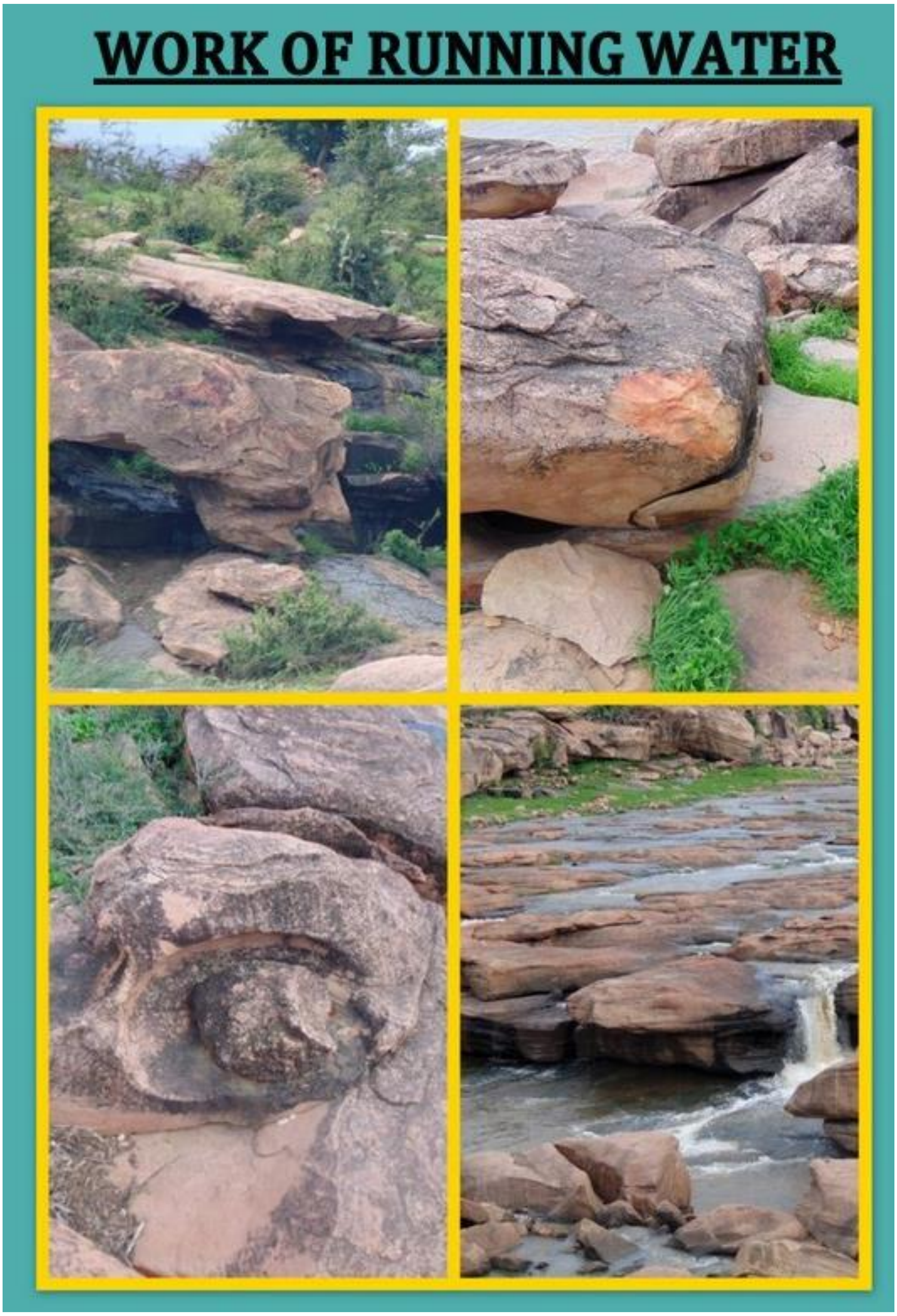

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.35

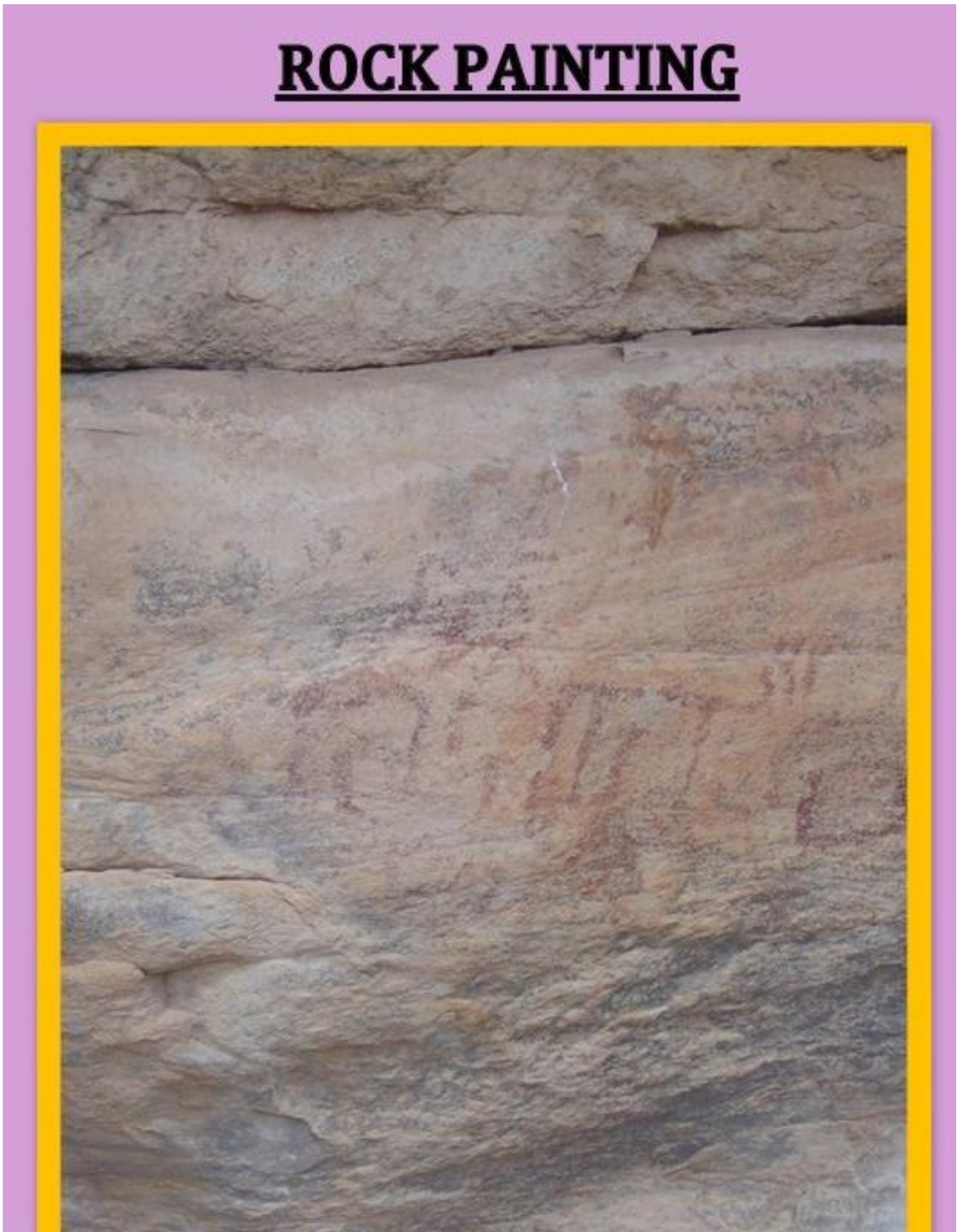

केवड़िया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.36

Strengths:

- यह क्षेत्र भौगोलिक सुन्दरता व प्रक्रियाओं के विभिन्न उदाहरणों से परिपूर्ण है।
- यहां की आकर्षक चट्टानी स्थलाकृतियाँ जल की अपरदनकारी शक्ति के उदाहरण प्रस्तुत कर भूगोल की विषय सामग्री उपलब्ध कराती है।
- यहां की परतदार बालूका चट्टानें लहरदार धरातल का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जिन पर बहता हुआ पानी उछलता हुआ आगे बढ़ता है। जो रोमांच का अनुभव कराता है।
- यहां बहता हुआ जल दो विस्तृत धाराओं में बंटकर अपनी छोटी किन्तु अधिक ढाल वाली घाटी का निर्माण करता है जिसके दोनों किनारे तीव्र कटाव के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कुछ दूरी तक स्वतन्त्र बहने के बाद यह धारायें पुनः मिल जाती हैं। इस स्थान का दृश्य ऊँचाई से देखने पर अलग ही अनुभव कराता है।
- इस क्षेत्र मे ंप्रागेतिहासिक कालीन मानव सभ्यता के प्रमाण भी मिले हैं।

Weakness:

- इस क्षेत्र तक पहुंचने योग्य सड़क मार्ग जर्जर अवस्था में है तथा सार्वजनिक परिवहन की कोई व्यवस्था नहीं होने से पर्यटकों को असुविधा होती है।
- इस क्षेत्र में पर्यटकों के लिए स्तरीय विश्रामगृह तथा सार्वजनिक सुविधाओं की कमी है।
- यह क्षेत्र वर्तमान में केवल पिकनिक स्थल के रूप में जाना जाता है। जिससे अज्ञानतावश यहां की भौगोलिक विशिष्टता को हानि पहुंच रही है। वहीं सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग यहां के पर्यावरण को दूषित कर रहा है।
- यहां पर भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलाकृतियों व प्रक्रियाओं की जानकारी देने के लिए न तो कोई दक्ष गाइड है और न ही कही ंभौगोलिक विशिष्टता की प्रक्रियाओं की जानकारी के लिए कोई सूचना पट्ट है।
- पर्यटन विभाग या अन्य किसी निजी संस्था के द्वारा यहां के विकास के लिए अभी तक कोई प्रयास नहीं किया गया है।
- यहां के स्थानीय निवासी प्रायः खदान श्रमिक हैं जिससे उन्हे ंयहां की विशिष्ट स्थलाकृतियों का ज्ञान नहीं है। जिससे उनके द्वारा भी अपने दैनिक क्रियाकलापों से इसको नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

Opportunities:

- इस क्षेत्र की विशिष्ट स्थलाकृतियों व विशेषताओं के आधार पर यहां भूपर्यटन विस्तार की संभावनायें विद्यमान हैं।
- इस क्षेत्र में पर्यावरणीय मानकों का पालन करते हुये पर्यटन सुविधायें विकसित की जायें तो यह घरेलू व विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन सकता है।
- इसके निकट ही मध्यम सिंचाई परियोजना 'गरड़दा बांध' के पूर्ण होने पर यहां वॉटर स्पोर्ट्स गतिविधियाँ आयोजित कर इस क्षेत्र में साहसिक पर्यटन को भी बढ़ाया जा सकता है।
- इस क्षेत्र को भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर शैक्षिक आकर्षण के रूप में भी स्थापित किया जा सकता है।
- यहाँ प्रागेतिहासिक कालीन मानव निवास के प्रमाण इसे पुरातात्विक आकर्षण के रूप में भी स्थापित कर सकते हैं।
- स्थानीय निवासियों को भूपर्यटन गाइड के रूप में प्रशिक्षित किया जाये तो यह प्रयास यहां के सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण हो सकता है।

Threats:

- गैर नियोजित व अनियंत्रित पर्यटन विकास कार्यक्रम क्षेत्र की प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता को नष्ट कर सकता है।
- आवश्यक सुविधाओं के प्रसार में अनदेखी से इन विशिष्ट स्थलाकृतियों को हानि पहुंच सकती है। फिर इन स्थलाकृतियों को, जो कि दीर्घकालीन प्रक्रियाओं का परिणाम है, पुनः उसी रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- पर्यटकों की बढ़ती संख्या, उनका अमर्यादित आचरण तथा आदर्श पर्यटन आचरण संहिता में कमी पर्यावरणीय समस्याओं के साथ–साथ सामाजिक समस्याओं को जन्म दे सकती है।
- इस क्षेत्र के निकट ही निर्माणाधीन ''गरड़दा मध्यम सिंचाई परियोजना'' की यदि भविष्य में ऊँचाई बढ़ायी जाती है तो यह सम्पूर्ण विशिष्ट क्षेत्र डूब में आ सकता है।

निष्कर्ष :– उपयुक्त SWOT विश्लेषण से ज्ञात होता है कि यह सम्पूर्ण क्षेत्र अनुपम व विशिष्ट भौगोलिक आकर्षण का केन्द्र है। इसलिए यहां भूपर्यटन विकास की अपार सम्भावनायें विद्यमान हैं। इसके साथ ही ऐतिहासिक व साहसिक पर्यटन भी विकसित किये

जा सकते हैं। यदि निर्धारित पर्यावरणीय सुरक्षा मानकों के अनुसार पर्यटक सुविधायें निर्मित की जाये तो यह क्षेत्र बून्दी जिले के सतत विकास के लक्ष्य प्राप्ति में महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

क्षेत्र अध्ययन 5.6 – नाल्दिया

नाल्दिया जिसे स्थानीय भाषा में नाला–दह भी कहा जाता है, बून्दी में दक्षिण पश्चिम की ओर $25^0 13' 52.747''$ उत्तरी अंक्षाश तथा $75^0 30' 57.298''$ पूर्वी देशान्तर पर बून्दी तहसील की लोइचा ग्राम पंचायत में स्थित है। यह बून्दी जिला मुख्यालय से 35 किमी दूर बून्दी – नमाना – गरड़दा मार्ग पर स्थित है। यह क्षेत्र ऊपरमाल पठार का भाग है। जहां बालूका पत्थर की विस्तृत परतदार चट्टानें पायी जाती हैं।

यह क्षेत्र खनन दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां की खदानों में दबाव के कारण बालूका पत्थर का परिवर्तित रूप क्वार्टजाइट भी मिलता है। यहां कुछ गहरी खदानों में चट्टानों के विभिन्न स्तर स्पष्ट दिखायी देते हैं, जो कई स्थानों पर धूसर रंग की पट्टिका से अलग होते हुये मिलते हैं। यह भूगर्भिक प्रक्रियाओं के परिणाम से निर्मित है। यह क्षेत्र भूगर्भिक इतिहास में विन्ध्यन काल की घटनाओं का साक्षी रहा है। इसके साथ ही यहां के लहरदार पठारी धरातल पर जल की तीव्र धारा ने घाटी का निर्माण किया है। साथ ही चट्टानों को विभिन्न भूआकारों के रूप में परिवर्तित किया है। इस रूप में यह क्षेत्र भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

भूपर्यटनीय संसाधन (Geotourism Resources) – यह क्षेत्र ऊपरमाल पठारी भाग में शामिल है। जहां बालूका पत्थर के विस्तृत जमाव स्तरित चट्टानों के रूप में विद्यमान हैं। यहां बालूका पत्थर में चमक की मात्रा अधिक है जो यह स्पष्ट करता है कि यहां बालूका पत्थर से क्वाटजाइट रूपान्तरण की प्रक्रिया जारी है जो कुछ गहराई पर स्पष्ट दिखलायी देती है। इस रूप में यह क्षेत्र भूविज्ञान में रूचि रखने वालों के लिए भी विषय सामग्री उपलब्ध कराता है। साथ ही प्रवाहित जल के कार्य भौगोलिक ज्ञान में अभिवृद्धि करते हैं। इस प्रकार यह क्षेत्र भूविज्ञान व भूआकृति विज्ञान दोनों रूपों में आकर्षित करने की क्षमता से महत्वपूर्ण भूपर्यटन क्षेत्र है।

इस क्षेत्र में लहरदार पठारी धरातल से बहता हुआ जल सात छोटी–छोटी धाराओं में बंटकर एक लघु घाटी का निर्माण करता है। वर्षा ऋतु में यह जलधाराऐं संयुक्त हो जाती हैं तब एक विहंगम दृश्य उत्पन्न होता है। इस घाटी में वर्ष भर जल भरा रहने के कारण यहां सदाबहार वनस्पति सघन रूप में मिलती है जो विषुवतीय वर्षा वनों का आभास देती है।

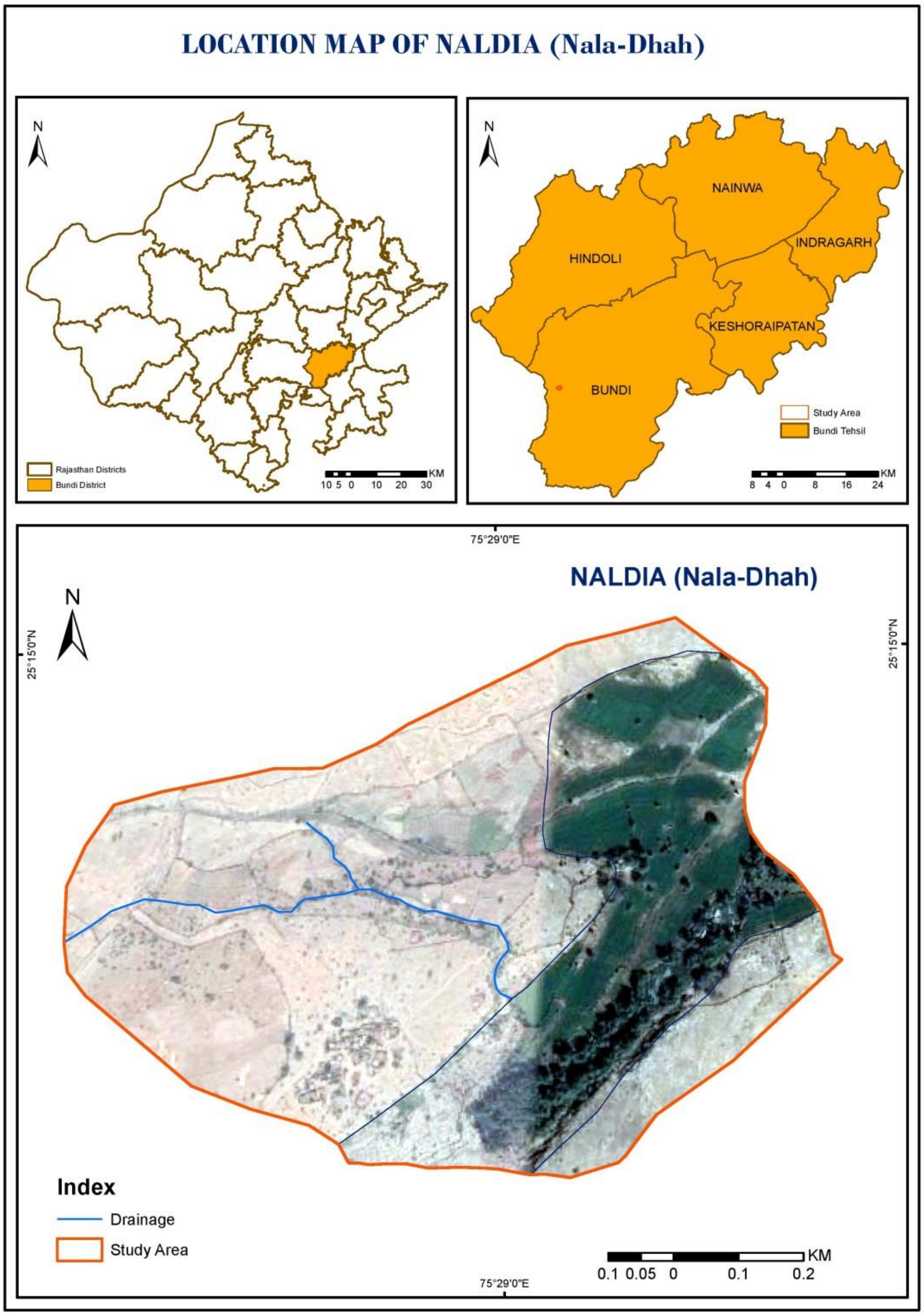

जिला बून्दी : नाल्दिया अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र सं. 5.12

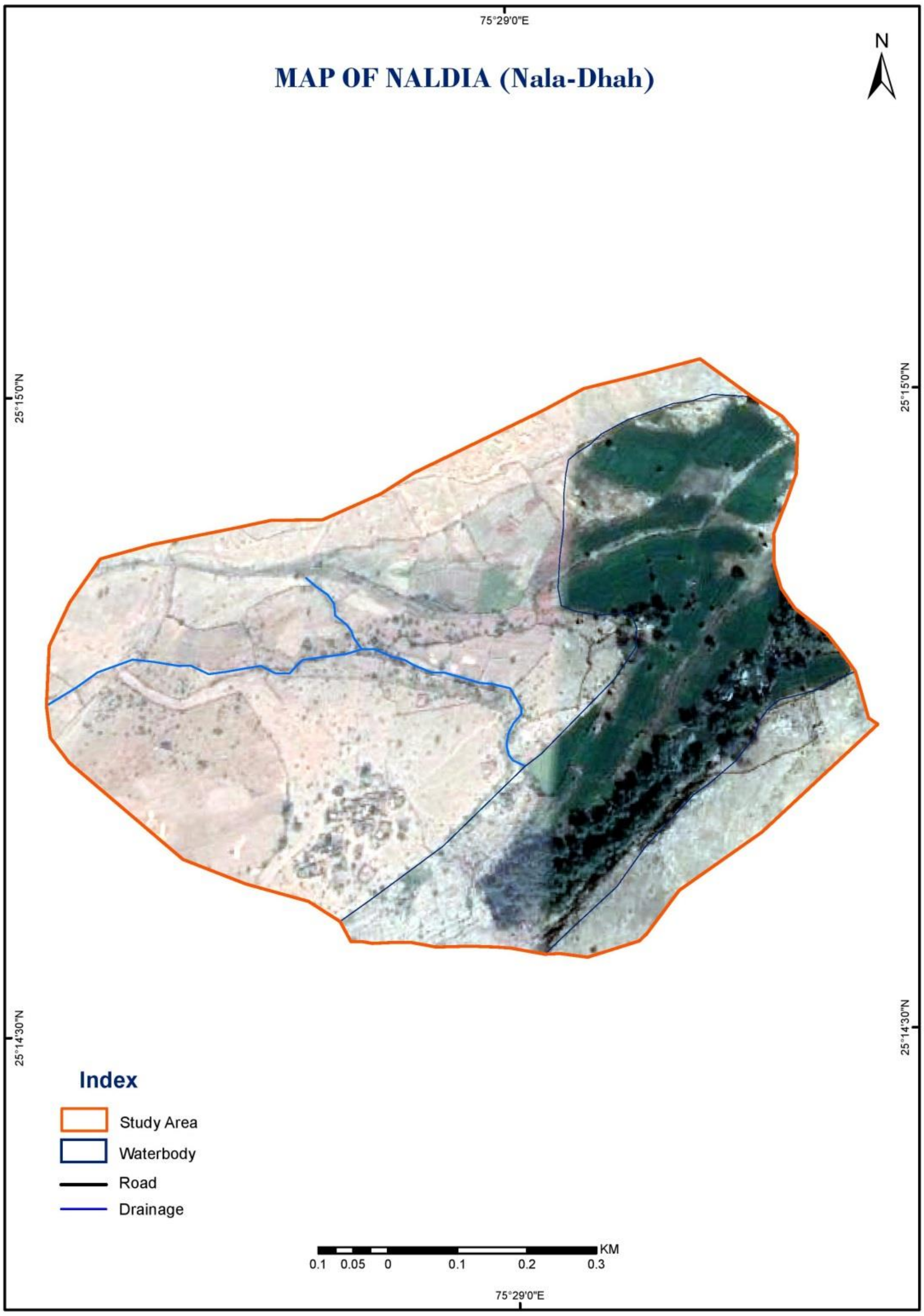

नाल्दिया

मानचित्र सं. 5.13

इस घाटी के जलमार्ग में स्थित चट्टानें कुछ डूबी हुई तो कुछ किनारे की, जलचरों तथा स्थलचरों का आभास देती है। इसके साथ ही घाटी के प्रारम्भिक ऊपरी भाग पर स्थित चट्टानें पक्षियों की सामूहिक क्रियाओं के उदाहरण प्रस्तुत करती है। यहां इन चट्टानी स्थलरूपों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो पक्षी जगत पाषाण रूप में यहां विद्यमान है। इन स्थलाकृतियों में जल की अपरदन शक्ति के उदाहरण देखने को मिलतें हैं। प्रवाहित जल के अपरदनकारी प्रक्रमों– अपघर्षण, सन्निघर्षण, घुलन क्रिया व जलीय दाब को इन स्थलाकृतियों के उदाहरण से आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है। इसलिये यह क्षेत्र भौतिक भूगोल की अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराता है। इसके अतिरिक्त यहां जल द्वारा निर्मित कन्दराओं में आदिम मानव निवास के प्रमाण भी निकटवर्ती क्षेत्रों में में मिले हैं। इस रूप में यह सम्पूर्ण क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूपर्यटन स्थल हैं।

इस क्षेत्र की भूपर्यटनीय विशेषताओं को SWOT विश्लेषण द्वारा उभारने का प्रयास किया है, जिससे प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं –

Strengths:

- यह क्षेत्र भूपर्यटन के दोनों पक्ष भूगर्भिक व भूआकृतिक दोनों के उदाहरणों व प्रक्रियाओं के साक्ष्य की दृष्टि से समृद्ध हैं।
- यहाँ की परतदार बालूका चट्टानों पर जल के अपरदन से निर्मित विभिन्न भूआकृतिक स्थलाकृतियाँ प्रकृति के कला कौशल को स्पष्ट करती है।
- यहां निर्मित लघु घाटी जल की अपरदनात्मक शक्ति को इंगित करती है, साथ ही यह घाटी वानस्पतिक समृद्ध है।
- वर्षा ऋतु में यहां चट्टानों पर जल का लहराते हुये आगे बढ़ना और जल प्रपात का निर्माण करते हुये घाटी में बहना न केवल भौतिक भूगोल की विषय सामग्री उपलब्ध कराता है अपितु रोमांच का भी अनुभव देता है।
- इसके निकट ही केवडिया स्थल है, जो स्वयं भूपर्यटन की दृष्टि से समृद्ध है जिससे पर्यटकों का भ्रमण यादगार बन जाता है।

Weakness:

- इस क्षेत्र तक पहुंच योग्य सड़क मार्ग जर्जर अवस्था में है और नाल्दिया तक मुख्य मार्ग से आने का कोई निश्चित मार्ग नहीं है और न ही इसके लिए किसी प्रकार के कोई संकेत हैं, इसलिए सामान्यतः यहां पर्यटक नहीं पहुंच पाते।
- इस क्षेत्र में पर्यटकों के लिए किसी प्रकार की कोई सुविधाये ंविकसित नहीं है।

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.37

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.37

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.38

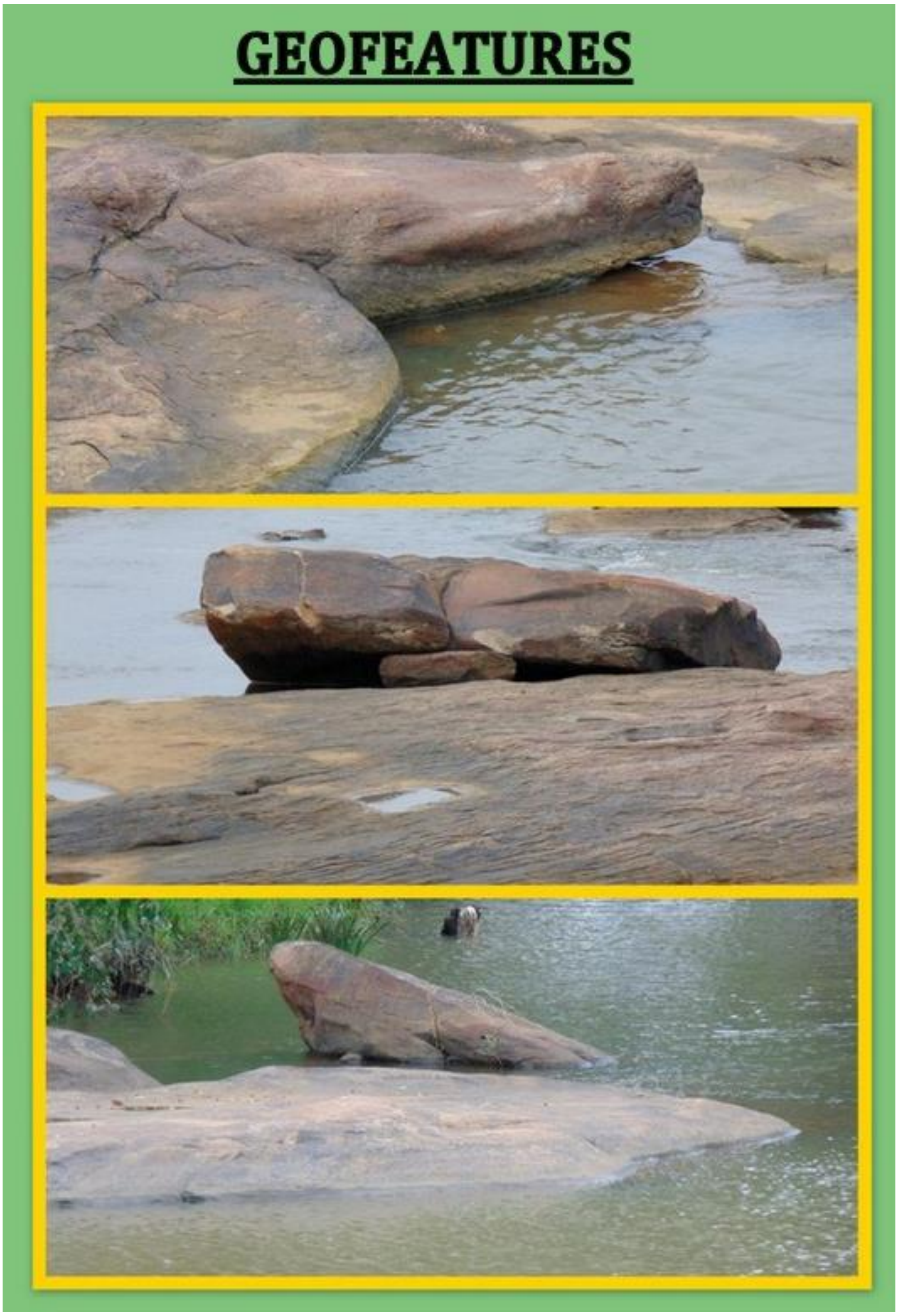

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.39

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

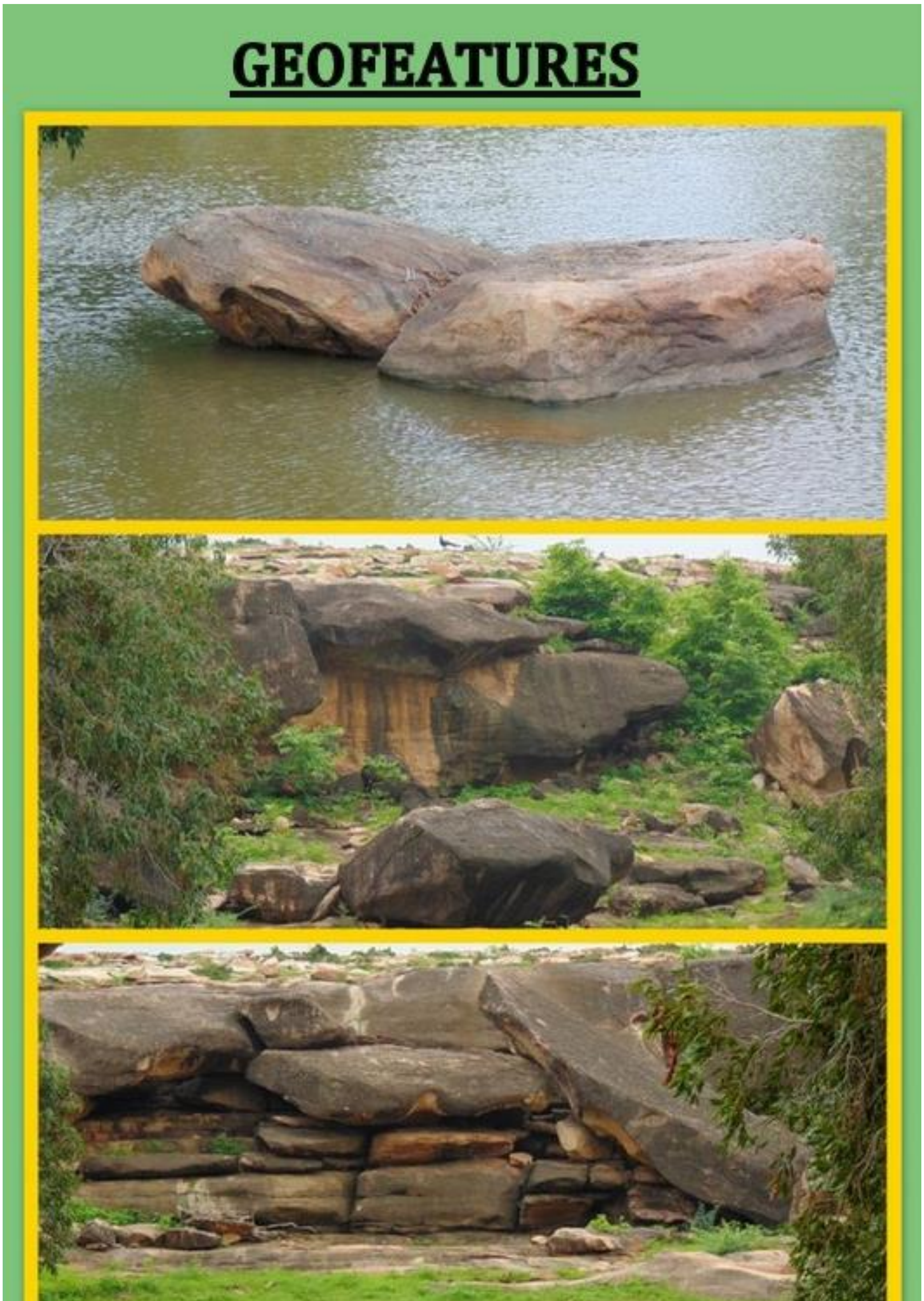

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.40

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.41

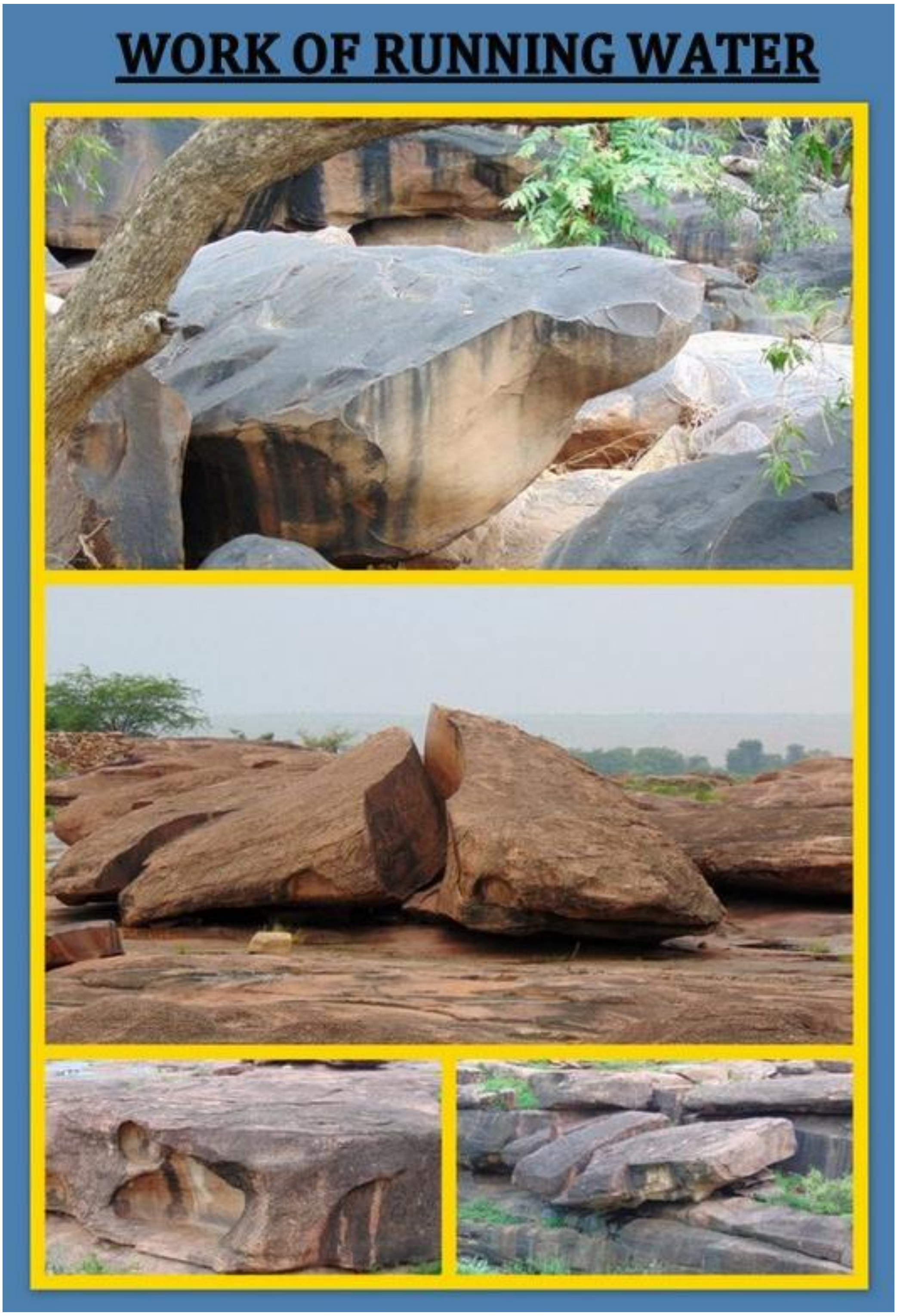

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.41

छायाचित्र सं. 5.42

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.42

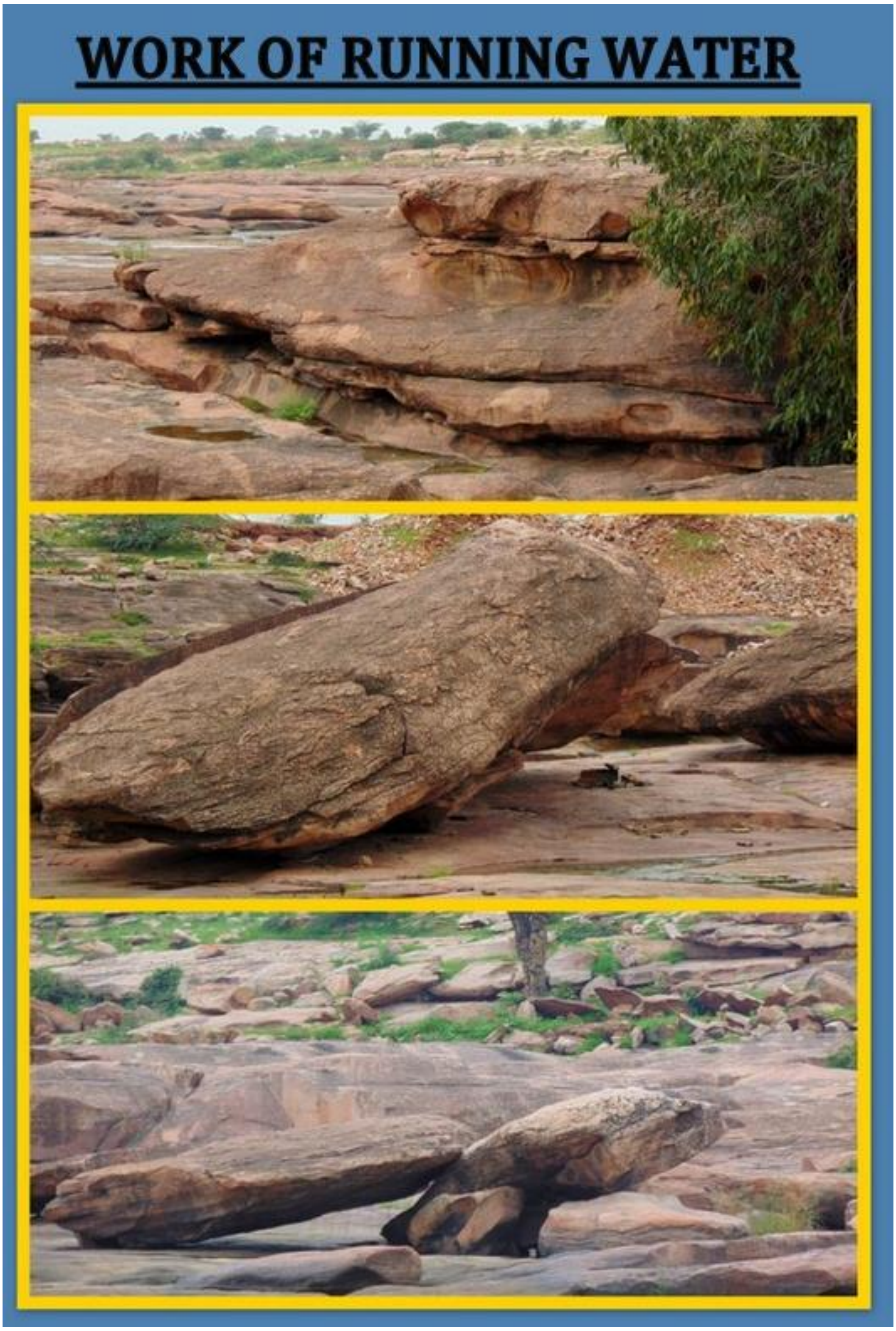

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.43

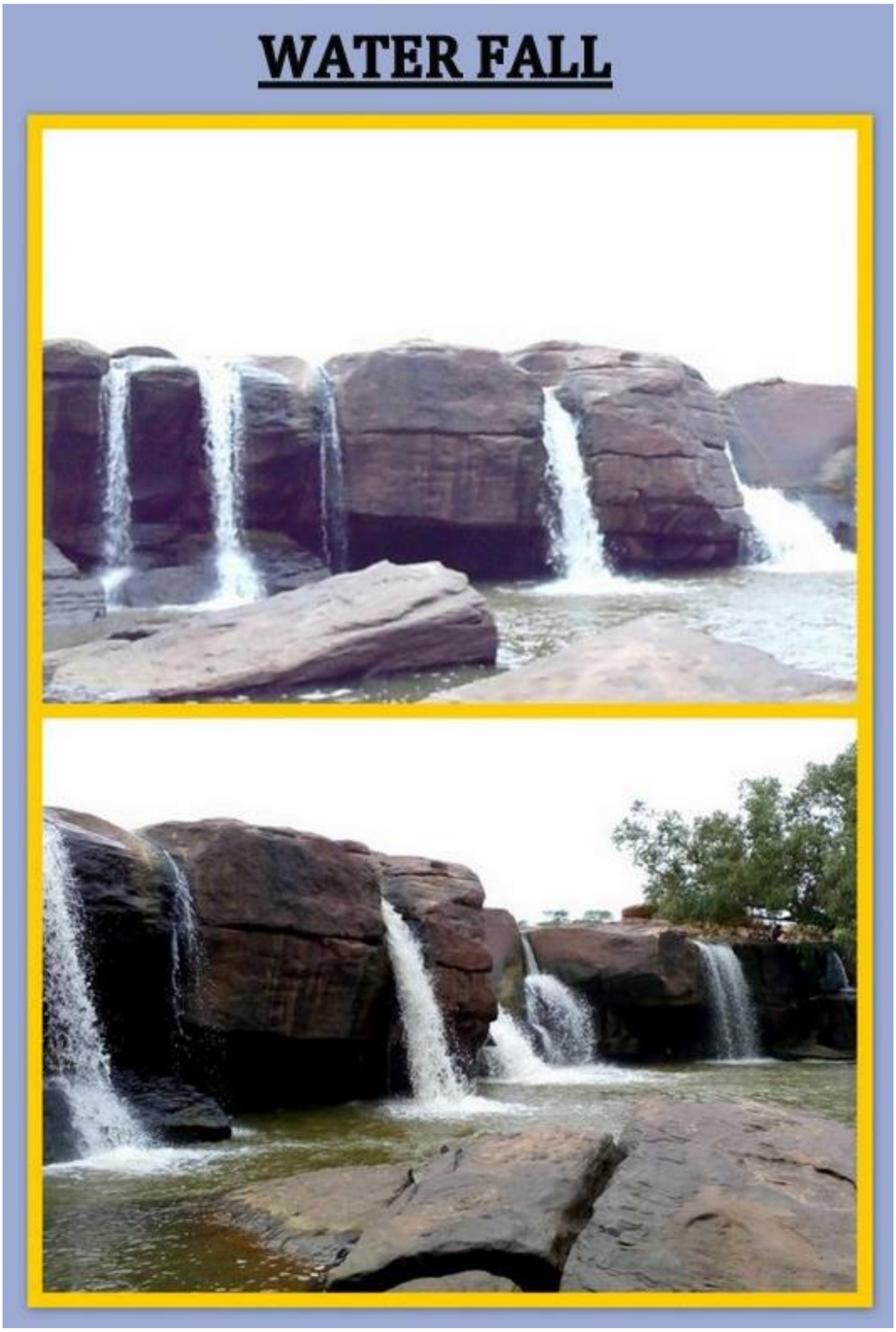

नाल्दिया के भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.44

- इस क्षेत्र में स्थानीय खदान श्रमिक आते रहते हैं जिन्हें यहां के भौगोलिक सौन्दर्य की जानकारी नहीं है। इसलिए उनके द्वारा अज्ञानतावश उसे नुकसान पहुंचाया जा रहा है।
- सामान्यतः यह क्षेत्र पर्यटकों की जानकारी से बाहर है।
- इस क्षेत्र में अवैध खनन गतिविधियों से भौगोलिक विविधता नष्ट हो रही है।

Opportunities:

- इस क्षेत्र की विशिष्ट स्थलाकृतियों व विशेषताओं के आधार पर भूस्थल के रूप में भूपर्यटन को विकसित किया जा सकता है।
- यहां की भूगर्भिक व भूआकृतिक विशेषताओं की जानकारी के लिए शैक्षणिक भ्रमण आयोजित कर यहां की भौगोलिक सम्पदा को प्रचारित किया जा सकता है।
- सुरक्षित पर्यावरणीय मानकों का पालन करते हुये यहां आवश्यक पर्यटनीय सुविधाओं के विकास से यह क्षेत्र भूपर्यटन का महत्वपूर्ण केन्द्र बन सकता है।
- इसके निकट ही केवड़िया है, जो स्वयं एक महत्वपूर्ण भूपर्यटनीय केन्द्र है। इन दोनों को मिलाकर भूस्थल के रूप मे ंविकसित किया जाये तो दोनों स्थल अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर महत्वपूर्ण हो सकते हैं।
- स्थानीय हितधारकों को भूपर्यटन गाइड के रूप में प्रशिक्षित किया जाये तो यह यहां के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण प्रयास होगा, साथ ही भौगोलिक आकर्षण भी सुरक्षित रह पायेंगे।

Threats:

- वर्तमान में यह क्षेत्र सामान्य पहुंच से दूर होने के कारण यहां की भौगोलिक सम्पदा सुरक्षित है। यदि पर्यटन बढ़ता है तो गैर नियोजित व निर्धारित पर्यटक आचार संहिता की पालना में कमी से यहां के भौगोलिक सौन्दर्य को हानि पहुंचने की सम्भावनायें बन सकती हैं।
- अनियंत्रित पर्यटन विकास कार्यक्रम से यहां की जैविक सम्पदा को हानि पहुंच सकती है तथा लघु घाटी में पारिस्थितिकी परिवर्तन हो सकता है।

निष्कर्ष :– उपर्युक्त SWOT विश्लेषण से ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूस्थल है। जहां भूपर्यटन प्रसार की अत्यधिक सम्भावनायें विद्यमान हैं। यदि निर्धारित पर्यावरणीय मानकों को सुनिश्चित करते हुये, क्षेत्र की संभाव्य क्षमता को ध्यान में रखते हुये विकास

कार्यक्रम पूर्ण किये जायें तो यह क्षेत्र भूपर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर जिले के सतत आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

5.7 बून्दी जिले में अन्य महत्वपूर्ण भूपर्यटन क्षेत्र

1. **ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट** – बून्दी जिले में जिला मुख्यालय से 10 किमी दूर बून्दी–जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 52 पर सतूर ग्राम में ग्रेट बाउण्ड्री फाल्ट की उपस्थिति स्पश्ट दिखलायी देती है जो पूर्व अरावली व ऊपरी विन्ध्यन के बीच एक भ्रंश रेखा के रूप में विद्यमान है। जो NNW – SSE प्रवृत्ति रखता है। यह क्षेत्र समानान्तर व तिर्यक भ्रंशों का उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही यहां चूना पत्थर के कायान्तरण का प्रारम्भिक रूप भी दृष्टिगत होता है। इस रूप में यह एक प्राकृतिक भू विरासत स्थल है जो भूगर्भिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण भूपर्यटन का केन्द्र है।
2. **झर महादेव** – यह क्षेत्र बून्दी जिला मुख्यालय से बून्दी–लाखेरी राज्य राजमार्ग पर 16 किमी दूर स्थित है जहां विन्ध्यन कगार स्पष्टतः दृष्टिगत होते हैं। यहां बना प्राकृतिक तोरण द्वार, भ्रंश रेखा तथा प्राकृतिक जल प्रपात मुख्य आकर्षण के केन्द्र हैं। यह क्षेत्र भूगर्भिक दबाव से उत्पन्न विभिन्न प्रकार के वलनों का भी उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस रूप में यह भी एक मुख्य भूपर्यटन स्थल है।
3. **खटकड़ –** बून्दी जिला मुख्यालय से बून्दी–लाखेरी राज्य राजमार्ग पर 22 किमी दूर स्थित है। जहां चट्टानों के लम्बवत स्तर तथा परिवलित वलन के उदाहरण दृष्टिगत होते हैं। यहां मेज नदी मियाण्डर का निर्माण कर इस विन्ध्यन कगार को काटकर बहती है। इस कटाव के कारण यहां तीव्र ढालों का निर्माण हुआ है। इस कारण यह क्षेत्र भी भूपर्यटन में रूचि रखने वालो ंको आकर्षित कर सकता है।

इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण जिला चूंकि पर्वतीय, पठारी व मैदानी त्रिआयामी भौतिक भूभाग रखने के कारण तथा विभिन्न भूगर्भिक युगों में यहां के धरातलीय भाग का निर्माण होने से अनेक भूपर्यटनीय आकर्षण के रूप में भौगोलिक व भूगर्भिक सामग्री को रखता है। जिसके व्यापक व विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। यदि यहां भूपर्यटन के विकास पर ध्यान दिया जाये तो यह जिले में रोजगार के अवसरों के साथ–साथ सतत विकास का भी महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

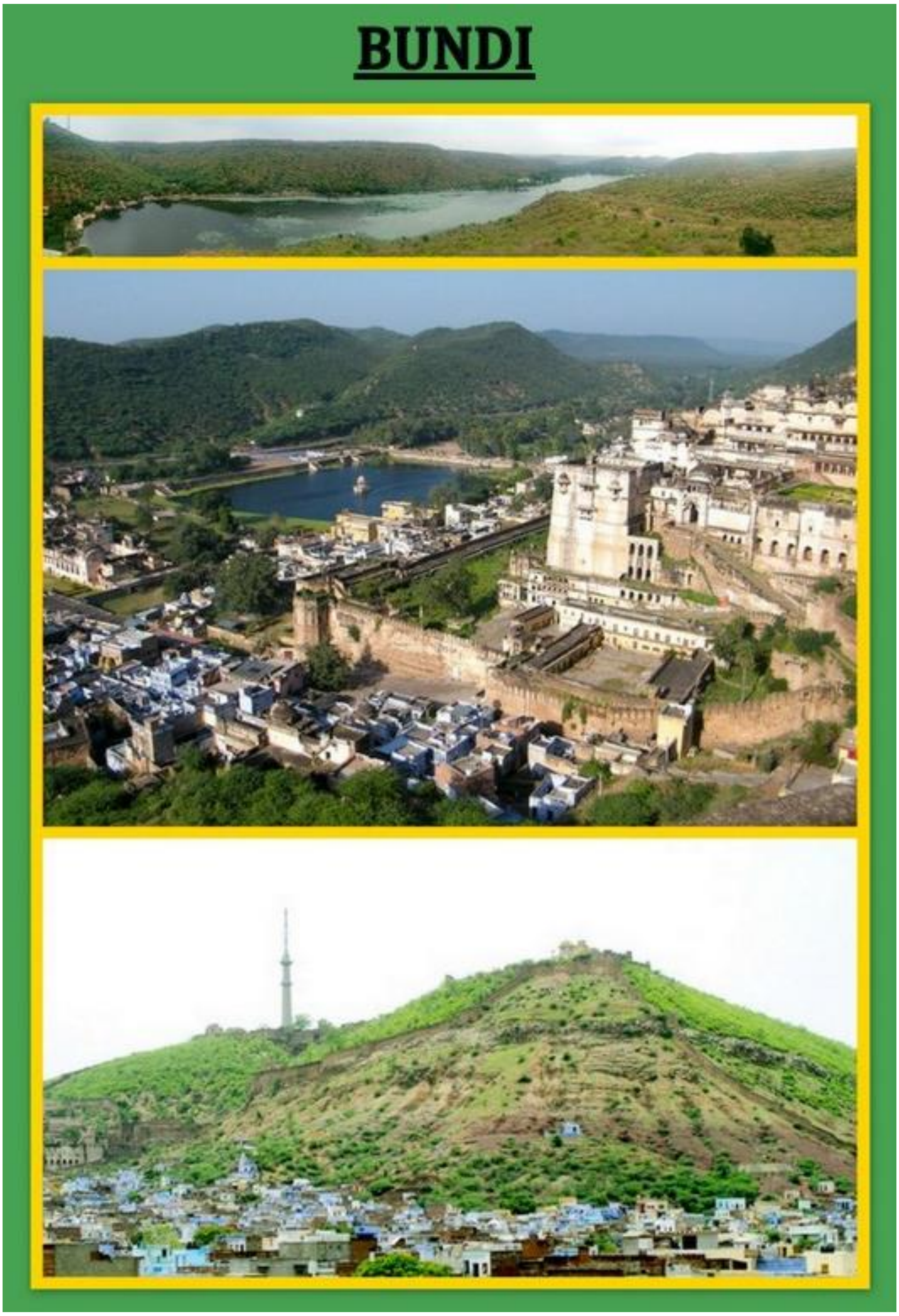

जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.45

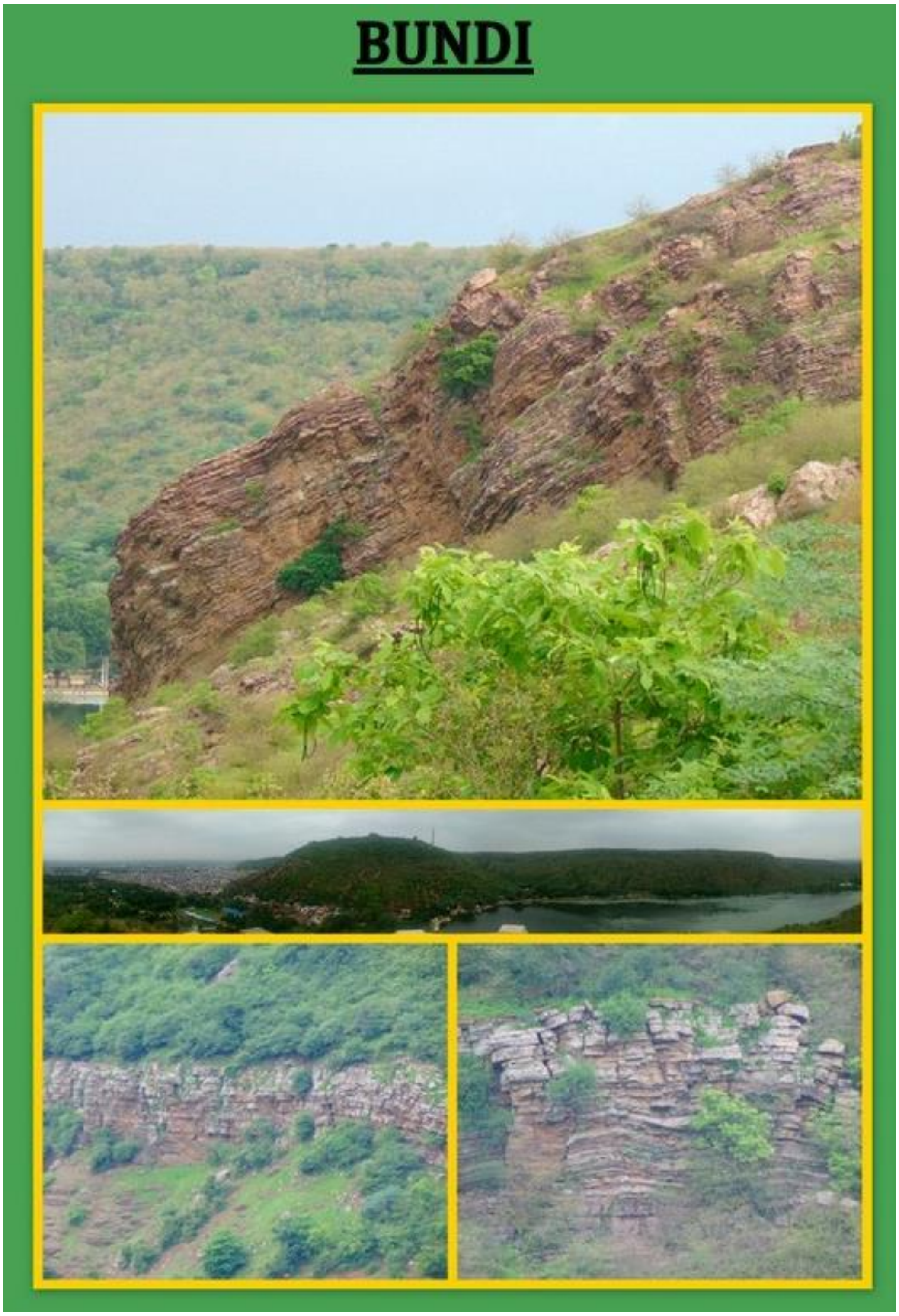

जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.46

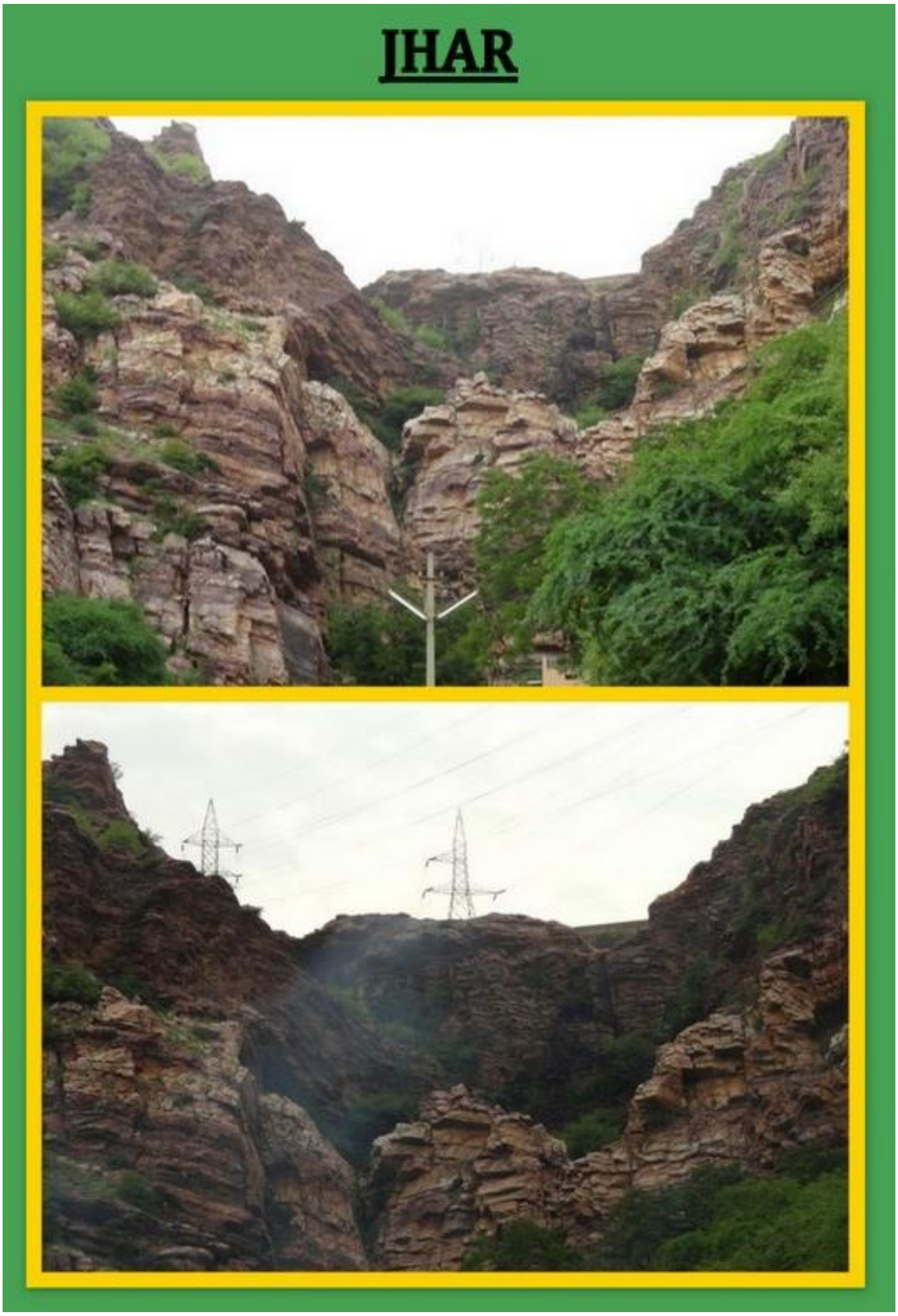

जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.47

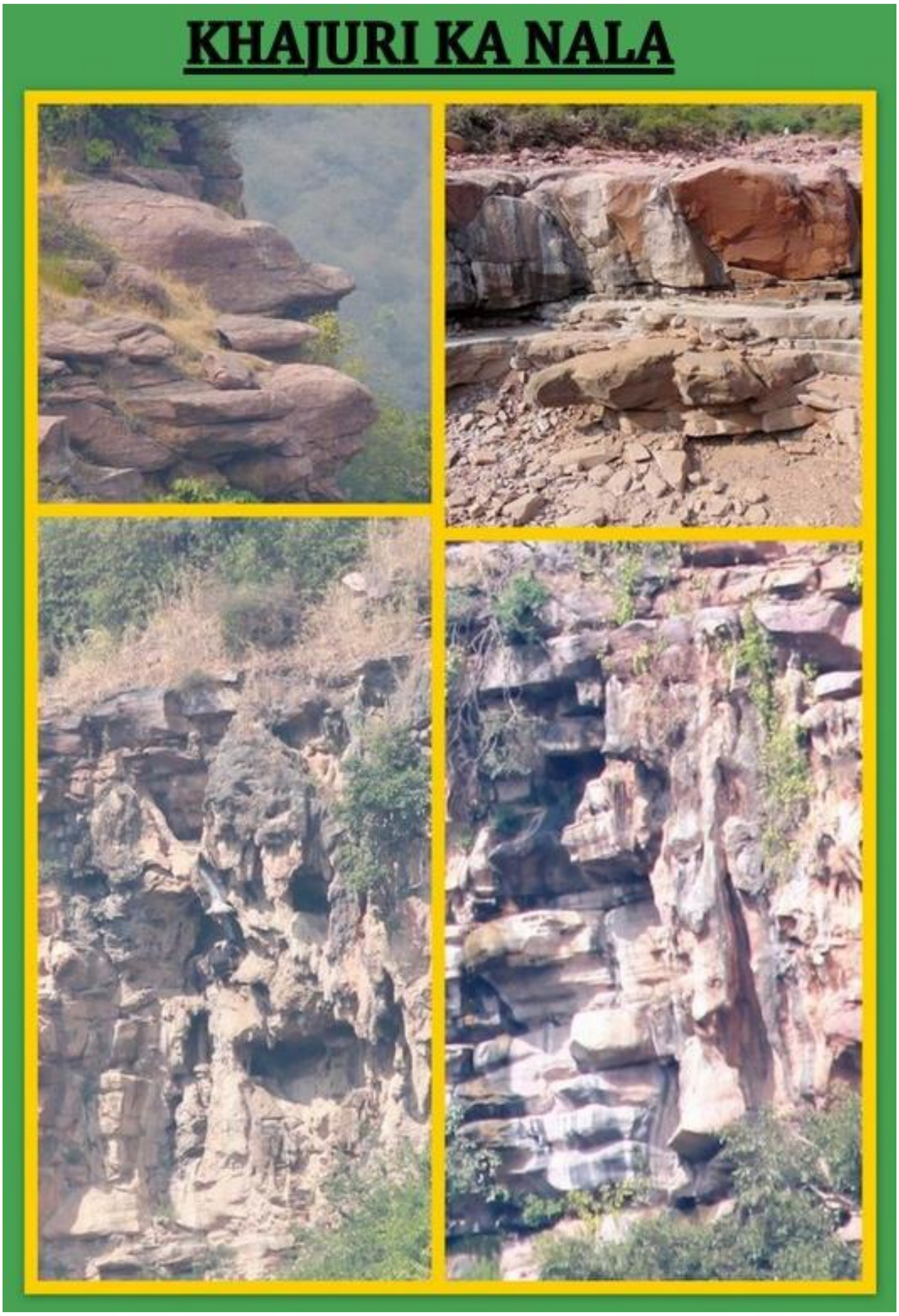

जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.48

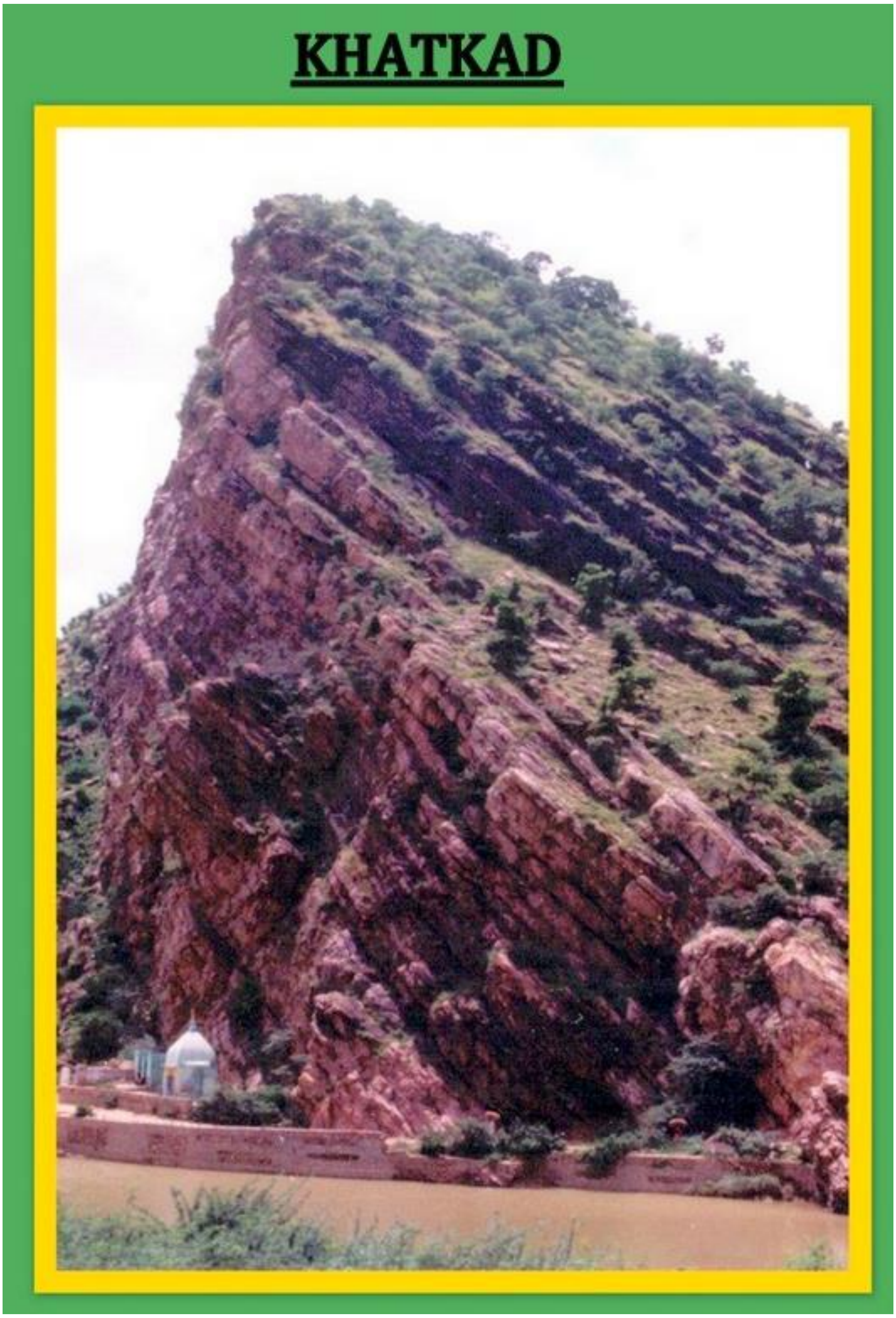

जिला बून्दी : अन्य भूपर्यटनीय आकर्षण

छायाचित्र सं. 5.49

षष्ठम् अध्याय

सारांश, समस्यायें एवं सुझाव

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और पर्यटन एक सांसारिक गतिविधि है, जिसके माध्यम से मनुष्य की सामाजिकता का विकास होता है। इसलिए पर्यटन की पृष्ठभूमि मानव सभ्यता के साथ ही मानी जाती है। पर्यटन की प्रवृत्ति मानव का स्वाभाविक गुण है। क्योंकि मानव प्रकृति को जानने की चेष्टा करता रहा है, इसलिए पर्यटन मात्र पर्यटन नहीं है, उसके मूल में कुछ जानने की अभिलाषा है, जो मानव को पर्यटन के लिए प्रेरित व परिचालित करती है। वर्तमान यांत्रिक सभ्यता तथा आधुनिक जीवन शैली के विभिन्न दुष्परिणामों के कारण आज मानव की सोच में परिवर्तन आया है। आज मानव पर्यटन के माध्यम से मनोरंजन तथा आनन्द के साथ–साथ ज्ञानार्जन का भी अनुभव करता है। क्योंकि पर्यटन से न केवल मनुष्य की जिज्ञासा पूर्ति होती है अपितु उसके ज्ञान में भी वृद्धि होती है। पर्यटन स्वयं प्रकृति से जुड़ने का पुनः अवसर तो देता ही है साथ ही सांस्कृतिक धरोहर और विरासत से जुड़ने का भी मौका देता है। पर्यटन के माध्यम से मानव, प्रकृति और संस्कृति के बीच एक रचनात्मक सम्पर्क स्थापित करता है। पर्यटन के दौरान असाधारण के प्रति आकर्षण होता है जिससे नवीन जिज्ञासा तथा ज्ञान तृप्ति होती है। मनुष्य की इसी प्रवृत्ति का क्रियात्मक स्वरूप पर्यटन है।

पर्यटन की प्रक्रिया के तीन आधारभूत तत्व हैं – मनुष्य, स्थान एवं समय। तीनों तत्व मिलकर ही पर्यटन की संकल्पना को साकार करते हैं। पर्यटन की मूल अवधारणा स्थानों का दर्शन है जिसमें धरातल और मानव की सांस्कृतिक यात्रा सम्बन्धी विशेषताओं को अभिव्यक्त किया जाता है। अर्थात् पर्यटन एक विशेष प्रकार का गमन है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी विशेष उद्देश्य अथवा प्रयोजन को दृष्टिगत रखकर किया जाता है। सामान्य अर्थों में व्यक्ति विशेष या व्यक्ति समूहों की पूर्व निर्धारित उद्देश्यों से प्रेरित अल्पकालीन व अस्थायी यात्रा पर्यटन कहलाती है। यह यात्रा सीमित समय के लिए वैध प्रकार से बिना आर्थिक लाभ के उद्देश्य से की जाती है। वर्तमान युग में बढ़ते हुये तकनीकी विकास, परिवहन एवं संचार साधनों की व्यापकता ने दूरी के प्रभाव को कम कर दिया है जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिला है।

वर्तमान में पर्यटन वायुमण्डलीय प्रदुषण मुक्त जन उद्योग बन गया है। इस कारण पर्यटन ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में तीव्रता से महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर लिया है। इससे न केवल किसी क्षेत्र या देश के आर्थिक विकास में सहायता मिलती है अपितु स्वस्थ मनोरंजन, पारस्परिक एकता व सद्भाव को भी बढ़ावा मिलता है। आज इसके माध्यम से सांस्कृतिक व पुरातात्विक संरक्षण के साथ–साथ अन्वेषण, अनुसंधान तथा जिज्ञासा समाधान भी होता है।

इसलिए समन्वित विकास के रूप में पर्यटन की आवश्यकता तथा महत्व की अवधारणा भी स्पष्ट होती है।

प्रारम्भ में पर्यटन के मूल में आवश्यकतायें थी किन्तु सभ्यता व तकनीक के विकास के साथ–साथ इसके स्वरूप व संरचना में भी परिवर्तन आया। समय के साथ–साथ मनुष्य की रूचि व कार्यक्षेत्र में भी विविधता आती गई जिससे आज पर्यटन विविध प्रकार व स्वरूपों में आकर्षित करता है। वर्तमान में पर्यटन के विविध स्वरूपों में ऐतिहासिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन, सम्मेलन पर्यटन, क्रीड़ा पर्यटन, भूपर्यटन प्रमुख होते चले गये। वर्तमान समय में प्रकृति के सौन्दर्य तथा भूवैज्ञानिक आश्चर्यों तथा भौगोलिक कलात्मकता ने भी भूपर्यटन के रूप में विश्व पर्यटन मानचित्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है।

यद्यपि प्राकृतिक दृश्यावलियों और विशिष्ट स्थलरूपों की यात्रा कोई नया तथ्य नहीं है। लेकिन फिर भी भूपर्यटन इस रूप में नया है क्योंकि यह किसी क्षेत्र या स्थान की भौगोलिक विशिष्टताओं को एक नया दृष्टिकोण देता है। जिसमें उन विशिष्टताओं की निर्माण प्रक्रिया की जानकारी तथा भूगर्भिक इतिहास का अध्ययन शामिल है। जिससे भूपर्यटन वर्तमान में विश्व पर्यटन के विविध स्वरूपों में महत्वपूर्ण स्थान बना कर निरन्तर प्रगति की ओर है। भूपर्यटन का अंग्रेजी शब्द Geotourism दो शब्दों Geo तथा Tourism से मिलकर बना है। Geo का सम्बन्ध भूआकृति से है जिसमें धरातलीय पक्षों का भूवैज्ञानिक व भूगर्भशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन किया जाता है। वहीं Tourism आनन्द, उत्सुकता तथा खोज से सम्बन्धित है। इस प्रकार भूपर्यटन नये दृष्टिकोण से ज्ञानार्जन तथा विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति से की गयी यात्रा से सम्बन्धित है।

1990 के दशक से यूरोप व उत्तरी अमेरिका से प्रारम्भ पर्यटन की यह शाखा पर्यटन में मात्रात्मक पक्ष के स्थान पर गुणात्मक पक्ष की अभिवृद्धि करती है। यह एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं को उभार कर उन्हें बनाये रखने में मदद करता है तथा वहां के पर्यावरण, संस्कृति, कलात्मक सौन्दर्य, विरासत और स्थानीय निवासियों के कल्याण में अपना योगदान देता है। अर्थात् यह एक ऐसे प्रकार का पर्यटन है जो पृथ्वी की भूवैज्ञानिक व भौगोलिक विशेषताओं को मुख्य रूप से केन्द्रित कर उस स्थान के सांस्कृतिक वातावरण तथा पर्यावरण के मध्य सामंजस्य उत्पन्न करता है। इसके साथ ही पृथ्वी के गतिशील इतिहास को स्पष्ट करने तथा विभिन्न धरातलीय स्वरूपों व विशिष्टीकृत भूआकारों की रचनाओं व अवस्थाओं की व्याख्या करता है। इस रूप में भूपर्यटन के दो पक्ष हैं – 1 भूगर्भिक 2. भौगोलिक

भूगर्भिक पक्ष के माध्यम से किसी क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना और भूआकृति को स्पष्ट किया जाता है वहीं भौगोलिक पक्ष में भूगर्भिक पक्ष को सम्मिलित करते हुए बाह्य प्रक्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाता है जिनसे उस क्षेत्र की विशिष्ट भौगोलिक विशेषतायें उभरती हैं और आकर्षित करती हैं। इस प्रकार प्रकृति के भौगोलिक सौन्दर्य को स्पष्ट व अधिक रूचिकर व जानकारीपूर्ण बनाने के उद्देश्य से प्रारम्भ हुआ यह पर्यटन आज विश्व की प्रमुख पर्यटन गतिविधि बनता जा रहा है जो न केवल शैक्षिक पर्यटन का आधार है वरन् स्थानीय निवासियों व हितधारकों के आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की अभिवृद्धि में भी अपना योगदान दे रहा है तथा किसी स्थान को **“Sense of Place”** के अर्थ में मान्यता प्रदान कराता है। जिनमें भूस्थल, भूविविधता, भूविरासत, भू संरक्षण जैसे पक्ष शामिल हैं। इस व्याख्या तथा स्वरूप में भूपर्यटन के क्षेत्र में भारत विश्व में एक महत्वपूर्ण पर्यटकीय आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

भारत विश्व का एक ऐसा देश है जहां अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ–साथ प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, ऐतिहासिक व पुरातात्विक धरोहरें तथा गौरवमयी इतिहास है जो इसे पर्यटन की दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। प्राचीन सभ्यता व संस्कृति में विविधतायें हैं तो निरन्तरता भी है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्टता तथा संस्कृति है। साथ ही भौगोलिक व प्राकृतिक विविधता भी है। भारत, एक ओर हिमाच्छादित पर्वत मालायें तो दूसरी ओर गर्म रेगिस्तान, पठार व मैदान तो कहीं विस्तृत तट रेखा व सघन वनस्पति, बदलती हुई ऋतुऐं, जलवायु की विविधता, विविध धर्मों व धार्मिक स्थलों से विश्व भर के पर्यटकों को सदा से ही आकर्षित करता रहा है। अब यहाँ का अतुलनीय प्राकृतिक सौन्दर्य तथा पृथ्वी के भूगर्भिक इतिहास की विभिन्न घटनाओं तथा उनके प्रमाणों ने एक नये आकर्षण को जन्म दिया है जिसने पर्यटन की एक नयी शाखा के रूप भूपर्यटन को बढावा दिया है।

भारत प्राचीन गौडवानालैण्ड का भाग रहा है जहाँ पृथ्वी के भूगर्भिक इतिहास की अनेक घटनायें घटित हुई हैं। यहां विश्व के प्राचीनतम स्थल भाग से लेकर नवीनतम स्थल भाग पाये जाते हैं। पृथ्वी के भूगर्भिक व भौगोलिक इतिहास में हुई हलचलों की अनेक घटनाओं का भारतीय भूभाग साक्षी रहा है। जिसके विभिन्न प्रमाण यहाँ की धरातलीय संरचना व जैविक जीवाश्मों में मिलते हैं। पृथ्वी के भौगोलिक इतिहास की विभिन्न हलचलों, अन्तरीक्षयी घटनाओं तथा अपरदन व निक्षेपण की अनवरत प्रक्रिया से भारत भूमि पर अनेक भौगोलिक दृश्यावलियाँ बनी हैं जो आकर्षण, उत्सुकता, विस्मय तथा रोमांच का अनुभव देती है। इसलिए भारत की विशाल विविधता व विशिष्टतापूर्ण भौगोलिक संरचना तथा समृद्ध

ऐतिहासिक विरासत के कारण यहाँ पर्यटन विशेषकर भूपर्यटन के विकास की पर्याप्त संभावनायें हैं।

भारतवर्ष में राजस्थान प्रान्त भी भौगोलिक विविधता तथा समृद्ध गौरवपूर्ण इतिहास वाला प्रदेश है, जो भूगर्भिक इतिहास की विभिन्न घटनाओं का केन्द्र रहा है। **'मरू, मेरू, माल''** जैसे विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप राजस्थान को अन्य राज्यों की तुलना मे ंपर्यटन की दृष्टि से विशिष्टता प्रदान करते हैं। राजस्थान की अपनी समृद्ध सभ्यता, वैभवपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओ ंव धरोहरों के साथ–साथ प्राचीनतम से लेकर नवीनतम भौगोलिक घटनाओं व लम्बे समय से चलने वाली अपरदनात्मक व निक्षेपात्मक प्रक्रियाओं से निर्मित विशिष्ट प्राकृतिक भौगोलिक दृश्यों के लिये यहाँ पर्यटक बार–बार आना पसन्द करते हैं। इसके अतिरिक्त राज्य की विशिष्ट आतिथ्य सत्कार परम्परा भी पर्यटकों को यहां आने के लिए प्रेरणा देती है। यही कारण है कि भारत आने वाला प्रत्येक छठा विदेशी पर्यटक राजस्थान आना पसन्द करता है। साथ ही अन्य राज्यों से भी बड़ी मात्रा में पर्यटक इन विशिष्ट स्थलाकृतियों के रोमांच के लिए भी यहां आते हैं।

राजस्थान के दक्षिण पूर्वी पठारी भाग पर ''Queen of Hadoti'' तथा ''छोटी काशी'' उपनाम से जाना जाने वाला बून्दी जिला पर्यटन के क्षेत्र में न केवल ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अपितु प्राकृतिक व भौगोलिक दृश्यावलियों के लिए भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। बून्दी जिला पर्वतीय, पठारी तथा मैदानी तीनों प्रकार की भूआकृतिक संरचना रखने वाला विशिष्ट क्षेत्र है। इस कारण यहां विशिष्ट भौगोलिक दृश्यरूप तथा आकृतियाँ मिलती हैं। जिससे यह भूपर्यटन के क्षेत्र में अपार सम्भावनायें रखता है। यहां भूगर्भिक इतिहास की विभिन्न घटनाओं के प्रमाण के रूप में भूदृश्य, इस क्षेत्र में रूचि रखने वालों को पर्याप्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। बून्दी शहर के निकट से गुजरने वाला महान सीमान्त भ्रंश जो पूर्व अरावली व उच्च विन्ध्यन क्रम को अलग करता है। साथ ही इसके सहारे समानान्तर व तिर्यक भ्रंशों की उपस्थिति, यहां की भौगोलिक धरातलीय संरचना के विभिन्न कालक्रमों को स्पष्ट करती है। इसके अतिरिक्त अवशिष्ट पहाड़ियां, वलन तथा भ्रंश के विभिन्न प्रकार, जलप्रपात तथा अपरदन व निक्षेपण की अनवरत प्रक्रिया से बनी अनेक चट्टानी स्थलाकृतियाँ भूगोल की विषय वस्तु को प्रत्यक्ष देखने का अवसर उपलब्ध कराती है। इसलिये जिले के आर्थिक विकास के साथ–साथ सतत विकास के लिए भी एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में भूपर्यटन अपना योगदान दे सकता है। क्योंकि भूपर्यटन विभिन्न क्षेत्रों में रूचि रखने वाले पर्यटकों यथा– सामान्य पर्यटक, भूगर्भ व भूआकृतिक विज्ञान के विशेषज्ञ, विद्यार्थी, अकादमिक समूह तथा प्रकृति प्रेमी, फोटोग्राफर,

कलात्मक सौन्दर्य विशेषज्ञों को आकर्षित कर न केवल पर्यटकों का आगमन बढाता है अपितु उनकी ठहराव अवधि में भी वृद्धि करता है जो कि अर्थव्यवस्था के विकास को गति प्रदान करता है। बून्दी जिला भूपर्यटनीय संसाधनों की दृष्टि से धनी हैं। यहां के कई क्षेत्र भूपर्यटनीय विषय सामग्री के कारण महत्वपूर्ण हैं। ऐसे क्षेत्रों का शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयन कर उनकी भूपर्यटनीय विशेषताओं को उभारने का प्रयास किया है जो कि इस प्रकार है –

1. **रामेश्वर महादेव घाटी** – यह क्षेत्र प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता से परिपूर्ण है। यहां विभिन्न भौगोलिक घटनाओं के प्रमाण मिलते हैं जिनमें निक्षेप प्रक्रिया से निर्मित अवसादी चट्टानों के विभिन्न स्तर, अपनतियाँ, अभिनतियाँ, खुला वलन, बंद वलन सहित वलन के विभिन्न उदाहरण, चट्टानों में संचलन से उत्पन्न भ्रंश तथा भ्रंश तल, भूगर्भिक प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष उदाहरणों सहित स्पष्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त स्टेलेग्टाइट, स्टेलेक्माइट, हेलेक्टाइट, कन्दरा स्तम्भ, कन्दरायें जैसी चूना निर्मित स्थलाकृतियाँ इस क्षेत्र को विलक्षणता प्रदान करती है। 70 फीट ऊँचाई से गिरता जल प्रपात, उसके नीचे बना अवनमन कुण्ड तथा नाले में जलोढकों की उपस्थिति, जल की अपरदन व निक्षेप प्रक्रियाओं की व्याख्या करने में सक्षम हैं। इसके अतिरिक्त यह रामगढ़ विषधारी अभ्यारण्य का क्षेत्र होने से समृद्ध वानस्पतिक व जैविक सम्पदा रखता है। इस कारण यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूस्थल के रूप में भूपर्यटनीय आकर्षण रखता है।
2. **भीमलत** – यह क्षेत्र बून्दी जिले का महत्वपूर्ण भूस्थल है। यहां ऊपरमाल पठार का पूर्वी कगार तथा विन्ध्यन क्रम की पर्वत श्रृंखला दोनों की उपस्थिति इसे प्राकृतिक व भौगोलिक विलक्षणता प्रदान करती है। यहां इस कगार पर 2 किमी की लम्बाई, 100–200 मीटर की चौड़ाई तथा 50–100 मीटर की गहराई वाली घाटी जो कि जल की तीव्र धारा के द्वारा किये जाने वाले कटाव से बनी है। जो इसे एक अद्भुत स्वरूप प्रदान करती है। इस घाटी के प्रारम्भिक सिरे पर लगभग 80 मीटर की ऊँचाई तथा 100 मीटर की चौड़ाई में गिरता जल प्रपात एक विशिष्ट दृश्य को जन्म देता है। वर्षा ऋतु में यह जलप्रपात अर्द्ध वृत्ताकार रूप लेकर घाटी में गिरता है जो न्याग्रा जल प्रपात जैसा आभास कराता है। प्रपात से गिरते हुए जल ने आधार की चट्टानों को काटकर अवनमन कुण्ड का निर्माण किया है। इस प्रपात के बीच में गौमुख रूपी चट्टान आकर्षित करती है। इसके बाद घाटी में बहता हुआ जल अपरदन व निक्षेपण प्रक्रिया से विविध आकर्षक चट्टानी स्थलरूपों का निर्माण करता है। इनमें पैंग्विन रॉक, बर्ड रॉक, टॉड रॉक, फ्लाइंग बर्ड रॉक, जम्पिंग रॉक, हैंगिंग रॉक, शेल्टर रॉक जैसे आकर्षण मुख्य

हैं। ये सभी भूस्थलरूप प्रकृति की अनूठी कला शैली के उदाहरण के रूप में अन्यत्र दुर्लभ है। ये सभी स्थलाकृतियाँ भौगोलिक ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया में अभिवृद्धि करती है। इसके अतिरिक्त रॉक पेंटिंग्स का मिलना तथा गुप्तकालीन शिव मंदिर के प्रमाण इसे पुरातात्विक महत्व भी प्रदान करते हैं। इसके साथ ही समृद्ध जैव विविधता भी इसे विशिष्टता प्रदान करती है इस प्रकार यह क्षेत्र भूपर्यटन की अपार संभावनायें वाला क्षेत्र है।

3. **गरड़िया** – यह क्षेत्र कोटा–बून्दी जिले की सीमा पर ऊपरमाल पठार पर स्थित है। यह प्रवाहित जल की अपरदन शक्ति का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करने वाला स्थल है। यहां की परतदार चट्टानों को काटकर चम्बल नदी द्वारा गॉर्ज का निर्माण किया है। जो कि तीव्र कगार युक्त है तथा चम्बल नदी का मियाण्डर रूप इस स्थान को भूपर्यटन सम्पन्न क्षेत्र बनाता है। चम्बल नदी द्वारा तीव्र कगार युक्त गॉर्ज जिसकी गहराई 150 मीटर से अधिक तथा चौड़ाई 200 मीटर तक है, राजस्थान में अन्यत्र दुर्लभ है। इसके अतिरिक्त कई लघु जल प्रपात, हैंगिंग रॉक, लम्बवत ढाल के कगार, प्राकृतिक कन्दरायें, सोपानी ढाल आदि के उदाहरण भौगोलिक ज्ञान को समृद्ध करते हैं। यहां कुछ समय बैठने पर आध्यात्मिक व प्रकृति की अद्‌भुत रचनाओं की ओर रूझान उत्पन्न होता है। इसके साथ ही समृद्ध जैविक सम्पदा, राष्ट्रीय घड़ियाल अभ्यारण्य का क्षेत्र, पारिस्थितिकी पर्यटन व साहसिक पर्यटन की संभावनायें भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार यह सम्पूर्ण क्षेत्र भौगोलिक अध्ययन व प्रकृति सौन्दर्य दर्शन की विषय सामग्री प्रस्तुत करने के कारण अनुपम भूपर्यटन क्षेत्र है।

4. **तलवास** – ''बून्दी का कश्मीर'' तलवास विन्ध्यन क्रम की समानान्तर श्रेणियों के मध्य घाटी में स्थित है। हरियाली युक्त घाटियां, झरने, तालाब आदि इसे प्राकृतिक सुन्दरता तो प्रदान करते ही हैं साथ ही जल का प्रवाह व उससे निर्मित विभिन्न स्थलरूप तथा विन्ध्यन क्रम की भूगर्भिक हलचलों के प्रमाण भौगोलिक सुन्दरता के साथ भूपर्यटन की विषय सामग्री भी उपलब्ध कराते हैं। यहां लगभग 100 फीट ऊँचाई से गिरता जल प्रपात ''पानी परना'', अवनमन कुण्ड, जलोढ शकुं, अपनति, अभिनति, वलन की भुजायें, वलन की लम्बाई, वलन का अक्ष के रूप में वलन के विभिन्न भाग, परतदार चट्टानों पर जल के अपरदन द्वारा बने नाले, सीढीनुमा जल प्रपात भौगोलिक ज्ञान के रूप में भूगोल व भूपर्यटन की अध्ययन सामग्री को प्रत्यक्षतः प्रस्तुत करते हैं। इसके साथ ही यह क्षेत्र समृद्ध वानस्पतिक व जैविक सम्पदा के कारण रामगढ़ विषधारी अभ्यारण्य में बाद्यों की प्राकृतिक आवास स्थली के रूप में शामिल है। यहाँ प्रवासी पक्षियों की आश्रय स्थली

रतन सागर झील वैटलैण्ड के रूप में हैं। इस विलक्षण प्राकृतिक व भौगोलिक सौन्दर्य के कारण यह क्षेत्र भूपर्यटन के साथ समग्र पर्यटन के रूप में अपार सम्भावनायें रखता है।

5. **केवड़िया –** ऊपरमाल पठार पर स्थित केवडिया, बून्दी जिले का एक महत्वपूर्ण भूस्थल है। यहां बालूका पत्थर का विस्तृत जमाव परतदार चट्टानों के रूप में पाया जाता है। इस क्षेत्र में पठार का अन्तिम छोर प्रारम्भ हो जाता है जिससे ढाल की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे यहां तीव्र वेग से बहता जल तथा जल की शक्ति से निर्मित विभिन्न स्थलाकृतियाँ भूपर्यटन आकर्षण उत्पन्न करती हैं। यहां के लहरदार ढाल युक्त धरातल पर वर्षाकाल में बहता हुआ जल विहंगम दृश्य उत्पन्न करता है जो प्रकृति की शक्ति का अहसास कराता है। यहाँ बहता हुआ जल दो विस्तृत धाराओं में बंटकर अपनी तीव्र ढाल युक्त लघु घाटी का निर्माण करता है। इस घाटी में जल की अपरदन क्रिया से निर्मित विभिन्न चट्टानी स्थलाकृतियाँ प्रकृति के कला कौशल को उजागर करती है। इसमें Eye Rock, पैरेट रॉक, ब्रेकिंग रॉक, मशरूम रॉक, क्षिप्रिकायें तथा लघु जल प्रपात प्रमुख हैं। ये पर्यटकों व भूगोल में रूचि रखने वालो ंको अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराती है। इसके साथ ही यहाँ प्रागेतिहासिक कालीन अवशेषों का मिलना इसे पुरातात्विक महत्व का भी बनाती है। इस प्रकार यह क्षेत्र रोमांच व ज्ञानार्जन से परिपूर्ण होने के कारण एक महत्वपूर्ण भूपर्यटन केन्द्र है।

6. **नाल्दिया –** इसे स्थानीय भाषा में नाला दह के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ जल का घाटी में प्रवाहित होना है। यह क्षेत्र ऊपरमाल पठार पर स्थित है। जहां के बालूका पत्थर क्वार्टजाइट में रूपान्तरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। साथ ही लहरदार पठारी धरातल पर जल की अपरदन क्रिया से निर्मित विभिन्न स्थलरूप भौगोलिक ज्ञान में अभिवृद्धि करते हैं। यहां बहता हुआ जल सात छोटी–छोटी धाराओं में बंटकर एक लघु घाटी का निर्माण करता है, वर्षा ऋतु में यह जलधारायें संयुक्त होकर एक विहंगम दृश्य उत्पन्न करती है। इस घाटी में ऊपर व अन्दर स्थित चट्टानें जलचरों व स्थलचरों का आभास देती है। वहीं कुछ चट्टानें पक्षियों की सामूहिक क्रियाओं के उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस रूप में यह क्षेत्र भूविज्ञान तथा भूआकृति विज्ञान दोनों रूपों में आकर्षित करने की क्षमता से महत्वपूर्ण भूपर्यटन क्षेत्र है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बून्दी जिला विशिष्ट भौगोलिक व प्राकृतिक सौन्दर्य से पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखता है। यहाँ पर्यटकों के आगमन को बढ़ाने के लिए

ऐतिहासिक विरासत के साथ–साथ यहां विकल्प के तौर पर भूपर्यटन एक महत्वपूर्ण उपकरण सिद्ध हो सकता है, जो जिले के सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास हो सकता है। आवश्यकता है इस विशिष्टता को वास्तविकता तक लाने की कार्ययोजना की जो परस्पर सम्बन्धित 7 सूत्रीय कार्यक्रम – चिन्हीकरण → संसाधन विश्लेषण → निरन्तरता → आधारभूत सुविधायें → कार्यान्वयन → प्रचार प्रसार → मूल्यांकन से पूर्ण हो सकता है। यद्यपि बून्दी जिले में पर्यटन प्रसार व विकास में कुछ समस्यायें विद्यमान हैं, उनका निराकरण कर आवश्यकतानुसार कार्यान्वयन के लिए सुझाव भी प्रेषित है, जो कि इस प्रकार है :–

6.1 समस्यायें (Problems) :–

- बून्दी जिले से यद्यपि तीन राष्ट्रीय राजमार्ग व तीन राज्य राजमार्ग गुजरते हैं व सामान्यतः सभी उपखण्ड व ग्राम पंचायत सड़क मार्ग से जुड़े हैं। किन्तु राष्ट्रीय राजमार्गों को छोड़कर अन्य सड़कें क्षतिग्रस्त व जीर्ण अवस्था में है। साथ ही भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों तक सुगम सड़क मार्ग नहीं है जिससे पर्यटन संभावनाओं को क्षति पहुंच रही है।
- बून्दी जिले में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था की कमी है, विशेषकर पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों तक कोई सार्वजनिक वाहन उपलब्ध नहीं है जिससे पर्यटक निजी वाहनों पर निर्भर रहते हैं जो पर्यटकों पर आर्थिक भार में वृद्धि करते हैं।
- बून्दी जिले में जिला मुख्यालय के अतिरिक्त अन्य कहीं पर भी पर्यटकों के लिए ठहरने या रात्रि विश्राम की व्यवस्था नहीं है तथा जिला मुख्यालय पर भी स्तरीय व सितारा होटलों की कमी होने के कारण यहाँ सीमित गेस्ट हाउस में पर्यटकों का ठहराव सीमित ही हो पाता है।
- जिले में वर्तमान मे ंविद्यमान होटल, पेइंगगेस्ट आदि के द्वारा पर्यटकों से लिया जाने वाला किराया भी अत्यधिक है। वहीं सुविधायें भी स्तरीय नहीं है जिससे पर्यटक अपने को ठगा सा महसूस करते हैं।
- जिले में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों में किसी भी स्थल पर स्तरीय विश्रामगृह व रेस्टोरेन्ट नहीं है तथा सार्वजनिक सुविधायें भी उपलब्ध नहीं हैं जिससे पर्यटक उन स्थलों पर अधिक समय तक नहीं रूक पाते हैं। इस कारण स्थल के आकर्षण पूरी तरह से पर्यटकों के सम्मुख नहीं आ पाते हैं।

- जिले में पर्यटन विकास के मार्ग में एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या उपयुक्त साइट विजिट प्लान का न होना है, जिससे पर्यटकों का भ्रमण बिखरे रूप में होता है तथा उन्हें समय भी अधिक लगता है। जिससे पर्यटक अपनी निर्धारित अवधि में सभी भूपर्यटन स्थलों का भ्रमण नहीं कर पाते हैं।
- जिले में भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल सामान्य मार्ग से हटकर है और वहां तक पहुंचने के लिए किसी प्रकार के दिशा–निर्देश नहीं है और न ही पर्याप्त ज्ञान है जिससे पर्यटक वहां तक नहीं पहुंच पाते हैं।
- जिले के प्राकृतिक व भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों पर उस स्थान की पर्यटनीय विशेषताओं व सम्बन्धित विवरण को प्रदर्शित करने के लिए कोई सूचना पट्ट नहीं होने से पर्यटकों को उन स्थलों की विशेषताओं की जानकारी नहीं मिल पाती है जो भूपर्यटन विकास में बाधा उत्पन्न करता है।
- जिले में प्राकृतिक व भौगोलिक विशिष्टता रखने वाले क्षेत्रों में सामान्य पर्यटक प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारने के लिए तो चले जाते हैं किन्तु उन स्थलों पर भूपर्यटनीय विशिष्टता रखने वाली स्थलाकृतियों का चिन्हीकरण न होने से सामान्य पर्यटक उन्हें पहचान नही ंपाते, इससे भी भूपर्यटन विकास में बाधा पहुंचती है।
- जिले में जितने भी पर्यटन गाइड हैं वे भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलाकृतियों व प्रक्रियाओं की जानकारी देने की दृष्टि से प्रशिक्षित नहीं है जिससे पर्यटकों की भौगोलिक जिज्ञासाओं का समाधान नहीं हो पाता, फलतः भूपर्यटन विकास में बाधा उत्पन्न होती है।
- स्थानीय निवासियों द्वारा अपने सामान्य क्रियाकलापों तथा सामान्य पर्यटकों द्वारा कई बार भूपर्यटनीय दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलरूपों को अज्ञानतावश हानि पहुंचा दी जाती है।
- जिले में पर्यटन विभाग या निजी संस्थाओं द्वारा अभी तक केवल ऐतिहासिक पर्यटन को ही प्रमुख रूप से प्रचारित किया है, जिससे भी पर्यटकों को विकल्प की कमी के कारण यहां पर्यटकों की संख्या कम रहती है।
- जिले का पर्यटन विभाग सामान्यतः पर्यटन प्रसार को लेकर उदासीन है। उसके द्वारा वर्ष में केवल एक बार बून्दी उत्सव मनाकर सरकारी रस्म अदायगी कर दी जाती है। जिसमें जन सामान्य की अत्यन्त सीमित भूमिका रहती है जिससे भी पर्यटन विकास सीमित है।

- वर्तमान युग बाजार युग है जिसमें प्रत्येक उत्पाद सुदृढ़ विपणन तन्त्र व प्रचार माध्यम की मांग करता है जो पर्यटन पर भी लागू होता है, किन्तु जिले की पर्यटनीय संभावनाओं को उचित उपयोग में लेने में इस तथ्य की भी कमी नजर आती है।
- स्थानीय निवासियों में अभी भी पर्यटन से होने वाले लाभों के प्रति जानकारी का अभाव है जिससे यहां की पर्यटनीय क्षमता का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है।
- जिले के अधिकतर पर्यटन स्थलों पर आने वाले विशेषकर स्थानीय व घरेलू पर्यटक पिकनिक व मनोरंजनात्मक गतिविधियों के लिए आते हैं जिससे उनके आचरण में उच्छश्रृंखलता दिखाई देती है जोकि आदर्श पर्यटक आचरण संहिता के विपरीत होता है जिससे दूसरे पर्यटक वहाँ जाना पसन्द नहीं करते हैं। जिससे ध्वनि प्रदुषण व सामाजिक अपराध जन्म लेते हैं।
- जिले के भूपर्यटनीय स्थल किसी न किसी धार्मिक आस्था से जुड़े होने के कारण यहां विशेषकर श्रावण मास में सामूहिक गोठों का आयोजन बढ़ जाता है जिससे इन क्षेत्रों में गंदगी व कचरा, प्रदुषण को बढ़ा रहा है।
- वर्तमान में पर्यटकों द्वारा लायी जाने वाली या अल्पाहार में प्रयुक्त पैकिंग सामग्री में सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बढ़ रहा है जिससे विभिन्न पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं।
- प्रायः पर्यटक उन स्थलों के भ्रमण को प्राथमिकता देते हैं जो आकर्षक, स्वच्छ तथा नियंत्रित होते हैं, किन्तु बून्दी जिले के पर्यटनीय आकर्षण वाले स्थलों पर इस पक्ष की कमजोरी सामने आती है जिससे पर्यटन प्रसार अत्यन्त धीमा है।
- जिले के पर्यटन विकास में एक अन्य प्रमुख समस्या स्थानीय निवासियों तथा हितधारकों को विकास की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जा रहा है जबकि उनकी भूमिका विशेषकर पर्यटन आकर्षण में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिये भी जिले में पर्यटन विकास सीमित है।
- जिले में पर्यटकों तथा उनके आचरण तथा उनके भ्रमण पर किसी भी प्रकार के निगरानी तन्त्र का अभाव पर्यटन की निरन्तरता पर विपरीत प्रभाव डाल रहा है।
- जिले में भूपर्यटन विकास के लिए अभी तक न तो व्यक्तिगत और न ही सरकारी स्तर पर कोई योजनाबद्ध प्रयास किये हैं जिससे जिले में पर्यटकों की संख्या में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पा रही है।

- बून्दी जिला वर्तमान तक भी घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने में असफल रहा हैं। यहां आने वाले घरेलू पर्यटक ज्यादातर व्यापारिक या पारिवारिक कार्य से आते हैं न कि पर्यटन उद्देश्य से। जिससे भी यहां पर्यटन प्रसार सीमित हुआ है।
- भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों पर अतिक्रमण व अवैध निर्माण तथा अनियंत्रित व्यावसायिक गतिविधियों से इन स्थलों की प्राकृतिक व भौगोलिक सुन्दरता नष्ट हो रही है।

6.2 सुझाव (Suggestion) :–

- सर्वप्रथम भूपर्यटन विकास के लिए एक विशेषज्ञ कार्यकारी समूह अर्थात टास्क फोर्स का गठन किया जाये जिसमें स्थानीय हितधारक, जनप्रतिनिधि, पर्यटन विशेषज्ञ, पर्यावरणविद् तथा क्षेत्र व विषय की जानकारी रखने वाले विशेषज्ञ सम्मिलित हो।
- यह कार्यकारी समूह भूपर्यटन विकास योजना का प्रारूप तैयार कर एक रणनीति के अन्तर्गत समयबद्ध क्रियान्वयन से कार्य करें।
- भूपर्यटन से सम्बन्धित स्थलाकृतिक आकर्षण के निर्माण का इतिहास, निर्माण की प्रक्रिया, स्थलाकृतिक महत्व एवं वर्तमान स्वरूप व नामकरण की विस्तृत पुस्तिका तैयार की जाये।
- सभी पर्यटन स्थल जिला मुख्यालय से पक्के मार्गों द्वारा जोड़े जायें तथा जर्जर सड़क मार्गों को सुधारा जाये।
- सभी पर्यटक स्थलो ंतक पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन सीजन के समय विरासत दर्शन या जिला दर्शन के रूप में भ्रमण की पर्यावरणीय अनुकूल सार्वजनिक परिवहन की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- राज्य सरकार व पर्यटन विभाग द्वारा यहां वर्तमान में बंद होटल को संचालित किया जाना चाहिए साथ ही निजी क्षेत्र तथा होटल श्रृंखला वालों को आमंत्रित कर यहां स्तरीय आवास सुविधा का निर्माण किया जाना चाहिए। ताकि पर्यटकों को अनुकूल दर पर उचित आवास व्यवस्था मिल सके। इसके अतिरिक्त टेंट सफारी के रूप में गेस्ट हाउस तैयार किये जा सकते हैं।
- सभी पर्यटनीय स्थलों पर पर्यटन विभाग या निजी संस्थाओं के सहयोग से स्तरीय विश्रामगृह, रेस्टोरेंट तथा सार्वजनिक सुविधायें स्थानीय पर्यावरण के अनुकूल विकसित की जानी चाहिए ताकि पर्यटक पर्यटन स्थलों पर सुविधापूर्ण ठहराव कर सके।

- भूपर्यटन की दृष्टि से जिले के महत्वपूर्ण स्थलों को सम्मिलित कर एक यात्रा पर्यटन मानचित्र बनाया जाना चाहिए तथा उसी के अनुरूप पर्यटकों को यात्रा के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा पर्यटन स्थलों की आपस में कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए सड़क मार्गों को विकसित किया जाये ताकि पर्यटक अपनी निर्धारित अवधि में सभी स्थलों का भ्रमण कर सके।
- जिले के सभी भूपर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों को सूचीबद्ध कर उनका चिन्हीकरण कर उचित स्थानों पर स्पष्ट साइनेज व दिशा–निर्देश लगाये जाने चाहिए ताकि पर्यटक सुविधापूर्ण वहां तक पहुंच सके।
- प्रत्येक भूपर्यटन स्थल के प्रवेश द्वार पर स्थल की विशेषताओं को प्रदर्शित करने वाले सूचना पट्ट छायाचित्र सहित लगाये जाने चाहिए।
- भूपर्यटनीय विशिष्टता रखने वाली स्थलाकृतियों का चिन्हीकरण कर उसकी विशेषता सम्बन्धी तथ्य भी वहां पर सूचना पट्ट द्वारा प्रदर्शित हो तथा ऐसे स्थलों की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर बेरिकेंटिंग भी होनी चाहिए।
- पर्यटन विभाग द्वारा विषय विशेषज्ञों के सहयोग से भूपर्यटनीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण भूआकृतियों के निर्माण की प्रक्रियाओं तथा उनकी विशिष्टताओं के सम्बन्ध में पर्यटन गाइडों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि पर्यटकों की भौगोलिक जिज्ञासाओं का समाधान हो सके।
- जिले में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए भूपर्यटन के साथ–साथ अन्य वैकल्पिक पर्यटन को भी विकसित किया जाना चाहिए तथा थीम आधारित पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिए।
- पर्यटन स्थलों के बारे में आकर्षक ब्रोशर्स, फोल्डर्स, लघु पुस्तिकायें व पोस्टर्स का प्रकाशन कराकर इनका वितरण पर्यटन व्यवसायों से जुड़े सभी व्यक्तियों व संस्थाओं को भेजा जाये तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार, कान्फ्रेन्स, प्रदर्शनियों में जिले की सहभागिता सुनिश्चित की जाये।
- पर्यटन सम्बन्धी प्रचार प्रसार तथा विकास कार्यक्रम, सरकारी कार्यक्रम न होकर जनसामान्य के कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए।
- प्रतिवर्ष जिले के किसी एक भूपर्यटन स्थल का चुनाव कर एक दिवसीय पर्यटन उत्सव वहीं मनाया जाना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों के साथ–साथ पर्यटकों की स्थल पहुँच बढ़ेगी।

- प्रिंट व अन्य इलेक्ट्रोनिक माध्यमों द्वारा भी एग्रेसिव मार्केटिंग की जाये और फिल्म निर्माताओं व धारावाहिक निर्माताओं को भी यहां शूटिंग के लिए आमंत्रित किया जाये।
- रेलवे कोच, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड तथा यात्री परिवहन बसों में भी जिले के महत्वपूर्ण भूपर्यटनीय आकर्षणों को पोस्टर्स द्वारा प्रदर्शित किया जाये।
- कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 52 पर दो सुरंगों का निर्माण जिला मुख्यालय के पास एक हेरिटेज आकर्षण के साथ किया गया है जो राजस्थान की सबसे लम्बी सड़क मार्ग सुरंग (प्रत्येक 1.1 कि.मी.) है और क्षेत्र से गुजरने वाले व्यक्तियों के लिए आकर्षण का नया बिन्दु है। इसलिए इसके दोनों ओर जिले की पर्यटनीय विशेषताओं को वाल पेंटिंग या होर्डिंग्स द्वारा प्रदर्शित किया जाये तो यह पर्यटकों की संख्या बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण प्रयास हो सकता है।
- भूस्थलों के निकटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले स्थानीय निवासियों तथा हितधारकों को भी पर्यटन से होने वाले लाभों के प्रति जागरूक बनाया जाना चाहिए जिससे इन स्थलों की भौगोलिक सुन्दरता को बनाये रखने तथा पर्यटन क्षमता का समुचित उपयोग हो पायेगा।
- पर्यटकों के लिए एक आदर्श आचरण संहिता का निर्माण कर पर्यटकों द्वारा उसकी अनुपालना का प्रयास किया जाना चाहिए इसके लिए यथोचित दिशा–निर्देश उन स्थलों पर प्रदर्शित किये जाने चाहिए तथा इसके लिए एक निगरानी तन्त्र भी स्थापित किया जाना चाहिए।
- इन क्षेत्रों में सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबन्ध लगाकर खाने–पीने की चीजों में पर्यावरण अनुकूल सामग्री के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए।
- पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता के उच्च मानकों की अनुपालना कर क्षेत्र को आकर्षक व स्वच्छ बनाया जाना चाहिए।
- भूपर्यटन विकास की प्रक्रिया में स्थानीय निवासियों व हितधारकों को सक्रिय रूप में सम्मिलित कर पर्यटक निगरानी तन्त्र में इनकी भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- राज्य सरकार व जिला प्रशासन को पर्यटन के समग्र विकास के मुख्य चालक के रूप में कार्य करने की क्षमता वाले निजी क्षेत्र की भागीदारी को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- भूपर्यटन सहित सभी महत्वपूर्ण पर्यटनीय स्थलों पर अतिक्रमण व अवैध निर्माण तथा अनियंत्रित व्यापारिक गतिविधियों को कठोरतापूर्वक नियंत्रित किया जाये।

- भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग की सहायता से जिले के महत्वपूर्ण भूपर्यटनीय स्थलों को यूनेस्को के मानकानुसार विकसित किये जाये।
- उडान योजना के अन्तर्गत कोटा में हवाई यातायात को बढ़ाया जाये ताकि विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके।
- जिले के भूपर्यटनीय स्थलों को ''धरोहर गोद लो'' योजना के आधार पर भी विकसित किया जा सकता है।
- ''आपणी बूंदी'', ''पर्यटन सभी के लिए'' जैसे विशिष्ट कार्यक्रम प्रारम्भ किये जाये तथा ''अतिथि देवो भवः'', ''अनुपम बून्दी'', ''अद्भुत बून्दी'' जैसे स्लोगन का व्यापक योजना के साथ प्रचार किया जाना चाहिए।
- पर्यटन की मौसमी प्रवृति दूर करने के लिए वैकल्पिक पर्यटन का भी विकास किया जाना चाहिए।
- पर्यटन स्थलों की आपसी कनेक्टिविटी बढ़ाकर पर्यटकों की संख्या बढ़ायी जा सकती है।
- पर्यटकों के बढ़ रहे रूझानों को देखते हुये सभी स्थलों को क्रमिक रूप से विकसित किया जाये।
- परिचयात्मक पर्यटक भ्रमण के लिए ऐसे स्थानों पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं को आमंत्रित किया जाना चाहिए ताकि छात्रों को इन विभिन्न भूआकृतियों व प्रक्रियाओं का व्यवहारिक ज्ञान हो सके तथा इसके माध्यम से शैक्षिक पर्यटन भी बढ़े।
- भूपर्यटनीय स्थलों पर प्राकृतिक व भौगोलिक सौन्दर्य निहारने के लिए पर्यटकों की सुविधा के लिए वाच टॉवर बनाये जाने चाहिए।
- पर्यटन स्थल के प्रारम्भिक स्थल पर क्षेत्र की विशेषताओं को प्रकट करने वाला एक खुला संग्रहालय (Open Museum) गलियारे के रूप में बनाया जाना चाहिए।
- भीमलत, केवड़िया व नाल्दिया क्षेत्र को सम्मिलित रूप से एक भू उद्यान (Geopark) के रूप में व अन्य स्थलों को भू स्थल (Geosite) के रूप में विकसित किया जाये।
- सम्बन्धित भूपर्यटन स्थलों पर वाहनों के प्रवेश की अधिकतम सीमा निर्धारित की जाये व उन्हें निश्चित दूरी पर पार्किंग की व्यवस्था प्रदान की जाये।
- पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति, परम्पराओं व मान्यताओं सम्बन्धी परिचय भ्रमण पूर्व ही प्रदान किया जाना चाहिए।

- भूपर्यटन स्थलों पर भ्रमण के लिए In तथा Out व्यवस्था के आधार पर सभी महत्वपूर्ण स्थलाकृतियों व आकर्षण को सम्मिलित करते हुये निश्चित इको मार्ग बनाया जाना चाहिए।
- पर्यटन गाइड तथा स्थानीय हितधारकों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था समय–समय पर होनी चाहिए।
- पर्यटकों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर यथोचित परिवर्तन कर उसे अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- योजनाओं की क्रियान्विति के लिए स्थापित टास्क फोर्स की नियमित समीक्षा बैठक होनी चाहिए तथा योजना के प्रभावों की निगरानी के लिए भी एक तन्त्र स्थापित किया जाना चाहिए।
- 5 A - Access (सुगमता), Accommodation (आवास), Activities (गतिविधियाँ), Attractions (आकर्षण), Amenities (सुविधायें), पर विशेष ध्यान दिया जाये।
- भूसंरक्षण उपाय पर्यटन प्रारम्भ के साथ ही प्रारम्भ कर दिये जाने चाहिए।
- जिले के कुछ महत्वपूर्ण भूस्थल सड़क मार्गों के किनारे होने से भविष्य में सड़कों के विस्तार से इन्हें हानि पहुंच सकती है। अतः सड़क निर्माण के समय बफर जोन बनाये जाने की आवश्यकता है।
- पर्यटकों के बून्दी आगमन के साथ ही प्रारम्भिक चिकित्सकीय परीक्षण की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भूपर्यटन एक नया पर्यटन व्यवसाय है जो बहुउपयोगी व बहुविकल्पात्मक होने के कारण तेजी से विश्व पर्यटन में प्रमुख होता जा रहा है। यह स्थानीय पर्यटन उद्योग से प्राप्त आर्थिक लाभ को अधिकतम कर सकता है तथा स्थानीय हितधारकों के लाभ के साथ–साथ ज्ञान व शिक्षा को भी बढ़ावा देकर भूवैज्ञानिक जागरूकता बढ़ा सकता है। इस दृष्टि से बून्दी जिला राजस्थान के अन्य जिलों की अपेक्षा विशिष्टता रखने के कारण महत्वपूर्ण भूपर्यटन केन्द्र बनकर राज्य के आर्थिक विकास में मुख्य भूमिका निभा सकता है। आवश्यकता है इच्छाशक्ति व एक मजबूत दृढ़संकल्प के साथ कार्ययोजना बनाकर व उपर्युक्त सुझावों के आधार पर कार्यान्वयन की। शोधकर्ता का विश्वास है कि प्रस्तुत कार्ययोजना व सुझावों के समयबद्ध प्रभावी क्रियान्वयन से जिले में भूपर्यटन एक नई पहचान स्थापित कर सकता है और जिले के सतत विकास में एक नया अध्याय जोड़ा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

Ahluwalia, A.D.	2006	Indian geoheritage, geodiversity: Geosites and geoparks. Current Science. 91(10)
Allan, M.	2013	"Geotourism the potential of geotourism development in the United Arab of Emirates." 2nd International conference on Emerging Research paradigms in Business and social sciences.
Anna, S., Zdristaw, J.	2010	"Geoheritage and Geotourism Potential of the strzelin Hills"[Poland] Geographica Pannonica, Vol.14,issue4,118-125
AROUCA Declaration	2011	"Geotourism in Action" Nov.9-13, Portugal
Baele,J.M.	2012	Geoheritage, geoconservation and geotourism. Proceedings of the Contact Forum "Geoheritage, Geoconservation & Geotourism". Geological Survey of Belgium, Brussels.
Bhatia, A.K	2006	International Tourism Management Plan.Sterling Publishers Pvt. Ltd, 2006
Boley,B.B.	2009	Geotourism in the crown of the continent: developing and testing the geotourism survey instrument (GSI). Thesis Master of Science in recreation management. The University of Montana Missoula, Missoula https: //scholar works. umt.edu/etd/490
Buckley, R.	2003	"Environmental inputs and outputs in Ecotourism: Geotourism with a positive triple line." Journal of Ecotourism 2(1) PP 76-82
Dowling R., Newsome,D.	2008	The Future of Geotourism: Where to from here? Goodfellow Publishers, London, pp19-27
Dowling,R., Newsome,D.	2010	"Geotourism: A global activity." Global geotourism perspectives published by Goodfellow Publisher Limited Oxford.
Dowling, R.K.	2010	"Geotourism's Global Growth" Geoheritage 3(1):1-13

Fassani, N.T. Delho, C. C., Costa, R.	2009	"Geotourism in an opportunity for local communities' participation in geoparks" Conference Paper: In 8th European Geoparks Conference
Geological Survey of India	2001	Geothermal Atlas of India, GSI Special Publication No.19
Global Geotourism Blogspot	2011	http://globalgeotourism.blogspot.in/2011/09/father-of-modern-geotourism.html
Hazare, P.	2012	"Tourism Development in Raigarh District: A Geographical Analysis." Ph.D Thesis http: //hdl. handle. net /10603/6703
Hose, T.A.	2012	"3G's for Modern Geotourism", Geoheritage Journal, 4:7-24
Hose, T.A.	1995	Geotorism, Appreciating the deep time of landscapes, Niche Tourism: contemporary issues, trends and cases (M.Novelli, ed.), Butterworth-Heinemann, Oxford, pp.27-37.
Hose,T.A.	1995	"Selling the story of Britain's stone Environmental Interpretation" Vol. 10, No. 2, 1995, pp. 16-17.
Hunziker, Krapf	1942	Grundriss Der Allgemeinen Fremdenverkehrslehre
Imthiaz, A.A.	2018	Geotourism and Geoparks – A Prospect for Sustainable Tourism Development.https://tourism development esoft. wordpress.com/2018/12/08/geo-tourism-an-emerging-sector-of-tourism/
James P., James J. C.	2006	The story of Remarkeble Rocks and the 5 G's – Sustainable Development with Geodiversity, Geoconservation and Geotourism-Within a Network of Global Geopark.(Conference abstract at the Second International Conference on Environmental,Cultural,Economic and Social Sustainability-Vietnam,9-12 Jan.2006)
Joycee, E.B.	2006	Geomorphological sites and the new geotourism in Australia.Geological Society of Australia,Melbourne

Kamra, K.K	1998	Domestic Tourism in India Published January 1st, 1998 by Indus 8173870780 (ISBN13: 9788173870781)
Mamoon Allan	2010	Geotourism : The potential of Geotourism Development in the United Arab of Emirates Second International Conference on Emerging Research Paradigms in Business and Social Sciences, Dubai Mall, Dubai, UAE.
Mao, I., Robinson, A.M., Dowling,	2009	“Potential Geotourist : An Australian case study”Journal of Tourism X(1):71-80(2009)
Martin, J.F., Carcia, J.C., Urqui, L.C.	2012	“Geoheritage Information for Geoconservation and Geotourism through the categorization of Landforms in a Karstic Landscape: A case study from Covalagua and Las Tuerces Palencia, spain.”Geoheritage volume 4, pages93–108(2012)
Mathur,D.P.	2010	Bundi Rajya ka Sampoorn Itihas
Meena B.L., Meena S.K.	2015	Rajasthan mein Paryatan udhyog evam aarthik vikas mein yogdaan AIJRA,Vol.II Issue IV,www.ijcms2015.co
National Geographic	2002	The geotourism study: Phase I Executive summary - National Geographic traveler and the travel industry associate of America
National Geographic	2010	The Geotourism Charter, Mission Programs, centre for sustainable Destination - National Geographic
National Geographic	2012	*What is geotourism?* Center for Sustainable Destinations. Online: ww.nationalgeographic.com/travel/sustainable
Newsome,D., Dowling,R.	2005	The scope and nature of geotourism, Geotourism Elsevier, Oxford, pp.3-25.
Ngwira, P.M.	2015	"Geotourism and Geoparks: Africa's current prospectus for sustainable rural development and poverty alleviation." from Geoheritage to Geopark case studies from Africa and beyond, Springer International Publishing, Switzerland

Ollier,C.	2012	"Problems of geotourism and geodiversity." Quaestiones Geographical Vol.31 pp.57-61
Olson, K., Dowling R.	2018	Geotourism and Cultural Heritage.Geoconservation Research, Vol.1, Issue1, pp37-41
Panizza, M.	2001	Geomorphosites: concept, methods, and example of geomorphological survey. *Chinese Science Bulletin,* 46, 4-6.
Panizza, M. and Piacente, S.	2008	"Geomorphosites and geotourism." Revista Geographica Academica Vol.2 P- 5-9
Piranha,J.M., Lama, E.A.D., Bacci, D.	2009	Geotourism and local development- potentialities and risks. New Challenges with geotourism. Proceedings of the VIII European Geoparks Conference
Predrag, D., Mirela, D.	2010	"Inventry of Geoheritage site – The base of Geotourism Development in Montenegro" Geographica Pannonica, Vol.14,issue4,126-132
Priyadarshi, N.	2014	"Importance of geotourism with special reference to Jharkhand state of India" Environment and Geology
Ranawat P. Singh, George Soni	2019	Potential Geoheritage & Geotourism sites in India International Journal of Scientific and Research Publication, Vol.9, Issue 6
Reynard, E.	2007	Scientific Research and Tourist Promotion of Geomorphological Heritage.Geogr Fis Dinam Quat 31:225–230
Robinson, A.M.	2009	Geotourism: who is a geotourist? Leisure Solutions, Strawberry Hills.
Robinson, A.M., David, Roots	2008	Marketing Geotourism sustainablity.Global Geotourism Conference,Fremantle.WA 17-20 August2008
Rodrigues, M.L. Machado, C.R., Freire, E.	2011	Geotourism routes in Urban areas: A preliminary approach to the Lisbon Geoheritage survey.Geojournal of Tourism and Geosites, Year IV,No.2,Vol.8,pp281-294

Ruban, D.A.	2017	Geodiversity as a precious national resource: A note on the role of Geoparks.Resource Policy,53,103-108
Schutte,I.C.	2015	"A strategic management plan for the sustainable development of geotourism in S. Africa" http://hdl.handle.net/10394/2252
Serrano,E. ,Ruiz-Flano,P.	2007	Geodiversity. A theoretical and applied concept, Geographica Helvetica, 62, 3, pp.140-147
Shander, S.S.	2014	"A social impact analysis of how geoparks contribute to sustainable economic development: A Case study of meteorum Geopark in dalarna, Swedon. Master's thesis, Uppsala University."
Singh, R.B.	2012	A Geographical mosaic of Incredible India: Introducing natural and cultural heritage.Progress in Indian Geography. A Country Report, 2008-2012, 32nd International Geographical Congress, Cologne, Germany (August 26-30, 2012). Indian National Science Academy, New Delhi: 14-23.
Singh, R.B., Anand S.	2013	"Geodiversity, Geographical heritage and geoparks in India." International journal of geoheritage, published by International Geographical Union.
Stewart,C.W., Pickett,E.	2009	"Towards a geotourism destination - thought from the north pennives." New Challenges with geotourism-Proceedings of the VIII European Geoparks Conference
Stueve, Look, Drew	2002	The Geotourism Study: Phase I Excecutive summary, Travel Industry Association of America.
Suzuki D.A., Takgi, H	2018	Evalution of Geosites for sustainable planning and management in Geotourism. Geoheritage, 2018, Vol.10, Issue1, pp123-135
Swarbrooke, J.	1999	Sustainable tourism management CABI Publishing, New York USA"
Swarna,K., Biswas, S.K. Harinarayana, T.	2013	"Development of Geotourism in kutch region, Gujarat, India: An Innovative Approach." Journal of Environmental Protection, 2013,4,1360-1372

Thaker, M.D.	2004	Problems and prospectus of tourism industry in Gujrat Ph.D. Thesis, Saurashtra University Gujarat.
Verpaclst P.	2004	Outstanding Geological Sites. Highlights on the Mines.
Washington, D.C.	2010	"Power of Place" Feb.-2,2010 Geotourism summit
Williams, F.M.	2016	Geotourism in Africa and the Rift Valley
World Tourism Organisation	1998	Guide for local authorities on developing sustainable tourism. World Tourism Organization, Madrid
Zouros, N.	2010	Geotourism in Greece: a case of the Lesvos Petrified Geopark. In: Dowling R.K., Newsome D (eds) Global geotourism perspectives. Goodfellow publishers, Oxford, pp 2015-229

Reports and Gazetteers

Proceedings	2011	International Congress "AROUCA 2011"
Proceedings	2013	Geotourism - 32nd Annual ISTTE Conference proceedings Oct.17-19, 2013 Detroit, Michigan USA.
Proceedings	2009	New Challenges with Geotourism - * Proceeding of the VIIIth European Geoparks Conference, Sept.-14-16, 2009 Idanha- a Nova, Portugal.
Tourism Department of India		Annual Report 2019-20
Tourism Department of Rajasthan		Annual Report 2018-19
राजस्थान जिला गजेटियर,बून्दी	1991	
आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय	2016	जिला सांख्यिकी रुपरेखा बून्दी
जनगणना प्रतिवेदन	2011	

प्रकाशित शोधपत्र एवं पत्र वाचन की सूची

प्रकाशित शोधपत्र –

1. Possibilities of Geotourism in Bundi District-A case study of Kevdia Mahadev(Where Rocks speaks)
2. Possibilities of Geotourism in Bundi District-(A case study of Naldia(Nala-Daha)-Bundi)

पत्र वाचन –

1. Possibilities of Geotourism in Bundi District- (A case study of Naldia(Nala-Daha)-Bundi)- 46thNational Conference,The Rajasthan Geography Association-Organised by Department of Geography,Maharana Pratap Government College,Chittorgarh(Raj.)
2. Possibilities of Geotourism in Bundi District- XIVth International Geography Conference,The Deccan Geographical Society of India-Hosted by Department of Geography, University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)